Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त
उपन्यास साहित्य

माया जाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

167964
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माया जाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माया जाल

Central Library
167964
Gurukula Kangri (Deemed to be University), Haridwar

गुरुदत्त

(M) 9541317278, 8869821468

081
167964

हिन्दी साहित्य सदन

नई दिल्ली–११०००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

© भारती साहित्य सदन, १९५७

R
809.9143
GUR-M

मो० 7065618655, 9212527686
हिन्दी साहित्य सदन
2, बी.डी. चैम्बर्स, 10/54, देशबन्धु गुप्ता रोड़,
करोल बाग, नई दिल्ली-110005

मूल्य : ८५ रुपये मात्र 85/-

प्रकाशक : हिन्दी साहित्य सदन
३०-पी, कनॉट सरकस, नई दिल्ली-११०००१
फोन : ३३६३५५७

संस्करण : १९९८

मुद्रक : अजय प्रिंटर्स
दिल्ली-११००३२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका

जब पुस्तक की पांडुलिपि लिख दी गई तो एक मित्र इसे पढ़ गए और पश्चात् विस्मय में लेखक का मुख देखने लगे। उनका विस्मय करना स्वाभाविक था। वे यह समझ नहीं सके थे कि एक पढ़ा-लिखा अनुभवी लेखक मदारी और जादू के खेलों पर पुस्तक लिखकर क्या कहना चाहता है? आज कहे जानेवाले उन्नत समाज में इन बातों की चर्चा लज्जा की बात मानी जाती है।

परन्तु यह तो उपन्यास है। उपन्यास में पात्र, स्थान और वातावरण तो विषय को रंग देने के लिए कल्पित किए जाते हैं। शर्बत में सुगन्धि अथवा सुन्दरी में श्रृंगार जो अस्तित्व रखते हैं, वही उपन्यास में ये काल्पनिक वस्तुएँ रखती हैं।

इस पर भी कल्पना पाठक की बुद्धि की सीमा के भीतर होनी चाहिए। उन विषयों पर लिखने में भारी सतर्कता की आवश्यकता होती है जो साधारण मनुष्य की बुद्धि की सीमा-रेखा के समीपवर्ती हों। एक इंच भी इधर-उधर हुए कि कहानी के अस्वाभाविकता के क्षेत्र में पहुँच जाने का डर होता है। कभी कहानी लिखनेवाले को अपनी कल्पना पर लगाम लगाने की आवश्यकता होती है, और यदि लेखक चतुर हो तो पाठक के बुद्धिक्षेत्र को विस्तृत करने की भी कभी आवश्यकता पड़ जाती है।

अतएव इस पुस्तक के उस भाग को, जिसमें सम्मोहिनी विद्या और योग-साधना इत्यादि का वर्णन है, देखकर विस्मय करने की आवश्यकता नहीं। इस सब के भीतर आशय वही है जो एक कृषक अथवा व्यापारी की जीवनकथा को लिखने का है। संसार माया है, माया के अर्थ 'मिथ्या' नहीं। इसके अर्थ केवल यह हैं कि जो ऐसा प्रतीत होता है वह वैसा है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
नहीं। विज्ञान तथा ज्ञान दोनों मनुष्य को इसी परिणाम पर ले-जाने के लिए यत्नशील हैं। ये मनुष्य को संसार के वास्तविक रूप का निरूपण कराने का यत्न करते हैं।

संसार का वास्तविक रूप क्या है? इसका उत्तर अति गहन है। भगवान कृष्ण अपनी गीता में और उससे पूर्व वेद-वेदांग इस रूप का वर्णन करने का यत्न कर गए हैं। मनुष्य की बुद्धि काली रात में एक टिमटिमाते दीपक के तुल्य है। मनुष्य उस दीपक के प्रकाश में केवल उतनी ही दूर तक देख सकता है, जितनी दूर तक दीपक का प्रकाश जाता है। बुद्धिरूपी दीपक को अधिक और अधिक ज्योतिर्मय करने से मनुष्य अधिक और अधिक दूर तक देखने का सामर्थ्य प्राप्त करता जाता है। बुद्धि का विकास भी एक साधारण बात नहीं। इसके लिए भारी प्रयास और सम्भवत: जन्म-जन्मान्तर के यत्न की आवश्यकता रहती है। योग-साधना इस यत्न में भारी सहायता देती है।

जब मनुष्य को यह विदित हो जाता है और यह बात उसके हृदय में बैठ जाती है कि मनुष्य का शरीर उस पिंजड़े के समान है, जिसमें सुन्दर तोता बैठा है, तो उसका संसार को देखने का ढंग सर्वथा परिवर्तित हो जाता है। तोता अर्थात् आत्मा मुख्य, और पिंजड़ा अर्थात् यह शरीर और बाह्य संसार गौण हो जाते हैं। तोता अपने पिंजड़े के सौन्दर्य को देख-देख प्रसन्नता अनुभव कर सकता है। इस पर भी वह प्रसन्नता मिथ्या है। वह उसके लाभ में सहायक नहीं हो सकता।

पिंजड़े के सुन्दर करने के प्रयत्न में ही एक महाजन धोखाधड़ी, यहाँ तक कि झूठी बही लिखने का यत्न करता है। इसी के लिए चोर चोरी करता है और एक कारखाने का मालिक सहस्रों सेवकों को नौकर रख, दिन-रात धन कमाने में लगा रहता है। कोई विवाह कर धन प्राप्त करना चाहता है, तो कोई दूसरों से झगड़ा उत्पन्न कर अपना उल्लू सीधा करना चाहता है। यह सभी कुछ इस कारण होता है कि संसार को मुख्य मान वास्तविक वस्तु, आत्मोन्नति को गौण मान लिया जाता है।

वैदिक धर्म अथवा संस्कृति संसार और आत्मा में भेद को स्पष्ट कर आत्मा को मुख्य और संसार को गौण बताती है। सांसारिक वैभव और
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुविधा आत्मोन्नति में साधनरूप ही स्वीकार करता है। सांसारिक उन्नति कुछ सीमा तक आत्मोन्नति में सहायक होती है, परन्तु जब भी यह सीमा उल्लंघन होने लगती है, वैदिक धर्म उँगली खड़ी कर संकेत कर देता है कि आगे नहीं जाना!

वर्तमान युग संसार की असीम उन्नति में यत्नशील है; युग-धर्म आत्मोन्नति के विषय में सर्वथा चुप है। यह प्रवृत्ति अवैदिक है। यह विचार अनर्थ है। यह मनुष्य को उन्नति के स्थान अवनति की ओर ले-जाने में यत्नशील है।

संसार साध्य नहीं, साधन है। यह विचार जब दृढ़ हो जाता है तो कार्य सत्यमार्ग की दिशा में चल पड़ते हैं और जो आत्मतुष्टि और आनन्द प्राप्त होता है, वह अकथनीय है।

इस विशाल विस्मय के एक बहुत ही सीमित अंश को लेकर यह 'मायाजाल' लिख दिया गया है। इसमें कहाँ तक लेखक को सफलता मिली है, पाठक ही बता सकते हैं।

उपन्यास में स्थान, नाम, काल काल्पनिक होते हैं। इसमें भी वैसा ही है। किसी से प्रेम अथवा द्वेष तथा मोह और घृणा अभिप्रेत नहीं।

—गुरुदत्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्याय-सूची

देहात	९
नगर का चलन	५०
संकट में सहयोगिता	१०८
माया पर आधिपत्य	१५२
जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत	२०४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देहात

१

खेतों के आगे खेत, जहाँ तक दृष्टि जाती थी, फैले हुए थे। गाँव के बाहर खड़े होकर पश्चिम की ओर देखने से ऐसा प्रतीत होता था कि खेतों का फैलाव वहाँ तक है जहाँ आकाश भूमि से आकर मिल जाता है। बीच-बीच में कहीं-कहीं बबूल, आम और सिरस के पेड़ ऐसे खड़े प्रतीत होते थे जैसे खेतों में प्रहरी खड़े हों। ये उस विस्तृत दृश्य के देखने में बाधा नहीं थे, प्रत्युत उसको रूप-रंग दे रहे थे।

गाँव के बाहर एक बगिया थी। उसमें एक कुआँ था जिस पर रहट लगा था और जिसको मंगल भैया के बैल चलाया करते थे। इस रहट के पानी से, गाँव-भर के लोगों के पीने, स्नानादि और कपड़े इत्यादि धोने के काम के साथ-साथ बगिया भी हरी-भरी रहती थी। बगिया ननकू दादा की बगिया कहाती थी। ननकू दादा को मरे सौ वर्ष से ऊपर हो गए थे, परन्तु उसका नाम चलता था। बगिया में प्रायः आम के पेड़ थे। एक कोने में थोड़ी-सी भूमि में गेंदा, मोतिया, चम्बेली इत्यादि फूलों के पौधे भी लगे रहते थे'। ये फूल बगिया के कोने में मन्दिर के देवता की पूजा के काम में आते थे। कभी गाँव में किसी के पूजादि उत्सव होता तो वह भी इसी बगिया से फूल पा जाता था।

गाँव बगिया से पूर्व की ओर था और उसमें सबसे पहला घर मंगल भैया का ही पड़ता था। बीसियों वर्षों से यह प्रथा चली आती थी कि प्रातःकाल मंगल के पिता के घर से बैलों की जोड़ी आती और रहट चलाती। रहट की चीं-चीं सुनकर गाँव के लोग, नर-नारी, बाल-वृद्ध,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अपनी नित्यक्रिया से निवृत्त होने के लिए घर से निकल आते। खेतों में स्त्री, पुरुष और बच्चे शौच के लिए जाते तो लोटों में रहट से पानी भरकर ले जाते और वहाँ से आकर दातुन-कुल्ला करते, स्नान करते और शिवालय में जल चढ़ा घरों को चले जाते।

जिन पुरुषों ने खेतों में काम करना होता था, अँधेरा रहते ही घरों से निकल आते और पौ फटने से पूर्व शौचादि से निवृत्त हो कन्धों पर हल रख, बैलों को हाँकते हुए अपने-अपने खेतों को चले जाते थे। इनके पीछे दूसरा नम्बर होता था गाँव की स्त्रियों का। वे निवृत्त होकर चली जातीं तो सबके अंत में वृद्ध जन कुएँ पर आते। इस प्रकार सूर्योदय से एक प्रहर बीतने तक यह प्रथम कार्य समाप्त हो जाता, तो बैल रहट से निकाल आराम के लिए छोड़ दिए जाते। भूसा-दाना उनके सन्मुख डाल दिया जाता और वे आम के पेड़ के नीचे बैठ जुगाली करने लगते थे।

मध्याह्न के समय गाँव की स्त्रियाँ अपने पुरुषों के लिए खाना ले खेतों में चली जातीं और अपने घरवालों को खाना खिला-पिलाकर लौट आतीं। तन्दूर की तीन-चार मोटी-मोटी रोटियाँ, उन पर मेथी-आलू का साग और साथ लोटाभर लस्सी, यह प्रायः भोजन होता था, जो सूर्योदय से लेकर मध्याह्न तक खेतों में काम करनेवालों को मिलता था। इस समय बैलों को भी छुट्टी हो जाती थी और वे भी भूसा खाते, जुगाली करते और बैठकर थकान निकालते थे। खेतों में काम करनेवालों के लिए भी दो घंटा-भर आराम करने का समय होता और वे पेड़ के नीचे नंगी भूमि पर लेटकर, खाई रोटी की मस्ती, अथवा छः घंटे खेत में काम करने की थकान दूर करते थे।

दो घंटे-भर विश्राम करने के पश्चात् फिर बैल हलों में जुत जाते और हल खेतों में खुसुर-खुसुर चलने लगते थे। कभी खेतों में निराई करनी होती तो हँसिया लेकर खेतों में घुस जाना और छः घंटे बिना गर्दन ऊपर उठाए मेहनत करनी होती थी।

इस प्रकार महीनों की मेहनत के पश्चात् जब उपज पककर, कटकर और एकत्रित कर घर आती तो जो आनन्द मेहनत करनेवालों के मन में होता उसका अनुमान लगाना कठिन है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाँव संसार का बहुत छोटा-सा कोना मानना चाहिए। संसार के सुख-दु:ख, शोक-आनन्द, ईर्ष्या-द्वेष, काम-मोह, लोभ-अहंकार आदि सब मनोद्‌गार इसमें भी पाए जाते हैं। जैसे एक दाने से दाल के पकने का अनुमान लगाया जा सकता है, वैसे ही एक गाँव के समाज का अध्ययन मानव-समाज के ज्ञान का द्योतक हो सकता है।

वैशाख के अन्तिम दिन थे। मंगल गेहूँ की फसल कटवा, छटवा और ढुलवाकर घर ला रहा था। खलिहान में गेहूँ रखा जा रहा था। गाँव के कामें उसकी सहायता कर रहे थे। वह खेत में इनकी देखभाल करता था और घर पर उसकी माँ प्रीतो, और उसकी बीवी मोहिनी खलिहान में रखवाली करती थीं।

इस वर्ष चालीस बीघा में गेहूँ बोया गया था और लगभग एक हजार मन उपज की आशा थी। दो सहस्र मन भूसा भी एकत्रित होना था। इस कारण बीसियों कामें काम कर रहे थे। फसल के दिनों में मंगल को एक क्षण का भी अवकाश नहीं होता था। रात को जब घर आता तो इतना थक जाता था कि भोजन कर सोने के अतिरिक्त कुछ कर नहीं सकता था। उसकी माँ और बीवी भी घर के काम-काज में, अनाज को खत्तों में भरवाने और गाय-बैल की देखभाल में इतनी लगी रहती थीं कि उनको सिर खुजलाने का भी अवकाश नहीं होता था।

अनाज घर में आ गया और सँभल गया। भूसा अभी बाहर रखा था। मंगल चौड़ी छाती, ऊँची गरदन, विशाल मस्तक, गोल परन्तु सुदृढ़ भुजदण्ड, पुष्ट जंघाएँ, दृढ़ पग हाथ में लाठी लिये, तहमत बाँधे, कन्धे पर कुर्त्ता लटकाए सिर से नंगा खेतों से चला आता था।

बगिया के पास से गुजरा तो उसकी दृष्टि अपने छोटे भाई रामू पर जा पड़ी। वह कुएँ की जगत पर बैठा दूर खेल रही लड़कियों पर कंकड़ फेंक रहा था। मंगल आज बहुत प्रसन्न था। उसके खलिहान गेहूँ से भर गए थे। भूसा इतना हुआ था कि रखने को स्थान नहीं था। इस वर्ष वर्षा समय पर हुई थी। जाड़ा अधिक नहीं पड़ा था। गाँव में किसी प्रकार की बीमारी नहीं फैली थी। वह स्वयं और उसके खेतों में काम करनेवाले प्रसन्न और स्वस्थ रहे थे। इतने सौभाग्य में किसी का प्रसन्न होना और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर भगवान की कृपा के लिए कृतज्ञ होना स्वाभाविक ही है। रामू को रेशमी कुर्ता और धोती पहने लड़कियों से कल्लोल करते देख उसे विचार आया कि मन्दिर में देवता को प्रणाम करता चलूँ तो ठीक रहे। उसके पीछे-पीछे, भूसे से भरी दो गाड़ियाँ खेत से घर की ओर आ रही थीं। मंगल ने रामू को आवाज दी, "ओ रामू!"

"हाँ भैया!" रामू ने जगत पर बैठे-बैठे आवाज दी।

"अबे चलो! इस भूसे को घर पहुँचा आओ। मैं मन्दिर से होकर आता हूँ।"

"मुझे अवकाश नहीं है।" रामू ने छोटी-छोटी लड़कियों को, जो कुछ दूर बैठी गीटे खेल रही थीं, एक कंकड़ मारते हुए कहा।

मंगल ने उसको कंकड़ फेंकते देख लिया था। उसने समीप आते हुए कहा, "कौन समर विजय कर रहे हो यहाँ बैठे?"

"मैं नहीं जाऊँगा भैया!" इतना कह उसने एक और कंकड़ उठाया।

इस समय मंगल बहुत समीप आ गया था। उसको अब रामू के कंकड़ों का लक्ष्य गीटे खेलती तीन लड़कियाँ भी दिखाई दे गई थीं। "अरे! अरे!! यह क्या कर रहे हो?" मंगल ने रामू को कंकड़ फेंकने के लिए हाथ उठाता देखकर कहा। रामू रुका नहीं और उसने अपना प्रहार कर ही दिया। इस समय कंकड़ निशाने पर बैठा। एक लड़की के सिर पर लगा और उसके मुख से निकल गया, "आ.....!"

मंगल को यह बात बहुत बुरी लगी। वह माथे पर त्योरी चढ़ाकर रामू के पास आ खड़ा हुआ था। लड़कियाँ उठीं और मंगल को रामू की ओर घूरते देख, उत्साहित हो, समीप आ बोलीं, "दादा! रामू मारता है।"

"क्यों बे! क्यों मारा है इनको?"

"ये मुझको खेलातीं नहीं।"

"हमने कहा है," एक लड़की ने दूर बगिया में लड़कों को गुल्ली-डंडा खेलते हुए दिखाकर कहा, "उन लड़कों में जाकर खेल।"

"मेरा मन इनके साथ खेलने को करता है।"

मंगल को और भी क्रोध चढ़ गया। उसने रामू का कान मरोड़कर कहा, "अरे गधे! लड़कियों के साथ खेलने में लज्जा नहीं आती तुझको?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़े लाट साहब बने घूमते हो। जबरदस्ती खेल में साथी बनना चाहते हो?"

"आ....आ.... !" रामू के मुख से कान मरोड़े जाने पर निकल गया।

"बताओ, फिर ऐसा करोगे?" मंगल ने पूछा।

"छोड़ो मुझको भैया! मैं माँ से जाकर कह दूँगा।" रामू का कहना था।

"माँ को कह देगा! क्या कह देगा?"

"तुम मुझको पीट रहे हो।"

"और तुमने जो इस लड़की के कंकड़ मारा है?"

"ये तुम्हारी क्या लगती हैं? मैं जिसको चाहूँगा, मारूँगा।"

मंगल इस उत्तर को सुन चकित रह गया। उसके मन में आया कि रामू को पीटे, परन्तु वह सोचने लगा कि जो कुछ रामू ने अब कहा है, किसकी सीख पर कहा है? उसने रामू के कान को छोड़ दिया और स्वयं कुएँ की जगत पर बैठते हुए रामू को कहा, "तुम जिसको चाहोगे, मारोगे?"

"हाँ।" इतना कह रामू घर की ओर चल पड़ा।

मंगल ने उसको आवाज दी, "ओ रामू! ठहरो!"

रामू अपने कान को मल रहा था। उसने माथे पर त्योरी चढ़ाकर अपने बड़े भाई की ओर देखा और बिना उत्तर दिए घर की ओर चलता गया। इस समय तक भूसे की गाड़ियाँ घर के दरवाजे पर पहुँच चुकी थीं। मंगल का चित्त मन्दिर में जाने को नहीं किया। वह वहीं कुएँ की जगत पर बैठा रामू की इस मनोवृत्ति पर विचार करता रहा।

यह क्या हुआ? वह मन में सोच रहा था। इस बात पर विचार करने पर उसको अपने पिता के देहान्त का समय स्मरण हो आया। उसके पिता ने मरने से पूर्व, रामू का हाथ उसको पकड़ाते हुए कहा था, 'मंगल, यह बालक मुझे बहुत प्यारा है। इसको कष्ट न पहुँचे! इसे अपना बेटा मान प्यार करना और पालन-पोषण करना!'

इस बात को एक वर्ष से अधिक हो चुका था। रामू अब चौथी श्रेणी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में पढ़ता था। वह गाँव से एक कोस-भर के अंतर पर नगर के स्कूल में पढ़ने जाया करता था। इस वर्ष कई मासों से, खेत अधिक जोत लेने के कारण, मंगल काम में इतना व्यस्त रहा था कि उसको घर की बातों पर विचार करने का अवकाश ही नहीं मिला था। उसको यह धुन सवार थी कि इस वर्ष इतना रुपया पैदा करे कि एक नया मकान बन जाय और उसमें जाकर रहे। इस कारण रामू की ओर उसका ध्यान ही नहीं गया था। आज उसकी विद्रोहात्मक प्रवृत्ति का दर्शन कर वह गंभीर विचार में पड़ गया। वह अपने पिता की बात का स्मरण कर, उसको अपना बेटा मानता था। अब वह यह विचार कर रहा था कि वह इसको कैसे बिगड़ने से रोके, परन्तु इसके लिए उसको ताड़ना करनी होगी और ताड़ना करने पर माँ क्या कहेगी? वह रामू से बहुत प्यार करती है। माँ के लिए उसके मन में बहुत आदर का भाव था। तो क्या करे? इस प्रकार के विचारों में वह वहीं जगत पर बैठा रह गया। प्रकाश घुसमुसा हो गया था। इस समय शिवालय का पुजारी मन्दिर बन्द कर गाँव को जाते हुए, कुएँ की जगत पर किसी को बैठा देख वहाँ आ गया। समीप आने पर मंगल को पहचानकर पूछने लगा, "मंगल भैया, यहाँ कैसे बैठे हो?"

"पंडित जी, आज सब अन्न सिमट गया है, इस कारण चित्त प्रसन्न तथा हल्का प्रतीत हुआ तो यहाँ एकान्त में बैठ भगवान का धन्यवाद करने लगा था।"

"हाँ, भैया! भगवान का धन्यवाद है कि इस वर्ष उपज बहुत अच्छी हुई है। ऋतु भी अच्छी रही है। तुम्हारे पर ईश्वर की कृपा की चर्चा पूर्ण गाँव में चल रही है।"

मंगल मन में विचार कर रहा था कि यह ईश्वर की कृपा रामू जैसे आचार-व्यवहार के लड़के के रहते रह सकेगी क्या? इससे वह चुप था। इस पर पुजारी ने कहा, "पर भैया एक बात कहूँ? बुरा न मानना!"

"अजी पंडित जी! कैसी बातें करते हैं आप? मैं आपका बहुत आदर करता हूँ। आप मुझसे विद्या में, अनुभव में और आयु में बड़े हैं। आपकी बात का मैं उल्लंघन नहीं कर सकता।"

"मंगल भैया, सारे गाँव में तुम्हारी प्रशंसा हो रही है, तुम्हारा शील-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वभाव, शुद्ध चरित्र और दयावृत्ति सब पर प्रकट हैं। पर भैया, यह रामू तुम्हारे उज्ज्वल नाम को कलंकित किए बिना न रहेगा।''

''क्या किया है, उसने पंडित जी?''

पंडित बृजलाल कुछ कहना चाहता था, परन्तु कह नहीं सका। बहुत विचार कर उसने अपने मन में उठ रहे विचार का संकेत कर दिया, ''भैया, मैं ब्राह्मण हूँ। भगवान ने मुझको कुछ दीर्घ दृष्टि दी है। मैं पत्रा देखता हूँ। हस्त तथा मस्तक की रेखाओं से भविष्य का अनुमान लगाता हूँ, और इतनी आयु में प्राप्त अनुभव के भरोसे संसार की गति को भी पहचानता हूँ। मैं कहता हूँ कि राम को नियंत्रण में रखो। बहुत पढ़ चुका है। अब उसको नित्य अपने साथ खेत में ले-जाया करो और उससे बारह घंटे काम लिया करो। नहीं तो घड़ा चिकना हो जावेगा और फिर पानी भरने योग्य नहीं रहेगा।''

मंगल ने बात समझते हुए भी न समझी और कहा, ''पंडित जी! पहेलियाँ डालने से तो कुछ समझ नहीं आता। स्पष्ट बताइए कि क्या हो गया है?''

''बढ़िया-बढ़िया अन्न खाने से गाँव की आवश्यकता से अधिक कोमल हो गया है वह। अच्छा! जैराम जी की! भैया, तुम समझदार ही हो।''

२

मंगल का पूरा नाम मंगलदास और रामू का पूरा नाम रामदास था। उनका पिता दुर्गादास बहुत समझदार और मेहनती किसान था। अपने जीवन में मेहनत और विचारशीलता के व्यवहार से छोटी-सी जमींदारी को बढ़ाते-बढ़ाते उसने सौ बीघा भूमि कर ली थी। मरते समय उसके तीन बच्चे थे—दो लड़के और एक लड़की। सबसे बड़ा मंगल था। मंगल से पाँच वर्ष छोटी बहिन, सोहनी थी। और रामू अपनी बहिन से दस वर्ष छोटा था। सोहनी का विवाह नगर में ही हो गया था। लड़के का बाप गेहूँ की मंडी में आढ़त की दुकान करता था। दुर्गादास उसके पास अपने खेतों की उपज बेचने के लिए ले जाया करता था। दुकान पर परिचय होने से यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संबंध हो गया। मंगल का विवाह दुर्गादास के मरने से एक मास पूर्व गाँव की ही एक लड़की मोहिनी से हो गया था। मोहिनी का बाप साधारण-सा जमींदार था। विवाह के समय दुर्घटना यह हुई कि मोहिनी की डोली आते ही दुर्गादास को ज्वर आना प्रारम्भ हो गया और वह उसकी जान लेकर ही गया। इससे मंगल की माँ और बहिन मंगल की स्त्री को घर में अपशकुन मानने लगी थीं।

दुर्गादास को मरे हुए एक वर्ष हो चुका था और इस एक वर्ष में मोहिनी बेचारी की काफी दुर्दशा हो चुकी थी। वह घर का सारा काम करती थी। गाय-बैलों को चारा देना, दाना डालना, दूध दुहना, दही मथना, मक्खन निकालना, इस प्रकार का सारा काम वही करती थी। इस पर भी उसकी सास उससे सीधे मुँह बात नहीं करती थी और समय-कुसमय उसे डायन, ससुर को खानेवाली, चुड़ैल, इत्यादि उपाधियाँ मिलती रहती थीं। जब कभी सोहनी मायके में होती तो मोहिनी की दुर्दशा की पराकाष्ठा हो जाती। ऐसा प्राय: होता रहता था। सोहनी कहती, ''मोहिनी! कितनी दूर से आई हूँ! क्या रोटी-पानी भी पूछोगी या नहीं?''

''लाई बहिन जी! अभी लाई।''

''अभी लाई! बड़ा अभिमान हो गया है न तुझे! कंगालों की बेटी राजसी घर में जो आ गई है!''

इतना कहते ही सोहनी और उसकी माँ दोनों रो पड़तीं और सोहनी कहती, ''न तुम हमारे घर आतीं, न मेरे पिता मरते!''

मोहिनी यह सभी कुछ सुनकर भी भीतर-ही-भीतर पी जाती थी। उसने कभी भी अपने पति से अपने कष्ट का वर्णन नहीं किया था कि कहीं उसे भी कष्ट न हो। अत: उससे वह सदैव बहुत ही विनीत और प्रेममय व्यवहार रखती थी। चाहे सोहनी और उसकी माँ उससे ऐसा व्यवहार करती थीं, तो भी गालियों और उलाहनों का उसने कभी उत्तर नहीं दिया था। एक बात उसने की थी, वह यह कि एक दिन उसने चुपके से अपने पति को कहा, ''हमें एक नया घर बनवाना चाहिए।''

''क्यों?''

''भगवान ने धन दिया है सुख भोगने के लिए। मेरी लालसा है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोहनी बहिन के नगरवाले मकान जैसा अपना मकान बनवाएँ और उसमें रहें। आप पलँग पर बैठें, मैं आपके पाँव दबाऊँ। आप सोएँ, मैं पंखा करूँ। वहाँ एक स्नानागार हो, एक हवादार रसोईघर हो, बैठने की अलग बैठक हो, जिससे हमारे बाल-बच्चों को भी अपने बाप की कमाई का सुख-भोग मिल सके।"

"तुम ठीक कहती हो मोहिनी! यह काम कठिन नहीं है। केवल एक वर्ष मेहनत से काम करने की आवश्यकता है। यदि मुझे दस हजार ही मिल जाय तो जैसा तुम चाहती हो वैसा मकान बन जाएगा। पर उतना रुपया जमा करने में तुम्हें भी मेरे साथ खून-पसीना एक करना पड़ेगा।"

"मैं दिन-रात एक कर दूँगी। पर एक बात है। यह बात माँ जी अथवा बहिन को तब पता लगे, जब मकान बनने लग जाए।"

"इसमें क्या बात है?"

"माँ जी पुराने विचार की हैं। वे इसको व्यर्थ का खर्चा समझेंगी। उनके सामने मैं यह न कह सकूँगी कि हमारा चित्त सुख भोगने को करता है।"

मंगल मान गया और उसने अबकी बार चालीस बीघा जमीन में गेहूँ बो दिया। उस अकेले ने दिन-रात एक कर दिया। दस आदमियों के बराबर अकेला काम करता रहा। मोहिनी ने भी अपनी चोटी का पसीना एड़ी तक बहा दिया। इस पर जब सास और ननद ताने देतीं तो वह उन्हें एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देती।

सब कामों और नौकरों को उनका भाग दे-दिलाकर एक सहस्र मन से ऊपर गेहूँ खेतों में डाल दिया गया। भूसा भी दे-दिलाकर दो सौ गाड़ी के लगभग निकला। एक गाड़ी में दस मन भूसा आता था और बाजार में दस रुपए में गाड़ी बिक जाती थी। उसके पास चार बैलगाड़ियाँ थीं और सबकी गिनती-मिनती कर वह यह योजना बना रहा था कि किस प्रकार दो मास में सब भूसा और वर्षा ऋतु के पीछे गेहूँ नगर में बेचने को ले-जा सके। उसका विचार था कि इस फसल से छः-सात हजार रुपए मिल जाएँगे।

खेती से उसे जो रुपए मिलते उन्हें जमा करता रहता था। अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
खाने-पहनने का उसने घर पर ही प्रबन्ध कर लिया था। मोहिनी रात-भर सूत कातती जिससे घर के कपड़े बनते थे। बगिया के कुएँ से एक आड़ निकालकर भूमि का छोटा-सा टुकड़ा सब्जियों-भाजियों के बोने के लिए अलग बना लिया था। शेष गेहूँ, चावल, दाल, घी, दूध, मक्खन और छाछ घर के थे ही। महीनों ही निकल जाते थे और एक पैसे की वस्तु भी बाजार से लेने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी।

जिस दिन फसल कटकर घर पहुँची थी, उस दिन वह अभिमान से झूमता हुआ देवता के मन्दिर में धन्यवाद करने जाना चाहता था, परन्तु रामू के व्यवहार से हतोत्साह हो कुएँ की जगत पर ही बैठा रह गया।

जब मन्दिर का पुजारी उसको यह कह कि 'भैया, तुम समझदार ही हो' चला गया तो वह पुनः विचारमग्न हो गया। बगिया में अँधेरा हो गया, पर उसका विचारसूत्र नहीं टूटा। दो गाड़ियाँ भूसे की और निकल गईं, पर वह अभी भी बैठा था। बार-बार उसके मन में पंडित की यह बात 'घड़ा चिकना हो जाएगा और फिर पानी भरने योग्य नहीं रह जावेगा' आ रही थी।

उसका ध्यान तब टूटा, जब सियार खेतों में घूमते हुए कुएँ की आड़ में अटका पानी पीने के लिए आने लगे। उसने लम्बी साँस ली और घर को चल पड़ा।

घर की ड्योढ़ी में मोहिनी को दीवार के सहारे बैठे अपनी प्रतीक्षा करते देख उसको अनुभव हुआ कि उसे आने में बहुत देर हो गई है। इससे उसे लज्जा का अनुभव हुआ। जब वह ड्योढ़ी में आया तो उसको ऐसा प्रतीत हुआ कि मोहिनी ने एक लम्बी साँस ली है। अँधेरे में वह उसके मुख को देख नहीं सका था। उसने पूछा, "यहाँ खड़ी हो?"

"आप कहाँ रह गए थे? गाड़ीवान ने कहा था कि आपको खेत से आधा घंटा-भर से अधिक हो गया है।"

"हाँ! चलो, भोजन बना है क्या?"

"बना है। पानी यहीं लाती हूँ। आप मुँह धो लीजिए।"

"भीतर क्या है?"

"आप दिन भर की मेहनत कर लौटे हैं, थकावट होगी। भीतर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आज ठीक नहीं है।"

मंगल को सन्देह हो गया। उसने सतर्क हो पूछा, "रामू आया है क्या?"

"उसी की बात तो कह रही हूँ। बच्चा भूल कर देता है। आपको शान्त होकर उसकी बातें सुननी चाहिए थीं।"

"तो उसकी कुछ बात है? पहले वही न सुन लूँ?"

"मैं आपके पाँवों पड़ती हूँ। पहले कुछ शांत हो जाइए।"

इसी समय मंगल की माँ भीतर से निकल आई। आते ही उसने कहा, "क्या सिखा रही हो अपने घरवाले को?"

मोहिनी चुप रह गई। मंगल ने समझा रामू ने घर आकर कुछ कहा है, इससे माँ क्रोध में है। इस कारण उसने माँ से कहा, "माँ! तुम ही बताओ न, क्या हुआ है?"

"इसी डायन से क्यों नहीं पूछ लेते?"

अपनी स्त्री के लिए ये कटु वचन उसने आज पहले दिन ही सुने थे। इस पर भी यह विचार कर कि शायद मोहिनी ने कुछ कह दिया हो, इस कारण उसे सुनने के लिए ड्योढ़ी में रखे तख्तपोश पर बैठ गया—"हाँ, तो माँ, बताओ! इस डायन ने कहा क्या है?"

मोहिनी का पूर्ण शरीर काँप रहा था। वह समझती थी कि माँ का कहना बेटा अवश्य मानेगा। इसका परिणाम उसके लिए अच्छा न होगा। इस कारण वह एक ओर हटकर खड़ी हो गई, जिससे माँ पहले अपनी बात बता ले तो फिर वह भी अपनी बात कहे।

बेटे के मुख से अपनी स्त्री के लिए डायन का शब्द सुनकर उसकी माँ उत्साहित हो कहने लगी, "तुमने रामू को आज पीटा है न?"

"नहीं तो!"

"तो तुममें भी इस डायन की संगत से झूठ बोलने का स्वभाव हो गया है?"

"माँ! मैंने उसको नहीं पीटा। केवल कान मरोड़े हैं।"

"मैंने स्वयं देखा है। उसकी पीठ और गालों पर तुम्हारे तमाचों के निशान बने हैं।"
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुमने स्वयं देखा है माँ?"

"हाँ! हाँ!! हाँ!!!"

"तो माँ! वह किसी अन्य से मार खा आया है और मेरा नाम व्यर्थ में ले रहा है।"

"वह झूठ बोलता है क्या? इतना छोटा बालक झूठ बोलना कैसे सीख गया है? ऐसा प्रतीत होता है कि तुम्हारी बीवी ने तुम्हें उल्लू बना रखा है।"

"माँ, इसका नाम क्यों ले रही हो? इसने क्या किया है?"

"इसने घर का सत्यानाश किया है! यह डायन तुम्हारे बाप को खा गई है!"

मंगल जैसा सीधी बुद्धि का आदमी भी समझ गया कि क्रोध के आवेश में विचारहीनता उत्पन्न हो रही है। इससे उसने माँ की बात का उत्तर नहीं दिया और अपने कमरे में, जिसे कोठरी ही कहा जा सकता था, चला गया। मोहिनी उसके पीछे-पीछे वहाँ जा पहुँची। मंगल वहाँ रखी खाट पर बैठ गया और मोहिनी खाट के नीचे भूमि पर बैठ गई। हरीकेन लालटेन कमरे में जल रही थी। उसके प्रकाश में मंगल ने देखा कि मोहिनी की आँखें रोने से लाल हो उठी हैं। उसने इससे चिन्तित हो पूछा, "क्या हुआ है तुमको?"

"कुछ नहीं! अपने भाग्य का भोग है। मैं नहीं समझ सकी कि मेरा दोष क्या है? सारा दिन यही सोचती रहती हूँ कि कैसे माँ जी को प्रसन्न कर सकूँ?"

"देखो मोहिनी! आज मेरा मन अति विक्षुब्ध हो उठा है। ऐसी पहेलियाँ डालना छोड़ दो। मुझे स्पष्ट बताओ कि क्या हुआ है, जो आज माँ इतने क्रोध में है।"

"मैं सौगन्धपूर्वक कहती हूँ कि मैंने कुछ नहीं कहा। एक घंटा हुआ है कि रामू रोता हुआ आया था और माँ को कह रहा था कि आपने उसको पीटा है। उसने मुख दिखाया था। वह लाल हो रहा था। माँ जी को यह देखकर क्रोध चढ़ आया और मुझे गाली देने लगीं।"

"हर तुमको डायन क्यों कहती हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
167964 Gurukul Kangri University Haridwar

"यह नई बात नहीं है। पिता जी के देहान्त के पीछे से ही मुझको यह उपाधि मिली है। पहले-पहल तो मन को दुःख होता था, अब मैं उन्हें आशीर्वाद मान चुप कर रहती हूँ। माँ की गाली भी आशीर्वाद ही बन जाती है।"

R 089.9143 GUR-M

"तो फिर तुम रो क्यों रही हो?"

"मैं समझ रही थी कि रामू को आपने ही पीटा है। वह कोमल बालक है। उस पर आपके इन दृढ़ हाथों के प्रहार को विचार कर रोना आ गया था।"

"पर मैंने उसको पीटा नहीं। केवल कान मरोड़ा था। उसने कुछ ऐसी बातें कही थीं, जिनके कारण वह पीटा जाना चाहिए था, परन्तु मैंने केवल धमकाकर ही छोड़ दिया था।"

"तो यह तो बहुत ही बुरी बात हो गई है जो उसने झूठ बोला है। झूठ बोलना तो पाप है न?"

मंगल को आज ज्ञात हुआ कि घर में भारी संघर्ष चल रहा है। उसकी बीवी से माँ अत्यन्त घृणा करती है। पर अब तो वह यह सोच रहा था कि रामू आवारा क्यों हो गया है?

रात उसने भोजन नहीं किया। माँ ने भी नहीं खाया और मोहिनी तो पहले भी कभी, जिस दिन माँ अधिक क्रुद्ध होती थी, भूखी ही सो रहती थी।

अगले दिन, बिना खाये-पिये खेत में काम के लिए जा सकना कठिन समझ, मंगल ने रात की बासी तीन रोटियाँ खाईं और ताजी लस्सी का एक लोटा पिया। मोहिनी बहुत प्रातःकाल ही उठी थी और शौचादि से निवृत्त हो, हाथ-मुख धो, दही बिलो, लस्सी बना लाई थी। पश्चात् लाठी कन्धे पर रखकर मंगल खेत में से भूसा ढुलवाने के लिए चल पड़ा। रामू भी रोटी और लस्सी खा-पी, किताबों का बस्ता कंधे पर से लटका, स्कूल जाने के लिए तैयार हो गया। जब मंगल बाहर निकला तो रामू भी बाहर आ गया था। रामू को देख मंगल ने पूछ लिया, "रामू! किसने मारा था तुमको?"

रामू का दिल काँप उठा। उसका बोला हुआ झूठ उसके सिर चढ़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसको भयभीत करने लगा था। उसको चुप देख मंगल ने कहा, "क्यों बच्चू! बोलते क्यों नहीं? किसने मारा था तुमको?"

रामू को एक बात सूझी। उसने जोर से आवाज दी, "माँ! माँ! देखो भैया मारते हैं!" इतना कहता हुआ वह माँ के कमरे में भागकर चला गया। तुरन्त ही माँ बाहर चली आई और रामू को आगे सरकाकर बोली, "मार डालो न इसको! बेबाप का बेटा है। वह डायन इसके बाप को लेकर अब इसके पीछे पड़ गई है!"

मोहिनी घर के पीछे पशुशाला में गाय और बैलों को भूसा और दाना डालने गई हुई थी। उसके पास समय ही नहीं था कि इस प्रकार के झगड़े में पड़े। दाना-पानी दे बैलों को खेत में भेजना था। भूसे को उठाकर घर लाने का काम अभी बहुत पड़ा था। गउओं को दाना-पानी दे दूध दुहना था और फिर दूध को को गरम करना था। मक्खन जिसे वह पहले ही निकाल चुकी थी, उसे गरम कर घी बनाना था। इतना करने के पश्चात् स्नान करना और कपड़े धोने का काम था। भूसा तो माँ को रखवाना होता था और उसे रोटी बनानी होती थी। पीछे वह रोटी या स्वयं, या किसी कामे के हाथ खेत में पति के लिए भेजती थी। माँ को रोटी खिला और स्वयं खाकर एक घंटा-भर आराम कर समय मिल सकता था।

आराम करने के पश्चात् वह चर्खा कातती थी। इस समय यदि भूख और प्यास लग आती तो एक रोटी खाकर लस्सी का गिलास पी लेती। जब सायंकाल हो जाती और गायें और बैल आने लग जाते तो उनके दाना-पानी का प्रबन्ध और दूध दुहने का काम उसे करना होता। इस प्रकार सूर्यास्त हो जाता। तब मंगल भी आ जाता था और मुख-हाथ धोकर दिन-भर के परिश्रम से थककर चूर हुआ भूखे बाघ की भाँति खाने को जुट जाता था।

मंगल ने जब इस प्रकार माँ को अकारण गाली देते सुना तो वह भौंचक्का हो उसका मुख देखता रह गया। जब माँ रामू को आगे सरकाकर यह कह रही थी कि मार डालो इसे तो वह उसकी इस दुःखद मनोवृत्ति को देखकर मुँह लटकाए हुए खेत की ओर चल पड़ा। जाते-जाते उसने माँ को कहते सुना, "मार डाल मुझको!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूसा ढोने के लिए बैलगाड़ी अभी खेत को नहीं गई थी। इस कारण वह बगिया में मन्दिर के सामने जा पहुँचा। पुजारी फूल तोड़ने फुलवारी में गया हुआ था। मंगल जूता उतारकर मन्दिर में गया और मूर्ति के सामने नन्दी के समीप बैठकर मन में उठ रहे विचारों को समझने का यत्न करने लगा।

पुजारी जब आया और उसने मंगल को इस प्रकार विचारमग्न देखा तो विस्मय में खड़ा रह गया। पश्चात् उसने फूलों की भरी टोकरी को मन्दिर की चौखट के बाहर रखा और मंगल के सामने बैठ पूछने लगा, "मंगल भैया! किस गंभीर विचार में बैठे हो?"

"पंडित जी! आज माँ ने कहा है कि मैं औरत का गुलाम हूँ। अब मैं बैठा सोच रहा हूँ कि मैं ऐसा हूँ अथवा नहीं?"

मंगल की मोटी बुद्धि में यह बात आ नहीं रही थी। वह यह विचार कर रहा था कि मैंने कौन-सी बीवी की दासता की है जो माँ ने मुझे यह उलाहना दिया है? पंडित मंगल की ओर देखता हुआ मुस्करा रहा था। उसके मुस्कराने पर मंगल विस्मय में उसकी ओर देखने लगा। आखिर पंडित ने मुख खोला। उसने पूछा, "मंगल भैया! भूसा कितना रह गया है खेत में?"

"अभी पहली चार गाड़ी आई हैं। दो सौ गाड़ी के लगभग कुल होंगी।"

"तो भैया, जल्दी करो। वर्षा के पहले भूसा घर लाना ही नहीं, प्रत्युत बेच डालना होगा। जिस मेहनत और लगन से तुमने पिछले छः मास में काम किया है, सारा गाँव उसका साक्षी है। मैं तो यह विचार कर रहा हूँ कि तुम्हारे पास अपनी माँ की बात सुनने को समय ही कहाँ है?"

"पंडित जी! मेहनत तो की है, पर उसका फल मिलने से पूर्व ही उसमें विष घोला जा रहा है। इससे उत्साह भंग हो रहा है।"

"ओ भोले मंगल! देखो, हमारे गाँव में तुम होगे तो सब गाँववालों को प्रसन्नता होगी। मैं सत्य कहता हूँ कि तुम्हारा उत्साह देखकर गाँववालों की छातियाँ चौड़ी हो जाती हैं। भैया, पुरुषों को इन औरतों की बातों में न पड़ना चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर मैं जोरू का गुलाम हूँ क्या?"

"अरे हो तो बुरा क्या है? मैं तो भैया, पंडिताइन की चरणरज सिर चढ़ाऊँ तो अपने को धन्य मानूँ! कठिनाई तो यह है कि वह पाँव छूने ही नहीं देती।"

इससे मंगल की मुस्कराहट निकल गई। वह बोला, "वह तुमको अपने पाँव छूने ही नहीं देती?"

"हाँ भैया! मैं जब प्रातः स्नान कर घर जाता हूँ और पंडिताइन लस्सी का भरा लोटा जिस पर एक गुप्फा मक्खन का तैर रहा होता है, पीने को देती है तो गद्‌गद हो उसका धन्यवाद करता हूँ। मेरा धन्यवाद सुनकर वह बेचारी लज्जा के मारे भूमि में गड़ी जाती है। जानते हो, तब वह क्या कहती है? 'सौ वर्ष जिये मंगल चौधरी और उसकी बहू मोहिनी! यह सब उनकी ही कृपा है!'....

"मैं मंगल चौधरी को तो जानता नहीं, मेरे लिए तो पंडिताइन ही अन्नपूर्णा देवी है। भैया, उस एक लोटे-भर लस्सी के लिए तो मैं जन्मभर उसके पाँव दबाने को तैयार हो जाता हूँ। पर वह कह देती है—'सौगन्ध है मेरे सिर की, जो मेरे पाँव को छुआ!'....

"उस लस्सी को विवश हो गटगट पी जाता हूँ और अपनी श्रद्धा-भक्ति को अपने मन में ही संचय करता रहता हूँ।"

"पर पंडित जी महाराज! यहाँ तो बात ही उल्टी है। वह मेरे पाँव दबाती है, मेरे लिए खाना पकाती है, मेरे कपड़े साफ करती है और प्रत्येक प्रकार का सुख पहुँचाती है, परन्तु मैं उसके लिए कुछ भी नहीं करता।"

"ठीक है, ठीक है। यह लो फूल और चढ़ाओ देवता पर और हाथ जोड़कर देवों के देव महादेव से याचना करो कि वह तुम्हारे घर में सूर्य-जैसा तेजस्वी पुत्र दे।"

मंगल को पुत्र की बात सुनकर लज्जा आ गई। वह अभी सोच ही रहा था कि पुत्र होने से क्या होगा कि पुजारी ने टोकरी में से कुछ फूल लेकर उसके हाथ में पकड़ा दिए और कहा, "आओ भैया!"

दोनों खड़े हो गए और देवता की ओर मुख किए आँखें मूँद प्रार्थना करने लगे। पुजारी शिव-स्तोत्र पढ़ता रहा और [illegible] पश्चात् देवता पर फूल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चढ़ा, हाथ जोड़, आँखें मूँद, धीरे-धीरे मानो देवता के कानों में कह रहा था, "भगवन्! शीघ्र मंगल भैया के घर चाँद-जैसा सुन्दर, सूर्य-जैसा ओजस्वी, कुबेर-जैसा धनी और वरुण-जैसा उदार पुत्र हो!"

जब वह अपनी प्रार्थना कर चुका तो मंगल की ओर देखने लगा। वह अब भी आँखें मूँदे हाथ जोड़कर देवता की ओर मुख किए श्रद्धा के भाव में खड़ा था। पुजारी ने कहा, "भैया मंगल, अब खेत में जाने का समय हो गया है।"

मंगल ने आँखें खोलीं और विस्मय में पुजारी की ओर देखकर पूछा, "बस?"

"तो और क्या चाहते हो?"

"पंडित, तुमने अपने लिए पुत्र नहीं माँगा?"

पंडित खिलखिलाकर हँस पड़ा। बोला, "मैं तो बूढ़ा हो गया हूँ। अब पुत्र क्या होगा और फिर उसको क्या करूँगा? न घर है न घाट। जाओ भैया, दिन चढ़ रहा है।"

३

उस सायं रामू स्कूल से नहीं लौटा। जब मंगल सायंकाल घर आया तो मोहिनी ने बताया, "रामू स्कूल से नहीं लौटा।"

"सोहनी के घर रह गया होगा।"

"मैंने माँ जी से पूछा था। उन्होंने कहा है, 'उसका यहाँ कौन है? किसके पास आएगा?' "

"तो इसका अर्थ यह है कि माँ ने उसको वहीं रहने को कह दिया है।"

"है तो यही, पर आप माँ से पूछ तो लें!"

मंगल माँ के कमरे के बाहर जाकर बोला, "माँ! रामू नहीं आया क्या? कह गया है वह तुमको कुछ?"

"कह नहीं गया। पर मैंने उसे कह दिया है कि कुछ दिन बहिन के घर ही रह ले।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

"कब तक?"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जब तक तुम्हारी बीवी का तुम पर से जादू का प्रभाव हटे नहीं। यहाँ तो उसे पीटा ही जाना है।"

"माँ! तुम कैसी बातें करती हो?"

"बेटा! ये बाल धूप में सफेद नहीं किए। सब समझती हूँ।"

"तो माँ, फिर हमें पृथक् घर बना लेने दो।"

"यही तो वह चाहती है!"

"कैसे जानती हो कि वह चाहती है? उसने किया क्या है?"

"उसी ने तो तुमसे पिटवाया है उसे!"

"और कुछ?"

"तो यह क्या कम है? अब मुझे पिटवाएगी क्या?"

मंगल समझ गया कि और बात करना व्यर्थ है। वह जानता था कि न तो उसने रामू को पीटा है और न ही वह माँ को कभी पीट सकता है। इस कारण माँ के मन की प्रतिक्रिया को समझ न सकने से, चुपचाप मुख लटकाए हुए अपने कमरे में लौट आया और हाथ-मुँह धोकर रोटी खाने बैठ गया। इस समय तक मोहिनी माँ को रोटी दे आई थी। मंगल ने पूछा, "माँ ने रोटी खाई है?"

"खा रही हैं।"

"तो तुम भी खा लो न!"

"आप खाइए, पीछे मैं भी खा लूँगी। यह पेट जब तक साथ लगा है, खाना कभी छूट सकता है?"

"तो यह बताओ, माँ तुम्हारे विरुद्ध इतनी क्यों है?"

मोहिनी ने आँखें नीची किए हुए कहा, "मैं कुछ नहीं जानती, मेरे भाग्य ही ऐसे हैं। मैं निर्धन की लड़की हूँ, इस कारण माँ जी को मुझसे घृणा है।"

इतना कहते-कहते मोहिनी की आँखें डबडबा आईं। मंगल भोजन करते हुए और कुछ नहीं बोला। जब वह भोजन कर चुका तो मोहिनी ने अपने लिए भोजन परस लिया। मंगल ने अपनी खाट पर बैठे-बैठे कहा, "जीवन का मजा किरकिरा हो गया है। बहुत यत्न से खीर बनाई थी, मालूम होता है कि इसको कुत्ता ही खाएगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहिनी ने खाते हुए कहा, "छोड़िए इस बात को। मेरा कहा मानिए। कल नगर चले जाइए। वहाँ भूसा बेचने का प्रबंध कर आइए और आते हुए रामू को साथ लेते आइए।"

"उसने झूठ बोला है। मैंने उसको पीटा नहीं, इस कारण वह मेरे साथ नहीं आएगा।"

"फिर भी आपको जाना चाहिए।"

"अच्छी बात। तुम कहती हो तो जाऊँगा। पर कल नहीं, तीन-चार दिन पीछे जाने का प्रबंध हो सकेगा। आज चालीस गाड़ियाँ भूसा घर आ गया है। तीन-चार दिन में सब भूसा सिमट जाएगा। गाड़ियाँ खाली हो जाएँगी। बाद में नगर को ले-जाने का प्रबंध करूँगा।"

मंगल माँ का बहुत आदर करता था, परन्तु जो कुछ उसने पिछले दो दिन में देखा था, वह उसको चकित करने के लिए बहुत था। जेठ का आरम्भ हो गया था और काम केवल प्रातः और सायंकाल हो सकता था। इस पर भी सब किसान अपना-अपना भूसा और अनाज गाह, छाँट और फूँक अपने-अपने मकानों में रख रहे थे। कामों को काम की मजदूरी अनाज और भूसे के रूप में मिल रही थी। इस समय सबका मन प्रसन्नता से भरा हुआ था।

मंगल का काम करने में कामों को बहुत प्रसन्नता होती थी। उसने मजदूरी देने में कभी कंजूसी नहीं की थी। काम डाँटकर लेता था। स्वयं उनके साथ बैठकर काम करता था और फिर मजदूरी दिल खोलकर देता था। गाँव के लोग भी उसको फूलता-फलता देखकर प्रसन्न होते थे। वे जानते थे कि विपत्ति के समय वह सबकी सहायता करने में संकोच नहीं करता। उसका बलिष्ठ शरीर, सरल स्वभाव और उदार हृदय देखकर गाँव के लोग उसको गाँव की चीज समझते थे।

भूसा लगभग सिमट गया था। दोपहर के समय कामे आम की बगिया में आकर पेड़ों की छाया में सो जाते थे। आजकल मंगल भी दोपहर को घर चला जाया करता था, और सायं चार बजे से रात के आठ बजे तक फिर काम करता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्रथा के अनुसार भूसा सिमट जाने पर मंगल के घर सब कामगारों

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को और गाँव के अन्य बिरादरी के लोगों को भोज दिया जाता था। भोजन के एक दिन पूर्व वह नगर जाकर रामू को ले-आना चाहता था। उस दिन प्रातःकाल उठकर और स्नानादि से निवृत्त होकर वह नगर जाने के लिए तैयार हो गया।

"माँ!" उसने माँ के सामने जाकर आवाज दी, "मैं रामू को लेने जा रहा हूँ।"

"क्यों, क्या जरूरत पड़ गई है उसकी?"

"कल घर में न्योता है। उसके बिना यह कैसे हो सकता है?"

"रहने दो उसको। यहाँ आएगा तो पीटा ही जाएगा।"

"कौन पीटेगा उसे? माँ, तुम्हें मेरा विश्वास नहीं आता, क्यों? उससे मेरे सामने पूछो। देखूँ, कैसे कहता है कि मैंने उसको पीटा है?"

"उसके तो तुम्हें देखकर प्राण सूख जाते हैं। तुम्हारे सामने कैसे कहेगा?"

"देखो माँ! मैंने उसको नहीं पीटा और मैं उसको लेने जा रहा हूँ। कल वह यहाँ रहेगा और फिर जो चाहे करना।"

"मैं तो यही कहती हूँ कि उसे बुलाने की कोई आवश्यकता नहीं।"

फिर भी मंगल नगर में गया और सोहिनी के ससुर की दुकान पर जा खड़ा हुआ।

"आओ मंगल भैया! कैसे हो? अबके उपज कैसी है? तुम्हारी माँ ठीक है?"

"हाँ लाला जी! सब ठीक है। मैं आया था कि पिछला हिसाब साफ कर लूँ और आगे के लिए माल भेजना आरम्भ कर दूँ।"

"हाँ-हाँ, बैठो न!" जब मंगल बैठ गया तो लालाजी ने दुकान के मुनीम को आज्ञा दी कि मंगल के पिछले हिसाब का पर्चा बना दो। मुनीम ने बही खोली। मंगल के पिता दुर्गादास का पन्ना खोला और एक खाली कागज पर हिसाब लिख दिया। मंगल पढ़ा-लिखा नहीं था। इस कारण पर्चा बन जाने पर मुनीम को ही उसे समझाना भी पड़ा। उसने बताया, "देखो मंगल चौधरी जी, पिछले कार्तिक में हिसाब किया गया था। उसका यह ब्यौरा है—एक हजार दो सौ अस्सी रुपए आपके जमा थे। दो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौ मन आपकी मक्की आई। उसकी कीमत छह सौ रुपया। तिलहन पचास मन। उसकी कीमत दो सौ रुपया। अलसी साठ मन। उसकी कीमत तीन सौ रुपया। गुड़ सौ मन। उसकी कीमत चार सौ रुपया। इस प्रकार कुल जमा हो गया दो हजार सात सौ अस्सी रुपया। खर्चे की तरफ पचत्तर रुपए आढ़त के और सत्ताइस रुपए आठ आने तुलवाई के और इतना ही धर्मार्थ। शेष छब्बीस सौ रुपया आपका जमा है।''

''अच्छा तो लाला जी, दो हजार रुपया इसमें से दे दीजिए।''

''दो हजार! क्या करोगे इसे?''

''मेरा विचार है कि एक पक्का मकान बनवाऊँ।''

''क्या करोगे मकान को? पहले मकान को क्या हो गया है?''

''वह तो है ही। उसे गोशाला बना दूँगा। उसमें गउएँ रखकर घी का व्यापार करूँगा।''

''हमारा विचार है,'' लाला जी ने माथे पर त्योरी चढ़ाकर कहा कि ''इसमें तुम्हें घाटा ही रहेगा। घी का निर्माण फालतू समय में तो ठीक है, पर लाभ के विचार से ठीक नहीं रहेगा।''

''मेरा विचार तो इससे उल्टा है। जितनी मेहनत हम लोग खेतों में करते हैं, यदि उसका एक अंश-मात्र भी दूसरी ओर कर सकें, तो लाभ हुए बिना नहीं रहेगा।''

''मंगल भैया! हमें तुम्हारी बात समझ नहीं आ रही।''

''मुझे शौक है। मैं पढ़ा-लिखा तो हूँ नहीं, इससे अपने मन की बात आपको समझा नहीं सकता। परन्तु मैं इसे ठीक मानता हूँ। मेरी इच्छा है कि आपके नए मकान जैसा मैं भी एक मकान बनवा लूँ और भगवान की कृपा बनी रही तो जीवन में कुछ सुख भोग सकूँ।''

''मंगल! तुम नहीं जानते। देहात में एक तो ऐसा मकान बना सकना ही असम्भव है। परन्तु यदि बन जाए तो उसको रख सकना ही कठिन है। और रख भी सकोगे तो इतना खर्च बैठेगा कि दो वर्ष में सब खेती-बाड़ी बिक जाएगी।''

''आपकी इस सुमति पर मैं आपका धन्यवाद करता हूँ। पर मेरी छोटी बुद्धि में यह बात समा गई है कि मुझे अपने इतने बड़े परिश्रम के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फल में सुख भोगने का अधिकार है।''

''तो ठीक है। पर रुपया तो दो-तीन सौ कहो तो दिलवा दूँ। अधिक तो नहीं मिल सकेगा।''

ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। रुपए का टोटा कभी नहीं हुआ था। यह ठीक है कि उसने या उसके पिता ने कभी रुपया अग्रिम नहीं लिया था, परन्तु वह यह जानता था कि आढ़त की दुकानों का यह नियम है कि माल जब दुकान पर पहुँच जाए तो उसके आधे दाम तक रुपया अग्रिम मिल जाता था। इस अवस्था में तो माल कभी का बिक चुका था।

''बात यह है कि मकान की नींव मैं अभी खुदवा देना चाहता हूँ। मकान वर्षा के पीछे आरम्भ होगा। परन्तु नींव खुदवाने के पूर्व उसका नक्शा बनवाना चाहता हूँ। और यह सब काम दो-तीन सौ रुपए से नहीं हो सकेगा।''

लाला जी कुछ काल तक विचार कर बोले, ''ठीक कहते हो तुम मंगल! पर तुम जानते हो कि यह सम्पत्ति तुम्हारे अकेले की नहीं है। तुम्हारे बाप की सम्पत्ति का कोई और भी हकदार है। मकान पर इतना धन व्यर्थ लगा देने से पहले उसकी राय भी तो लेनी चाहिए! मुझे मालूम है कि वह इससे सहमत नहीं है।''

जैसे किसी पर वज्राघात हुआ हो, वैसे मंगल सन्न हो बैठा रह गया। उसकी मोटी बुद्धि में भी बात कुछ-कुछ स्पष्ट होने लगी थी। कितनी ही देर तक वह लाला जी का मुख देखता रहा। उसके मन में तूफान उठ रहा था, परन्तु उसकी रूपरेखा बन नहीं पाती थी। वह उन अस्पष्ट धुँधले भावों को व्यक्त करने के लिए शब्द ढूँढ रहा था। उसे चुप बैठा देखकर लाला जी ने कहा, ''भैया, क्षमा करना। मुझे यह कटु कर्त्तव्य पालन करना पड़ रहा है, पर एक नाबालिग के अधिकारों की रक्षा का उत्तरदायित्व मुझ पर आ पड़ा है।''

बात कुछ स्पष्ट हुई और मन में उठ रहे तूफान का रूप दिखाई देने लगा। इस पर भी उसको प्रकट करने की शक्ति मंगल में नहीं थी। उसने केवल यह पूछा, ''यह उत्तरदायित्व किसने आप पर डाला है?''

''जो डालने का अधिकार रखता है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंगल उठ पड़ा और बोला, "जैसे आपकी इच्छा! आप मेरे पूज्य हैं। मैं आपकी बात का उल्लंघन नहीं कर सकता। मुझे दो-तीन सौ रुपए भी नहीं चाहिएँ।...कल हमारे यहाँ न्योता है। बहिन को लेने आया हूँ। आप आज्ञा दे दीजिए, फिर घर होता हुआ उसको लेता जाऊँगा।"

सोहिनी के ससुर का नाम नत्थूमल्ल था। दो-तीन पीढ़ी पहले ये लोग भी गाँव के रहनेवाले थे। नत्थू के बाबा ने अपने खेतों का माल बेचने के लिए नगर में दुकान की थी और उसमें उन्नति होते-होते अब लाखों का कारोबार चलता था।

नत्थूमल्ल के लड़के और सोहनी के पति का नाम शंकरदास था। वह कुछ अंग्रेजी-हिन्दी पढ़ा था। इससे उसमें अहंभाव की मात्रा अपने अन्य घरवालों से कुछ अधिक ही थी। लाला नत्थूमल्ल यह जानते थे। इस कारण कहने लगे, "अपने बहनोई से भी पूछ लेना। जैसा वह कहे वैसा ही करना।"

मंगल दुकान से उठकर बहिन के घर की ओर चल पड़ा। आज उसका मन बहुत उदास हो रहा था। वह ऐसा अनुभव कर रहा था मानो उसको किसी ने आसमान से उठाकर भूमि पर पटक दिया है। एक क्षुद्र प्राणी की भाँति वह बहिन के मकान के दरवाजे पर खड़ा हो गया। जब उसने कुंडा खटखटाया तो ऊपर खिड़की में से सोहनी की सास ने देखकर ऊँचे से आवाज दी, "अरी ओ सोमा!" यह सोहनी का ससुरालिया नाम था—"अरी ओ सोमा! नीचे देखो, वह आया है।"

मंगल को इस वाक्य में एक नई ध्वनि का संचार प्रतीत हुआ। उसको ऐसा अनुभव हुआ, जैसे उसकी श्रवणशक्ति बेकाम हो गई है। साधारण-सी बात भी उसको बुरी प्रतीत होने लगी है। वह नत्थूमल्ल और सोहनी की सास के कहने पर विचार कर ही रहा था कि सोहनी नीचे आ गई। उसने दरवाजा खोलकर पूछा, "भैया, क्या है?"

इस सूखे प्रश्न को सुन उसने भी सीधी मतलब की बात कही, "तुमको और रामू को लेने आया हूँ। कल फसल कट जाने की खुशी में घर पर सबको न्योता है।"

"अच्छी बात। हम सब आवेंगे। तुम्हारे जीजा जी भी आवेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो मेरे साथ नहीं चलोगी ?"

"नहीं! वे मना कर गए हैं।"

"रामू ?"

"वह स्कूल गया है। वह भी मेरे साथ आएगा।"

मंगल ने इससे अधिक कुछ न कहा। न सुनने की उसमें सामर्थ्य रही थी। उसकी आँखें तरल होने लगीं तो वह यह कहकर लौट पड़ा—"अच्छा, आ जाना। मेरी तरफ से जीजा जी को आने को कह देना।"

४

मंगल जब नगर में आया करता था तो अनेकों काम करने को होते थे। आज भी गाँव से आते समय बहुत-कुछ सोच-विचार कर आया था। परन्तु जाते समय सब भूल गया। उसके मन में यही धुन सवार थी कि शीघ्र नगर से निकल किसी एकान्त स्थान में चला जाऊँ। कहीं ऐसा न हो कि मेरे आँसू पहले ही निकल जाएँ और सड़क पर चलते-फिरते लोग उन्हें देख लें।

अभी मध्याह्न के खाने का समय भी नहीं हुआ था कि वह घर जा पहुँचा। उसकी माँ और स्त्री दोनों उसको समय से पहले आया देख, विस्मय में कारण पूछने चली आईं। माँ ने कहा, "मैंने कहा न था कि रामू नहीं आएगा!"

"माँ! वह कल सोहनी के साथ आएगा। साथ जीजा जी भी आएँगे।"

माँ को इससे सन्तोष हुआ और प्रसन्नचित्त अपने कमरे में चली गई। परन्तु मोहिनी अपने पति के शब्दों को नहीं सुन रही थी। वह उसके सूखे हुए चिन्तित मुख को देख रही थी। उसको उसके हृदय के दुःख का आभास उसके मुख पर दिखाई दे रहा था। वह माँ के चले जाने पर बोली, "आइए, भीतर आ जाइए।"

मंगल भीतर गया, तो उसने अपने आँचल से उसके पाँव पर पड़ी धूल को झाड़ना आरम्भ कर दिया। पश्चात् उसको खाट पर बिठाया और स्वयं भूमि पर बैठ पाँव दबाते हुए कहा, "आपके मुख से ऐसा प्रतीत होता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कि कोई भयंकर बात हो गई है।"

"हाँ। इतना कुछ हो गया है कि मेरे-जैसे के मस्तिष्क में समा नहीं सका।"

"मुख सूख गया है। मैं कहती हूँ कि पहले थोड़ी-सी लस्सी, मक्खन और रोटी खा लीजिए। फिर सुनूँगी।"

सायंकाल को मंगल पुजारी के घर जा पहुँचा। मंगल ने जब उसे निमंत्रण दिया तो पुजारी ने गद्गद होकर स्वीकार किया। इस पर मंगल ने कहा, "पंडितानी को भी लेते आना, कुछ काम में मोहिनी का हाथ बँटा देगी। और फिर यह न्योता अन्तिम प्रतीत होता है।"

"क्यों?" पुजारी ने आश्चर्य में पूछा।

"हम देहातियों का पेट छोटा है न! अधिक पच नहीं सकता।"

"तो बड़ा पेट किसका है? मैं तो सात रोटियाँ एक ही बार में खाता हूँ।"

"नगरवालों का पेट निःसन्देह बड़ा होता है। लाखों कमाते हैं और फिर डकार जाते हैं। बाहर किसी को पता भी नहीं चलता। इस वर्ष एक हजार मन गेहूँ पैदा किया है और वह हमारे पेट में रड़कने लगा है।"

"ओह! तो यह बात है! भैया मंगल, क्या माँ ने कुछ कहा है?"

"कल पता चल जाएगा। रामू अपना भाग माँगेगा। माँ भी पृथक् गुजारे के लिए कुछ माँगेगी। और मंगल और मोहिनी कोल्हू के बैल की भाँति अगला चक्कर काटने में लग जाएँगे।"

"भैया मंगल! पृथक् हो जाओ अपने भाई से।"

"यह कैसे हो सकता है! माँ से बेटा कैसे पृथक् हो सकता है?"

"है तो यह अनहोनी बात, पर एक बात तुम समझ नहीं रहे। माँ और बेटे में सम्बन्ध-विच्छेद नहीं हो रहा। प्रत्युत यह तो भाई-भाई का सम्बन्ध टूट रहा है। माँ और बेटे में तो यह हो रहा है कि एक बेटे पर दूसरे को अधिक माना जा रहा है।"

"मैं इतनी बारीकी में नहीं जाना चाहता, न मुझमें बाल की खाल निकालने की योग्यता है। मैं तो पंडित जी! यह जानता हूँ कि चौधरी दुर्गादास के खेतों का अन्न सिमट जाने के अवसर पर न्योता कल अन्तिम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगा। इस कारण आना और खूब खाना!"

पंडित की कही बात गाँव-भर में फैल गई। घर-घर चर्चा होने लगी—दुर्गादास की भूमि का बँटवारा होगा। रामू की भूमि अधिया पर दी जाएगी। मंगल भैया की कमाई रामू को जाएगी। रामू नाबालिग का भाग मंगल हड़प कर जानेवाला था। सोहनी के ससुरालवालों ने ऐसा होने नहीं दिया।

अगले दिन तक गाँव के बच्चों तक को विदित हो गया कि मंगल और रामू में बँटवारा होगा। इस चर्चा के होने पर भी मंगल के आँगन में भोज का प्रबन्ध हो रहा था। आटे का हलुवा, जलेबी, पूरी, काशीफल और भिंडी-तोरी की भाजी, साथ पीने को छाछ और खाने को मक्खन। मंगल के खेतों में पचास से ऊपर स्त्री-पुरुष काम करते थे। उनके बाल-बच्चों तक को न्योता था। इस प्रकार दो सौ के लगभग के खाने का प्रबन्ध था। जब गाँव के लोग भोजन कर रहे थे, तो अपनी फिटन गाड़ी में शंकर, उसकी बीवी सोहनी और रामू आए। साथ ही दूसरे टाँगे में शंकर का पिता नत्थूमल्ल भी आ पहुँचा।

आँगन में सौ की पंगत को खाते हुए देख, नत्थूमल्ल के माथे पर बल पड़ गए। जब मंगल उनके स्वागत के लिए आगे बढ़ा, तो नत्थूमल्ल ने कह दिया, "यह क्या वाहियाती है! पाँच सौ रुपया बैठे-बैठे खर्च हो गया होगा! इससे तो पाँच-पाँच सेर अन्न दे देते तो ठीक रहता।"

खानेवालों में प्रायः सब जानते थे कि वे लोग किस कारण आए हैं। जब एक ने समधी के माथे पर त्योरी चढ़ी देखी, तो उसने डकार लेते हुए कह दिया, "सूम जाए! सख़ी का भला हो!"

इस पर एक और ने कह दिया, "भगवान सख़ी के साथ है।"

छोटी जात के काम करनेवाले, सब-के-सब मंगल के साथ अन्याय होता अनुभव कर रहे थे। जाटों में कुछ ऐसे थे जो मंगल से ईर्ष्या और डाह करते थे। इससे उसकी भूमि बँटती देखकर प्रसन्न थे। इस पर भी वे खुले में कुछ नहीं कहते थे।

पंगत में से गुजरते हुए शंकर ने कहा, "मंगल भैया, इन लोगों को शीघ्र ही विदा कर दो। पिता जी ने शीघ्र ही लौट जाना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भैया, ये खाकर ही जाएँगे न?"

"नहीं खाया जाता तो उठाकर ले जाएँ।" शंकर ने ऊँचे में कहा।

इसको एक कहार सुन रहा था, जो दुर्गा चौधरी के समय से मंगल के घर में काम-काज करता था। वह बोल उठा, "जमाई बाबू! तुम्हारे बाप के घर का नहीं खा रहे। अपनी मजदूरी में से खा रहे हैं।"

इस पर शंकर घूरकर त्योरी चढ़ाकर उसकी ओर देखने लगा। उस कहार ने फिर कहा, "कभी जमींदारी की भी है? इसे करोगे तो जानोगे!"

इस समय मंगल ने हाथ जोड़कर कहा, "चाचा कर्मू! चुप रहो। ये जमाई बाबू हैं। हमारे पूज्य हैं।"

मंगल ने हाथ जोड़कर शंकर को कहा, "भैया, ये गँवार आदमी हैं। इनकी बात पर क्रोध नहीं करना।"

मंगल शंकर को अपने साथ कमरे में, जहाँ उसका पिता और रामू जा चुके थे, ले गया। कमरे में जाकर शंकर ने कहा, "पिता जी, इस झगड़े को शीघ्र निबटा दो। मेरा तो यहाँ नाक में दम हो रहा है।"

"हाँ, तो मंगल! इधर आओ, बैठो।" कमरे में दरी पर चाँदनी बिछी थी। तकिए लगे थे।

बैठते हुए नत्थूमल्ल ने कहा, "हम यहाँ एक विशेष प्रयोजन से आए हैं।"

"हाँ लाला जी! यह तो कल ही मेरी समझ में आ गया था।"

नत्थूमल्ल के एक ओर शंकर और रामू बैठ गया। इनके पीछे रामू की माँ और घूँघट काढ़े सोहनी बैठी। नत्थूमल्ल के दूसरी ओर केवल मंगल ही बैठा था। कमरे के दरवाजे के बाहर गाँव के लोग खड़े झाँक-झाँककर भीतर देख रहे थे।

मंगल के कहने पर नत्थूमल्ल ने कहा, "तो हमारा विचार है कि बँटवारा कर लिया जाए। फिर चाहे तुम मकान बनवाओ, चाहे महल।"

"मुझको स्वीकार है।" मंगल ने उत्तर दिया।

उसके मुख से अभी ये शब्द निकले ही थे कि कमरे में बगिया के शिवालय का पुजारी घुस आया। नत्थूमल्ल और शंकर उसकी ओर प्रश्न-भरी दृष्टि से देखने लगे। परन्तु पुजारी ने हाथ जोड़कर नत्थूमल्ल को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आशीर्वाद देते हुए कहा, ''लाला जी, भगवान आपको दीर्घायु करे! क्यों जमाई बाबू, ठीक तो हैं? हमारी लड़की को भी साथ लाए हो न? बहुत अच्छा! वह बैठी है। जीती रहो बेटी!''

नत्थूमल्ल पंडित को डाँटकर बाहर निकालने का विचार कर रहा था। परन्तु उसको इस प्रकार आशीर्वाद देते देख कुछ नरम हो गया, और बहुत ही नम्रता से कहने लगा, ''पंडित जी! आप तनिक बाहर चले जावें, तो ठीक रहेगा।''

''लाला जी! मैं तो इस पंचायत में बैठने ही आया हूँ। मैं घर का पुरोहित हूँ। इस कारण घर के बँटवारे के समय मेरा यहाँ बैठने का अधिकार है।''

इतना कह पुजारी मंगल के पीछे बैठ गया। इससे नत्थूमल्ल बहुत ही झुँझलाया। मंगल से बोला, ''इसे बाहर निकाल दो, मंगल!''

मंगल को बोलने का अवसर ही नहीं मिला। पंडित ने तुरन्त कह दिया, ''मैं मंगल के बुलाए नहीं आया, न मंगल के कहे जाऊँगा। मैं जैसे मंगल का पुरोहित हूँ वैसे ही मंगल की माँ का अथवा रामू का भी पुरोहित हूँ। मैं तो घर के मामले को देखने का अधिकार रखता हूँ।''

''कहीं पंडित जी, पिटौती न हो जाए!''

''किसकी?....मेरी?....कौन करेगा? जरा बाहर जाकर देख तो आओ, कितने आदमी खड़े हैं मेरी हिमायत में!''

नत्थूमल्ल ने बाहर की ओर देखा तो सत्य ही उसको बीसियों लाठियाँ कन्धों पर खड़ी दिखाई दे गईं। उसका हृदय काँप उठा। अपने को इस प्रकार फँसा हुआ देखकर उसने बहुत यत्न से अपने मन को काबू में रखा और मंगल से कहा, ''मंगल! तुम बड़े भाई हो। तुम ही बताओ, क्या देना चाहते हो अपने छोटे भाई को?''

''जो यह माँगे।''

''फिर भी तुम ही बताओ। रामू का क्या हक बनता है?''

''बोलो रामू!'' मंगल ने रामू की ओर देखकर पूछा, ''बोलो, क्या चाहते हो?''

''वह तो नाबालिग है। वह क्या माँगेगा?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो अपनी माँ से पूछ ले।"

"मैंने उसकी माँ से पूछ लिया है। जो कुछ मैं कह रहा हूँ उससे पूछकर ही कह रहा हूँ। इस वर्ष की पैदावार को तीन भागों में बाँट दो। एक भाग तुम्हारी माता का, एक भाग रामू का और तीसरा भाग तुम्हारा।"

"तो क्या माँ और रामू इससे प्रसन्न हैं?"

"भविष्य के लिए भूमि के भी तीन भाग हो जाएँ। यदि तुम प्रबन्ध कर सको तो उपज के तीन भाग हुआ करें। नहीं तो तुम अपने तीसरे भाग के मालिक और शेष दोनों भागों को माँ जैसे चाहे करे।"

"मुझे कुछ भी आपत्ति नहीं। जैसा माँ चाहे, करे।"

"तो ठीक है, लिखा-पढ़ी हो जाए।"

इस समय पण्डित बोल उठा, "घर में जो भूषणादि हैं वे भी बँट जावें?"

"चुप रहो!" नत्थूमल्ल ने डाँटकर कहा।

"लाला! न्याय की गद्दी पर बैठे हो, तो पूरा न्याय करो न!"

"मैं कहता हूँ इस प्रकार हस्तक्षेप कर तुम मंगल का भला नहीं कर रहे।"

"पर मैं पूछता हूँ, आपको लड़की दी है, सारा घर नहीं दे दिया है। आप किस अधिकार से यह सब-कुछ कर रहे हैं?"

"एक अबला विधवा ने मुझे यह निर्णय करने के लिए बुलाया है। एक अनाथ की रक्षा के लिए मैं आया हूँ।"

"मुझको भगवान ने यह देखने के लिए भेजा है कि देखूँ किसी के साथ अन्याय न हो जाए। देखो लाला नत्थूमल्ल! मंगल की बहू को भूषण चाहिएँ। इस कारण मैं उसकी ओर से कहता हूँ कि भूषण भी बँट जाने चाहिएँ।"

इस समय मंगल की माँ बोल उठी, "भूषण तो जब मरूँगी तब ही बँटेंगे।"

"देखिए पंडित जी!" मंगल ने इस विवाद को बन्द करते हुए कहा, "मैं तो सब-कुछ इनकी इच्छा पर छोड़ चुका हूँ। मुझको तो भूमि का तीसरा भाग भी, इनकी इच्छा के बिना, नहीं चाहिए। ये मेरी माँ है, रामू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाई है। चाहें तो ये सब-कुछ ले सकते हैं। इनके मन में आए तो कुछ दे दें, न आए तो न दें।''

''क्यों पंडित!'' अब नत्थूमल्ल ने उसको डाँटने के विचार से कहा, ''मान न मान मैं तेरा महमान! बिना पूछे ही वकालत करने चले आए हो?''

पंडित इससे झेंपा अवश्य, परन्तु साहस पकड़कर बोला, ''मैं किसी का वकील बनकर नहीं आया। घर का पुरोहित होने के नाते और गाँव के मुखिया की आज्ञा से आया हूँ। मंगल बेचारा सीधा-सादा आदमी है और आप हैं बहुत चतुर। इससे उसकी रक्षा करना बहुत आवश्यक है।''

''अच्छा-अच्छा, चुप करो अब! मंगल, तुम बताओ कि क्या चाहते हो?''

मंगल को लाला जी की धूर्तता पर क्रोध आ रहा था, परन्तु वह सोचता था कि जब माँ ही इस झगड़े में सबसे आगे है तो वह किसी दूसरे पर गिला क्या करे? उसने कहा, ''पंडित जी मुझ पर कृपा रखते हैं, इस कारण मेरे हानि-लाभ की इनको चिंता बहुत रहती है। यूँ तो गाँव के सब लोग मुझसे प्रेम करते हैं और मैं इन सबका आभारी हूँ, परन्तु मैं कहता हूँ कि जब एक बार बँटवारे का विचार उत्पन्न हो गया तो यह होना ही चाहिए। रहा यह कि मुझे क्या मिलता है, सो मैंने सब-कुछ अपनी माँ पर छोड़ दिया है। माँ, बताओ, कुछ दोगी अथवा नहीं?''

माँ ने कहा, ''देखो मंगल! तुम्हारा पालन-पोषण हो गया है। तुम्हारा विवाह भी हो गया है। भगवान ने तुम्हें सब प्रकार से योग्य बना दिया है, इससे तुम्हें अपने छोटे भाई का ध्यान रखना चाहिए।''

''ठीक है, मैं मानता हूँ। मुख से कहो क्या कुछ देती भी हो? मैं तो तुम्हें पिता जी के स्थान ही मानता हूँ। जो कुछ भी प्रसन्न होकर दे दोगी, ले लूँगा।''

''तो ऐसा करो। अपने लिए पृथक् मकान ले लो। तुम्हारी बहू को देखकर मेरे मन में डाह उत्पन्न होता है। वह नीम के पेड़ से पश्चिम का जो खेत है, वह तुम ले लो। भूषण जो तुम्हारी बहू के मायके से आए थे उन्हें वह ले लें। जो अपने घर के भूषण हैं वह कुछ तो सोहनी को दे दिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं और कुछ रामू की बहू के लिए रहने दो।''

''माँ! लाला जी के पास जो अढ़ाई हजार रुपया है?''

''वह रामू के विवाह के लिए रहने दो। जो उपज इस वर्ष आई है उसका तीसरा भाग तुम ले सकते हो।''

इस समय तक गाँव का मुखिया भी भीतर घुस आया। वह भी इस अन्याययुक्त बँटवारे की बात सुन रहा था। इससे मंगल के बोलने से पहले बोल उठा, ''मंगल, तनिक बात सुनो तो!....इधर आओ!''

नत्थूमल्ल ने मंगल को मुखिया की बात सुनने के लिए जाते देखकर कहा, ''हमारे पास बहुत समय नहीं है। हमें कई और भी काम करने को हैं।''

''ठहरो लाला! जल्दी किस बात की है? आज नहीं तो कल बात हो जाएगी।''

मंगल जब मुखिया के साथ गया, तो वह उसे कमरे से बाहर ले गया। सारा गाँव-का-गाँव वहाँ उपस्थित था; युवा, वृद्ध, बालक और छोटी जाति के स्त्री-पुरुष भी। उनकी ओर अंगुली कर मुखिया ने कहा, ''मंगल! देखो, यह सारा गाँव तुम्हारी सहायता के लिए एकत्रित हो गया है। ये लोग समझते हैं कि इस लाला ने ही तुम्हारी माँ और भाई की सम्पत्ति हड़पने के लिए यह पाखंड रचा है। तुम इनकी बात मत मानो! ये लोग तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे।''

''मैं तुम सब लोगों का कृतज्ञ हूँ। पर चौधरी! एक बात तुम नहीं समझ रहे। माँ ईश्वर की एक अमूल्य देन है। उसे प्रसन्न रखना, उसकी आज्ञा का पालना पुत्र का कर्तव्य है। भूमि, मकान और धन-दौलत से बढ़कर माँ और बेटे का संबंध है। मुझसे कोई बात ऐसी नहीं होगी जिससे माँ का मन दुःखी हो। नहीं, चौधरी! ऐसा नहीं होगा। माँ को ले लेने दो, जो वह कहती है। आखिर माँ ही तो है! उसने ही यह तन दिया है, पाला है, पोसा है। क्या उसके लिए मैं यह भी नहीं कर सकता?''

''पर यह नीम से परे की भूमि तो आधी ऊसर है!''

''मैं उसे भी नहीं लूँगा। उसे लेकर केवल बदनाम ही होना है।''

''तो जाओगे क्या? गुजर कैसे होगा?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नगर में जाकर मजदूरी कर लूँगा।"

"मजदूरी करोगे तुम?"

मुखिया का मुख खुला रह गया। मंगल उसको वहाँ ही छोड़कर पुनः अपने स्थान पर आ गया और बोला, "मुझको मंजूर है। जो कुछ माँ कहती है, मैं उसको मानने के लिए तैयार हूँ।"

"तो यह लिखा-पढ़ा जाए। हस्ताक्षर करने होंगे।"

"आप लिखिए, मैं तैयार हूँ।"

६

बँटवारे का कागज लिख लिया गया। मंगल, उसकी माँ और रामू के हस्ताक्षर हो गए। लाला नत्थूमल्ल और शंकर ने साक्षी भर दी। पर गाँव के किसी आदमी ने साक्षी नहीं भरी।

मंगल ने तब एक बात कही—"यदि तैयार फसल में से एक-तिहाई भी मुझे मिल जाय तो मैं इससे अपना पृथक् घर बसाने में लगा सकूँगा।"

"वह मिल जाएगी।"

"कब?" पुजारी ने बात निश्चय करने के लिए कहा।

"जब उपज बिक जाएगी तो तिहाई दाम इसे मिल जाएँगे।" लाला जी का कहना था।

"मुझे रुपया नहीं चाहिए। मुझे गेहूँ और भूसा मिल जाए तो ठीक होगा।"

"इस पर विचार करेंगे।" माँ ने कहकर बात समाप्त कर दी।

सब उठ खड़े हुए और लाला नत्थूमल्ल, रामू, रामू की माँ, शंकर और सोहनी सब गाड़ियों में सवार हो नगर को जाने के लिए तैयार हो गए। जाने से पूर्व माँ ने मंगल को कहा, "मैं चार-पाँच दिन में आऊँगी और तब तक अपने लिए मकान का प्रबन्ध कर लेना!"

मंगल चुपचाप देखता रह गया। वे लोग गाड़ियों में सवार हुए और चले गए।

गाँव के लोग भोजन कर अपने-अपने घरों को चले गए। मंगल इस परिवर्तित परिस्थिति पर गंभीरतापूर्वक विचार करता हुआ लोगों को जाते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देख रहा था। पुजारी और मुखिया उसके सम्मुख चुपचाप खड़े थे। जब सब लोग चले गए तो पुजारी ने मंगल के कंधे पर हाथ रखकर कहा, ''यह तुमने क्या किया है मंगल? अपने पाँवों पर आप ही कुल्हाड़ा चला दिया?''

''जो किया है, ठीक किया है। पंडित जी, जीवन एक खेल है। मेरे जीवन का यह खेल अभी समाप्त नहीं हुआ। अभी तो इसका पूर्वार्द्ध भी पूर्ण नहीं हुआ। मैं अपने पर और भगवान पर भरोसा रखता हूँ और जानता हूँ कि मैं अपनी अवस्था फिर सुधार सकूँगा। मुझे भय इस बात का है कि यह स्वार्थी लाला, रामू का रक्त तक चूस लेगा। तब क्या होगा?''

''अब करोगे क्या?''

''मैं चाहता था कि मेरे भाग की उपज मिल जाती तो उसे बेचकर आगे के काम-धंधे का निर्णय कर पाता।''

''अब उपज मिल चुकी मंगल! उससे भी हाथ धो डालो!'' मुखिया ने कहा।

''नहीं मिलेगी, तब भी मैं मेहनत-मजदूरी से अपना पेट भर लूँगा। मैं यह बता देना चाहता हूँ कि एक पुत्र अपनी माँ को प्रसन्न करने के लिए क्या-क्या कर सकता है।''

मुखिया की बात ठीक निकली। अगले दिन पचास गाड़ियाँ नगर से आईं और भूसा लादकर ले जाने लगीं। उनके साथ पुलिस के दो कान्स्टेबल थे। तीन दिन में भूसा लद गया और फिर गेहूँ का उठाना आरम्भ हो गया।

भोज के दिन सबको विदा कर मंगल जब भीतर मोहिनी के पास आया तो उसने झुककर अपने पति के चरण-स्पर्श किए।

''क्या हुआ है मोहिनी?'' मंगल ने पूछा।

''आपने मेरी लाज रख ली है। थोड़ा-सा भी झगड़ा करते तो सब यही कहते कि बीवी के लिए माँ से लड़ पड़े हो।''

''परन्तु परिणाम का भी विचार किया है तुमने?''

''हम निर्धन हो गए हैं, यही न?''

''हाँ, निर्धन [illegible] चाहता था कि मैं यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बँटवारा स्वीकार न करूँ और मैं जानता भी था कि यदि मैं इनकार कर देता तो वे मेरा कुछ बिगाड़ भी नहीं सकते थे, परन्तु मेरे मुख को तुमने ताला लगा दिया था। तुमने जो अपनी सौगन्ध डालकर कहा था कि माँ का कहना मानना, उसे मैंने मान लिया है। परन्तु माँ ने तो मुझे पानी पीने योग्य भी नहीं रखा।''

''तो आप मुझसे नाराज हैं ?''

''नाराज तो नहीं हूँ, पर एक बात है—अब घोर परिश्रम और निर्धनता का जीवन व्यतीत करना पड़ेगा।''

''तो आपका मन डरता है इससे ?''

''मैं नहीं डरता। मैं तुम्हारी बात कह रहा हूँ।''

''आपके साथ रहकर मुझे परम सुख मिलेगा। इस जीवन से मैं उसे ज्यादा पसंद करूँगी।''

दो दिनों के पश्चात् जब भूसा लदकर नगर को जाने लगा तो मंगल को मुखिया का कहना स्मरण हो आया। तीन दिन में सब भूसा नगर को पहुँच गया। मंगल का भाग तो क्या, घर के पशुओं के लिए भी कुछ न छोड़ा गया। इसी प्रकार एक सप्ताह में सब गेहूँ और भूसा नगर में जा पहुँचे। गाँव के लोग उसे कहते रहे कि अदालत में जाकर चाराजोई करो, परन्तु मंगल ने उन सबका उत्तर यही दिया कि माँ से झगड़ा नहीं करूँगा। उसने किसी की बात नहीं मानी।

पंडिताइन ने भी मोहिनी को बहुत समझाया, ''तुम ही मंगल को समझाओ, तुम्हारी क्या दशा होगी ? कहाँ राज करती थी और कहाँ अब भिखारिन बना दी गई हो!''

मोहिनी का कहना था, ''मौसी, वे जो कुछ कर रहे हैं, मुझसे पूछकर ही कर रहे हैं। और मैं समझती हूँ कि जो कर रहे हैं ठीक ही कर रहे हैं।''

''तो अब क्या करोगी ?''

''वही जो ईश्वर को स्वीकृत होगा।''

गाँव के लोग मोहिनी के पिता के पास पहुँचे। उसने उत्तर दिया, ''मेरा कहा वह कहाँ मानेगा जब और किसी का नहीं माना!''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब सब गेहूँ नगर चला गया तो मंगल लाला नत्थूमल्ल की दुकान पर गया। वहाँ जाकर उसे पता चला कि नत्थूमल्ल कचहरी गए हुए हैं। वह उनकी प्रतीक्षा करने बैठ गया। मुनीम ने पूछा, "क्या काम है चौधरी साहब?"

"माल यहाँ पहुँच गया है। अब उस पर कुछ रुपया लेने के लिए आया हूँ।"

मुनीम ने मुस्कराते हुए कहा, "आपके नाम का खाता अब नहीं रहा। एक नया खाता रामू के नाम खोला गया है और उसमें ही सब गेहूँ आदि जमा हुआ है।"

इस पर भी मंगल अन्तिम बात करने के लिए वहाँ बैठा रहा। सायंकाल से कुछ पूर्व नत्थूमल्ल आया और मंगल को बैठा देख खड़े-खड़े ही पूछने लगा, "कैसे आए हो मंगल?"

"अपने भाग की फसल के दाम लेने।"

"सब फसल तुम्हारे भाई के नाम लिख ली है। अब उसकी माँ के हाथ से लिखवाकर लाओगे तो रुपया मिल सकेगा।"

"मेरा भाग आपने रामू के नाम क्यों लिख लिया है?"

"तुम्हारी माँ के कहने के अनुसार। यदि तुम्हारा झगड़ा है तो अपनी माँ से होगा। हमें जो कुछ वह कहेगी वही होगा। यदि वह कहेगी कि सब-कुछ तुम्हें ही लुटा दूँ, तो हमें उसमें भी कोई आपत्ति न होगी।"

"वह घर पर है क्या?"

"हाँ।"

मंगल सोहनी के घर गया। वहाँ भी उसे माँ की प्रतीक्षा करनी पड़ी। उसने नीचे उतरने में ही बहुत देर लगा दी। जब वह आई तो उसने पूछा, "माँ, तुमने मेरा भाग भी रामू के नाम ही लिखा दिया है क्या?"

"तो क्या हुआ?"

"मुझे रुपए की आवश्यकता है। अब लाला जी को लिख दो कि मेरा भाग मुझे दे दें।"

"मैं तो कुछ जानती नहीं। लाला जी घर आवेंगे, तो उनसे लिखा दूँगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंगल ने समझ लिया कि खेल समाप्त हो गया है। तब उसने कहा, "माँ, मैं अब नहीं आऊँगा। जो कुछ तुमने किया है, तुम जानो, तुम्हारा भगवान जाने। मैं कल घर छोड़ रहा हूँ। वहाँ गाय-बैल हैं। उनके लिए भी वहाँ भूसा नहीं रहा। कुछ दाना रखा है, पर केवल दाने से तो गुजर नहीं हो सकेगा। उनका बन्दोबस्त कर लेना। कहीं गो-हत्या के पाप की भागी न बन जाओ।"

इतना कहकर उसने प्रणाम किया और चल दिया। परन्तु इस समय उसके मन में विषाद भरा हुआ था। क्रोध से आँसू टपक रहे थे। वह चुपचाप गाँव को लौट चला।

मंगल की बहुत देर तक प्रतीक्षा करती-करती मोहिनी का हृदय भीतर-ही-भीतर बैठने लगा। उसके मन में भाँति-भाँति के भय उठने लगे। वह मकान में अकेली होने से भयभीत थी। सायंकाल हो गया। रात अँधेरी थी, सर्वत्र अँधेरा-ही-अँधेरा छा गया। वह हरीकेन लालटेन जला, ड्योढ़ी में प्रतीक्षा करने लगी।

मंगल जब रात को दस बजे लौटा तो उसे वहाँ अकेली उदास बैठी देखकर मन में बहुत ही दुःखित हुआ। उसने पूछा, "इतनी उदास क्यों बैठी हो तुम?"

"आधी रात हो गई है और अब लौटे हो!"

"मैं बार-बार जाने से यही उत्तम समझता था कि एक बार ही निर्णय करके लौटूँ। सो कर आया हूँ। कुछ भी नहीं मिलेगा।"

"एक पैसा भी नहीं?"

"नहीं।"

"यह तो दिन-दहाड़े लूट हुई न!"

"हाँ, इसे रोकने का एक उपाय है मुकद्दमा, जो मैं माँ से नहीं करूँगा। और अब तो मुझमें मुकद्दमा करने की शक्ति भी नहीं रही।"

"क्या होगा मुकद्दमे से? मेरे पिता जी कहते हैं कि किसी समय वे भी अच्छे जमींदार थे। उनके पिता जी ने एक मुकद्दमा किया था और उससे ऐसे बरबाद हुए कि अभी तक दशा नहीं सुधरी।"

"मोहिनी, मैं मुकद्दमा नहीं करूँगा, माँ-बेटे की बातें सुनकर सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हँसेंगे। परन्तु अब विचारना यह है कि अब किया क्या जाए? घर में तो दो-तीन दिन का अन्न शेष है। पशुओं के लिए तो कल तक का भी चारा नहीं।''

''कहीं चले चलें!''

''ठीक है, पर जाने के खर्च के लिए भी तो नकद कुछ नहीं।''

''मैं अपनी माँ से कुछ माँग लाती हूँ।''

''मुझे इस प्रकार माँगते लज्जा आती है। हाँ, एक बात समझ में आ रही है। माँ के कमरे में तिजोरी गड़ी है। उसको खोलकर देखूँ शायद कुछ मिल जाए। तुम्हारे भूषण भी तो उसी में हैं! यदि वे ही मिल जाएँ तब भी काम बन जाएगा।''

''तो निकाल लो, वे तो मेरे हैं ही।''

दोनों भीतर चले गए। भोजन किया और पश्चात् वे लालटेन लेकर कमरे का ताला खोलने का यत्न करने लगे। बाहर का ताला तो सुगमता से खुल गया, परन्तु तिजोरी का ताला खोलने में बहुत कठिनाई हुई। उसकी ताली माँ के पास थी। दूसरी कोई ताली लगी नहीं। ताला मजबूत था, अतः उसे तोड़ने में एक घंटे से ऊपर समय लग गया। लोहे का भारी दस्ता लाकर, ताले को पीट-पीटकर चूर-चूर कर दिया गया, तब जाकर कहीं वह खुला। पश्चात् तिजोरी का ढकना खोला गया तो पता चला कि वह खाली पड़ी है। एक तिनकामात्र भी उसमें नहीं।

इतनी मेहनत और साहस करने पर जब सब प्रयत्न निष्फल हुआ तो दोनों विस्मय से एक-दूसरे का मुख देखते हुए बैठे रह गए। रात का एक बज चुका था। अंत में मंगल स्वयं उठा और फिर उसने मोहिनी को उठाया और कहा, ''यह सब-कुछ सोच-विचार कर ही किया गया है। इस तिजोरी के टूट जाने से हम चोर तो बन गए, पर मिला कुछ नहीं।''

७

अगले दिन गाँव में यह बात विख्यात हो गई कि मंगल अपनी स्त्री के साथ गाँव छोड़ रहा है। गाँव का गाँव दुःखी था। वे लोग भी जो मंगल की दिन-दुगुनी रात चौगुनी उन्नति देखकर ईर्ष्या करते थे, इस प्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसको जाता देखकर रो दिए। खेतों में काम करनेवाले कामें तो इस समाचार को सुनकर व्याकुल हो उठे।

मंगल का विचार तो दिन निकलने से पूर्व ही गाँव छोड़ नगर चले जाने का था, परन्तु वह चाहता था कि दस-बीस रुपए किसी से मिल जावें तो नगर में एक कोठरी लेकर रहने का प्रबन्ध कर सकूँ। सबसे प्रथम मोहिनी अपने पिता के पास गई। उसके पास नकद दो ही रुपए थे। उसने कहा, "बेटी! मध्याह्न तक कुछ अनाज बेचकर तुमको रुपए ला दूँगा।"

मंगल पुजारी के पास गया तो उसने भी यही उत्तर दिया, "मध्याह्न तक रुपए का प्रबन्ध कर दूँगा।" पुजारी ने आग्रह किया कि नगर में बिना धन के जाना ठीक नहीं, वहाँ के लोग कठोर होते हैं। पैसे के बिना बात भी न करेंगे।

विवश होकर मंगल और मोहिनी ने गाँव छोड़ने की बात अगले दिन तक स्थगित कर दी। इससे बात गाँव-भर में फैल गई। स्थान-स्थान पर गोष्ठियाँ होने लगीं। मंगल की बात को दुहरा-दुहराकर, 'माँ को प्रसन्न करने के लिए पुत्र क्या-कुछ कर सकता है, दिखा देगा' लोग उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते थे।

छोटी जात वालों ने बिरादरी एकत्रित की और सब मंगल के दरवाजे के सामने जा बैठे। मंगल को जब पता लगा तो वह बाहर आया। स्त्री-पुरुष, दो सौ से ऊपर उसके दरवाजे पर धरना दिए बैठे थे। मंगल उनको देखकर विस्मय से पूछने लगा, "क्या बात है भाई, कैसे आए हो?"

"मंगल चौधरी, हमारी बिरादरी ने निश्चय किया है कि तुमको गाँव से जाने नहीं देंगे।"

"क्यों? मुझसे कोई अपराध हो गया है क्या? बताओ भाई, मैंने किया क्या है?"

एक वृद्ध ने आगे आकर कहा, "भैया मंगल! तुम्हारे बिना हम गरीबों को पूछनेवाला कौन रह जाएगा यहाँ? अतः हमने निर्णय किया है कि मुखिया के घर में तुम्हें रहने को जगह मिल जाएगी। साथ ही एक मकान बगिया के दाईं तरफ बनाने के लिए हम कल से ही काम आरम्भ कर देंगे। अगली फसल तक के लिए गाँव के लोग तुम्हारे खाने और बीज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए अन्न एकत्रित कर रहे हैं।"

मंगल इस सहानुभूति के व्यवहार से अति प्रभावित हुआ, परन्तु वह गाँववालों के दान-दक्षिणा पर पलना नहीं चाहता था। उसने कह दिया, "भाई, आपके इस प्रेम के लिए मैं बहुत ही कृतज्ञ हूँ, परन्तु मैं आपको कष्ट देना नहीं चाहता। मैं शीघ्र ही धन कमाकर लाऊँगा और फिर से आप लोगों में बसने का यत्न करूँगा। इस समय मुझको जाने दो। मैं मरण-पर्यंत आपकी इस सहानुभूति को भूल नहीं सकूँगा।"

"नहीं भैया!" बीसियों आवाजें निकल आईं, "हम तुम्हें नहीं जाने देंगे! हम तुम्हारे दरवाजे पर धरना दे देंगे, तुम्हारा रास्ता रोक लेंगे, पर तुमको जाने नहीं देंगे।"

वही बूढ़ा फिर कहने लगा, "हम लोगों ने पाँच पीढ़ियों से तुम्हारे पूर्वजों का अन्न खाया है। उसका कुछ तो प्रतिफल हमें भी देने दो! तुम्हारे खाने-पीने का भार हम लेते हैं। इसमें हमारा क्या है! तुम और तुम्हारे पूर्वजों से दिए गए का एक अंशमात्र भी तो नहीं होगा। इस वर्ष मौसम अच्छा लगा है। फसल बहुत हुई है और तुमने भी जी भरकर मजदूरी दी है। इसलिए हमारे पास बहुत-कुछ है। तुम रहोगे तो हम फूलेंगे-फलेंगे। नहीं तो भैया, सर्वनाश होगा।"

"पर दादा!" मंगल ने हाथ जोड़कर कहा, "हम किसानों की जड़ भूमि में होती है। तुम जानते हो कि मेरे पास भूमि नहीं है। मेरी जड़ यहाँ से उखड़ गई है। हवा में नंगी हो जानेवाली जड़ के पेड़ की भाँति मैं भी सूखकर मुर्झा जाऊँगा। मुझको कहीं जाकर जड़ पकड़ने दो, भैया!"

"यह भी हो जाएगा। पुजारी जी बता रहे थे कि इसी गाँव में बहुत-सी भूमि परती पड़ी है। वह तोड़ने के लिए तुमको मिल जाएगी।"

"तुम्हारा मतलब मनोहर की भूमि से है, जो बर्मा गया हुआ है ? वह बीस बीघा है, पर क्या वह देगा जोतने के लिए मुझे ?"

इस समय पुजारी, जो कहीं छुपकर खड़ा था, आगे निकल आया। उसने मंगल के समीप आकर उसके कान में कहा, "भैया, रुपए का प्रबन्ध तो कर आया हूँ, पर मैं कहता हूँ कि इन लोगों की बात मान लो। कहाँ भटकते फिरोगे ? दो-तीन वर्ष में सब काम पूर्ववत हो जाएगा। रामू की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमि बिकेगी। तब तक उसके खरीदने की शक्ति पैदा कर लो। मनोहर की भूमि का बन्दोबस्त मैं कर दूँगा। उसमें कुआँ बनवाने का भी प्रबन्ध हो जाएगा। तुम यहाँ ठहर जाओ तो यह प्रजा तुम पर अपनी जान दे देगी। भैया, मान जाओ!"

मंगल दुविधा में पड़ गया। उसने सबको कहा, "मुझे विचार कर लेने दो। मैं अपनी स्त्री से भी पूछ लूँ।"

"भैया, सोचो अथवा न सोचो, हम तो तुम्हें नहीं जाने देंगे। एक बार 'हाँ' करो तो देखोगे कि हम क्या-क्या कर दिखाते हैं।"

पुजारी को लेकर मंगल भीतर चला गया। मोहिनी किवाड़ के पीछे खड़ी सब वार्त्तालाप सुन रही थी। इन सीधे-सादे मेहनत से पेट भरनेवालों की कृतज्ञता देखकर उसके आँसू बह रहे थे। जब मंगल भीतर आया तो उसने जल्दी-जल्दी आँसू पोंछने का यत्न किया, पर पुजारी से यह बात छुपी नहीं रह सकी। उसने कहा, "मोहिनी बेटी! क्या है? छुपकर रो क्यों रही हो?"

मोहिनी ने अपने को प्रसन्नमन प्रकट करने के लिए मुस्कराने का यत्न किया और कहा, "काका, कुछ नहीं।"

"कुछ नहीं! अरी तुम्हारे गाल तो अभी भी भीग रहे हैं। क्या इन लोगों का प्रस्ताव पसन्द नहीं आया?"

इस समय तक सब भीतर के आँगन में पहुँच गए थे। पुजारी ने कमरे की दहलीज पर बैठकर कहा, "देखो मोहिनी बेटी! ये लोग तुम्हारी प्रजा हैं। इनके कहने की अवहेलना राजा-महाराजा भी नहीं कर सकते। इससे तुमको भी अब यहाँ से जाने का हठ नहीं करना चाहिए।"

"उनकी भावना को देखकर मेरा तो रोम-रोम पुलकित हो उठा है। मेरे मुख में वाणी नहीं, जिससे कृतज्ञता प्रकट कर सकूँ। मैं नहीं जानती थी कि मेरी सास का पुत्र इतना अच्छा है कि लोग उससे इतना नेह रखते हैं। मैं सोचती हूँ कि पूर्व-जन्म में अवश्य कोई भारी पुण्य-कर्म मैंने किए हैं, जिनसे मुझे इनके चरणों में बैठने का सौभाग्य मिला है।"

"पर काका! इन लोगों पर बोझा बनकर रहना क्या ठीक होगा?" मंगल ने पूछा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बोझा बनने की आवश्यकता नहीं। देखो, तुम लोग रुपया उधार लेकर नगर में काम करने जाओगे, तो क्या वह बोझा नहीं है? इनसे भी जो कुछ लो, उधार मानकर लेना और फिर समय आने पर सूद-सहित दे देना।"

"मनोहरवाली भूमि मिल जाय तो काम बन सकता है।"

"मैंने पटवारी से बात की है। वह कहता है कि भूमि कई वर्ष से परती पड़ी है। इससे उसको जोतने-बोने से गाँव का कल्याण ही होगा। बर्मा में लिखकर मनोहर का पट्टा लिखवाया जा सकता है।"

बात तय हो गई। मंगल पुजारी के घर में जाकर रहने लग गया। उसी दिन उसने माँ को कहला भेजा कि 'मैंने घर बदल लिया है। दो गायें और दो बैल मैं अपने साथ ले गया हूँ। शेष वहीं पर बँधे हैं। उनकी रक्षा का प्रबंध कर लेना।'

लोगों ने पुरोहित के कथनानुसार बगिया की दाईं ओर शामलाट भूमि पर मकान की नींव रख दी। गाँव के चालीस-पचास मजदूरों ने मिलकर एक महीने में एक कच्चा मकान बना दिया। दीवारें भीतर और बाहर से पलस्तर कर दी गईं और छत पर खपरैल डलवा दी गई।

वर्षा आरम्भ होने से पूर्व मंगल अपनी स्त्री मोहिनी को ले इस नए मकान में जाकर रहने लगा। दोनों गायें और दोनों बैलों के लिए पशुशाला भी बन गई थी।

लिखने पर मनोहर चौधरी ने भूमि जोतने की स्वीकृति भेज दी। उसने लिखा कि पट्टा लिखकर उसे भेज दिया जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नगर का चलन

१

लाला नत्थूमल्ल अनाज-मंडी में बड़े आढ़तियों में से एक था। पाँच-दस लाख की असामियों में समझा जाता था। नित्य बीस-तीस हजार का व्यापार करता था। सामाजिक विचार से लाला अति कंजूस था। दान-दक्षिणा में उसका हृदय कबूतर के समान दुर्बल था। कर्मचारियों तक को वेतन देने में वह अति कठोर बन जाता था। घर का खर्च भी बहुत सोच-विचार कर करनेवाला था। यह ठीक है कि उसकी प्रतिदिन की औसत आय दो सौ रुपए से ऊपर थी, परन्तु घर में दोनों समय मूँग की दाल ही बनती थी।

लाला नत्थूमल्ल ने इतनी धन-सम्पत्ति रखते हुए भी अपने लड़के शंकरदास को एक साधारण स्कूल में पढ़वाया। लड़का वहाँ आठवीं श्रेणी से अधिक नहीं पढ़ सका। इस पर उसने उसे कुछ बही-खाते के लिखने का अभ्यास करवाकर उसे पच्चीस रुपए मासिक देकर दुकान पर बैठने का ढंग निकाल लिया।

शंकरदास का सोहनी से विवाह का रहस्य शंकरदास का हठ था। उसने चौधरी दुर्गादास की लड़की को एक दिन चौधरी के साथ नगर में घूमते देखकर उससे विवाह का निश्चय कर लिया। उसने अपनी माँ के द्वारा पिता को अपने संकल्प की सूचना दी और यह कहला दिया कि यदि विवाह करूँगा तो उसी से करूँगा, अन्यथा कदापि न करूँगा।

दुर्गादास की लड़की से शंकर का विवाह हो गया। लाला को इस विवाह से भारी हानि हुई। उसका विचार था कि शंकर के विवाह पर दस-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीस हजार की सम्पत्ति मिलेगी। उस मन्सूबे पर पानी फिर गया, परन्तु वह अपना ध्येय बदलनेवाला न था। उसकी पूर्ति का उपाय उस दिन से ही सोच रहा था जिस दिन यह विवाह सम्पन्न हुआ था, परन्तु अवसर तब मिला जब दुर्गादास का देहान्त हुआ। उसके देहान्त के समय परिस्थिति को देखा, समझा और फिर इसे अपने अनुकूल करने का यत्न करने लगा।

दुर्गादास के दाह--संस्कार से लौटते हुए नत्थूमल्ल ने अपने सुपुत्र शंकर से पूछा, 'शंकर, अब कितना प्रेम है तुम्हारा अपनी बीवी से ?'

शंकर ने आँखें नीची कर कहा, 'उतना ही जितना किसी को अपनी बीवी से हो सकता है।'

'और वह तुमको कितना चाहती है ?'

'मैं समझता हूँ कि वह मुझे अपना आराध्य देवता मानती है।'

'तो देखो, हम हैं व्यापारी लोग। हम मिट्टी से सोना उत्पन्न करनेवाले हैं। दुर्गादास की लड़की से तुम्हारा विवाह करने पर मुझे सहस्रों रुपए की हानि हुई है। यदि कहीं और विवाह होता तो हजारों रुपयों का दहेज मिलता। अब समय आ गया है कि उस क्षति को पूरा किया जाय।'

'यह कैसे हो सकेगा ?'

'इसकी विधि मैं बताता हूँ। हमें तुम्हारी सास के मन में अपने छोटे पुत्र के लिए स्वाभाविक वात्सल्यता का पोषण करना चाहिए। साथ ही बड़े पुत्र के प्रति अविश्वास और द्वेष की भावना भी उत्पन्न करनी चाहिए। बड़े लड़के की बहू से घृणा उत्पन्न कराने का यत्न भी करना चाहिए।'

पिता की बात शंकर के मन में बैठ गई और उसी रात से उसने कार्य आरम्भ कर दिया। रामू जब स्कूल से लौटा तो उसे अपनी बहिन से मिलकर जाने की सम्मति दी गई और इसके बाद जब वह बहिन के समीप होता तो वह उसके लिए खेद और सहानुभूति का प्रदर्शन करती। शंकर भी दूसरे-तीसरे दिन अपनी सास से मिलने जाने लगा और उसे मोहिनी के विरुद्ध बातें कह-कहकर भड़काने लगा। जब रामू की माँ सोहनी से मिलने नगर में जाती, तो भी सब स्त्रियाँ उसे उसके मन को बहू के विरुद्ध कलुषित करतीं।

सीधी-सादी एक देवता की पत्नी को भी बहकाने में एक वर्ष लग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया। इस पर भी शायद बात इतनी न बिगड़ती यदि राम को नगर के खेल-तमाशे दिखाकर नगर में रहने के लिए लालायित न कर दिया जाता, और साथ ही उसके मस्तिष्क में यह अंकित न कर दिया जाता कि उसका बड़ा भाई मंगल ही उसके इस सब सुख-भोग में बाधक है।

निरन्तर यत्न करने पर योजना सफल हुई। लाला नत्थूमल्ल तो यह समझता था कि मंगल माँ से मुकद्दमा करेगा, जिसमें हजारों रुपए व्यय होंगे और उनकी भूमि इत्यादि सब-कुछ बिक जाएगी। उस लूट में उसे भी हाथ रँगने का अवसर मिल जाएगा। परन्तु मंगल ने सब-कुछ त्याग दिया और माँ से मुकद्दमा लड़ना उचित नहीं समझा। नत्थूमल्ल को यह बुरा प्रतीत हुआ। एक दिन रामू और उसकी माँ भूषणादि घर की सम्पूर्ण सम्पत्ति लेकर अपने जमाई के घर आ गए। भूषण तोले गए। चाँदी के भूषण बीस सेर के लगभग थे। सोने के भूषण तीन सेर। नकद रुपए दो सहस्र से ऊपर थे। यह सब-कुछ लाला नत्थूमल ने अपनी तिजोरी में रख लिया। न रामू की माँ ने रसीद माँगी और न लाला जी ने देने की आवश्यकता समझी। लाला जी रामू के लिए इतनी सहानुभूति दिखा रहे थे और उसकी निस्सहायता पर इतने द्रवित हो रहे थे कि रसीद माँगना उनके भावों का अपमान हो जाता।

जब मंगल का सन्देश आया कि वह मकान छोड़ रहा है और पशु वहाँ भूखे मर रहे हैं तो लाला जी ने उनको गाँव से मँगवा लिया और उनको बाजार में बेच दिया। चार बैलों और दो गाँवों का मूल्य उसे अढ़ाई सौ रुपए मिले। कम-से-कम लाला जी ने यही बताया। यह रुपया बही में रामू के हिसाब में लिख लिया गया।

मंगल को पशुओं के बिक जाने का समाचार पुजारी द्वारा मिला। समाचार लानेवाले ने यह भी बताया था कि उनको खरीदनेवाले बूचर थे। इससे मंगल को भारी दुःख हुआ। वह कितनी ही देर तक इस बात से अवाक्‌मुख बैठा रहा।

यह समाचार गाँव में भी फैल गया। उससे तो रामू की माँ तथा उसके समधियों का रहा-सहा सम्मान भी मिट्टी में मिल गया। परिणाम यह हुआ कि कामगारों ने भी निश्चय कर लिया कि ऐसे पापी के खेतों में काम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं करेंगे।

मंगल ने नीम से दक्षिण की भूमि, जो बँटवारे में उसको मिली थी, जोती नहीं। उसका विचार था कि उस पर बीज डालना व्यर्थ है। उससे मजदूरी की लागत भी नहीं निकल सकेगी। एक तो कुआँ वहाँ से दूर था; और दूसरे, मनोहर की भूमि कई वर्ष के पश्चात् जुतने से अधिक मेहनत माँगती थी।

परिणाम यह हुआ कि मंगल की अपनी भूमि परती रह गई। वह भूमि जो रामू के भाग की थी, वह भी जोती नहीं जा सकी। कारण, न तो उसके लिए प्रबंधक मिला, ना ही गाँव के किसी कामे ने भूमि पर हल चलाना स्वीकार किया। ऋतु के अन्त में एक दिन लाला नत्थूमल्ल स्वयं आया और पटवारी की सहायता से कामों को बुलाकर उन्हें काम करने को कहने लगा। कामों ने उन्हें अपने चौधरी से बातचीत करने को कहा। लाला जी ने उससे पूछा, ''चौधरी, बीस बीघा भूमि है, जिस पर मक्की, बाजरा इत्यादि सभी कुछ बोया जा सकता है। कितने हल आप दे सकते हैं इस काम के लिए ?''

''एक भी नहीं।''

''क्यों ?''

''आप-जैसे गौ-हत्यारे की भूमि में हमारी बिरादरी का कोई आदमी काम नहीं करेगा।''

''बहुत मूर्ख हैं वे लोग! गौ-हत्या किसने की है ? मैंने ? कब ? तुम भूल में हो। जिनका यह काम है उन्होंने ही वह की होगी। हमारा उससे क्या सम्बन्ध ? यदि काम करेंगे तो उनको उजरत मिलेगी।''

''हमें उजरत नहीं चाहिए। हमें धर्म चाहिए। हम आपका काम नहीं करेंगे।''

इस पर पटवारी ने, जो लाला जी के पैसे के प्रभाव में था, चौधरी को डाँटा, ''चौधरी, सँभलकर बात करो! छोटा मुँह बड़ी बात! किससे ये बातें कर रहे हो ? कल से बीस आदमी आपको देने होंगे, जो लाला जी के खेतों को जोतेंगे, बोएँगे।''

''तो यह बेगार है क्या ?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बेगार ही सही। कल बीस आदमी भेज देना, नहीं तो परिणाम अच्छा न होगा!"

चौधरी मुख लटकाए लौट गया। पटवारी ने अपनी डींग हाँकते हुए कहा, "लाला जी, आप निश्चित रहें, मैं इनको सीधा कर लूँगा। कमीन जात है न! बिना जूता खाए इनकी बुद्धि काम नहीं करती।"

कामे बेगार में पकड़े गए और खेत जुताए गए। जो काम एक दिन में हो सकता था वह पाँच दिन में हुआ। बीज डाला गया तो सिंचाई नहीं हुई। सिंचाई हुई तो निराई नहीं हो सकी। फसल पक गई तो कटाई होने में दिक्कत हुई। काटी हुई फसल पशु खा गए, इकट्ठा किया हुआ अनाज चोर उठाकर ले गए। इस प्रकार फसल की बिक्री से जो रुपया आया उसमें से मजदूरी देने के बाद भूमिकर के लिए भी कुछ नहीं बचा।

रामू और उसकी माँ सोहनी के घर पर रहे थे। प्रतिदिन रात को नत्थूमल्ल हिसाब की बही निकाल बैठ जाता और प्रात: से लेकर सायंकाल तक जो भी खर्च होता, रामू के हिसाब में लिख लेता। आधा सेर दही रामू की माँ के लिए, चार आने की। पाव-भर दही रामू के लिए, दो आने की। चीनी एक आने की। सब्जी--टींडे, तोरी, पालक का साग, दो आने का। मिर्च, नमक, लौंग, दो पैसे के। घी, दो आने का। इस प्रकार प्रतिदिन का खर्चा बही में लिख लिया जाता।

आमदन कम और खर्च अधिक होने लगा। साहूकारों की भाँति दूसरों से लेना लिखने में सतर्क और उनका देना लिखने में भूल करना, नत्थूमल्ल का स्वभाव था।

इस प्रकार दिन-प्रतिदिन रुपया व्यय होने लगा। रामू स्कूल में पढ़ता था, उसके आने-जाने के लिए एक सौ चालीस रुपए की बाईसिकल ले दी गई। कपड़े, किताबें, जेब-खर्च अलग। इस प्रकार सब खर्च-ही-खर्च था और आय की कोई सूरत नहीं थी।

एक वर्ष में तीन हजार रुपया उड़ गया। रामू का यज्ञोपवीत संस्कार हुआ तो सात सौ रुपया उस पर खर्च हो गया। मंगल को बुलाया भी नहीं गया और उसको कई दिन पीछे पता चला। उसकी अवस्था अभी ठीक स्तर पर नहीं आई थी, इस कारण उसने जब देखा कि उसे बुलाया भी नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गया तो वह भी चुप कर रहा।

गाड़ी ढलवान पर चल पड़ी और लाला नत्थूमल्ल का अनुमान था कि दो वर्ष और लगेंगे, तब रामू को भिखमंगा बनाकर घर से निकाला जा सकेगा।

२

नत्थूमल्ल दुकान पर बैठा हिसाब देख रहा था! रामू और रामू की माँ का हिसाब शंकर रखता था। इससे वह लाला जी को बता रहा था, "पिताजी, पिछली फसल में ही केवल तीन सौ पचत्तर रुपए की हानि हुई है।"

हिसाब का चक्कर ही ऐसा होता है। व्यय करते समय पता नहीं चलता, परन्तु जब हिसाब किया जाता है तो परिश्रम से संचित धन फोकट में उड़ जाता है। जब सारा-का-सारा व्यय हो जाता है तो मनुष्य सोचता है कि कहाँ से बचत करनी चाहिए थी, परन्तु 'पीछे पछताए क्या होता है जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत' वाली बात होती है।

वर्ष के पीछे जब खर्च का हिसाब रामू की माँ को बताया गया कि बारह हजार में से केवल छः हजार शेष रह गया है तो उसे चिन्ता लगी और उसने अपने जमाई से पूछा, "जेठ की फसल का काम कैसे चल रहा है?"

"माता जी! यह खेती का काम हमसे नहीं हो सकता। मैंने इस वर्ष कुछ नहीं बुवाया।"

"तो अपने पिता से पूछकर यह भूमि किसी को पट्टे पर दे दो।"

"यही ठीक रहेगा।"

रामू की माँ कुछ पढ़ी-लिखी तो थी नहीं। वह बेचारी जैसे शंकरदास कहता उसे ठीक मानती जाती। परिणाम यह हुआ कि नगर में और आस-पड़ोस के गाँवों में डुग्गी पिटवा दी गई कि चौधरी दुर्गादास की भूमि एक वर्ष के पट्टे पर दी जाएगी। इसकी सूचना मंगल को भी मिली।

यद्यपि मंगल ने बहुत मेहनत से काम किया था, तो भी रामू की भूमि पट्टे पर लेने की हिम्मत उसमें अभी नहीं आई थी। पौष की फसल से तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वह बहुत कठिनाई से अपने खाने-भर का और मकान पर लगी लकड़ी और खपरैल का दाम दे सका था। परन्तु जेठ की फसल कुछ अच्छी रही थी। उसमें उसके पास पाँच-छः सौ रुपया बच गया था। यद्यपि उससे गाँव के सब कामे काम नहीं पा सके थे, तो भी जब फसल कट गई तो उसने सबको बुलाया और थोड़ा-बहुत प्रत्येक को दिया। इससे बहुत कठिनाई से उसने अपने पिता की मानमर्यादा की रक्षा की।

इसी बीच मोहिनी के एक लड़का हुआ। इससे अब वह उतना काम-काज नहीं कर सकती थी जितना वह पहले किया करती थी। इस पर भी घर का बहुत-सा काम एक अहीर की लड़की की सहायता से चल रहा था।

मंगल जब गेहूँ की फसल आढ़त में पहुँचाकर और अपना हिसाब गिनगिनाकर आया तो चित्त में कुछ हल्का अनुभव कर रहा था। नत्थूमल्ल के स्थान पर अब उसने लाला बंसीधर से अपना संबंध कर लिया था। लाला जी ने उसके हिसाब में तीन सौ मन गेहूँ, पाँच सौ मन भूसा और पौष मास की फसल का बकाया अस्सी रुपए दस आने लिख दिए। गेहूँ अभी बिक रहा था, भूसे के बेचने का प्रबन्ध हो रहा था। मंगल ने अपने हिसाब में से पचास रुपए लिये और उनसे मोहिनी के लिए दो साड़ियाँ, बच्चे के लिए चार कुर्तों का कपड़ा मोल लिया। साथ ही कुछ खिलौने और मिठाई लेकर घर जा पहुँचा।

मोहिनी उसको इस प्रकार लदा-फदा आते देखकर बच्चे को ले आई और उसका ध्यान मंगल की ओर खींचकर बोली, "देखिए, अब आपको पहचानने लगा है।"

"इतने खिलौने लाने पर भी नहीं पहचानेगा क्या?"

"यह सब व्यर्थ क्यों खर्च कर आए हैं? मैंने अब फिर कातना शुरू कर दिया है। दो महीनों में कपड़ा-ही-कपड़ा हो जाएगा। यह निष्प्रयोजन खर्च क्यों किया है?"

"खद्दर से मेरे कुर्ते और धोती ही बन सकेगी। खद्दर पहनती-पहनती तुम उकता गई होगी, आगे को तुम्हारे लिए बाजार से ही कपड़ा लाया करूँगा।"
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्यों ?"

"मेरी यही इच्छा है।"

"कितने की आई है यह ?"

"छोड़ो इन कंजूसी की बातों को। जरा पहनकर तो दिखाओ! देखूँ, तुम कैसी फबती हो इसमें ?"

मोहिनी का मुख लज्जा से लाल हो गया। वह खाट पर बैठ गई और बच्चे को दूध पिलाती हुई बोली, "ठीक है। बूढ़ी जो हो गई हूँ! अब मेरी फबन इन साड़ियों से ही तो होगी!"

इतना कहते-कहते उसका मुख उतर गया और प्रसन्नता जो मंगल के नगर से आने पर उसके अंग-अंग से प्रस्फुटित हो रही थी, विलुप्त हो गई। मंगल ने चिन्ता में पूछा, "क्यों! क्या हुआ है मोहिनी ?"

मोहिनी ने गंभीर साँस लेकर कहा, "जिस उत्साह से पिछले वर्ष काम किया था और जितनी मेहनत आपने की थी, सब-की-सब मिट्टी में मिल गई। माँ जी को किंचिन्मात्र भी यदि विवेक होता तो इस समय हम बहुत सुन्दर मकान में रहते होते। मैं स्वप्न देखा करती थी कि आपका लड़का उस काल्पनिक मकान में जन्म लेगा और वहाँ ही पलेगा और एक भारी जमींदार बनेगा।"

"वह तो अब भी होगा। जो हुआ है, अच्छा हुआ है। हम पिता जी की कमाई पर खड़ा होना चाहते थे। माता जी ने वह नहीं माना। उनकी कमाई का फल उन्होंने स्वयं लेना चाहा। यह इसी प्रकार है, जैसे तुम मेरी कमाई पर अपना विशेष अधिकार समझती हो। मुझे तो इसमें तनिक भी रोष नहीं। भगवान की कृपा से और माँ के दूध के बल से मैं अपने शरीर में बल और हृदय में साहस रखता हूँ और बिना किसी की सहायता के मैं तुम्हारे लिए महल बनवा सकूँगा, यह मेरा विश्वास है।"

"तुम तो ठीक काम कर लोगे, परन्तु मैं तो अपने विषय में सोचती हूँ। क्या मैं भी फिर वैसी ही मेहनत कर सकूँगी ? अब तो शरीर जरा-सा काम करने पर थक जाता है।"

"पर तुम्हारे काम करने की आवश्यकता ही नहीं है।"

मोहिनी कुछ कहने ही वाली थी कि बाहर से पुजारी की आवाज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आई, "मंगल भैया!"

"पंडित जी, आइए!" मंगल ने पुजारी को भीतर बुला लिया। यूँ तो पुजारी पहले भी घर का ही आदमी माना जाता था, परन्तु पिछले वर्ष की घटना के बाद उसने मंगल की सहायता में भारी भाग लिया था, इस कारण उसका मान घर में बढ़ गया था। वह वहाँ बेरोकटोक आता-जाता था।

पंडित जी ने अपने लिए बिछाए गए आसन पर बैठते हुए कहा, "एक समाचार है भैया!"

"क्या?"

"रामू की जमीन पट्टे पर दी जा रही है।"

"ऐसा तो होना ही था। पौष की फसल में हानि हुई है और ज्येष्ठ की बोई ही नहीं गई। पट्टे पर देने से कुछ तो मिलेगा ही।"

"तो भैया, तुम ले लो।"

"नहीं भैया! वह मेरे मान की नहीं है।"

"मेरी तो इच्छा होती है कि ले ली जाय। गाँव में ऐसी भूमि और नहीं है।"

"ठीक है। पर पंडित जी, मेरे में इतनी भूमि को जोत सकने का दम नहीं रहा। जो मेरे पास है, इसको भी मैं पूरी तरह जोत नहीं सका।"

"पर बैठे-बैठे कैसे उन्नति कर सकोगे? इस भूमि को हाथ से निकलने नहीं देना चाहिए।"

"यह ठीक है, पर इस प्रकार नहीं! मैंने अपनी उन्नति का एक और मार्ग ढूँढ निकाला है। मनोहर की उस भूमि पर जो नीची है, साग-भाजी उगवाने का विचार है। उसमें एक कुआँ भी खुदवा लूँगा।"

"उस भूमि में भाजी हो सकेगी क्या?"

"होगी। क्यों न होगी! पहले आलू लगवाऊँगा और हो सका तो चार-पाँच साल में····।"

वह कहना चाहता था कि पक्का मकान बना लूँगा, परन्तु कहता-कहता रुक गया। अपने मन का रहस्य मन में ही रहने दिया। पुजारी ने विस्मय में पूछा, "चार-पाँच साल में क्या?"

"भैया! आप लोगों का ऋणी हूँ न! वह चुका दूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बस-बस! फिर वही बात! गाँव में एक भी प्राणी ऐसा नहीं जो कह सके कि उसने तुम पर कोई एहसान किया है। उल्टे सभी यह मानते हैं कि वे तुम्हारे उपकारों के नीचे दबे हुए हैं। हाँ, सब लोग तो यही चाहते हैं कि तुम अपने भाई की भूमि भी पट्टे पर ले लो।"

"यह मैं नहीं लूँगा। मुझको उसके लेने में कल्याण दिखाई नहीं देता।"

३

जब गेहूँ बिक गया तो लाला वंशीधर के पास उसका पन्द्रह सौ रुपया जमा हो गया। उसमें से एक हजार के खर्च से, नीचे की भूमि में कुआँ खवाँ हो गया। ज्योंही उसे पौष की फसल से अवकाश मिला तो वह बाजार से गोभी के फूल, भिंडी और टमाटर के बीज ले आया और क्यारियाँ बनाकर उन्हें बो दिया। अभी एक बीघा भूमि पर ही उसने सब्जियाँ लगाई थीं।

दो मास के भीतर ही उसे इस नए आयोजन में सफलता मिलने लगी। इस खेत में काम करने के लिए उसने पाँच आदमी पृथक् लगा दिए थे। इन लोगों को पाँच रुपए मासिक, खाने को अन्न और सब्जी-भाजी देने की बात थी। जब माल बाजार में बिकने लगा तो डेढ़ सौ रुपए महीने की आय होने लगी। इससे उत्साहित हो उसने और अधिक भूमि इस कुएँ के साथ लगाकर उसमें आलू बो दिए। इसमें तो उसे और भी आश्चर्यजनक लाभ हुआ। एक बीघा में दो सौ मन से ऊपर आलू हुए अर्थात् एक बीघा में दो हजार रुपए के लगभग आय हो गई।

रामू की भूमि को गाँव में से किसी ने भी पट्टे पर नहीं लिया। हाँ, शहर के कुछ लोगों ने मिलकर इसको ले लिया। उन्होंने मशीन से हल जोतने का प्रबन्ध कर दिया। हल जुत गया! बीज भी डल गया, पर सिंचाई और निराई की कठिनाई अब भी बनी रही। बगिया के कुएँ पर जब पम्प लगवाया गया तो लोगों के कारोबार में बाधा आने लगी। पहले स्त्रियाँ नहाने-धोने वहाँ आया करती थीं। अब चौबीसों घंटे वहाँ इंजन के मिस्त्रियों का जमघट लगा रहता था। औरतें वहाँ कैसे आ सकती थीं? यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात हर रोज के विवाद का कारण बन गई।

अन्त में वहाँ के निवासियों ने वहाँ एक कुंड बनवा दिया और उसके चारों ओर दीवार बनवा दी। सहस्रों रुपयों के व्यय से और ट्रैक्टर चलानेवाले तथा पम्प चलानेवाले मिस्त्रियों के वेतन पर भारी रकम व्यय कर फसल उत्पन्न की गई थी। उससे भी लाभ कुछ नहीं हुआ।

फिर नगर के पाँच-छः आदमियों ने एक लिमिटेड कम्पनी बनाकर खेती- बारी करवाई। जब वर्ष के पीछे आय-व्यय का ब्यौरा किया तो सब ले-देकर एक सौ पचास रुपए ही बचे। इससे मालिकों को बहुत क्रोध आया। उनका यह विचार था कि काम करनेवाले मैनेजर इत्यादि फसल बेचकर खा गए हैं। इस कारण जाँच करने के लिए दो डायरेक्टर नियुक्त किए गए। वे गाँव में आए और वहाँ पर सबसे अधिक सफल आदमी को ढूँढते हुए मंगल के घर जा पहुँचे।

मंगल का घर कच्चा था, इसके सामने एक बगिया थी। इस बगिया में फूलों के कई पेड़ थे। एक ओर आम के तीन पेड़ भी थे। दूसरी ओर दूब घास भी लगी थी। मकान के कुएँ में छोटा-सा रहट लगा था, जिसको एक बैल भी चला सकता था। वह चल रहा था। मकान की बगिया में मोहिनी दो वर्ष के बालक को उँगली से पकड़े खड़ी थी और दो औरतें वहाँ हाथ में खुरपी लिये काम कर रही थीं।

बगिया के चारों ओर बाँस की टटरी लगी थी जिस पर काशीफल की बेल चढ़ रही थी। दो अपरिचित पुरुषों को बाहर खड़ा देखकर मोहिनी ने काम करनेवाली औरतों में से एक को कहा, "बाहर जाकर पूछो तो, ये लोग क्या चाहते हैं ?

उसने जाकर उनसे पूछा, "क्या चाहते हैं आप ?"

"चौधरी मंगलदास का मकान यही है क्या ?"

"हाँ, यही है।"

"चौधरी घर पर हैं ?"

"नहीं, वह···वह देखिए आ रहा है।" आते हुए मंगल को दिखाकर औरत भीतर आ गई। मोहिनी भीतर चली गई।

चौधरी अपने खेत की कुछ ताजी मूलियाँ कुएँ के पानी से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धुलवाकर उठाए हुए आ रहा था। उसके एक हाथ में पाँच-छः मूलियाँ और दूसरे हाथ में लाठी थी। वह छः फुट लम्बा, हृष्ट-पुष्ट युवक नगर के इन दो लोगों को अपने मकान के दरवाजे पर खड़ा देखकर वेग से पग उठाता हुआ चला आया। जब वह वहाँ पहुँचा तो प्रश्नभरी दृष्टि से उनकी ओर देखता हुआ उनके सामने खड़ा हो गया। वे लोग विस्मय में उसको देखते रह गए। एक ने साहस बाँधकर पूछा, "चौधरी मंगलदास आपका नाम है?"

"हाँ, कहिए क्या काम है?"

"आपसे एक विषय में बात करना चाहते हैं।"

"तो आ जाइए।" इतना कहकर उसने आवाज दी, "ओ सुगनी! लो, यह चौधराइन को दे आओ और कहना कि अभी इन लोगों से निबटकर खाने के लिए आता हूँ।"

मकान के बाहर एक तख्तपोश रखा था। उस पर उनको बैठाकर पूछने लगा, "बताइए साहब, क्या आज्ञा है?"

"बात यह है कि रामू के खेत हमने पट्टे पर लिये हुए हैं।"

"ये मशीनें आपकी ही चलती हैं?"

"हाँ! हमने इन पर तीस हजार रुपया व्यय किया है। इन तीस हजार रुपयों में से बीस हजार मशीनों की लागत आई है। घिसाई पर दो हजार रुपए अलग लगे हैं। दस हजार रुपए वेतन इत्यादि में और भी खर्च हुए हैं। इस प्रकार बारह हजार रुपए खर्च होने पर भी फसल की कीमत बारह हजार एक सौ रुपए मिली है। थोड़े में यह कि हमें केवल एक सौ पचास रुपए का ही लाभ हुआ है। हमें पता लगा है कि आप यहाँ पर खेती से बहुत लाभ उठा रहे हैं। इस कारण हम आपसे इसका रहस्य पूछने को आए हैं।"

"मैं एक अनपढ़ व्यक्ति भला आपको क्या रहस्य बता सकूँगा? मैं तो उसी ढंग पर काम करता हूँ जिस पर मेरे बाप-दादा करते आए हैं।"

"फिर भी यदि हम आपसे कुछ पूछें तो आप उसका उत्तर देंगे क्या?"

"क्यों न दूँगा! इसमें छुपाने की क्या बात है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आपने पिछले वर्ष कितने बीघा भूमि में गेहूँ बोया था ?"

"पन्द्रह बीघा में गेहूँ, और तीन बीघा में ज्वार-बाजरा इत्यादि। दो बीघा नीची भूमि थी, वहाँ कुछ नहीं बो सका। इस वर्ष यहाँ एक कुआँ लगवाकर सब्जियाँ लगवाई हैं।"

"पन्द्रह बीघा में कितना गेहूँ हुआ है ?"

"चार सौ मन से ऊपर हुआ था।"

"तो प्रति बीघा में सत्ताइस मन के लगभग हुआ है। गेहूँ तो हमारे खेतों में अधिक हुआ है। हमारी औसत बत्तीस मन पड़ी है।"

"यह तो ठीक है ही। आपने विलायती खाद डाली थी। मैंने देसी खाद ही डलवाई थी। आपके हल बहुत बढ़िया हैं। गहरा खोदते हैं। हमारे देसी हल छः इंच से गहरे नहीं जाते।"

"इस पर भी हम कुछ नहीं बचा सके।"

"इसका कारण है। हम कृषक लोग भूमि के प्राणी हैं। भूमि-सम्बन्धी सब रहस्यों को जानते हैं। हम यहाँ रहते हुए अपनी सब आवश्यकताओं को यहीं से पूरी कर लेते हैं। देखिए, मेरे खेतों में काम करनेवाले मुझसे नकद वेतन नहीं लेते। वे मेरी उपज में से हिस्सा बँटाते हैं। चार सौ मन गेहूँ में से एक सौ मन मैंने काम करनेवालों में बाँट दिया। भूसे में से वे अपने बैलों के लिए भूसा ले गए हैं। जब फसल बिक गई तो दस-दस रुपए प्रत्येक काम करनेवाले को बाँट दिए। फिर हमारे कामें नगर में जाकर अपना धन व्यय नहीं करते, अन्यथा इतने रुपयों से उनका काम कैसे चले ?....आपके मशीनी हल चलानेवाले क्या वेतन लेते हैं ?"

"एक सौ बीस रुपए मासिक।"

"और कुएँ पर पम्प चलानेवाले ?"

"साठ रुपए मासिक।"

"और जमादार ?"

"एक सौ रुपया मासिक।"

"खेत में काम करनेवाले ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

"प्रत्येक पचीस रुपए माहवार।"

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आप कैसे कहते हैं कि हानि हुई है?"

"हमको एक सौ पचास रुपए ही बचे हैं, जो इतने परिश्रम और धन खर्च करने के लिए कुछ भी नहीं।"

"इतने लोगों को जो वेतन आपने दिया है, यह क्या लाभ नहीं है? देखिए! मैं अपने खेत में काम करता हूँ, मेरी स्त्री भी काम करती है। जो दूसरे आदमी काम करते हैं उनमें से प्रत्येक आदमी की स्त्री, और उनके बाल-बच्चे और वह स्वयं भी काम करता है। साथ ही इस उपज से हमारा निर्वाह भी होता है। जो कुछ हमें बचता है वह इस किफायत के निर्वाह से ही तो बचता है! जो काम करता है वही तो मजदूरी पाने का हकदार है। आपके खेतों में भी जिन्होंने काम किया है वे लाभ उठा गए हैं। आप मालिकों ने कुछ काम नहीं किया, और यदि आपको कुछ नहीं बचा तो यह स्वाभाविक बात है।"

"रुपया लगानेवाले को कुछ नहीं मिलना चाहिए क्या?"

"रुपया प्राणरहित वस्तु है। मनुष्य से मनुष्य उत्पन्न होता है, परन्तु रुपए को रुपया उत्पन्न करते किसी ने नहीं देखा। परिश्रम से फल मिलता है। रुपया स्वयं परिश्रम नहीं कर सकता।"

"पर दूसरे व्यापारों में तो रुपए से रुपया बनता है।"

"मुझको आप शहरवालों के व्यापार का ज्ञान नहीं। मैं तो यहाँ की बात कहता हूँ। देखिए, मेरे पास जो भूमि है वह पाँच वर्ष परती पड़ी रही और इसने एक पैसे का अन्न पैदा नहीं किया। रुपया तो तब भी लगता था। अन्न तो मैंने और मेरे साथियों ने दिन-रात एक करके मेहनत से उत्पन्न किया है।"

"पर भूमि न होगी तो मेहनत कहाँ करोगे?"

"ठीक है, भूमि है रामू की। उसको भूमि का भाग मिल गया। मशीन की घिसाई मशीन को मिल गई। रुपए का सूद बैंक को मिल गया। काम करनेवालों को वेतन मिल गया। सरकार को भूमि-कर मिल गया। अब तुम लोगों को क्या मिले? उसके लिए आपने किया ही क्या है?"

वे शहर के पढ़े-लिखे लोग मंगल के सामने निरुत्तर होकर, अपना-सा मुख लेकर चले गए। एक बात उनकी समझ में अवश्य आ गई; वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह कि खेती-बाड़ी काम है, व्यापार नहीं है। जो करता है वह फल पाता है। इस काम में भारी वेतन भी नहीं मिल सकता।

४

रामू और उसकी माँ अब एक किराए के मकान में पृथक् रहते थे। उन्हें भूमि पट्टे पर देने से पाँच सौ रुपया वार्षिक आय हुई थी। इसमें से अढ़ाई सौ रुपया वार्षिक किराए पर मकान मिला था। अढ़ाई सौ शेष रहे। उनसे वर्ष-भर का खर्च कैसे चल सकता था? इस कारण लाला नत्थूमल्ल के पास जमा हुए धन में से प्रति मास कुछ-न-कुछ निकालकर खर्च किया जा रहा था।

इस प्रकार दो वर्ष व्यतीत हो गए। वह मक्खन, लस्सी और दूध जो रामू और उसकी माँ को गाँव में मिलता था, यहाँ भाग्य में नहीं था! जो दो सेर दूध नित्य बाजार से लिया जाता था, उसमें आधा पानी मिला होता था। साथ ही दूध पर ही प्रति मास बीस रुपए खर्च हो जाते थे। आटा भी बाज़ार से ही आता था। दाल, चावल, सब्जी-भाजी, कपड़ा, नमक, मिर्च—अभिप्राय यह कि जीवन-निर्वाह की प्रत्येक वस्तु दाम पर मिलती थी। घर में बिजली थी, पानी का नल था, इनका भी दाम देना पड़ता था। इस प्रकार सब खर्च-ही-खर्च था। आय का कोई विशेष साधन नहीं था। परिणाम यह हो रहा था कि रामू और उसकी माँ दोनों दुबले होते जा रहे थे।

एक आशा रामू की माँ को थी। वह यह कि रामू पढ़कर योग्य होगा तो रुपया कमाएगा। नगर की सफाई, नगर के पार्कों का सौन्दर्य, पक्की सड़कें, सुन्दर मकान, अजायबघर, चिड़ियाघर, गगन-भेदी कलशों वाले मन्दिर—ये सब वस्तुएँ ऐसी थीं जो गाँव में नहीं थीं और न हो सकती थीं। परन्तु इन सबके सुख-स्वादन के लिए धन की आवश्यकता थी। धन इनके पास था, पर दिन-प्रतिदिन कम हो रहा था। आशा यही थी कि रामू दो वर्ष में पढ़-लिखकर नौकरी कर सकेगा, तब सुख-सुविधा हो जायगी।

रामू सातवीं श्रेणी में अनुत्तीर्ण रहा, पर उसने घर में यह बात नहीं बताई। आसपास के लड़के उत्तीर्ण होकर जब उछलते-कूदते अपने-अपने घर आए तो रामू की माँ रामू के भी इसी प्रकार आने की राह देखने लगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जब वह सायंकाल को आया तो माँ ने उससे पूछा, "रामू, तुम भी पास हो गए हो क्या?"

"हाँ माँ!" रामू ने निःसंकोच भाव से कहा, "मैं लड़कों के साथ घूमने चला गया था।"

"तो अब तुम आठवीं श्रेणी में चढ़ गए हो?"

"हाँ माँ!"

"बेटा, जल्दी-जल्दी परीक्षाएँ पास करो। जो कुछ हमारे पास है वह तो समाप्त होता जाता है। यदि तुम कुछ कमाओगे नहीं, तो खाएँगे कहाँ से?"

"माँ, क्या गाँव वापस नहीं लौट सकते?"

"वहाँ तुम्हारी भूमि को जोते-बोएगा कौन?"

"भैया नहीं बोएँगे अब?"

"उसकी डायन बीवी, तुम्हारी भाभी, उसे हमारा काम करने देगी क्या?"

रामू चुप रह गया और माँ से कुछ रुपए लेकर किताबें खरीदने चला गया। पास तो हुआ नहीं था, इससे किताबें खरीदने की आवश्यकता नहीं थी। रुपए जब हाथ में आ गए तो वह सिनेमा देखने को चला गया। वहाँ 'अलीबाबा चालीस चोर' की फिल्म चल रही थी। रामू कई बार यह फिल्म देख चुका था, फिर भी समय टालने के लिए वहीं चला गया।

चित्र देखने में उसकी रुचि नहीं हुई। वहाँ बैठा-बैठा मन में कल्पना करने लगा। वह भी अपने को कहीं पहाड़ की कन्दरा के सामने खड़ा 'सिम...सिम' कहते हुए विचारने लगा। चट्टान के मुख खोलने पर वहाँ पड़े हुए अतुल धन को पाने का स्वप्न देखने लगा।

इस प्रकार की व्यर्थ की कल्पना करता हुआ और एक रुपया किताबों के हिसाब में से व्यय कर घर लौट आया। माँ ने उसको खाली हाथ लौटते देखकर पूछा, "किताबें नहीं लाए?"

"आज भीड़ बहुत थी, कल खरीदूँगा।"

अगला दिन भी गया और उससे अगला दिन भी। पुस्तकें खरीदने की रामू को आवश्यकता नहीं हुई। माँ का ध्यान भी चूक गया। घर से जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्कूल की फीस ली थी, वह भी स्कूल नहीं पहुँची। अन्त में उसने स्कूल जाना ही छोड़ दिया। बस्ते में पुरानी किताबें भरकर ले जाता। घर से तो स्कूल की ओर ही जाता, परन्तु कुछ दूर जाकर वह मैदान में चला जाता और वहाँ पर बाजारू लड़कों के साथ गुल्ली-डंडा, कबड्डी, आँख-मिचौनी इत्यादि खेल खेलता रहता था।

एक दिन जब वह खेल में मस्त था तो उसका बस्ता ही कोई और उठाकर ले गया। घर जाकर माँ से उसने बताया ही नहीं। अगले दिन जब जाने लगा तो माँ ने पूछा, "किताबें नहीं ले-जा रहे रामू?"

"माँ, कल से किताबें स्कूल में ही रखी जाती हैं।"

माँ को कुछ आश्चर्य तो हुआ, परन्तु चुप कर रही।

एक दिन जब वह खेल के मैदान में गया तो उसके साथी नहीं आए थे। वह अकेला बैठा-बैठा विचार करने लगा कि मेरा स्कूल में अनुपस्थित रहना एक दिन माँ को विदित हो जायगा। तब मुझे कितनी लज्जा उठानी पड़ेगी! बहिन क्या कहेगी? जीजा जी पीटेंगे और सब लोग मुझे फटकारेंगे। इतना विचार कर वह अपने भविष्य के विषय में सोचने लगा—'अब पढ़ने में तो मेरा जी नहीं लगता। फिर भी कुछ काम तो करना ही चाहिए। क्या करूँ?' जब ये प्रश्न उसके मन में उठे तो उनका स्वयं ही उत्तर देने लगा—'दुकानदारी तो मुझसे होगी नहीं। खेती-बारी बहुत परिश्रम चाहती है और उसके लिए फिर गाँव में जाकर रहना होगा। नौकरी! उसके लिए मैं पढ़ा-लिखा नहीं। चपरासी की नौकरी का वेतन बहुत कम होगा। तो क्या करूँ?' इस प्रश्न का उत्तर वह पा नहीं सका। आज वह अपने मन में उठ रहे विचारों के कारण उदास था। इससे उसका चित्त वहाँ से चल देने को हो गया। वह उठा और सड़कों पर घूमने लगा।

आज उसके मन में भय समा गया था। वह समझता था कि मैंने महीनों ही माँ तथा बहिन को धोखा दिया है। इससे मैं पीटा जाऊँगा। इसके साथ ही वह अपने बेकार जीवन से उचाट भी हो गया था। बिना काम के नित्य घूमते रहना उसके लिए अब कठिन हो गया। एक धुँधला-सा चित्र कि अब क्या करना चाहिए, उसके मन में बनता जाता था। यद्यपि इस चित्र की रेखाएँ अभी स्पष्ट नहीं हुई थीं, तो भी वह यह समझ गया था कि मेरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना वर्तमान जीवन अधिक काल तक नहीं चल सकेगा।

सड़कों पर घूमता हुआ वह रेल के स्टेशन पर पहुँच गया। एक गाड़ी प्लेटफॉर्म पर खड़ी थी। उस गाड़ी को देखकर उसके मन में एक विचार उठा। वह सोच रहा था कि अब वहाँ से चल देना चाहिए। कहाँ? जहाँ गाड़ी ले-जाय। उसके पास टिकट के लिए भी दाम नहीं थे। हाथ जेब में डालकर देखा तो पता चला कि केवल चार आने ही शेष हैं। इनसे क्या होगा? इस पर भी उसका मन कह रहा था कि चलना चाहिए। वह प्लेटफॉर्म पर जाने के लिए स्टेशन की ड्योढ़ी में गया। वहाँ फाटक पर रेल के बाबू को खड़े टिकट देखते हुए पाकर वह झिझक गया। इस बाधा ने उसकी इच्छारूपी अग्नि पर घी का काम किया। वह स्टेशन से बाहर निकल आया और रेल की सड़क के साथ-साथ चलता हुआ वहाँ तक चला गया जहाँ तक स्टेशन का जंगला था। वहाँ से लाइन पर आकर वह स्टेशन के भीतर घुस आया। गाड़ी अभी भी प्लेटफॉर्म पर खड़ी थी। वह बिना इस बात को जाने कि गाड़ी कहाँ जा रही है, उसमें चढ़ गया। वह थर्डक्लास का डिब्बा था। डिब्बे में केवल तीन आदमी बैठे थे। वह भी एक कोने में बैठ गया।

गाड़ी चलने तक कई और लोग भी आ बैठे। गाड़ी चली तो उसे विचार आया कि यदि कोई टिकट देखने गाड़ी में आ गया तो क्या होगा? पास तो कुछ है नहीं, कहाँ से देगा? तब क्या होगा? इसका अनुमान लगाने में असमर्थ होने से उसने इस विषय में विचारना ही छोड़ दिया।

वह खिड़की के समीप बैठा था। जब गाड़ी चली तो सड़क के किनारे के खेत, पेड़ और तार के खम्बे वेग से पीछे की ओर भागते देखकर उसके मन को अचम्भा प्रतीत हुआ। वह जल्दी-जल्दी बदलते दृश्य देखने में इतना लीन हुआ कि अपने घर को, माँ को, बहिन को और अपनी जेब में केवल चार आनों को भी भूल गया।

स्टेशन के पश्चात् स्टेशन आए और गाड़ी चलती गई। रामू सो गया। रात हो गई तो उसकी नींद खुली। एक स्टेशन पर गाड़ी खड़ी हुई तो उसने दो आने खर्च कर कुछ खाया। उससे पेट नहीं भरा, पर वह अपने सब पैसे खर्च करना नहीं चाहता था। पुनः गाड़ी चली और वह सो गया। दिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चढ़नेवाला था कि टिकट देखनेवाला आ गया। उसने रामू को हिलाया तो उसकी नींद खुली। वह रेल के बाबू को अपने सामने खड़ा, टिकट माँगते देख, आँखें मलता हुआ उसकी ओर देखने लगा। बाबू बोला, "टिकट निकालो!"

रामू चुप बैठा रहा। बाबू ने फिर पूछा, "टिकट है?"

रामू ने सिर हिला दिया।

उसने पूछा, "कहाँ जा रहे हो?"

रामू ने पुनः सिर हिला दिया।

"क्या मतलब?"

"मैं नहीं जानता।"

"कहाँ से आए हो?"

रामू अपने घर का पता बताना नहीं चाहता था। इससे चुप रहा। इस पर अगले स्टेशन पर टिकट बाबू ने रामू को गाड़ी से नीचे उतार लिया और वहाँ के स्टेशन मास्टर के हवाले कर दिया। लड़के को स्टेशन मास्टर ने अपने कमरे में चपरासी के पास बैठा दिया। जब गाड़ी चली गई, तो स्टेशन मास्टर ने उसके पास आकर पूछा, "कहाँ से आए हो लड़के?"

रामू ने जम्मू का नाम सुन रखा था। इस कारण उसने कह दिया, "जम्मू से।"

"बाप का क्या नाम है?"

"मर गया है।"

"माँ, भाई-बहिन, किसी का पता बताओ।"

"कोई नहीं है।"

"झूठ बोलते हो। यह रेशमी कुर्ता कहाँ से पहना है?"

"एक लाला की नौकरी करता था। उसके लड़के का कुर्ता है।"

"क्या नौकरी करते थे?"

"बाज़ार से सब्जी-भाजी ला देता था। उनके बच्चों को खिलाता था।"

"फिर?"

"कल बाबी ने मारा तो घर से निकल आया। कहीं और जगह
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नौकरी करने को चल पड़ा हूँ। जेब में दो आने हैं। और कुछ नहीं।"

"कहाँ जा रहे थे?"

"जहाँ तक रेलगाड़ी ले जाती। पास टिकट के पैसे नहीं हैं।"

स्टेशन मास्टर को रामू पर दया आ गई। उसने समझा, थोड़े-से पैसों के लिए लड़के को पुलिस के हवाले करने से इसका जीवन नष्ट हो जायगा। उसको स्वयं नौकर की आवश्यकता थी। इस कारण लड़के की आँखों में आँसू देखकर पूछा, "नौकरी करोगे?"

रामू ने समझा बच गया। इससे उसने तुरन्त उत्तर दे दिया, "जी हाँ।"

"क्या काम करोगे?"

"बर्तन मलने के अतिरिक्त और सब-कुछ।"

"भागोगे तो नहीं?"

"पीटेंगे नहीं, तो नहीं भागूँगा।"

"चोरी तो नहीं करोगे?"

"जी नहीं।"

"जानते हो किस स्टेशन पर हो?"

"जी नहीं।"

"अच्छी बात, सो रहो। प्रातःकाल तुम्हें शहर भेज दूँगा। मैं वहाँ रहता हूँ। वहाँ तुम्हें घर का काम-काज करना होगा। पाँच रुपए महीना और रोटी-कपड़ा मिलेगा।"

रामू चुप रहा। वह मन में सोच रहा था कि पाँच रुपए तो कुछ नहीं। परन्तु वह कुछ कहना नहीं चाहता था। उस मुसीबत से बचने के लिए वह सब-कुछ कर सकता था।

५

ऐमिनाबाद का स्टेशन-मास्टर रामेश्वरदास, गुजराँवाले में अपना परिवार रखे हुए था। यद्यपि उसको ऐमिनाबाद में क्वार्टर मिल सकता था, परन्तु उसका अपना निज का मकान गुजराँवाला में होने से, उसका परिवार वहाँ ही रहता था। रामू को रामेश्वरदास ने अपनी स्त्री के पास भेज दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो दिन में ही रामू नौकरी से उचाट हो गया। जिस लाड़-प्यार से वह अपनी माँ के पास रहता था, वह यहाँ कहाँ? घर में तो अच्छा खाना खाने, अच्छे-अच्छे कपड़े पहनने और जब से वह फेल हुआ था, दिन-भर नगर में आवारागर्दी करने के अतिरिक्त उसका कोई और काम ही न था। यहाँ प्रात:काल उठने से लेकर सायंकाल तक कुछ-न-कुछ काम करना होता था। उसके नैत्यिक काम थे—प्रात: दूध लेने जाना, फिर अपने और अपनी मालकिन के कपड़े धोना-निचोड़ना, छाँटना और सुखाना। बच्चों के बस्ते उठाकर उनको स्कूल में पहुँचाना। वहाँ से लौटकर उसे सूखी रोटी मिलती और फिर दोपहर को बाज़ार से सौदा-सुल्फ खरीदने के लिए जाना पड़ता। सायंकाल को फिर बच्चों को स्कूल से लाना पड़ता। इसके साथ सायंकाल के लिए सब्जी-भाजी खरीदने जाना, दोनों समय आग सुलगाना, रात को भोजन कर बिस्तर लगाना और कभी मालकिन के पाँव दबाने आदि काम भी करने होते।

रामू को गुजराँवाला में आए तीसरा दिन ही हुआ था कि वह इस नौकरी से ऊब गया। दोपहर के समय वह भोजन कर आराम कर रहा था कि रामेश्वरदास घर आ गया। वह सप्ताह में पूरे एक दिन की छुट्टी ले घर आ जाया करता था। अपने असिस्टेंट को डबल ड्यूटी देकर वह गुजराँवाला में सारा दिन गुजारा करता था। घर आकर उसने अपनी स्त्री से रामू के विषय में पूछा, ''नौकर कैसा है ?''

रामू आँखें मूँदे लेटा था। उसके कान में जब मालिक के ये शब्द पड़े तो वह आँखें मूँदे हुए पड़ा रहा और सचेत होकर सुनने लगा। मालकिन ने कहा, ''मुझको तो यह किसी रईस का लड़का मालूम होता है। यह काम करना जानता ही नहीं! आग जलाने के समय रो पड़ता है। सूखी रोटी बहुत कठिनाई से गले से नीचे उतारता है। मैं कहती हूँ कि उसके घर का पता कर उसको घर वापस भेज देना चाहिए।''

''हमें क्या पड़ी है ?'' रामेश्वरदास ने उत्तर दिया, ''इसको खाने को अच्छा दो। शेष रहा काम करना, सो कुछ दिनों में सीख जावेगा।''

''मुझको इसके माता-पिता पर दया आती है।''

''मैंने यहाँ कोई धर्मशाला तो नहीं खोली हुई। भूले-भटकों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को घर पहुँचाने का काम मैंने अपने सिर पर तो लिया नहीं। उसको नौकरी करनी है तो करे, नहीं तो चला जाय। जब तक यहाँ रहेगा, इसे वेतन और भोजन मिलता रहेगा।''

रामू ने करवट बदलकर पुनः सो जाने का बहाना किया। परन्तु रामेश्वरदास ने आवाज़ दी, ''ओ रामू!''''उठो रामू!''

रामू आँखें मलता हुआ उठ खड़ा हुआ। स्टेशनमास्टर ने कहा—''एक गिलास पानी लाओ!''

रामू जब पानी लेने गया तो रामू के मालिक और मालकिन घूमने जाने को तैयार होने लगे। रामू पानी लाया। बाबू साहब ने पानी पिया और अपनी स्त्री के साथ घूमने चले गए। बच्चे स्कूल गए हुए थे। रामू घर की रखवाली के लिए रह गया।

एकान्त में बैठा वह अपनी अवस्था पर विचार करने लगा। उसे अपने किए पर पश्चात्ताप होने लगा। वह सोचने लगा कि क्या घर लौट जाऊँ? अब उसके मन में उसके वियोग में माँ के रोने का विचार आया तो उसके भी आँसू टपक पड़े। वह उठा और मकान का दरवाजा बाहर से बन्द कर निकल गया। बाज़ार में पहुँचकर उसने किसी से रेल के स्टेशन का पता किया और उस ओर चल पड़ा।

स्टेशन पर पहुँचकर उसे भीतर जाने में वही कठिनाई आई जो उसे अपने नगर में आई थी। इस कठिनाई को भी उसने वैसे ही पार किया जैसे पहले किया था। प्लेटफॉर्म पर पहुँचकर वह उस गाड़ी में जो वहाँ उस समय खड़ी थी, सवार हो गया। उसको किसी से पूछने का ध्यान ही नहीं आया कि गाड़ी किधर जा रही है?

उसके बैठते ही गाड़ी चल पड़ी और रामू दो घंटे में लाहौर जा पहुँचा। लाहौर के बड़े स्टेशन को देखकर वह चकित रह गया। कई गाड़ियाँ खड़ी थीं। सैकड़ों लोग इधर-से-उधर और उधर-से-इधर आ-जा रहे थे। लाहौर पहुँचकर वह गाड़ी, जिसमें रामू था, खाली हो गई। विवश उसको वहीं उतरना पड़ा। उतरकर वह बाहर निकलने का उपाय सोचने लगा।

लाहौर का नाम उसने पहले ही सुना हुआ था। अब वहाँ पहुँचकर वह उसको देखने की इच्छा को रोक नहीं सका। उसकी जेब में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब दो आने भी नहीं थे, जो गुजराँवाला पहुँचने के समय थे। पिछले दिन वह उनसे मिठाई लेकर खा चुका था। कपड़े मैले हो चुके थे। इससे उसे अपनी अवस्था पर रोना आ रहा था। वह एक प्लेटफॉर्म से दूसरे पर और दूसरे से तीसरे पर घूमने लगा। जब भी वह बाहर निकलने लगता, फाटक पर टिकट बाबू को देखकर लौट जाता। इस समय उसको भूख भी लग आई थी। इस प्रकार परेशान हो वह एक बैंच पर बैठ गया।

बहुत देर तक वहाँ बैठा रहा और कुछ उपाय न पाकर वह मन में टिकट-बाबू के पास जाकर अपनी अवस्था बताकर उससे सहायता की याचना करने का विचार करने लगा। अभी वह यह करने का साहस बाँध ही रहा था कि प्लेटफॉर्म पर एक गाड़ी आकर खड़ी हो गई। इस गाड़ी में सवार होनेवालों से प्लेटफॉर्म भरा पड़ा था और गाड़ी में से भी सहस्त्रों लोग उतरे थे। इस कारण वहाँ बहुत भीड़ हो गई थी। एक विचार उसके मन में यह भी आया कि उस गाड़ी में सवार हो जाए और जहाँ भी वह गाड़ी जाती है, चला जाए। परन्तु भूख का प्रश्न इससे नहीं सुलझता था।

इस समय लोग गाड़ी से उतरकर अपना सामान कुलियों से उठवा बाहर की ओर जाने लगे। भीड़ अधिक होने के कारण कन्धे से कन्धा भिड़ रहा था। रामू इस चल-चित्र को देख ही रहा था कि उसके पास से दो कुली बड़े-बड़े ट्रंक उठाए निकल गए। उनके पीछे एक युवा पति और उसके साथ गोदी में बच्चा लिये हुए उसकी पत्नी उसके आगे से निकले। औरत ने गोदी में बच्चे को कंधे से लगाया और चलती रही। वह एक ही पग आगे बढ़ी होगी कि उसके आँचल से एक छोटी-सी रूमाल में बँधी गठरी उसके पाँव के पास आ गिरी। रामू उस स्त्री की ओर देख रहा था। जब उसका ध्यान उस गठरी पर गया, तो उसने उसे उठा लिया। पहले तो उसके मन में आया कि उनको आवाज देकर उन्हें वह दे दे, परन्तु उसी समय पीछे से पाँच-छः मुसाफिर अपनी गठरियाँ उठाए आ गए और उसको डाँटने लगे, "रास्ता क्यों रोके हो? एक तरफ हट जाओ!"

रामू गठरी उठाकर एक ओर हटा और दूसरे मुसाफिर आ गए। इतने में वह युवक और उसकी स्त्री भी दूर निकल गए और उसकी दृष्टि से ओझल हो गए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामू भी उसी ओर चल पड़ा, परन्तु भीड़ अधिक होने के कारण उन तक पहुँच नहीं सका और वे फाटक से बाहर निकल गए।

रामू भीड़ के साथ फाटक में से उनके पीछे-पीछे निकलना चाहता था, परन्तु निकल नहीं सका। इतने में एक परिवार के बहुत-से लोग और बच्चे फाटक से निकलने को आए और रामू उनमें धकेला जाता हुआ बाहर निकल गया। जब रामू से टिकट माँगा गया तो उसने हाथ से पीछे को संकेत किया। बाबू इस परिवार के बच्चों को गिनने लगा। इतने में रामू ड्योढ़ी से भी पार हो गया था। जब वह सड़क पर पहुँचा तो उसका ध्यान हाथ में आई गठरी की ओर गया। उसने एक बार फिर उस दम्पती को देखने का यत्न किया, पर वे दिखाई नहीं दिए।

अब रामू ने यह देखने का यत्न किया कि देखूँ उसमें बँधा क्या है? उसने बाहर से दबाकर देखा। कुछ कागज और कुछ रुपए प्रतीत हुए। अब उसने उस गठरी को खोल डाला। उसमें आठ रुपए सात आने एक थे और तीन नोट दस-दस रुपए के और थे। रामू ने रुपए जेब में रखकर पहला काम यह किया कि एक हलवाई की दुकान पर पहुँचकर अपनी भूख मिटाई।

रामू रात बिताने की चिन्ता में था। जिस हलवाई की दुकान से उसने पूरियाँ खाई थीं, वहाँ से पूछने पर उसे एक सराय का पता मिल गया। रामू वहाँ जा पहुँचा। सराय के ठेकेदार ने उसको सिर से पाँव तक देखा और उसके मैले कपड़ों को देखकर पूछा, "क्या नाम है तुम्हारा?"

"रामदास।"

"कहाँ से आए हो?"

रामू ने फिर झूठ बोल दिया, "जम्मू से।"

"कोई सामान नहीं है?"

"नौकरी करने आया हूँ।"

"रात का किराया?"

"कितना चाहिए?"

"कमरे का भाड़ा तो आठ आने प्रतिदिन होगा। खाट लोगे तो एक आना और देना होगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामू ने जेब में हाथ डाल एक रुपया निकाला और ठेकेदार के सामने रख दिया। जगह मिल गई। शेष रक़म ताले की जमानत रख ली गई। रामू जब कमरे में जाकर खाट पर लेटा तो अपनी अवस्था पर विचार करने लगा। उसने समझा कि ये अड़तीस रुपए जो उसे अनायास ही मिल गए हैं, वे परमात्मा ने दिए हैं। इससे वह परमात्मा का धन्यवाद करने लगा। उसके -मन में यह विचार उठा कि गुजराँवाला में नौकरी की तो सूखी रोटी खाने को मिली, और अब परमात्मा की कृपा से अनायास बढ़िया पूरी, साथ ही इतने रुपए मिले हैं। नौकरी से तो यही अच्छा है। वह भगवान से यही प्रार्थना करने लगा, 'क्या ही अच्छा हो, यदि इसी प्रकार मुझे कुछ मूर्ख लोग मिल जाया करें, जो रुपए मेरे सामने फेंककर चल दिया करें और मेरा निर्वाह हो जाया करे!'

इन्हीं विचारों में वह सो गया और रात-भर रुपए मिलने और फिर गुम हो जाने के स्वप्न देखता रहा।

अगले दिन वह उठकर शौचादि से निवृत्त होकर बाजार से साबुन ले आया और सराय में लगे नल पर उसने कपड़े धोए, सुखाए और पहने। फिर बाज़ार को खाना खाने चला गया। सड़क पर घूमता हुआ वह यही विचार कर रहा था कि भगवान आज भी कोई उसे अकल का अंधा मिला दे जो उसके सामने रुपयों की गाँठ फेंक जाय तो क्या ही अच्छा हो!

दिन-भर वह घूमता रहा, परन्तु वैसा अवसर उसे नहीं मिला। वह प्लेटफॉर्म-टिकट लेकर स्टेशन के भीतर भी गया और कई घंटे उसी बैंच पर बैठा रहा जिस पर पिछले दिन बैठे उसे रुपए मिले थे। आज कोई ऐसी घटना नहीं घटी। रात हो जाने पर और भूख लग आने पर वह उठा और निराश बाहर आ खाना खाकर सराय में जा पहुँचा। उसने ठेकेदार को कहा, "अभी नौकरी नहीं मिली, इसलिए आज रात भी यहीं रहूँगा।"

इतना कहकर उसने नौ आने ठेकेदार के सामने रख दिए और कमरे में जाकर लेट रहा।

इस प्रकार दिन-पर-दिन व्यतीत होने लगे, रुपए कम होने लगे और उसकी घबराहट बढ़ने लगी। उसकी जेब में पाँच रुपए और कुछ आने शेष रह गए। वह फिर स्टेशन के प्लेटफ़ॉर्म पर [illegible] उसी बैंच की ओर जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा था कि उसे एक अच्छा प्रभावशाली मनुष्य सिर पर डोगराई पगड़ी बाँधे और पाँव में चमचमाता जूता पहने चला आता दिखाई दिया। रामू ने उसकी ओर देखा तो उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह कोई विशेष व्यक्ति है। इस कारण वह उसे देखने को खड़ा हो गया। वह व्यक्ति जब रामू के पास से गुजरने लगा तो उसने अपनी अचकन की जेब से रूमाल निकाला और उससे नाक साफ करने लगा। रूमाल के साथ ही उसकी जेब से चमड़े का 'बटुआ' निकला और भूमि पर गिर पड़ा। रामू ने समझ लिया कि आज भगवान फिर दयालु हुआ है। जब वह व्यक्ति कुछ दूर निकल गया तो रामू ने झुककर बटुआ उठाया और उस आदमी से उलटी ओर चल पड़ा। इस दिन रामू ने यत्न नहीं किया कि उस आदमी के पीछे जाए और उसकी वस्तु वापस करने का यत्न करे। एक काम बार-बार करते रहने से अन्तरात्मा की आवाज़ सुनाई नहीं देती।

वह स्टेशन के दूसरे फाटक से बाहर निकला और सराय में जा पहुँचा। उसके पहुँचने पर सराय के ठेकेदार ने पूछा, "क्योंजी रामदास, अभी नौकरी नहीं मिली?"

"नहीं। पर मैं सोच रहा हूँ कि कल ही लाहौर से किसी और शहर चला जाऊँ। शायद अमृतसर में काम बन जाए!"

रामू ने अगले दिन के नौ आने जमा कराए और अपने कमरे में चला गया। वहाँ जाकर दरवाज़ा बन्द कर उसने बटुआ खोला और देखा कि उसमें दस-दस रुपए के बयालीस नोट और रेल का टिकट था। यह टिकट सियालकोट से बम्बई तक का था। एक खाने में कुछ रेज़गारी भी रखी थी। रामू अपनी उस दिन की प्राप्ति से बहुत प्रसन्न हुआ। उसके मन में दो विचार आए। एक तो यह कि उस टिकट से बम्बई चला जाऊँ और दूसरा यह कि रुपए को परमात्मा की देन समझकर अपने पास रख लूँ।

एक घंटा-भर वह मन में योजना बनाता रहा। फिर उसका विचार हुआ कि वह जाकर स्टेशन से मालूम तो करे कि बम्बई गाड़ी कितने बजे जाती है? इस कारण वह खाट से उठा और कमरे को ताला लगाकर सराय के बाहर जाने के लिए जब फाटक के समीप पहुँचा तो वहाँ उसी अचकन वाले व्यक्ति को दो पुलिस के सिपाहियों के साथ खड़ा देखकर घबरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया। उसके मन में भय समा गया कि शायद पुलिस उसी को पकड़ने आई है। वह अपना मुख दूसरी ओर कर जब सराय से निकलने लगा तो उसने देखा कि उस आदमी को एक कान्स्टेबल पकड़े हुए है। इससे उसके मन का भय मिट गया और वह यह जानने की इच्छा से उनके समीप खड़ा हो सुनने लगा कि मामला क्या है। वह काली अचकन वाला कह रहा था, "ठेकेदार साहब! यह मेरी अँगूठी गिरवी रख लो। मैं कल तुम्हें दस रुपए दे दूँगा। आज इन्हें सात रुपए दस आने देकर मेरी जान छुड़ाओ।"

"आख़िर बात क्या है?"

"मैं सियालक़ोट से आ रहा हूँ। मेरा 'पर्स', जिसमें चार सौ से ऊपर रुपए थे और टिकट भी था, खो गया है और बिना टिकट सफ़र करने के अपराध में पकड़ लिया गया हूँ। मैंने इनसे कहा है कि मैं बाज़ार में इसी अँगूठी को गिरवी रखकर टिकट का दाम चुका दूँगा। मेरी इच्छा इस सराय में ठहरने की है। इस कारण यह आपके पास ही गिरवी रखना चाहता हूँ।"

ठेकेदार ने अँगूठी को हाथ में पकड़कर भलीभाँति आँका। हथेली पर रखकर उसके तोल का अनुमान लगाया और फिर उसे संदूकची में रखकर सात रुपये दस आने निकालकर पुलिसवालों को दे दिये। पुलिसवालों ने उसकी हथकड़ी खोल दी और रुपयों की रसीद देकर सराय से चले गये।

रामू समझ गया कि मुझ पर संदेह नहीं है। इससे उसको संतोष हुआ। वह इस संतोष में बाहर जाने वाला था कि सराय के ठेकेदार ने उस काली अचकन वाले से पूछा, "क्या नाम है आपका?"

"जगदीश चन्द्र।"

"ये रुपये कैसे दोगे?"

"मैं कल सराय के सामने अपने जादू के खेल दिखाऊँगा और रुपया कमाकर तुम्हें दूँगा।"

"जादू के खेल?" ठेकेदार ने पूछा।

"हाँ, तुम भी देखना, तुम्हें मुफ़्त दिखाऊँगा।"

"तो तुम मदारी हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

"कुछ भी हूँ, मैं यह रुपया दे दूँगा। अभी तुम मुझे सराय में ठहरने

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को एक कमरा और कुछ पैसे भोजन के लिए दो।"

ठेकेदार ने दस आने की रसीद काटकर जगदीशचन्द्र को दे दी और उसको कमरा दिखा दिया। रामू बाहर चला गया।

६

रामू पूछ आया था कि बम्बई को गाड़ी रात के आठ बजे छूटती हैं। काली अचकनवाले को उसी सराय में ठहरा देखकर वह रुपये का भेद खुल जाने की आशंका करने लगा था। इस कारण उसने निश्चय कर लिया कि रात की गाड़ी से ही चल दूँगा।

सात बजे सायं वह सराय से स्टेशन जा पहुँचा। बम्बई का टिकट सैकंड क्लास का था। रामू को इस बात का ज्ञान नहीं था कि सैकंड और थर्ड क्लास में क्या अंतर होता है। उसने देखा कि उसका टिकट हरे रंग का है और अन्य लोगों के पास, जो उसके डिब्बे में बैठे थे, पीले रंग का टिकट है। उसने अपने मन में सोचा कि शायद बंबई का टिकट इसी रंग का होता होगा।

अमृतसर के स्टेशन पर टिकट चैक करनेवाला बाबू जब आया तो उसके पास सैकंड का टिकट देखकर आश्चर्य से उसका मुख देखने लगा। उसने पूछा, "कहाँ से आ रहे हो?"

रामू को स्मरण आया कि उसका टिकट सियालकोट से है। इससे उसने कह दिया, "सियालकोट से।"

"किसके बेटे हो?"

"चौधरी दुर्गादास के।"

"टिकट कहाँ से मिला है तुमको?"

इस पर रामू घबराया। वह इस प्रश्न का कारण नहीं जान सका। इतना तो समझ गया कि इस टिकट में कुछ लिखा हो सकता है जिस कारण उससे यह प्रश्न किया जा रहा है। उसको एक बात सूझी। उसने कहा, "मेरे जीजा जी सियालकोट में आढ़त की दुकान करते हैं। उन्होंने मुझको भेजा है। यह टिकट उन्होंने ले दिया है।"

"अरे भई! यह टिकट दूसरे दर्जे का है। यहाँ क्यों बैठे हो? चलो,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मैं तुम्हें वहाँ बैठा आऊँ।"

इस प्रकार झूठ बोलकर वह यहाँ भी बच गया और फिर दूसरे दर्जे में जाकर नरम गद्देदार कौच पर बैठ आनन्द अनुभव करने लगा। उसको जब पता लगा कि फँसता-फँसता मैं थोड़ा-सा झूठ बोलने से बच गया हूँ तो इससे उसका साहस और बढ़ गया।

डिब्बे में तीन और यात्री थे। एक मारवाड़ी था, जो अमृतसर से ही सवार हुआ था। उसको रामू की सूरत-शक्ल आकर्षक प्रतीत हुई। इससे वह उससे बातचीत करने लगा। रामू को अपने-आपको एक आढ़ती का साला बनने का लाभ प्रतीत हो चुका था। इससे उसने उस मारवाड़ी को अपना परिचय 'शंकरदास का साला' कहकर दिया। उसने लाला नत्थूमल्ल का परिचय भी दिया और अपने को उनकी दुकान पर काम करनेवाला बताया।

इससे मारवाड़ी यात्री और भी प्रभावित हुआ। मार्ग-भर दोनों में अच्छी घनिष्ठता रही। जब गाड़ी बम्बई के समीप पहुँची तो दिन चढ़ आया था। सब यात्री शौचादि से निवृत्त हो चाय-पान कर रहे थे। इस समय रामू पेशाबघर गया। जब वहाँ वह हाथ धोने लगा तो उसने देखा कि उस मारवाड़ी की सोने की घड़ी सामने शैल्फ पर रखी है। सोने की घड़ी के साथ सोने की चेन भी है।

रामू ने एक क्षण तक मन में सोचा और फिर घड़ी उठाकर जेब में रख ली। बाहर निकलकर वह खिड़की के बाहर मुँह निकालकर बैठ गया। उसका हृदय धक्-धक् कर रहा था और वह मुँह को भींचकर अपने भय को भीतर-ही-भीतर छुपाने का यत्न कर रहा था।

जब गाड़ी बम्बई स्टेशन पर पहुँची तो चाय के बर्तन उठाने के लिए बैरा लोग कमरे में घुस आए और उस डिब्बे के यात्री उन्हें मूल्य देने लगे। इतने में रामू, जिसके पास एक चादर के अतिरिक्त और कुछ नहीं था, तुरन्त डिब्बे से निकला और बाहर चला गया।

बाहर निकलकर रामू विक्टोरिया गाड़ी में बैठकर कोचवान से कहने लगा, "किसी सराय में ले चलो।"

"सराय यहाँ से तीन मील के फासले पर है। दो रुपए लगेंगे।"
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामू वहाँ से दूर चला जाना चाहता था, इस कारण दो रुपए देने को तैयार हो गया। गाड़ी चल पड़ी। जब गाड़ी स्टेशन से दूर निकल गई तो उसकी धड़कन बन्द हुई और उसने समझ लिया कि बच गया हूँ।

वाइकुला में एक सराय थी, जहाँ लोगों को रुपया उधार देकर उनका खून चूसनेवाले पठान अथवा जहाँ नगर के जेबकतरे और दूसरे इसी प्रकार के कारोबार करनेवाले लोग रहते थे। गाड़ीवान ने रामू को वहाँ पहुँचा दिया। जब रामू सरायवाले से वहाँ ठहरने की बातचीत कर रहा था तो गाड़ीवान ने आँख के संकेत से बता दिया कि कोई अनजान आदमी है।

सरायवाले ने संकेत पाकर रामू को कमरा दे दिया। रामू अपने कमरे में चारपाई पर बैठ मन में अपने भाग्य की सराहना करने लगा। उसके सामने घड़ी को बेचकर रुपया नकद कर लेने का प्रश्न उपस्थित हुआ। कहीं वह मारवाड़ी यात्री, जो बहुत धनवान प्रतीत होता था, उसको चलते-फिरते देख ले तो अवश्य वह उसे पुलिस के हवाले कर देगा। वहाँ उसकी तलाशी में घड़ी निकल आई तो वह कैद हो जायगा। इस भय से वह घड़ी बेच डालने की योजना बनाने लगा।

रामू को घर से निकले बीस दिन के लगभग हुए थे। परन्तु उसकी बुद्धि का विकास वर्षों के अनुभव से जितना कि हो सकता है, उससे अधिक हो गया था। वह छल-कपट करना सीख रहा था। उसे यह व्यवसाय बहुत अच्छा प्रतीत हो रहा था। इसमें न मेहनत करनी पड़ी थी न खर्च और रुपए हाथोंहाथ मिल जाते थे।

रामू आराम कर जब कमरे से निकला तो सराय का ठेकेदार उसकी ओर ध्यानपूर्वक देखने लगा। रामू ने सोचा, क्यों न इसी ठेकेदार से घड़ी बेचने के उपाय का पता लगा लूँ? इससे वह ठेकेदार के पास आ कहने लगा, "आपसे एक काम है।"

"क्या?"

रामू ने फिर झूठ बोल दिया, "मेरे सब कपड़े रेल में चोरी हो गए हैं। इसलिए मैं चाहता हूँ कि अपनी घड़ी बेचकर कपड़े बनवा लूँ। आप बताइए कि इसे कहाँ बेच सकता हूँ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठेकेदार एक क्षण के लिए चकित रह गया। उसने जान लिया कि यह चोरी का माल है। इस पर भी विश्वास करने के लिए पूछने लगा, "कहाँ खरीदी थी यह?"

"लाहौर में।"

"कितने की?"

"दो सौ रुपए की।"

ठेकेदार समझ गया कि चोरी का माल है। साथ ही यह भी जान गया कि यह अभी नौसिखिया है। इस कारण उसने उसकी अनुभवहीनता से लाभ उठाने के लिए कह दिया, "देखो छोकरे! मैं जानता हूँ कि यह घड़ी चोरी की है और तुम इसका असली दाम नहीं जानते। इस पर भी मैं इसके बेचने में तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ, पर मेरा हिस्सा भी तो मिलना चाहिए। देखो, इस घड़ी का असली दाम पैंसठ रुपया है और इस सोने की चेन का दाम पचपन रुपया। मैं तुम्हें इसका दाम पचास रुपए दे सकता हूँ। तुम्हारी मर्जी हो तो दे दो।"

रामू बहुत घबराया। वास्तव में वह इस वस्तु के दाम को नहीं जानता था। इस पर भी उसने कुछ बात बनाने के लिए कह दिया, "आप कैसे कहते हैं कि यह माल चोरी का है?"

ठेकेदार हँस पड़ा। उसने रामू के कंधे पर हाथ रखकर कहा, "देखो, मैं बताता हूँ। यह घड़ी तुम्हारी नहीं है। तुम्हारे हाथ से बड़ी है। तुम इसका दाम नहीं जानते और फिर तुम इसको रखना भी नहीं जानते। हाथ पर बाँधकर दिखाओ तो मानूँ।"

रामू निरुत्तर हो गया। वह वहाँ से उठकर जाना चाहता था कि ठेकेदार उसके मन की बात समझ गया और मुस्कराकर बोला, "देखो छोकरे! मैं तुम्हारी सहायता कर दूँगा। यदि इसको बाज़ार में बेचने जाओगे तो पकड़ लिये जाओगे। यहाँ तुम्हारा काम मैं कर देता हूँ।"

"पर दादा! यह दाम कम है।" रामू ने उठते हुए कहा।

"ठहरो, सुनो! मैं भी तो इसे चोरबाज़ार में ही बेचूँगा। इसका दाम एक सौ बीस रुपया है। यह सौ रुपए में बिकेगी। इसमें से पच्चीस रुपए मुझे मिलेंगे और पच्चीस चोरबाजार वाला लेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामू ने कहा, "मुझे रुपए की भारी आवश्यकता है। इससे इतने ही मैं ले लूँगा।"

इस प्रकार रामू ने अपना पहला चोरी का माल बेचा।

७

रामू ने अपने कपड़े बनवाए, बिस्तर मोल लिया और आराम से रहने लगा। अभी उसको सराय में टिके पाँच दिन भी नहीं हुए थे कि उसको एक और लड़के से परिचय प्राप्त हुआ। वह अपने कमरे में बैठा हुआ अपने सौभाग्य पर प्रसन्न हो रहा था कि उसके पड़ोस के कमरे में रहनेवाला एक लड़का उसके कमरे के दरवाजे पर आ खड़ा हुआ और पूछने लगा, "क्या मैं आ सकता हूँ?"

"हाँ!"

रामू उसकी ओर प्रश्न-भरी दृष्टि से देख रहा था कि वह लड़का उसकी खाट के सामने रखे स्टूल पर बैठ गया। बैठते हुए उसने कहा, "मैं कई दिन से तुम्हें अकेले आते और जाते देख रहा हूँ। अकेले रहते क्या तुम्हारा दिल नहीं घबराता?"

"घबराने की कौन-सी बात है! दिन-भर तो मैं सैर करता हूँ। रात को थककर आराम करता हूँ।"

"बस सैर ही करते हो, और कुछ नहीं?"

"और क्या?"

"और कोई घड़ी नहीं मिली कहीं से?"

"क्या मतलब?"

"देखो दोस्त, मैं भी यही काम करता हूँ।"

"क्या काम करते हो?"

"क्यों बनते हो भाई? देखो, मैं तुम्हें बताता हूँ।" इतना कहकर उसने अपनी जेब से एक पर्स निकाला। वह बहुत बढ़िया चमड़े का बना था। उस लड़के ने उस पर्स को खोलकर दिखाया। उसमें सौ-सौ रुपए के बीस नोट रखे थे। रामू इतना रुपया देखकर चकित रह गया। उसने पूछा, "कहाँ से मारा है यह तुमने?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वहीं से, जहाँ से तुमने सोने की घड़ी पाई थी।"

रामू ललचाई आँखों से उस रुपए की ओर देखता रहा। उसकी दृष्टि के अभिप्राय को वह लड़का समझ गया और कहने लगा, "मैं समझता हूँ कि तुम अभी नौसिखिये हो, इसी कारण पाँच दिन में तुम और कुछ भी नहीं ला सके।"

रामू अब उस लड़के की बातों को समझ गया। वह जान गया कि यह लड़का चोर है और मुझे भी चोर समझता है। अपनी बात का उसे पता लग जाने से और उसकी बात को स्वयं समझकर रामू की झिझक खुल गई। उसने बताया, "भाई, मैंने चोरी नहीं की थी। मैंने तो वह घड़ी एक स्थान पर पड़ी पाई थी, उठाकर ले आया था।"

"तो कितने दिन तक उस पर जियोगे?"

"जब तक चलेगी, चलाऊँगा। जब रुपए समाप्त हो जाएँगे, तब विचार करने का अवसर होगा।"

"ऊँ····हूँ! ऐसे नहीं बनेगा। तुम कल मेरे साथ चलना। मैं तुम्हें ऐसी तरकीब सिखाऊँगा जिससे प्रतिदिन नए से नया माल हथिया सकोगे।"

रामू चुप रहा। उस लड़के ने कहना जारी रखा, "मेरा नाम शरण है। मैं किसका बेटा हूँ, नहीं जानता। मेरी माँ बम्बई की सड़कों पर भीख माँगा करती थी और रात को पटरी पर सोया करती थी। जब मैंने होश सँभाला तो मैंने अपने-आपको उसकी उँगली पकड़कर भीख माँगते पाया। जब मैं कुछ और बड़ा हुआ तो मेरी माँ के एक लड़की उत्पन्न हुई। उस समय शायद मैं सात वर्ष का था। कुछ समय बाद मेरी माँ मेरे पालन-पोषण का भार न उठा सकी, तब से मैं स्वतन्त्र घूमता रहा हूँ।····

"मुझे भीख माँगने से चोरी करना अधिक पसन्द है। अब दो वर्ष से मैं इसी व्यवसाय से पेट भरता हूँ। आज जो घटना हुई उससे मुझे बहुत ही आनन्द आया। मैं बंगाल बैंक के बाहर खड़ा था कि एक पारसी सज्जन उससे बाहर निकला। उसके कोट के भीतर के पॉकेट में यह पर्स पड़ा था, और बाहर से कोट उभरा हुआ दिखाई दे रहा था। मैंने उसे उड़ाना चाहा। मैं उसके पास से गुज़रा और उस्तरे के फल से उसके कोट को चीर गया। इससे भीतर की जेब भी कट गई और यह पर्स मेरे हाथ में आ गया। घर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Central Library
167984
Gurukula Kangri University Haridwar

आकर देखा तो चित्त प्रसन्न हो गया।''

''मैं तो इतने साहस का काम नहीं कर सकता।''

''ठीक है, पर सीखने से कर सकोगे।''

''कैसे?''

''देखो, मैं तुम्हारे सामने ही करके दिखाता हूँ।'' इतना कहकर शरण ने किवाड़ पर रामू का मैला-सा कपड़ा लटका दिया और स्वयं कमरे के बाहर से भीतर को आया। कपड़े के पास से गुजरते-गुजरते वह दाहिना हाथ बाएँ हाथ की बगल में ले गया। इसमें एक क्षण से भी कम समय लगा होगा। वह लटके हुए कपड़े से छूता निकल गया। वहाँ से वह एक पग आगे बढ़ा ही था कि कपड़ा चिर गया और आधा कटकर नीचे भूमि पर गिर गया। शरण हँस पड़ा और रामू को बड़ा आश्चर्य हुआ और कपड़े के फटने का शोक भी।

शरण ने रामू के नेत्रों में शोक की आभा देखी तो बोल उठा, ''वाह! एक कपड़े के चीरे जाने पर इतना शोक करते हो? मैंने तो यह करतब अपने बीसियों कपड़ों की आहुति देकर सीखा है। आओ इधर, मैं तुम्हें भी यह करतब सिखाता हूँ।''

कुछ समय के परिश्रम से रामू ने यह करतब सीख लिया। इसके अभ्यास में उसे कई वस्तुएँ नष्ट करनी पड़ीं। उस दिन से शरण उसका दिली दोस्त बन गया। एक सायं वे दोनों नए कपड़े पहनकर बाजार गए। उन्होंने एक बढ़िया होटल में खाना खाया और फिर समुद्र-तट, जुहू पर घूमने चले गए। शरण यद्यपि रामू की आयु का ही था, तो भी वह मनुष्य की निकृष्ट प्रकृतियों को रामू से अधिक समझता था। उसने किनारे पर एक खोंचेवाले को नारियल का पानी बेचते देखकर कहा, ''यह आदमी उसी मकान में रहता था, जिसके सामने की पटरी पर मैं और माँ रात को सोते थे। यह, जब से मैंने होश सँभाला है नारियल का पानी और अनानास का शर्बत ही बेचता है। परन्तु मैंने एक वर्ष के इस व्यवसाय से इतना पाया है कि मैं इस-जैसी दस दुकानों की मालिकी कर सकता हूँ। यह बेचारा वैसा ही है जैसा मैं इसको दस वर्ष पूर्व देखता था।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रामू ने कहा, ''पर यह काम व्यवसाय तो नहीं कहा जा सकता। यह

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो चोरी है। यदि हम पकड़े गए तो?''

''तब क्या होगा? कैदखाने में भी खाने को तो मिलेगा ही।''

''मेरी राय और है। दो-चार चोरियाँ और कर लें और उनसे जो रुपया इकट्ठा हो उससे कोई काम-धंधा करें।''

''तो क्या यह काम-धंधा नहीं है?''

''यह चोरी है।''

''तुम पागल हो! सब लोग चोरी करते हैं। हम भी करते हैं। अन्तर केवल यह है कि हम लोगों के काम को लोग चोरी कहते हैं और अपनी चोरी को व्यवसाय।''

रामू को यह युक्ति समझ नहीं आई थी। इससे प्रबल युक्ति वह स्वादिष्ट भोजन था और वह ठंडी समुद्र की वायु थी जिसका वह आनन्द ले रहा था। शरण कह रहा था, ''ये धनी आदमी जो एक-दो घंटे-भर कारखाने अथवा दफ्तर में काम कर मोटरों पर घूमते फिरते हैं, ये क्या चोरी नहीं करते? मेरा दिल भी चाहता है कि मैं भी इनकी तरह मोटर में सवार होकर जहाँ चाहूँ घूम सकूँ।''

बात करते-करते शरण चुप कर गया। रामू उसका मुख देखने लगा। शरण ने कहा, ''आज़ तो किसी भाग्यवान का मुख देखा है। उस दिन दो हज़ार मिला था, आज वह देखो—एक और शिकार चला जाता है। इससे अधिक प्राप्ति की संभावना है।''

रामू ने उधर देखा, जिधर शरण संकेत कर रहा था। एक मारवाड़ी पुरुष पगड़ी पहने अपनी स्त्री के साथ समुद-तट पर टहल रहा था। स्त्री के हाथ में एक बड़ा-सा पर्स पकड़ा था। यह पर्स उसने अपने कंधों पर पीछे को लटकाया हुआ था। रामू ने कहा ''औरतों के पर्स में ओठों और गालों पर लगाने की सुर्खी और बाल सँवारने की कंघी के अतिरिक्त और क्या होगा? उसे चुराकर क्या करोगे?''

''अभी, जब मैं तुमसे बात कर रहा था तो यह औरत आइसक्रीम वाले से आइसक्रीम ले रही थी। तब इसने एक नोटों का बंडल पर्स में से निकाला था और उसे तुड़वाकर एक से उसका दाम चुकाया था। वही बंडल उसकी पीठ पर लटकते पर्स में पड़ा है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"होंगे रुपए-रुपए के नोट।"

"नहीं दोस्त! दस-दस के नोट हैं।"

"पर उन्हें हथियाओगे कैसे?"

"देखो, मैं तुम्हें ये बीस रुपए देता हूँ। तुम एक काम करो। यह काम होशियारी का है। जब वे नोट मेरे हाथ में आ जाएँ तो तुम भाग खड़े होना। सबका ध्यान तुम्हारी ओर चला जाएगा। तुम कोशिश करना टैक्सी से सवार होकर भागने की। शायद तुम पकड़े जाओ। परन्तु तुमसे कुछ वसूल नहीं होगा। जब तक वे लोग अपनी गलती मानेंगे तब तक रुपया सुरक्षित स्थान पर पहुँच जायगा। तुम अपनी जेब में इन बीस रुपयों से अधिक मत रखो।"

रामू ने कहा, "मेरे पास तो दो रुपए और कुछ आने हैं।"

"कोई बात नहीं। चलो चलें।" बातें करते-करते ये उस दम्पती के पीछे जा पहुँचे। शरण रामू को छोड़ उनके पास से गुज़रा ही था कि क्षण में बटुए में से नोटों का बंडल बाहर निकल उसके हाथ में आ गया। दूसरे ही क्षण शरण और उस दम्पती में अन्तर पड़ गया था। एकाएक उस स्त्री को पर्स कुछ हल्का प्रतीत हुआ। उसने पर्स को कंधे से उतारकर देखा तो उसको नीचे से कटा हुआ पाया। ध्यान से देखा तो नोट नहीं हैं। उसने घूमकर देखना चाहा कि नोट कहाँ गिरे हैं। इस समय रामू भाग खड़ा हुआ। मारवाड़ी और उसकी स्त्री 'चोर-चोर' का शोर मचाते हुए उसके पीछे भागे। अन्य बीसियों लोग भी, जो सैर करने के लिए वहाँ आए हुए थे, रामू के पीछे भाग खड़े हुए। रामू टैक्सी-स्टैंड की ओर भागा था और वहाँ पहुँच वह रुक गया। इसी समय वह मारवाड़ी और उसकी स्त्री हाँफते हुए वहाँ आ पहुँचे। मारवाड़ी की स्त्री ने कहा, "इसकी तलाशी लो!"

रामू ने पूछा, "क्यों? मैंने क्या किया है?"

"तुमने रुपए चुराए हैं।"

"रुपए? पागल हो गए हो क्या? मैं चोर नहीं हूँ।" यह कह वह अकड़कर खड़ा हो गया।

लोगों ने उसकी जेबें देखीं। उसकी जेब से बाइस रुपए और कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आने निकले। तलाशी लेनेवाले ने पूछा, "कितने रुपए हैं बाई जी आपके?"

उस औरत ने पर्स देखकर कहा, "छः सौ रुपए से अधिक थे।"

"इसके पास नहीं हैं।"

"तो इसने फेंक दिए हैं।"

"मैं कहता हूँ कि मैंने लिये ही नहीं।"

"तो तुम भागे क्यों थे?"

"मुझे घर जाना याद आ गया था। मैं बस से जल्दी जाने के लिए भागा था। जब मैंने सुना कि लोग मुझे 'चोर-चोर' कह रहे हैं, तो मैं ठहर गया।"

सैर करनेवालों ने रामू की भली-भाँति तलाशी ली और जब वह रुपया उसके पास नहीं निकला तो उसे छोड़ दिया। रामू टैक्सी पर सवार हो नगर की ओर चला गया।

८

उस दिन से रामू और शरण की साझेदारी हो गई। जितना जो कोई चुराकर लाता, दोनों बाँट लेते। इकट्ठे खाते, इकट्ठे सैर करते, सिनेमा-थियेटर इकट्ठे देखते। इस प्रकार रामू का जीवन सुगम हो गया। रामू और शरण रहते पृथक्-पृथक् थे। शरण सराय में रहता था, रामू एक होटल में। दोनों प्रातः और सायं मिलते थे। कभी-कभी इकट्ठे भी मिलकर कार्य करते थे, कभी-कभी पृथक्-पृथक्। शरण को शराब पीने का चस्का लग गया था। रामू अभी इससे बचा हुआ था। परन्तु पंख उसके भी उगने लगे थे। हराम का रुपया बुराइयों में ही तो जाता है!

रामू ने होटल में बता रखा था कि मैं सियालकोट के आढ़तियों का गुमाश्ता हूँ, और उनकी ही ओर से प्रतिदिन सट्टे के बाज़ार में व्यापार के लिए जाना पड़ता है। इस प्रकार कार्य चल रहा था। उसके पास दो हजार के लगभग रुपया भी एकत्रित हो चुका था। कभी-कभी उसे यह विचार भी आता था कि इन रुपयों को लेकर सियालकोट वापस चला जाऊँ और वहाँ कोई छोटी-मोटी दुकान खोलकर अपना और माँ का पेट पालूँ, परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इस विचार से कि कुछ और रुपया भी एकत्रित हो जाय तो अच्छा होगा, वह वहीं टिका हुआ था।

एक दिन शरण उसके पास आया और होटल का कमरा बंद कर उसे बताने लगा, "हमने एक बड़ा भारी जोखों और साहस का काम करने का निश्चय किया है। मैं चाहता हूँ कि तुम भी इसमें सम्मिलित हो जाओ।"

"क्या काम है ?"

"एक लाख दस हजार रुपए छोटे-छोटे नोटों में रेल के बैंक में जमा होने के लिए आ रहे हैं। रुपयों के बक्से विक्टोरिया स्टेशन पर उतरेंगे। सरकारी ट्रक उन्हें लेने जाएगा। हम इस रुपए को उड़ाना चाहते हैं।"

"कैसे होगा यह ?"

"हम पाँच आदमी कुलियों के कपड़े पहनकर स्टेशन पर जाएँगे। वहाँ का कुलियों का जमादार हमें खजाना उठाने में लगा देगा। हम बक्स उठाकर स्टेशन के बाहर लाकर उस ट्रक में रख देंगे जो हमारे आदमी लेकर आएँगे। सरकारी ट्रक के देर से पहुँचने का प्रबन्ध कर दिया गया है। हमारा ट्रक हमारे नकली सिपाहियों की देख-रेख में बैंक जाने के स्थान यहाँ से तीस मील के अन्तर पर चला जायगा। वहाँ हम लोग भी पहुँच जाएँगे और वहाँ रुपया बाँटा जायगा।"

"योजना तो बहुत सुन्दर है!"

"यह सफल होगी। सब प्रबन्ध उस्ताद पीरू कर रहे हैं। रेल के पाँच कुलियों में तुम भी एक होगे। ट्रक के रवाना हो जाने पर हम रेल में सवार होकर निश्चित स्थान पर जा पहुँचेंगे।"

बात तय हो गई। रामू और शरण होटल से निकले और रेल के स्टेशन पर कुलियों के वर्दी पहनने के कमरे में चले गए। इनके तीन अन्य साथी पहले ही वहाँ उपस्थित थे। जमादार ने पाँचों को कुलियों की वर्दी दी और नम्बर दिए। इन लोगों ने वर्दियाँ पहन लीं और स्टेशन में प्लेटफॉर्म पर जा उपस्थित हुए। गाड़ी आई और रेल के बाबू की आज्ञा ले जमादार ने शरण इत्यादि को माल उतारने पर लगा दिया। खज़ाना उतरा और दो
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कान्स्टेबलों की देखरेख में स्टेशन के बाहर खड़े ट्रक में रख दिया गया। पुलिस के सिपाही भी ट्रक पर सवार होने लगे तो ड्राइवर ने कहा, "ज़रा हटकर खड़े हो जाओ। ट्रक को पीछे हटाकर सीधा कर रहा हूँ।" कान्स्टेबल और बाबू एक ओर हो गए। ट्रक पीछे होने के स्थान पर आगे को भाग खड़ा हुआ। ट्रक पर तीन कान्स्टेबल भी थे जो ट्रक के साथ आए थे। इससे बाहर से आई पुलिस मुँह देखती रह गई।

बाबू, जिसके पास खज़ाना जमा कराने का चालान था, कुछ घबराया। एक-दो मिनट तक तो वह ट्रक के घूमकर आने की प्रतीक्षा करता रहा, परन्तु उसको लौटकर आता न देख वह स्टेशन-मास्टर के कमरे में गया और इस घटना की रिपोर्ट के लिए टेलीफोन करने की स्वीकृति माँगने लगा।

स्टेशन-मास्टर भी इस समाचार को पाकर घबराया। उसने बैंक में टेलीफोन कर दिया। वहाँ से समाचार आया कि ट्रक तो अभी बैंक के बाहर ही खड़ा है। उसके पहिए में पंक्चर हो गया है, और अब ठीक हो रहा है। इस समाचार से बाबू के पाँव-तले की मिट्टी खिसक गई। उसने पुलिस में टेलीफोन किया। वहाँ पर भी सारी घटना को समझाने में कई मिनट लग गए। जब थानेदार ने बात समझ ली, तो उसने कहा कि मैं पुलिस को तो ट्रक के पीछे भेजता हूँ, परन्तु इसी समय रेल का बाबू यहाँ आकर पूरी रिपोर्ट दरार्ज कराए।

रेल-बाबू विक्टोरिया गाड़ी में बैठकर पुलिस-थाने जा पहुँचा। रामू और उसके साथी कुलियों के कमरे में चले गए। वहाँ पर उन्होंने वर्दियाँ उतारीं और स्टेशन में आकर सबर्बन ट्रेन में सवार हो थाना स्टेशन पर जा पहुँचे। वहाँ शरण सब साथियों को एक मकान पर ले गया। वहाँ संकेत देने पर वे सब भीतर जा पहुँचे। उस मकान के एक कमरे में वह संदूक जिसमें कोष था, खोला जा चुका था और उसमें से निकले रुपए गिने जा रहे थे। हज़ार-हज़ार रुपयों की गड्डियाँ बनी हुई थीं। कुछ फुटकल रुपए भी निकले। इस प्रकार एक लाख दस हज़ार पाँच सौ बीस रुपए छः आने निकले थे।

एक अधेड़ आयु का व्यक्ति, जिसकी एक आँख नहीं थी, वह भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन पाँच अन्य व्यक्तियों में बैठा था। इनमें से एक ट्रक का ड्राइवर था। चार वे थे जो पुलिस-कान्स्टेबलों के कपड़े पहने ट्रक पर सवार थे। उस काणे व्यक्ति ने कहा, "ये लड़के तो आ गए हैं, परन्तु कुलियों का जमादार और बैंक के तीन बाबू और भी उपस्थित होने चाहिएँ। वे आएँगे अथवा नहीं?"

इसी समय जमादार भी आ गया। उसके साथ एक गुजराती ढंग से कपड़े पहने पुरुष भी था। जमादार ने आते ही कहा, "उस्ताद! बैंक के बाबुओं का प्रतिनिधि यह है। उनका भाग इनको दे दिया जाय। बाबू तो आ नहीं सकेंगे। बैंक में जाँच-पड़ताल आरम्भ हो गई है।"

वह काणा व्यक्ति, जिसका नाम पीरू था, एक क्षण तक विस्मय में उस गुजराती महाशय की ओर देखता रहा। पश्चात् जमादार से पूछने लगा, "इसने संकेत दिया है?"

"हाँ, उस्ताद!"

"अच्छी बात। इन रुपयों में तीन बाबुओं का भाग पैंतालीस हज़ार रुपए, पन्द्रह हज़ार प्रत्येक का। ट्रक और उसमें जानेवाले चारों का, जिन्होंने कान्स्टेबलों का रूप बनाया था, दस-दस हज़ार। पाँच सौ ट्रकवाले को। शेष रह गए ये पाँच कुली का काम करनेवाले और मैं। इन पाँचों को तीन-तीन हज़ार और मुझे दो हज़ार। बताओ, किसी को आपत्ति है?" पीरू उस्ताद की यही चतुराई थी कि उसके बँटवारे पर किसी को आपत्ति नहीं होती थी। सब प्रसन्न थे। रुपया बाँट दिया गया और पीरू ने सबको आज्ञा दी कि रुपया छुपाकर ले जाएँ और एक-एक करके तुरन्त निकल जाएँ।

सब लोग चले गए। रामू की बारी सबसे अंत में थी। मकान पीरू का अपना था। इस समय चौकीदार ने आकर कहा, "दो आदमी बाहर खड़े हैं। प्रतीत होता है कि खुफिया पुलिस के हैं।"

पीरू ने एक क्षण तक विचार किया और रामू के कन्धे पर हाथ रखकर कहा, "देखो छोकरे! मैं तुम पर विश्वास करता हूँ। तुम मेरे भाग के दो हज़ार भी ले जाओ और मकान की छत से कूदकर दूसरे मकान से निकल जाओ। यह चौकीदार तुम्हें मकान का मार्ग दिखा देगा। कल मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुमसे अपना रुपया लेने को मिलूँगा। दे दोगे न?'

"उस्ताद! निश्चिन्त रहो। अपने आदमियों से बेईमानी नहीं की जा सकती।"

रामू को मकान की छत पर से कुदाकर दूसरे मकान में ले-जाया गया और वहाँ से उसको बाहर की गली में निकाल दिया गया। यह मकान दूसरी गली में खुलता था।

रामू गली से निकल स्टेशन की ओर चल पड़ा। जब वह प्लेटफॉर्म पर पहुँचा तो उसको कुछ ऐसा प्रतीत हुआ कि कोई आदमी उससे कुछ अंतर पर उसके आगे-पीछे जा-आ रहा है और उसकी उस पर टेढ़ी दृष्टि टिकी हुई है। इससे रामू को सन्देह हो गया। परन्तु यह विचार कर कि बम्बई में जाकर मैं लोगों की भीड़ में विलीन हो जाऊँगा, शान्त था।

जब वह गाड़ी में बैठा तो वही आदमी उसके पास आकर बैठ गया। अभी भी रामू समझता था कि वह इसको धोखा देकर निकल सकेगा। इससे शान्त था। उसका पीछा करनेवाला भी चुपचाप बिना किसी से बात किए उसके समीप बैठा था। अगले स्टेशन पर दो और आदमी भी भीतर आ गए और रामू के दूसरी ओर बैठ गए। विक्टोरिया टर्मिनस पर रामू उतरा तो वे भी उसके आगे-पीछे चल रहे थे। रामू ने समझ लिया कि आज मैं पकड़ा जाऊँगा। परन्तु अब तक वह यही विचार कर रहा था कि अभी इनको सन्देहमात्र है, अन्यथा मुझे कभी का पकड़ लेते। मालूम होता है ये लोग मेरे निवास-स्थान तक जाना चाहते हैं, इसी कारण मेरा पीछा कर रहे हैं। रामू अब विचार कर रहा था कि इनको अपने होटल में पहुँचने से पूर्व ही धोखा दे भाग जाना चाहिए। इस समय उसने निश्चय कर लिया कि यदि अब बच गया तो तुरंत सियालकोट लौट जाऊँगा, और वहाँ इतने रुपयों से अच्छा-खासा धंधा कर सकूँगा।

रामू स्टेशन से निकलकर पैदल ही चल पड़ा। अपने होटल में जाने के स्थान पर वह ताज होटल को गया। वहाँ एक-दो बार चाय पीने को वह जा चुका था। इस कारण जब निधड़क बढ़ा चला गया तो उसका पीछा करनेवाले बाहर ही ठहर गए, परन्तु फिर कुछ विचार कर उसके पीछे हो लिये। रामू होटल के रिसैप्शन-रूम में गया। वहाँ दो सौ से ऊपर लोग बैठे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अल्पाहार कर रहे थे। रामू उनमें से गुज़रता हुआ उस हॉल को पार कर दूसरे दरवाज़े से बाहर निकल गया। पीछा करनेवाले इस कमरे में प्रवेश करने से झिझक रहे थे। उनका विचार था कि रामू वहाँ बैठकर चाय पिएगा। जब वह बैठ जाएगा तब विचार कर लेंगे कि अब क्या करना चाहिए। रामू को इस हॉल से सामने के बरामदे से बाहर जाते देख वे लोग, हॉल का चक्कर काट, उसको सामने से घेरने के विचार से भाग खड़े हुए।

रामू इसी बात की आशा करता था। इस कारण समय बिताने के विचार से वह रिसैप्शन-रूम के सामने के कमरे में चला गया। कमरा खाली था। वह उसके बैडरूम में चला गया। वहाँ वह पलँग के नीचे घुसकर फर्श पर सपाट लेट गया।

रामू का पीछा करनेवाले जब तक हॉल का चक्कर काटकर पिछले बरामदे में आए, तब तक रामू सामने के कमरे में घुसकर छुप चुका था। वे लोग उसे होटल में इधर-उधर ढूँढने लगे। उन पर होटल के एक कर्मचारी को सन्देह हो गया। वह उन्हें होटल के मैनेजर के पास ले गया। वहाँ उनमें से एक ने बताया, "मैं खुफिया पुलिस का इन्स्पैक्टर हूँ। एक चोर का पीछा करते-करते हम इस होटल में पहुँचे हैं और उसको ढूँढ रहे हैं।"

"उसके वारंट हैं?"

"नहीं।"

"तो होटल के बाहर निकल जाओ। होटल के बाहर पहरा दो। जब वह निकलेगा तो उसे पकड़ लेना।"

इन्स्पैक्टर कुछ कहना चाहता था, परन्तु मैनेजर एक अंग्रेज़ था; उसने कहा, "गेट आऊट!"

पुलिसवाले दुम दबाकर बाहर हो गए। बाहर जाकर उन्होंने होटल की देखभाल आरम्भ कर दी।

९

रामू को पलँग के नीचे पड़े-पड़े यह निश्चय हो गया था कि मेरे लिए अब बाहर जाना असम्भव है। मेरी जेब में जो पाँच हजार रुपए हैं क्या उन्हें यहाँ फेंककर चल दूँ? तब भी यदि पकड़ा गया और इस कमरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के निवासी ने रुपया मैनेजर को दे दिया तो भी यह साबित हो जाएगा कि रुपए मैंने फेंके हैं। इसलिए इस बार बच नहीं सकता।

इससे उसको अपने चोरी के कार्य पर पश्चात्ताप होने लगा। परन्तु इस समय पश्चात्ताप से कुछ बनता न देखकर वह घबराता रहा।

कमरे का मालिक चिरकाल तक कमरे में नहीं आया। अँधेरा हो गया था। रामू को लेटे-लेटे नींद आ गई और वहीं पलँग के नीचे सो गया। बहुत रात गए उसकी नींद खुली। कमरे में प्रकाश हो रहा था। जब उसको अपनी परिस्थिति का पूर्ण स्मरण हुआ, तो वह पुनः विचार करने लगा कि अब क्या करूँ? उसने झुककर देखा कि बाहर कोई है अथवा नहीं। एक आदमी आईने के सामने खड़ा कपड़े बदल रहा था। रामू को एक बात सूझी। उसने जेब से रुपया निकालकर पलँग के नीचे ही ढेर कर दिया और पलँग के नीचे से बाहर निकल आया। ज्यूँ ही वह बाहर हो खड़ा हुआ कि कपड़े उतारनेवाले ने उसको आईने में देखा तो घूमकर घूरा। रामू उसको पहचान गया। यह वही काली अचकनवाला व्यक्ति था, जिसका पर्स लाहौर स्टेशन पर गिरा था और वह उठाकर बम्बई चला आया था। उसे, उस आदमी के पुलिस की कैद में अपनी अँगूठी सराय के ठेकेदार के पास बेचने की बात भी स्मरण हो आई। इससे रामू के मुख पर मुस्कराहट आ गई। उस आदमी ने पूछा, "तुम कौन हो?"

"एक भाग्यहीन!"

"क्या मतलब?"

"पुलिस से भागा हुआ चोर!"

वह आदमी बहुत ध्यान से रामू के मुख पर देखता रहा। रामू भयभीत सामने खड़ा था। वह विचार कर रहा था कि शायद वह पुलिस को बुला लेगा और उनके हवाले कर देगा। इससे पूर्व कि वह कोई ऐसी बात करे, रामू ने कहा, "मैं चाहता हूँ कि आप मेरी रक्षा करें और पुलिस के हवाले न करें।"

"क्यों?"

"मैंने कोई भारी अपराध नहीं किया।"

वह आदमी मुस्कराया और पलँग पर बैठकर रामू की आँखों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखता हुआ पूछने लगा, ''तुमने हल्का अपराध कौन-सा किया है ?''

भारी और हल्के की मीमांसा न कर सकने पर रामू कुछ मुस्कराया। इस पर भी कुछ कहने के लिए वह बोला, ''जब मैं दूसरों को देखता हूँ तो मेरा जी भी करता है कि उनकी तरह मैं भी मोटरों और हवाई जहाजों पर चढ़ूँ, स्वादिष्ट भोजन खाऊँ और आराम देनेवाले मुलायम और कमानीदार गद्दों पर बैठूँ। पर यह सब बिना रुपए के हो नहीं सकता। इस कारण मैं जहाँ कहीं रुपया पड़ा पाता हूँ उसे उठा लेता हूँ।''

यह तर्क उसे शरण ने समझाया था।

अब उसने वह वैसा का वैसा सुना दिया, ''संसार में सब लोग ऐसा करते हैं। आधी दुनिया दूसरी आधी दुनिया की कमाई खाती है। यह इस कारण कि दूसरी आधी अपने कमाए धन का प्रयोग करना नहीं जानती और पहली आधी उनकी असावधानता का लाभ उठाकर उसे अपने प्रयोग में लाती है।''

कमरे का मालिक उस लड़के से, जिसके अभी मूँछ भी नहीं फूटी थीं, इस प्रकार की युक्ति सुनकर चकित रह गया। उसने कहा, ''देखो, मैं तुम्हें बचा दूँगा। परन्तु तुम यह बताओ कि तुमने किया क्या है, जो पुलिस तुम्हें पकड़ना चाहती है ?''

रामू ने कोष लूटने की सारी घटना जैसी की तैसी सुना दी।

''तुमने कोष लूटकर अच्छा काम नहीं किया।''

''मैंने आपसे अपने मन की बात बता दी है कि मेरा मन भी सुख भोगना चाहता है। उसके लिए रुपया बटोरता रहता हूँ।''

''पर बिना मेहनत किए रुपया नहीं मिलता।''

''मेहनत तो की है! आज प्रातः आठ बजे से ही भाग-दौड़ कर रहा हूँ।''

''मेहनत से मेरा अभिप्राय योग्यता उत्पन्न करने के लिए है।''

''मैं नहीं जानता कि कैसे योग्यता उत्पन्न करूँ।''

''तुम्हारे पिता कहाँ रहते हैं ?''

''वे नहीं हैं। उनका देहान्त हो चुका है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

''तुम कुछ पढ़े-लिखे हो ?''

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सातवीं श्रेणी तक। माँ गरीब है। मैं और पढ़ नहीं सका।"

इस बात ने उस आदमी को गंभीर विचार में डाल दिया। वह विचार करने लगा कि इस लड़के ने कितने गंभीर सत्य को कितने सरल शब्दों में रख दिया है! उसका मन उड़ना चाहता है, पर उसके पंख नहीं हैं।

उस आदमी को चुप देखकर रामू को आश्वासन हो रहा था कि शायद मैं बच जाऊँ। इससे विनीत भाव से कहने लगा, "मैंने आपको पहले भी देखा है।"

"कहाँ?"

"लाहौर में। सराय के ठेकेदार से रुपए उधार लेते हुए।"

"मेरी चोरी हो गई थी।"

"मैं जानता हूँ। चोरी नहीं हुई थी। लाहौर स्टेशन पर आपकी जेब में से 'पर्स' गिर गया था। उसमें सियालकोट से बम्बई तक दूसरे दर्जे का एक टिकट भी था।"

"तुम यह सब कैसे जानते हो?"

"उस पर्स में चार सौ बीस रुपए भी थे। वह पर्स मैंने भूमि पर पड़ा पाया था।"

"तुमने उसे मुझे वापस क्यों नहीं किया?"

"मुझे भी रुपए की आवश्यकता थी, मुझे मिल गए और मैंने ले लिये।"

"यह तो बहुत बुरा किया। तुमने बिना परिश्रम किए दूसरे के रुपए ले लिये। यह तो पाप है!"

"पाप-पुण्य मैं नहीं जानता। मुझे रुपए कमाने का दूसरा ढंग भी तो नहीं आता। यदि मैं ऐसा न करता तो भूखा मर गया होता।"

"परन्तु आज तुमने दिन-दहाड़े डाका डाला है। यह किस प्रकार भूला जा सकता है!"

इस पर रामू ने फिर शरण की बात दुहरा दी। उसने कहा, "बम्बई के महल सट्टेबाजों की सम्पत्ति हैं। दूसरी ओर मेहनत-मज़दूरी करनेवाले यहाँ निर्धनता का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। यह कहाँ का पुण्यकर्म है! सट्टेबाजी तो डाका डालने से कम नहीं कही जा सकती।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखो! इस बात को तुम इतनी छोटी आयु में और इतनी कम शिक्षा से समझ नहीं सकते। यदि तुम मेरा कहा मानो तो मैं तुमको इस विपत्ति से छुड़ा सकता हूँ। और फिर तुमको धनी बनने का मार्ग भी बता सकता हूँ।"

"क्यों न मानूँगा! मुझे आप पर विश्वास है। जो आदमी आज से दो-तीन मास पूर्व मदारी के खेल दिखाकर रोटी कमाना चाहता था, आज ऐसी सम्पत्ति का स्वामी है—यह चमत्कार देखकर मैं समझता हूँ कि यदि आप चाहेंगे तो मुझे भी धन-सम्पन्न कर देंगे।"

वह आदमी मुस्कराया और कुछ देर तक रामू को, जो अब भी उसके सामने खड़ा था, देखकर कहने लगा, "अच्छी बात है। मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ। इस पर भी बनना अथवा बिगड़ना तुम्हारे ही अधीन है। तुम इस समय से मेरे शिष्य हो। मेरा नाम जगदीशचन्द्र है, परन्तु तुम मुझे गुरुदेव कहकर पुकारोगे। मैं जो कुछ भी कहूँ तुम्हें मानना पड़ेगा। हाँ, तुम्हारा नाम क्या है?"

"रामदास, परन्तु मुझको लोग रामू कहकर बुलाते हैं। मुझे यह भला लगता है।"

"अच्छा रामू! तुम्हारा चुराया रुपया कहाँ है?"

रामू पलँग के नीचे घुसकर नोटों का बंडल उठा लाया।

जगदीशचन्द्र ने पूछा, "कितना है?"

"इसमें दो सहस्र तो उस्ताद पीरू का है, और तीन सहस्र मेरा है।"

"कल तक यह सब-का-सब तुम्हारे पास नहीं रहना चाहिए। इस रुपए को अपने पास रखकर तुम मेरे शिष्य नहीं बन सकते।"

"क्यों?"

"यह रुपया दूसरे की इच्छा के विरुद्ध लिया गया है। इससे यह पाप का धन है। इसको पास रखने से मन मलिन होगा, और मलिन मन से तुम मेरी इच्छा ग्रहण नहीं कर सकोगे।"

"तो यह रुपया कहाँ फेंकूँ?"

"मैं बताऊँगा। अभी तुम इसे वहाँ, उस मेज़ की दराज़ में रख दो।"

रामू ने रुपया जब रख दिया तो जगदीश ने कहा, "तुम बाहर कमरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में भूमि पर सो रहो। प्रातःकाल उठने और स्नान करने से पूर्व तुम्हारे लिए दूसरे कपड़े बन जाएँगे। उनमें तुम्हें कोई पहचान नहीं सकेगा।''

१०

रामू को यह देखकर अचम्भा हुआ कि प्रातः उठने के साथ ही उसके लिए नए कपड़े तैयार रखे थे। वह जब शौचादि से निवृत्त होकर तैयार हुआ, तो नौकरों की वरदी उसके लिए तैयार थी। उसने गुरुदेव से पूछा, ''ये कब बने हैं? मेरा नाप तो लिया नहीं गया, कहीं बहुत खुले या तंग न हों?''

''पहनकर देखो!''

रामू ने कपड़े पहने। वे नौकरों के ढंग के अवश्य थे, तो भी साफ-सुथरे और उसके नाप के थे। वह अभी तक तो भयभीत था, नहीं जानता था कि क्या वह निश्चय से बच सकेगा अथवा नहीं। उसने कपड़े पहनकर पूछा, ''गुरुदेव, मुझे काम क्या करना होगा?''

''कुछ दिन तक, जब तक पढ़ना-लिखना सीख नहीं लेते, मेरे नौकर ही रहोगे। पश्चात् यदि तुमने पढ़ने में चित्त लगाया तो मेरे शिष्य कहलाओगे। इस बात में तीन मास से अधिक नहीं लगेंगे। उसके बाद मेरी विद्या सीखने में दस वर्ष लगेंगे। तब तुम मेरे साथी बन जाओगे, न नौकर रहोगे और न शिष्य।....

''अब तुम तैयार होकर खड़े हो जाओ। जब तक मैं प्रातः का अल्पाहार नहीं कर लेता, तुम यहीं मेरी कुर्सी के पीछे खड़े रहना। पश्चात् तुम्हें भी मेरे-जैसा ही खाना मिलेगा। तुम मेरे साथ घूमने जाओगे। जब घूमने को निकलूँ तो तुम्हें भी मेरे साथ रहना होगा और आज रात को यहाँ सामने के बड़े हॉल में, जब मैं अपने करतब दिखाऊँ तो मेरे कहने के अनुसार कार्य करते रहना।''

''बाहर खड़े पुलिसवाले मुझे पकड़ने का यत्न नहीं करेंगे?''

''वे तो तुम्हें पहचान भी न सकेंगे।''

''इन कपड़ों के कारण?''

''नहीं, इसमें कुछ अन्य रहस्य है। तुम डरो नहीं! दुनिया में बहुत-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सी बातें ऐसी होती हैं जो मनुष्य समझ नहीं सकता। यह बात समझ लो कि किसी बात को लक्ष्य करने के लिए यत्न करने की आवश्यकता होती है और साथ ही, वह यत्न ठीक और उचित ढंग से होना चाहिए। मान लो, तुमने अपने प्रयत्न से एक मकान बनाया है और उसमें सुख-सुविधा की पूरी सामग्री उपस्थित की है। यदि कोई दूसरा व्यक्ति, जो तुमसे अधिक बलशाली अथवा चतुर है वह तुम्हें उस घर से निकालकर स्वयं उसका उपभोग करे, तो क्या तुम्हें इससे दुःख न होगा? इसी प्रकार तुम्हारे अनुचित व्यवहार से भी दूसरों को कष्ट होना संभव है। दूसरों को दुःख देना पाप है।''

जब होटल के बैरे ब्रेकफास्ट ले आए तो रामू जगदीशचन्द्र के कहने के अनुसार उसकी कुर्सी के पीछे खड़ा हो गया। जगदीशचन्द्र को छुरी-काँटे से खाते देखकर वह मन में विस्मय करता रहा। उसने किसी को इस प्रकार खाते देखा न था।

रामू के लिए उसने खाने के लिए ऑर्डर दिया। रामू ने भी खाना खाया। ऐसा खाना उसने अब तक किसी होटल में न खाया था।

इसके पश्चात् जगदीशचन्द्र ने चोरी के रुपयों का एक पोस्टल पार्सल बनाया और उस पर बंगाल बैंक का पता लिख दिया। पश्चात् उसने कमरे में लगे टेलीफोन से अपने लिए एक टैक्सी मँगवाई और रामू से वह बंडल उठवाकर होटल के बाहर निकल आया। टैक्सी वहाँ खड़ी थी।

होटल के दरवाज़े पर तीन-चार खुफिया पुलिस के लोग खड़े थे। रामू ने उनमें से एक को पहचान लिया। वही पहले दिन उसका थाने-स्टेशन से होटल तक पीछा करता रहा था। रामू को डर था कहीं वह उसे अब पहचान न ले। परन्तु उन लोगों ने एक बार जगदीशचन्द्र की ओर देखा और खड़े रहे। रामू की ओर तो किसी ने देखा तक भी नहीं।

इससे रामू के मन में साहस बँधता गया। दोनों टैक्सी में बैठे और जगदीशचन्द्र ने टैक्सीवाले को जुहू चलने की आज्ञा दी। टैक्सी चल पड़ी और बम्बई के बाज़ारों में से भीड़ को चीरती हुई निकल गई। जुहू में समुद्र-तट के समीप टैक्सी ले गए। टैक्सी को वहाँ खड़ा किया और दोनों समुद्र-तट पर घूमने के लिए उतर पड़े।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय भी कुछ लोग, स्त्री-पुरुष, समुद्र में स्नान कर रहे थे। रामू ने वह नोटों का पार्सल अब भी हाथ में लिया हुआ था। चलते हुए रामू ने पूछा, ''गुरुदेव, वह पुलिस-इन्स्पेक्टर, जो कल बीस मील से मेरा पीछा कर रहा था, आज मुझे पहचान ही नहीं सका।''

''मैंने कहा तो था तुमको!''

''यह तो चमत्कार हुआ है। अब इस बंडल का क्या करेंगे?''

''इसको मैं, जिसका है, उसी के पास डाक द्वारा भेज दूँगा।''

''इससे हमारा पता भी तो निकल सकता है!''

''जिसकी जो वस्तु है उसके पास उसे पहुँच जाना ही चाहिए। हम पकड़े जाएँ या नहीं, यह पृथक् बात है।''

कुछ समय तक टहलकर वे जुहू के डाकखाने में गए। वहाँ पार्सल डाक द्वारा भेज दिया गया। उसपर अपना कोई नकली पता दिया गया।

वहाँ से लौटकर आए तो होटल के दरवाज़े पर अब भी बहुत-से पुलिस के कर्मचारी खड़े थे। परन्तु ये दोनों उनके समीप से निकल गए और किसी ने उनकी ओर देखा तक नहीं।

होटल की ड्योढ़ी में एक छपा हुआ पोस्टर लगा था, जिसमें लिखा था, 'काश्मीर के विख्यात हिप्नोटिस्ट, श्री जगदीशचन्द्र, आज सायं, नौ बजे, ताज होटल रिसैप्शन-हॉल में, अपने हिप्नोटिज़्म के करतब दिखाएँगे।....

'ये करतब ऐसे होंगे जो दुनिया-भर में अभी तक किसी ने न देखे हैं न दिखाए हैं।'....

'श्री जगदीशचंद्र जी इन्हें तिब्बत के एक लामा से सीखकर आए हैं।....

'पूर्वीय विद्या के चमत्कार देखनेवालों को निमंत्रण दिया जाता है कि वे आकर इन्हें देखें।....

'प्रवेश शुल्क—केवल दो रुपए। प्रवेश-पत्र होटल के मैनेजर से मिल सकता है।'

जगदीशचन्द्र ने विज्ञापन लगा देखा और संतोष अनुभव किया। अन्य कई लोग भी उसको पढ़ रहे थे। कुछ लोग प्रवेश-पत्र खरीद भी रहे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगदीशचंद्र वहाँ से अपने कमरे में चला गया। रामू के विस्मय का ठिकाना नहीं रहा जब उसने देखा कि खुफिया पुलिस का इंस्पेक्टर भी उसके समीप खड़ा विज्ञापन पढ़ रहा था, फिर भी वह उसको पहचान नहीं रहा था। कमरे में पहुँचकर उसने पूछा, "गुरुदेव! इस विज्ञापन में आपका नाम लिखा था क्या?"

रामू उसके नाम से अधिक पढ़ नहीं सका था। जगदीशचंद्र ने उसको विज्ञापन का अर्थ समझाया। वह समझ गया तो उत्सुकता से उसका मुख देखने लगा।

मध्याह्न के भोजन के पश्चात् होटल का मैनेजर जगदीश को मिलने आया। जगदीश ने मैनेजर को रामू का परिचय दिया, "मैंने अपनी सेवा के लिए इस लड़के को नौकर रखा हुआ है। इसका भोजन भी होटल में ही होगा।"

मैनेजर कहने लगा, "हमारे हॉल में एक सहस्र से अधिक दर्शकों के बैठने का प्रबंध नहीं है, और एक सहस्र टिकट बिक चुके हैं।"

"तो एक दिन और यह 'शो' बढ़ा दिया जाय।"

"मैं यही चाहता था। दूसरे शो का कल के लिए विज्ञापन दूँ या किसी और दिन के लिए?"

"मेरा विचार कल के लिए है।"

"एक बात है। यदि आज दर्शकों ने आपके प्रदर्शन को पसंद न किया, तो कल बहुत भद्द होगी।"

"तो कल के टिकट वापस कर दिए जाएँगे, और टिकट छपवाने और बाँटने की लागत मैं दूँगा।"

"आपको अपनी सफलता पर बहुत भरोसा है?"

"हाँ! आप देखिएगा कि कई दिन लगातार प्रदर्शन होने पर भी आपका हॉल खाली नहीं रहेगा।"

"तब तो प्रवेश-शुल्क अधिक कर देना होगा?"

"यह भी विचार कर लेंगे।"

मैनेजर ने जगदीशचंद्र से हाथ मिलाया और चला गया। रामू इनकी अंग्रेज़ी में बातचीत को समझ नहीं सका।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगदीशचंद्र ने हिंदी की एक पुस्तक निकालकर रामू को पढ़ने को दी। साथ एक पैंसिल देकर कहा, ''जहाँ पर पढ़ न सको वहाँ निशान लगा रखो। मैं तीन बजे तुमसे सुनूँगा।''

११

रात का खाना खाने के पश्चात् एक सहस्र से ऊपर लोग तमाशा देखने के लिए हॉल में आ गए। सब लोगों के बैठने के लिए कुर्सियाँ रख दी गईं। मैनेजर ने हॉल के एक ओर एक मंच बना दिया था, जिस पर एक मेज़ और उसपर जगदीशचंद्र का डंडा रखा था। उस स्थान पर खड़े होकर जगदीशचंद्र ने एक छोटा-सा व्याख्यान दिया और बताया कि ''यह विद्या मायावी कही जाती है। यह मैंने तिब्बत के एक लामा से सीखी है। इससे मैं ऐसा मायाजाल फैला सकता हूँ कि आप जो चाहें आपको प्राप्त हो सकता है। आप में से कोई बताए कि उसे क्या चाहिए? कोई भी वस्तु माँगिए, चाहे वह यहाँ न भी मिलती हो।'' उसने होटल के मैनेजर से पूछा, ''बताइए आपके लिए क्या चाहिए?''

''काश्मीरी सेब।''

''जून के महीने में? अच्छी बात है। एक प्लेट लाइए।''

होटल में से एक प्लेट मँगवाई गई। उसको मेज़ पर रखकर उस पर एक चादर डाल दी गई। जगदीशचंद्र ने अपने डंडे को उस पर घुमाया। इस पर उसने किसी और से पूछा, ''आपको क्या चाहिए?''

''इलाहाबाद के अमरूद।''

''ओह! अच्छी बात है।'' उसने एक तीसरे से पूछा, ''आप भी कुछ चाहेंगे क्या?''

''शैंपेन की एक बोतल।''

इस प्रकार कई लोगों की भिन्न-भिन्न वस्तुओं की एक लंबी सूची प्रस्तुत हो गई। कुछ समय बाद जगदीशचंद्र बोला, ''लीजिए, तैयार हो जाइए। जो कुछ भी आप चाहते हैं आपको मिल सकता है।''

इतना कहकर उसने मेज़ पर से चादर उठाई। दर्शकों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उन्होंने सब वस्तुएँ प्लेट में पड़ी देखीं। बोतल में शराब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की बोतल और उसके चारों ओर सेब, अमरूद, केले, अनार इत्यादि, जो कुछ भी किसी ने कहा था, वहाँ पड़े दिखाई दिए। लोगों ने आश्चर्य में तालियाँ बजाईं।

इस समय जगदीशचंद्र ने एक सेब उठाकर रामू को दिया और कहा, "यह ज़रा मैनेजर साहब को दिखा दो कि असली फल है या मिट्टी का खिलौना।"

रामू वह सेब लेकर होटल के मैनेजर के पास गया और उनके हाथ में दे दिया। मैनेजर ने उस सेब को हाथ में पकड़कर कहा, "यह तो सेब नहीं है! यह अमरूद है।"

"अमरूद!" जगदीशचंद्र ने आश्चर्य में कहा, "देखूँ?" यह कहकर वह समीप जाकर देखने लगा। उसको देखकर बोला, "आप अपने साथवाले से तो पूछिए कि यह क्या है?"

"क्यों साहब! यह देखिए। अमरूद नहीं है क्या?" मैनेजर ने समीपवाले से पूछा। साथवाले ने देखकर कहा, "अमरूद नहीं है जी! यह तो अनार है।"

इस पर सब उपस्थित लोग हँस पड़े। अनार और अमरूद कहनेवाले विस्मय में एक-दूसरे का मुख देखने लगे। इस समय रामू ने वह सेब लेकर हॉल के दूसरी ओर ले-जाकर दिखाया। एक ने उसे अपने हाथ में उठाकर कहा, "यह तो साहब, अनानास है।" जब उसने अनानास कहा तो मैनेजर, जो उसको अमरूद बता रहा था, कहने लगा, "यह तो सेब बन गया है!"

इस समय जगदीशचंद्र ने उसको अपने हाथ में पकड़कर कहा, "देखिए साहब! हमारे इस सेब को कोई कुछ कहता है, कोई कुछ। ज़रा इसका निर्णय एक साहब यहाँ मंच पर आकर करें। आप आ जाइए!" उसने एक को बुलाकर कहा।

वह आदमी आगे बढ़, जगदीशचंद्र के समीप खड़ा हो, हाथ में सेब लेकर बोला, "मैं देख रहा हूँ कि यह सेब है।"

"ठीक है। आप जा सकते हैं। अब आप आ जाइये!" जगदीशचन्द्र ने एक अन्य को बुलाया।

उसने वही वस्तु हाथ में ली और उसको [illegible] से देखने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीछे कहने लगा, ''मैं दावे से कहता हूँ कि यह आम है।''

इस पर सभी हँसने लगे। एक आदमी स्वयं आगे आकर उस वस्तु को लेकर बोला, ''यह तो कोई फल है ही नहीं। ऐसा प्रतीत होता है कि इस मदारी ने कुछ आदमी अपने ही खड़े कर रखे हैं और हमें बेवकूफ बना रहा है। यह तो शैंपेन की बोतल है!''

इस पर जगदीशचंद्र ने कहा, ''दर्शक-वृंद! इनमें कोई भी झूठ नहीं कह रहा। इनमें कोई भी मेरा सिखाया हुआ आदमी नहीं है। परंतु यह मायावी विद्या है। इसने आपके मन पर ऐसा माया का जाल डाल दिया है कि आपको यह वस्तु वही प्रतीत होती है, जो आप देखना चाहते हैं। देखिए, यह तश्तरी फलों और अन्य वस्तुओं से भरी पड़ी है या नहीं?''

''है।'' बहुत-से लोग बोल उठे।

''तो यह लो!'' उसने अपने डंडे को उस पर घुमाया। जिस प्रकार कोई वस्तु वाष्प बनकर उड़ जाती है वैसे ही सब-कुछ, जो उस तश्तरी में पड़ा था, लुप्त हो गया। देखनेवाले अवाक्मुख देखते रह गए।

अब जगदीशचंद्र पुन: बोला, ''यह जगत् माया है। वास्तव में जो कुछ हम देखते हैं, वह कुछ भी नहीं। हमारे मन के संस्कार हैं। इनमें से हमें स्त्री, पुरुष, वृद्ध, बाल, मेज, कुर्सी और यह सब-कुछ दिखाई देता है। वस्तुत: देखनेवाला भी माया है, और दीखनेवाली वस्तु भी। अपनी बात के समर्थन में एक बात और मैं आपको दिखाता हूँ।''

इतना कहकर उसने मेज़ और तश्तरी वहाँ से उठवा दी, और लोगों से कहा, ''देखिए, यहाँ कुछ नहीं है। मैं आपको एक बनारस की गाने वाली विद्याधरी का गाना सुनवाता हूँ, और उसका नाच दिखलाता हूँ।''

सब लोग आश्चर्य में एक-दूसरे का मुख देखने लगे। जगदीशचंद्र ने कहा, ''आपमें कोई है जिन्होंने उसको गाते सुना है?''

एक साहब बोल उठे, ''हाँ! मैंने उसका नाच और गाना सुना है।''

''तो आप बताइएगा कि यह वही है अथवा और कोई?''

इतना कहकर जगदीशचंद्र ने अपने डंडे को मंच पर रखकर ऊपर उठाना शुरू किया। ज्यूँ-ज्यूँ वह डंडे को ऊपर उठाता गया, भूमि में से एक धुएँ की रेखा उठती गई। डंडा पाँच फुट और दो इंच की ऊँचाई पर ले-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जाकर ठहरा दिया गया और फिर सबको वेग से एक चक्कर देकर पीछे हटा लिया गया। वह धुएँ की रेखा एक भँवर की भाँति अथवा वायु के एक बवंडर की भाँति घूमने लगी। फिर वह कुछ विस्तृत होने लगी और पश्चात् उसमें से एक मनुष्य के आकार की वस्तु बनने लगी। कुछ क्षण में ही उस धुएँ में से एक स्त्री की रूपरेखा दिखाई देने लगी। तब ऐसा दिखाई दिया कि कोई नर्तकी पूर्ण नाचने योग्य कपड़े और आभूषण पहने, श्रृंगार किए, पाँवों में घुँघरू बाँधे घूमती-घूमती खड़ी हो गई है। लोगों ने उसके स्वागत के लिए तालियाँ बजाईं। इस समय जगदीशचंद्र के डंडे के हिलाने-मात्र से एक सारंगी बजानेवाला और एक तबलची वहाँ भूमि से निकल आए और सारंगी बजने लगी और तबला खड़कने लगा। उस औरत ने स्वर भरना आरंभ कर दिया। आलाप, खयाल और पश्चात् बोल, तान और आभोग गाया। उसने गाया—

रूप जोबन का मान न करिये।
जिन जिन मान किया गति उनकी देख-देख कर डरिये।
हित चाहे अपना जो प्राणी, प्रभु चरणन चित धरिये।
जोबन का मान न करिये।

इस प्रकार गाने के साथ-साथ नृत्य भी आरंभ हो गया। नृत्य में भक्तिभाव का प्रदर्शन किया गया था। दर्शकों ने इच्छा प्रकट की कि एक और गाना हो जाय। इस पर जगदीशचंद्र ने कहा, "बाई जी को कोई कुछ भेंट दीजिए। प्रसन्न होंगी तो गाएँगी!"

रामू एक प्याला लेकर घूम गया। लोगों ने कुछ दिया। गिनती करने पर एक सहस्र से ऊपर निकला। जगदीश ने कहा, "रामू बेटा, वापस कर दो। बंबई में रागविद्या के शौकीन कम हो रहे हैं। आपको मैं मदारी के करतब ही दिखाऊँगा, बाई जी को जाने देता हूँ।"

"नहीं! नहीं! और ले लो!" कुछ मनचलों ने कहा। रामू ने एक चक्कर और काटा। अब रुपए चार हज़ार से ऊपर हो गए। अब बाई जी एक और गाना गाने लगीं—

तनिक हरि चितवो मेरी ओर।
मेरे तो मोहन तुम ही हो, इक ही तुम हो लाख करोड़।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तनिक हरि...

कब की मैं ठाड़ी अरज करत हूँ, सुनिये नंदकिशोर।

इस प्रकार गाना द्रुतलय में हुआ और उसके साथ नृत्य भी उसी लय में। श्रोतागण भूल गए कि यह मायावी खेल है। लोग प्रसन्न होकर रुपए फेंकने लगे। इस प्रकार यह खेल दो घंटा से ऊपर तक चलता गया।

जब घड़ी ने साढ़े ग्यारह बजाए, तो जगदीशचंद्र ने उस गानेवाली से कहा, "बस, हो गया।" सब रुपए जो दक्षिणा के रूप में दर्शकों ने दिए थे, रामू ने बटोर लिये। अब जगदीशचंद्र लोगों को संबोधन कर कहने लगा, "यह सब खेल मैंने आपके मनोरंजन के लिए किया है। परंतु एक बात आपसे कहता हूँ कि यह सब-कुछ माया है, भ्रम है। आपकी इंद्रियों के सम्मुख परछाईं है। दूसरी बात आपसे यह निवेदन करता हूँ कि अब 'गुड नाइट'!"

लोगों ने देखा कि गायिका धुँधली होती हुई धुआँ हो गई है, परंतु उस धुएँ से यह आवाज़ आ रही थी, 'रूप जोबन का मान न करिये।'

वह धुआँ विलुप्त हो गया। वह सारंगी और तबलची हवा में ऐसे घुल गए जैसे पानी में चीनी।

जगदीशचंद्र ने सब उपस्थितगण को हाथ जोड़ प्रणाम किया, रामू से रुपए ले जेब में डाल लिये और आश्चर्य में खोए हुए लोगों को वहाँ छोड़, रामू को साथ ले अपने कमरे में चला गया।

सोने से पूर्व रामू ने कहा, "गुरुदेव! कमाल कर दिया है आपने आज!"

"रामू! मेरे साथ रहोगे तो तुम्हें दिखाऊँगा कि एक मनुष्य क्या-कुछ कर सकता है।"

१२

होटल के लोगों को रात-भर नींद नहीं आई। होटल का मैनेजर तो पागलों की भाँति रात-भर अपने कमरे में इधर-से-उधर और उधर-से-इधर चक्कर काटता रहा।

जगदीशचन्द्र को पूर्व-निश्चयानुसार टिकट का आधा भाग एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हजार रुपया मिला और पाँच हजार जो भेंट में मिले थे उनमें से उसने होटल के मैनेजर को एक हजार दे दिया। शेष रुपए को अपने ड्राज़ में रखकर संतोष की नींद सो गया। उसका बम्बई में पहला दिन अच्छा रहा था। अब रामू के मन में भी यही स्वप्न उठने लगे कि क्या मैं भी ऐसी शक्ति उत्पन्न कर सकूँगा? चोरी करना उसे बुरा प्रतीत होने लगा। उसने मन में यह निश्चय कर लिया कि मैं गुरुजी की सेवा के द्वारा यह शक्ति अवश्य प्राप्त करूँगा।

अगले दिन प्रात:काल ही नियमानुकूल जगदीशचन्द्र उठा और रामू को साथ ले चौपाटी पर घूमने चला गया। वहाँ से वे मोटर पर सवार हो जुहू गए और सागर में स्नान करते रहे। वहाँ से वे दस बजे के लगभग लौटे तो अपने कमरे के बाहर दस-बारह लोगों को चक्कर काटते देखा। उनके वहाँ पहुँचते ही वे सब उन्हें घेरकर खड़े हो गए। एक ने पूछा, "गुरुदेव, कहाँ गए थे आप?" एक अन्य ने कहा, "हम आपकी तीन घंटे से प्रतीक्षा कर रहे हैं।" जगदीशचन्द्र अभी उत्तर भी नहीं दे पाया था कि एक और ने कहा, "होटल के मैनेजर आपको बुला रहे हैं।" एक और बोला, "मैं आपसे एक अत्यावश्यक विषय में बात करना चाहता हूँ।" एक और ने कहा, "पहले मैं आया था। इस कारण सबसे पहले समय लेने का मुझे अधिकार है।"

जगदीशचन्द्र ने इस प्रकार चीलों की भाँति उनको अपने पर झपटते देख, कुछ डाँटकर कहा, "मेरे पास आपसे बात करने को समय नहीं है। मुझे अभी पूजा करनी है। दो बजे दोपहर के समय आइएगा तो मिलूँगा।"

इस प्रकार एक बोला, "मेरी बात तो एक मिनट…"

जगदीशचन्द्र ने बात काटकर कहा, "नहीं! नहीं!! नहीं!!! मेरे पास अब समय नहीं है।"

विवश हो उन लोगों को चला जाना पड़ा। जगदीशचन्द्र और रामू भीतर गए तो उन्होंने कमरे का दरवाज़ा भीतर से बंद कर लिया। होटल के मैनेजर का आदमी भी वहाँ उपस्थित था। उसने मैनेजर का संदेश दिया था और यह जान कि वे पूजा के लिए जा रहे हैं, चुपचाप लौट गया। उसने पूर्ण बात मैनेजर को बता दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैनेजर ने देखा कि सायं के तमाशा के लिए टिकटों की माँग बहुत बढ़ गई है। इससे भोजनोपरान्त वह स्वयं आया और एक दिन 'शो' बढ़ाने के लिए निश्चय कर गया।

उस सायंकाल लोगों ने अन्य करतबों को छोड़कर गाना और नाच देखने के लिए विशेष आग्रह किया। जगदीशचन्द्र ने कुछ करतब दिखाए और पश्चात् कलकत्ते की नीलम बाई का आह्वान किया और वह आई। उसने भी अपने संगीत का प्रदर्शन किया। उसने गाया—

श्री गिरिधर आगे नाचूँगी। नाचूँगी, मैं नाचूँगी। श्री···
नाच नाच प्रिय रसिक रिझाऊँ, प्रेमी जन को जाचूँगी।

पश्चात् एक और गाना गाया—

कैसे प्रीत किए हो रामा!
सुध बुध बिसर गई है मोरी, नहीं लाज रही बड़ों की री!
इत धावूँ, उत जावूँ पगली, ढूँढत फिरत रही ब्रज धामा।
कैसी प्रीत किए हो रामा!

पश्चात् नाच हुआ और इसके पश्चात् फिर गाना हुआ।

इस रात तो भेंट के रुपए छः-सात हज़ार के भीतर हो गए। होटल का मैनेजर बहुत प्रसन्न था। जगदीशचन्द्र को भी सन्तोष हुआ। इसी प्रकार चार दिन तक यह क्रम चलता रहा। पश्चात् एक सेठ मनचन्दानी से कुछ बातचीत करने के बाद बम्बई शहर के बीच वोमन जी हॉल में इन प्रदर्शनों का प्रबन्ध कर दिया।

एक रात रामू ने जगदीशचन्द्र के पाँव पकड़ लिये और कहा, "गुरुदेव! मुझसे बहुत भूल हो रही थी। मैं तो अपना जीवन ही व्यर्थ गँवा रहा था। मुझे तो यह विदित नहीं था कि योग्य आदमी किस प्रकार दूसरों से रुपया निकाल सकता है। मुझे भी यह क्रिया सिखा दीजिए।"

"इसमें दस वर्ष लग जाएँगे रामू!"

"मैं जीवन-भर आपकी सेवा करता रहूँगा।"

"अच्छी बात है। पहले योग्य बनो, पश्चात् सुख-सम्पदा स्वयं तुम्हारे पाँव चूमेगी।"

"तो आप मुझे सिखाएँगे इसे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यदि तुम सीखना चाहोगे तो। अन्यथा यह कोई चीनी तो है नहीं जो पानी में डालने से स्वयं घुल जाएगी। इसको सीखने के लिए भारी तपस्या और लग्न की आवश्यकता है। तपस्या से पूर्व कुछ शिक्षा की भी आवश्यकता है। योग और ध्यान भी बिना ज्ञान के हो ही नहीं सकते।"

"गुरुदेव! मैं सब-कुछ करूँगा।"

"अच्छी बात है। यदि तुम मेरा कहना मानते रहे, मेरी आज्ञा का पालन पूर्ण रूप से करते रहे तो इसे अवश्य सीख जाओगे। आज से तुम मेरे शिष्य हो। मैं अब अपने गाँव में ही एक मकान बनवाकर शेष जीवन इसी क्रिया को और उन्नत करने में लगाना चाहता हूँ। मकान बनवाने के लिए बीस हज़ार रुपया और शेष जीवन के लिए एक लाख रुपया चाहिए। इस प्रकार जीवन की आवश्यकताओं से मुक्ति पा और निश्चिन्त हो अपने-आपको अपनी आत्मिक शक्तियों के विकास में लगा दूँगा।"

रामू मन में बहुत प्रसन्न हुआ। अब उसको विदित हुआ कि मानसिक शक्तियों का विकास कितनी दूर तक जा सकता है। परन्तु एक संशय उसके मन में बार-बार उठता था। वह यह कि जब सेब और अमरूद बनाए जा सकते हैं तो इसी विधि से मकान के लिए रुपया और नोट नहीं बनाए जा सकते क्या? इस संशय को उसने गुरुदेव से मिटवाना चाहा। इसके उत्तर में जगदीशचन्द्र ने कहा, "ऐसे रुपए अथवा नोट बनाना सरकार को धोखा देने के लिए तुल्य होगा। मैं किसी को धोखा देना नहीं चाहता। जो रुपया लोग इच्छा से देते हैं वह मैं अपना समझता हूँ।"

बम्बई में प्रदर्शनों का परिणाम यह हुआ कि एक मास के अंत तक उसके पास सब प्रकार का देना दे-दिलाकर डेढ़ लाख रुपया बच गया। उन्हें लेकर वह वापस अपने गाँव को लौट आया। चलते समय उसने रामू से कहा, "देखो रामू! यदि तुमने एक वर्ष में उचित उन्नति नहीं की तो फिर तुम्हें वापस तुम्हारी माँ के पास भेज दूँगा। और यदि तुम उन्नति कर सके तो इस विद्या में अभ्यास करने के लिए तुम्हें अपने साथ रखूँगा।"

रामू की अवस्था पहले से बहुत सुधर गई थी। उसको पढ़ने में रुचि होने लगी थी। उसके खान-पान और रहन-सहन में परिवर्तन उत्पन्न हो गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संकट में सहयोगिता

१

मंगल को अपना पृथक् घर बनाने के लिए धन एकत्रित करते हुए चार वर्ष व्यतीत हो चुके थे। इस वर्ष वह आशा कर रहा था कि बीस हज़ार रुपया इकट्ठा हो जायगा और वह पक्का मकान मोहिनी की इच्छानुसार बनवा सकेगा। इस आय में सब्ज़ियों के खेतों की उपज का बहुत भाग था। उसने मनोहर चौधरी की सारी भूमि पर जो नीची थी, सब्ज़ियाँ लगवानी आरंभ कर दी थीं। खाद खूब देता था और आलू, भिंडी, टमाटर, लौकी, टिंडे, मूली, गाजर बोता था। सिंचाई के लिए इसी भूमि के लिए उसको एक कुआँ और लगवाना पड़ा था।

दूसरे खेतों में भी पैदावार ठीक हो रही थी। खेतों में काम करनेवाले मंगल से बहुत प्रसन्न थे। वह उनके जीवन का बोझा अपना बोझा समझता था। जब से उसे अपने पिता की संपत्ति से वंचित किया गया था और जब से गाँव के लोगों ने उसको गाँव में ही पुनः बसने में सहायता दी थी, तब से उसने अपना यह नियम बना लिया था कि हर मंगल और शनिवार को इन लोगों की बस्ती में जाता था और वहाँ उनसे मिलकर उनकी आवश्यताओं को जान, उनकी पूर्ति का यत्न किया करता था।

वह समझ गया था कि देहाती जीवन में रुपया बचाने के दो ही उपाय हैं। एक, नित्य की आवश्यकताओं को घर में ही उत्पन्न करना। इसलिए उसने छाँटना, फूँकना, पीसना, पकाना, कातना, बुनवाना, दूध, मक्खन, लस्सी और घी और दाल-भाजी-सागादि घर पर ही उत्पन्न करने का प्रबंध कर लिया था। दूसरे, प्रत्येक कार्य में घर के हर एक प्राणी का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहयोग था। मंगल इन बातों को समझता था। यही कारण था कि वह प्रतिवर्ष रुपया बचाता चला जाता था।

चार वर्षों में उसने पंद्रह हज़ार रुपया एकत्रित कर लिया था और इस वर्ष की उपज अभी आढ़ती की दुकान पर पड़ी थी। इससे भी लगभग चार हज़ार की आय की आशा थी। इसके अतिरिक्त, साग-सब्ज़ियों की आय प्रतिमास होती थी। इससे वह अनुमान लगा रहा था कि मकान के लिए बीस हजार शीघ्र ही एकत्रित हो जायगा।

कच्चा मकान, जिसमें गाँव के लोगों ने उसे ठहराया था, अभी विद्यमान था। मकान के बाहर एक अच्छा-सा बागीचा लगा लिया गया था। घास की क्यारियाँ और उनके चारों ओर मेंहदी की बाड़ लगा ली गई थी।

मंगल जब भी नगर में जाता था तो कुछ-न-कुछ नया अनुभव ले आता था, जिसके प्रयोग से वह देहात के लोगों के सुख में वृद्धि कर सके।

जब उसके मन में यह विश्वास हो गया कि अब मकान बनवाने की शक्ति उसमें है तो वह नगर के मकानों की जाँच-पड़ताल करने लगा था। एक दिन एक मकान जो उसे बहुत अच्छा लगा, उस-जैसा नक्शा वह बनवा लाया।

नक्शा हाथ में लिये हुए वह प्रसन्नता से फूलता हुआ घर पहुँचा तो उसने मकान की ड्योढ़ी से ही आवाज़ दे दी, "ओ दीप की माँ! कहाँ हो, इधर तो आओ! देखो, क्या बनवा लाया हूँ।" उसके बड़े लड़के का नाम कुलदीप था और जब से उसका नाम रखा गया था, तब से मोहिनी 'दीप की माँ' हो गई थी। मोहिनी के एक और लड़का भी हुआ था और उसकी आयु इस समय एक वर्ष की थी। उसका नाम कन्हैया था, परंतु मोहिनी का नाम बड़े लड़के के नाम से ही चल रहा था।

मोहिनी आवाज़ सुनकर अपने छोटे लड़के को गोदी में लिये हुए ड्योढ़ी में आ गई। अपने पति के हाथ में एक नीला-सा काग़ज़ देखकर विस्मय में उसका मुख देखने लगी। मंगल ने ड्योढ़ी में रखे तख़्तपोश पर बैठते हुए कहा, "मोहिनी! देखो, मैं मकान का नक्शा बनवा लाया हूँ। इस सर्दी के मौसम में ईंटें पथवानी आरंभ कर दूँगा और अगले वर्ष मकान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनकर तैयार हो जायगा।''

''देखें, कैसा नक्शा बनवाया है आपने?''

मंगल ने वह नीला कागज़ खोलकर तख़्तपोश पर बिछा दिया और कहा, ''देखो, कितना सुंदर बनवा रहा हूँ!''

मोहिनी ने उसे देखा, पर नीले काग़ज़ पर सफेद रेखाओं का पुंज देखकर जब वह कुछ समझ नहीं सकी तो उसने कहा, ''मुझे तो कुछ समझ नहीं आया?''

''ठीक है, जब बनेगा तब समझ जाओगी।''

इस समय मोहिनी को कुछ याद आया तो उसने कहा, ''आज डाकिया एक चिट्ठी दे गया है। आपके नाम की कहता था।''

''कहाँ है? दिखाओ तो!''

मोहिनी चिट्ठी लेने भीतर गई तो मंगल भी नक्शा समेटकर उसके पीछे हो लिया। चिट्ठी पढ़ने की क्षमता मंगल में नहीं थी, इस कारण गरम-गरम दूध पी, अपनी थकान दूर कर वह चिट्ठी को पुजारी बृजलाल के पास ले गया और चिट्ठी उसके सामने रख पूछने लगा, ''पंडित जी, इसको बाँचिए। यह कहाँ से आई है?''

चिट्ठी पढ़कर पंडित जी ने सुनाई, ''यह लाला नत्थूमल्ल की है। उन्होंने लिखा है—तुम्हारी माँ की तबीयत बहुत खराब हो गई है। तुमको सूचना भेज दी है। जैसा उचित समझो करो।''

इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं लिखा था। मंगल गंभीर विचार में पड़ गया। पंडित बृजलाल ने कहा, ''मंगल भैया! यह पत्र मुझको दे दो। मैं इसका पता लगाकर कल तक बताऊँगा।''

''क्या पता करोगे?''

''यही कि इस चिट्ठी में जो माँ के बीमार होने की बात लिखी है, उसमें कोई सचाई भी है या नहीं।''

''तो क्या समझते हो, झूठ लिखा है?''

''इन लाला लोगों से सब-कुछ संभव है। कोई प्रयोजन हो सकता है जिसके लिए आपको बुलाया जा रहा है। शायद माँ इतनी बीमार नहीं, जितना लिखने से पता लगता है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो मैं ही जाकर पता न कर लूँ?"

"तुम जा सकते हो। परंतु माँ बीमार हो या न हो, आपसे कुछ लिखा-पढ़ी भी तो करवाई जा सकती है!"

"पंडित जी! जो कुछ था सब तो दे दिया है। अब और क्या लिखा-पढ़ी करवाएँगे?"

"ठीक है, पर मुझे इन नगर के रहनेवालों से डर ही लगता है।"

"पर मेरा मन धक्-धक् कर रहा है। मैं तो जाऊँगा।"

"अच्छा, तो कल प्रातःकाल ही चल देंगे। मैं भी तुम्हारे साथ आऊँगा, इकट्ठे चलेंगे।"

मंगल जानता था कि पंडित का उसके प्रति प्रेम ही साथ चलने की प्रेरणा कर रहा है। उसने घर पहुँच जब मोहिनी को माँ की बीमारी का समाचार बताया तो वह बहुत ही चिंतित हुई। उसने केवल यही कहा, "हो सके तो माँ जी को यहाँ ले आइए।"

मंगल चुप रहा। मोहिनी फिर बोली, "मेरा मन भी साथ चलने को करता है, पर डर लगता है कि कहीं मुझे देखकर, उन्हें अधिक दुःख न हो!"

"नहीं! तुम्हारे जाने की आवश्यकता नहीं।" मंगल ने सजग होकर कहा, "पुजारी जी का कहना है कि माँ बीमार नहीं। कुछ और ही बात है, और वह भी कल मेरे साथ जा रहे हैं।"

"पंडित जी बहुत अच्छे आदमी हैं। न जाने कितने जन्म तक उनके ऋण का बोझा सिर पर चढ़ा रहेगा!"

२

अगले दिन सूर्योदय से पहले ही पंडित जी स्नानादि से निवृत्त होकर मंगल के घर जा पहुँचे। मंगल को माँ के विषय में रात-भर चिंता लगी रही और वह पंडित जी के आने से पहले ही तैयार हो गया था। पंडित जी के आने पर उसने पूछा, "पंडित जी, कुछ खाया-पिया है या नहीं?"

"भैया! इतनी सुबह पंडिताइन कुछ दे नहीं सकी।"

"हीरा की माँ!" मंगल ने मोहिनी को आवाज दी, "पंडित जी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए लस्सी-मक्खन भेजना!''

कुछ दिनों से मोहिनी की सहायता के लिए एक विधवा स्त्री प्रातःकाल ही आ जाया करती थी। उसके हाथ में मोहिनी ने एक लोटा लस्सी का और उस पर आधा पाव मक्खन रखकर भेज दिया। पंडित जी ने पिया और तृप्ति अनुभव की और मंगल के साथ नगर की ओर चल पड़े।

मंगल को पता नहीं था कि उसकी माँ पृथक् मकान में रहती है। इससे वह नत्थूमल्ल के मकान के नीचे जा पहुँचा। वह अभी पहुँचा ही था कि नत्थूमल्ल मकान से निकलकर कहीं जाते हुए मिल गया। लाला ने पुजारी को साथ खड़ा देख, माथे पर त्योरी चढ़ाकर पूछा, ''सुनाओ पंडित, कैसे आना हुआ है?''

''कल आपका पत्र गया था कि यजमानिन बीमार है।''

''हाँ, बीमार तो है, पर मरनेवाली नहीं है। भागवत सुनने की उसकी लालसा नहीं।''

पुजारी इस कटाक्ष से तिलमिला उठा। उसने भी व्यंग्य के भाव में कह दिया, ''नगर भरा पड़ा है, लाला जी! किसी को तो आवश्यकता होगी! भगवान यजमानिन को चिरंजीवी करे! मैं भागवत पढ़ने नहीं आया। मैं तो यह देखने आया हूँ कि आपके पत्र में कुछ सचाई भी है या नहीं। सो आपने स्वयं ही मान लिया है कि उसमें सचाई का अंश बहुत कम है।''

लाला नत्थूमल्ल ने कहा, ''वह उस सामने के मकान में रहती है। वह ही आपको चिट्ठी का कारण बताएगी।''

मंगल ने यह उचित नहीं समझा कि लाला जी से कुछ अधिक तकरार करे। वह पंडित जी को साथ ले, बताए हुए मकान के नीचे जा कुंडा खटखटाने लगा। भीतर से मंगल की माँ ने दरवाज़ा खोला और मंगल को सामने देखकर भौंचक-सी रह गई। उसका विचार था कि लाला नत्थूमल्ल आए हैं। मंगल इतनी जल्दी गाँव से नहीं आ सकता था। फिर साथ पुजारी को देखकर तो उसके पाँव के तले की मिट्टी खिसक गई। उसको चुप देखकर पुजारी ने कहा, ''यजमानिन की जय हो! भगवान् तुम्हें आनंद-प्रसन्न रखे! माँ जी, रामू कहाँ है?''

मंगल ने प्रश्न पूछने के स्थान पर मकान के अंदर जाना उचित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझा। वह मकान के भीतर चला गया और पुजारी को भी भीतर बुलाकर दरवाज़ा बंद कर, भीतर से कुंडा लगाकर माँ से पूछने लगा, "माँ, क्या हुआ है तुमको?"

"अब आए हो तो चलो सुन लो। पंडित जी, तुम कैसे आए हो?"

"माँ जी! मैं भी ऊपर चलकर सुनूँगा।"

सब ऊपर की मंज़िल पर चले गए। वहाँ बैठकर माँ ने पूछा, "तुम्हें किसने बुलाया है?"

"लाला नत्थूमल्ल का पत्र मिला था, जिससे यह समझा कि तुम सख्त बीमार हो।"

"मैं बीमार नहीं हूँ, दुःखी अवश्य हूँ। रामू एक वर्ष के लगभग हुआ है, घर से भाग गया है। उसका पता नहीं चला। जितना नक़द रुपया था सब समाप्त हो गया है और निर्वाह की कठिनाई हो रही है। मैंने लाला जी से कहा था कि भूमि बेच दें। उन्होंने कहा है कि जब तक तुम दस्तखत नहीं करोगे, भूमि बिक नहीं सकती।"

"तो ग्राहक मिल गया है क्या?"

"यह मुझे पता नहीं। मैंने तुम्हें इसलिए बुलाया है कि यदि तुम ही भूमि खरीद लो तो बहुत अच्छा हो।"

"क्यों, अच्छा क्या होगा?"

"घर की मिट्टी घर में ही लगेगी।"

"नहीं माँ! मैं तुम्हारी भूमि नहीं खरीदूँगा। तुम इसे जहाँ अच्छे दाम मिलें, बेच डालो।"

"तो····क्या तुम अच्छे दाम नहीं दोगे?"

"नहीं। मैं तो उस भूमि का केवल इतना ही मूल्य समझता हूँ जितना तुम्हें रोटी-कपड़े के लिए चाहिए। जीवन-भर पच्चीस रुपया महीना मिल सकता है।"

"यह तो बहुत कम है।"

"पर मुझे भूमि की आवश्यकता भी तो नहीं!"

"तो तुम हस्ताक्षर कर दो।"

"किस बात पर हस्ताक्षर करूँ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यही कि तुम साक्षी हो कि तुम्हारा भूमि से कोई संबंध नहीं है।"

"सो तो मैंने लिख दिया था।"

"लाला कहते हैं कि वह हस्ताक्षर बँटवारे के थे। उससे बिक्री नहीं हो सकती।"

इस समय पुजारी ने बात काटकर कहा, "पर माँ जी, रामू कैसे भाग गया है?"

"मैं कैसे जान सकती हूँ? एक दिन स्कूल गया तो लौटा नहीं।"

"तो क्या उसे ढूँढने का यत्न किया है?"

"लाला जी कहते हैं कि उसके ढूँढने में दो हज़ार रुपए खर्च हो चुके हैं।"

"तुमने मंगल को सूचना तक नहीं भेजी, क्यों?"

"मैं क्या जानूँ? लाला जी ने कहा था कि वे ढूँढ रहे हैं।"

"माँ जी! अब भी लाला को कह दीजिए कि वे अपने-आप हस्ताक्षर कर लें। मंगल भैया से पूछने की क्या आवश्यकता है?"

मंगल की माँ के माथे पर त्योरी चढ़ गई। इस पर मंगल ने पुजारी को चुप रहने का संकेत करते हुए माँ से कहा, "माँ! रामू मेरा भाई है। वह एक वर्ष से लापता है और तुमने मुझे बताया तक नहीं। क्या हो गया है तुम्हें?"

"मैं समझती थी कि तुम्हारी बीवी यह बात सुनकर उल्टे प्रसन्न होगी। उसके कहने से तुम कुछ करो-धरोगे नहीं। फिर व्यर्थ में तुम्हें बताने की आवश्यकता क्या है?"

"माँ!" मंगल ने उठते हुए कहा। वह कुछ ऐसा अनुभव कर रहा था कि लाला नत्थूमल्ल ने उसकी मति भ्रष्ट कर दी है। इससे उसने दृढ़ता से कहा, "देखो, तुम्हारे रुपए, तुम्हारे भूषण और तुम्हारी भूमि से मेरा कोई सरोकार नहीं। मैं तो एक बात जानता हूँ कि गाँव चलो। वहाँ मकान खाली पड़ा है। वहाँ चलकर रहो। तुम्हें खाने-पहनने का कोई कष्ट नहीं होगा। जब रामू का पता चल जाएगा तब जो कुछ तुम्हारे पास है, वह उसे दे देना। बताओ, कब आओगी?"

"इस प्रकार मैं नहीं आ सकती। अभी पुलिस ने रामू के ढूँढने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए प्रार्थना की हुई है। उसका उत्तर अभी नहीं आया।''

''यह सब व्यर्थ है, माँ जी!'' पुजारी ने कहा, ''मुझे भय है कि लाला नत्थूमल्ल ने रामू को ढूँढने का कुछ भी प्रयत्न नहीं किया, और न ही वह कर सकता है। तुम गाँव में चली चलो तो मैं उसे ढूँढकर पाताल से भी ले आऊँगा।''

''तुम ले आओगे! भला कैसे?''

''भगवान से पूछूँगा। जिधर वे कहेंगे उधर ही चल दूँगा।''

मंगल की माँ हँस पड़ी। उसने कहा, ''मुझे तो कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि तुम लोग मुझे धोखा देने आए हो।''

''अच्छी बात है माँ!'' मंगल ने कहा, ''मैंने जो कहना था कह दिया। जब आने का विचार हो तो आने से एक-दो दिन पहले कहला भेजना। मकान झाड़-फूँककर ठीक करवा दूँगा।''

मंगल की माँ उन्हें जाते देखती रह गई। वह जो कुछ कह रही थी वह उसकी लड़की सोहनी और दामाद शंकर से सिखाई हुई भाषा थी। उसके मन में अपने कहने और करने पर भी संदेह हो रहा था। जब मंगल गया तो वह मकान का दरवाज़ा बंद करने नीचे आई। उस समय शंकर अपने मकान से निकल रहा था। वह अपनी सास को दरवाज़े पर खड़ी देख उसके पास चला आया और पूछने लगा, ''मंगल भैया चले गए क्या?''

''हाँ।''

''हस्ताक्षर करना स्वीकार किया है क्या?''

''नहीं।''

''तो क्या बनेगा? भूमि बिक नहीं सकती। रुपया समाप्त हो गया है। अब गुज़र कैसे होगी? भूमि बेचने की स्वीकृति मंगल दे नहीं रहा। रामू को वह ढूँढेगा नहीं और मुझे भय है कि वह मिल भी जाय तो उसे मरवा न डाले। इस प्रकार भूमि का मालिक बनने का यत्न करेगा। फिर, अपनी बहू की दासी बनकर उम्रभर उसी के टुकड़े तोड़ना!''

वह चुप होकर सुनती रही। उसे चुप देख शंकर ने कहा, ''अब तो मैं काम पर जा रहा हूँ, दोपहर के समय जब आऊँगा तो इस पर विचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया जायगा।'' यह कहकर वह चला गया।

माँ बैठी इस समस्या पर सोच ही रही थी कि सोहनी आ गई। उसने मंगल के प्रस्ताव को सुनने के पश्चात् कहा, ''माँ, भाभी की दुत्कारभरी बातों को सुनने से तो यहाँ भूखे मर जाना ही ठीक है।''

मंगल की माँ के मन में रामू के भाग जाने से कुछ ऐसी अव्यवस्था उत्पन्न हो गई थी कि वह किसी भी बात को भलीभाँति विचार नहीं सकती थी। उसकी अवस्था सागर पर उस नौका के समान थी जिस पर मल्लाह कोई न हो और जिस ओर वायु का रुख़ हो जाय उस ओर ही चल पड़े।

दुकान पर लाला नत्थूमल्ल ने अपने सुपुत्र शंकर से पूछा, ''क्यों शंकर! क्या कह गया है तुम्हारा साला?''

''कह गया है कि वह हिब्बानामे पर हस्ताक्षर नहीं करेगा। यदि माँ के पास खाने को कुछ नहीं रहा, तो गाँव लौट जावे। वह उसके खाने-पहनने का प्रबंध कर देगा।''

''फिर क्या कहती है तुम्हारी सास?''

''वह कुछ निश्चय नहीं कर सकी। हमारा तो विचार था कि जैसे पहले मंगल ने माँ के कहने-मात्र से हस्ताक्षर कर दिए थे, अब भी कर देगा, परंतु ऐसा नहीं हो सका।''

''यह पंडित जो साथ आया था, उसीने बाधा डाली है। मैं तो उसको देखते ही समझ गया था कि काम नहीं बनेगा।''

''रामू के लौटने से पूर्व ही भूमि का हिब्बानामा हो जाना चाहिए, नहीं तो सब योजना विफल हो जायगी।''

''पिता जी! मुझको तो इन तिलों में तेल दिखाई नहीं देता। जो कुछ था सब निकल चुका है।''

''देखो शंकर, ग्यारह हज़ार में तीन-चार हज़ार के लगभग खर्च हुआ होगा। भूषण का मूल्य भी लगभग छः-सात हज़ार होगा। यह तो हमारे कब्जे में है ही। शेष रही भूमि। इसे भी किसी तरह हाथ से निकलने न देना चाहिए। रामू होता तो और बात थी। रही बुढ़िया की आजीविका की बात, सो उम्रभर पड़ी रहे। रूखा-सूखा जो उसके भाग में होगा हम देते ही रहेंगे। हम न भी देंगे तो मंगल तो दुनियादारी के विचार से उसे रोटी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कपड़ा देगा ही। आखिर यह उसकी माँ है।''

इधर मंगल और बृजलाल नगर से लौटे तो मार्ग में यही बातचीत करते आ रहे थे कि रामू को घर से गए एक वर्ष हो गया और माँ ने उसके भाई को सूचना तक भी नहीं की। कैसे आश्चर्य की बात है! किस प्रकार एक माँ अपने पुत्र से बढ़कर अन्य को विश्वासयोग्य मान सकती है? सबसे अधिक विस्मय की बात तो यह है कि जिस लड़के के कारण वह अपने बड़े पुत्र से लड़ी-झगड़ी थी, उसी के भाग जाने पर भी उसे कोई भी चिंता नहीं होती। पुजारी का कहना था, ''मंगल भैया! ज़रूर तुम्हारी माँ पर उसके दामाद ने जादू-टोना किया हुआ है, जिससे उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है, नहीं तो माँ और पुत्र का संबंध कभी टूट सकता है?''

मंगल इन बातों को नहीं मानता था। यही कारण था कि वह पंडित जी की बात पर हँस पड़ा। उसने केवल यह कहा, ''मेरा दुर्भाग्य है कि मैं माँ को सुख नहीं पहुँचा सका। यह पुण्य मेरे भाग्य में नहीं।''

जब गाँव में पहुँचकर मोहिनी को रामू के भाग जाने का समाचार मिला तो वह अवाक्-मुख बैठी रह गई। उसको और सब बातों का पूछना याद ही नहीं रहा। वह एक समाचार ही इतना चकित और चिंता करनेवाला था कि उसने उसके सरल चित्त को पूर्ण आकार में घेर लिया, अन्य बातों का ध्यान ही न रहा।

इसके पश्चात् जब भी मंगल और उसकी बीवी एकांत में बैठते तो रामू की बात चलने लगती और फिर घंटों ही उसी की बातें होती रहती थीं। मंगल बार-बार कहता था कि ''मैंने रामू को पीटा नहीं था। वह गाँव की लड़कियों को तंग कर रहा था। मैंने मना किया तो उसने मेरा कहना नहीं माना। मैंने केवल कान मरोड़ा था, और उसने झूठ बोला कि मैंने उसको पीटा था।''

''पर माता जी तो समझदार थीं। उनको क्या हो गया है? सब जायदाद व्यर्थ गँवाई और अब भूमि को बेचने के पीछे लगी हुई हैं। शेष जीवन क्या अपने समधियों के बर्तन मलकर व्यतीत करना चाहती हैं?''

ऐसा विचार करने पर भी वे कुछ कर नहीं सकते थे। न तो उनमें रामू को ढूँढने की शक्ति थी और न ही वे इसकी युक्ति जानते थे। बातें ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होती रहती थीं जो एक रात को समाप्त होकर अगले दिन फिर चलने लगती थीं।

इस वर्ष वर्षा नहीं हुई। आस-पड़ोस में 'त्राहि-त्राहि' मचने लगी। खेत सूखकर चुर्र हो गए थे। कुओं में पानी सूखने लगा था। आषाढ़ गया, सावन आया, भादों और आश्विन भी सूखा ही निकल गया। कुओं के बल पर थोड़ी-बहुत खेती हुई, पर इससे क्या होता था! गाँव के लोग तो बेकार बैठे थे।

मंगल ने मकान के लिए ईंटें पथवानी आरंभ कीं तो लोग काम के लिए टूट पड़े। पर एक मकान बनवाने से गाँव-भर के लोगों को काम तो मिल नहीं सकता था। इस कारण समस्या विकराल रूप में सब लोगों के सम्मुख उपस्थित होने लगी। यह समस्या केवल गाँववालों की नहीं थी। पूर्ण देश में हाहाकार मच रहा था। नहर के किनारों पर की भूमि में और कुओं की आसपास की भूमि में कार्तिक की फसल हुई थी। परंतु उसके पश्चात् तो कुओं में भी पानी कम होने लगा, खेती कैसे होती!

माघ मास था, परंतु वर्षा न होने के कारण सर्दी कुछ अधिक नहीं पड़ रही थी। दोपहर की धूप में तेज़ी अधिक थी और आकाश धूलि से भर रहा था। सूखे खेतों में कहीं-कहीं हरियाली दिखाई देती थी। ये वे स्थान थे जहाँ कुएँ का पानी पहुँच सकता था। गेहूँ और जौ बोए हुए थे। मंगल की नीची भूमि पर सब्ज़ियाँ लगी हुई थीं। इस पर भी वह इस वर्ष दस बीघा से अधिक भूमि जोत नहीं सका था।

सायंकाल मंगल मोहिनी के समीप बैठा हुआ बच्चों से खेल रहा था कि पुजारी आ पहुँचा। मंगल ने उनके लिए बैठने को स्थान देते हुए पूछा, "आइए पंडित जी! संसार कैसे चल रहा है?"

मोहिनी छोटे बच्चे को गोदी में उठाकर भीतर चली गई।

पंडित जी बैठकर कहने लगे, "भैया, गाँव में प्रजा की अवस्था बहुत बिगड़ गई है। आधे से अधिक लोगों के घर अन्न-अनाज चुक गया है। महँगू कल नगर में काम ढूँढने जा रहा है। वह हृष्ट-पुष्ट है, मजदूरी कर सकेगा; परन्तु सब तो ऐसे नहीं हैं।...

"निमी को जानते हो न, जिसका पति पिछले वर्ष मर गया और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जिस पर उसके पड़ोसी माधो ने चादर डाल ली थी? आज वह घर से निकाल दी गई है। मैंने माधो से पूछा था कि उसने क्यों निकाल दिया है उसको, तो वह कहने लगा, अपने खाने को तो कुछ है नहीं, उसे कहाँ से दूँ? वह भी परदेस में नौकरी के लिए जा रहा है।....

"निमी बेचारी रो-रोकर बेहाल हो रही है। वह गाँव के पश्चिम में रहने वाला ननकू अपने घर के सामने बैठा था। मुझे देखकर कहने लगा, 'पंडित जी, अब तो घर में एक दाना नहीं रहा। बच्चे बिलख-बिलखकर रो रहे हैं!"

"पंडित जी, यह तो मैं भी देख ही रहा हूँ, परन्तु कुछ उपाय भी नहीं सूझता। मेरे पास कुछ रुपया तो है, पर मैं सोचता हूँ कि उससे कब तक काम चलेगा? देखो जी! इन्हीं लोगों ने एक समय मेरी सहायता की थी। अब मैं भी इनके लिए अपनी सामर्थ्य के अनुसार सब-कुछ करने को तैयार हूँ। यही समय तो मेरी परीक्षा का है! जब तक मेरे पास एक भी पैसा है, मैं इनमें से किसी को भी भूखा नहीं मरने दूँगा। परन्तु जो बात मुझे समझ नहीं आ रही है वह यह है कि मेरा सब-कुछ समाप्त हो जाने पर भी तो भगवान जाने इनका कुछ बन सकेगा अथवा नहीं?"

पंडित का मस्तिष्क कई मास से इसी उधेड़-बुन में लगा हुआ था। वह विचार कर रहा था कि गाँव के लोगों के उजड़कर भाग जाने से समूचा गाँव ही उजड़ जाएगा। इससे इनकी रक्षा करनी चाहिए। वह इनके लिए कितनी ही योजनाएँ बना चुका था और उनको व्यर्थ समझ पुनः त्याग चुका था। इसी उधेड़-बुन में वह किसी निश्चय पर नहीं पहुँचा था। इसी कारण पानी नाक तक आता देखकर मंगल के पास आया था।

मंगल अनपढ़ था। उसे एक ही बात आती थी कि कोई कार्य आरम्भ कर दिया जाय तो पीछा करते रहने से वह पूर्ण हो ही जाता है। उसने उठकर कुलदीप को कहा, "दीप, भाग जाओ माँ के पास। कहो, मैं गाँव से होकर आता हूँ।"

उसने पुजारी से कहा, "पंडित जी, इन्हें भूखों नहीं मरने देना, ठीक है न? चलो, इन लोगों की बिरादरी बुलाएँ और फिर विचार करें कि क्या किया जा सकता है।"
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ठीक है भैया! चलो।"

दोनों मकान से निकलकर उन ग़रीब लोगों की बस्ती की ओर चल पड़े। मार्ग में पंडित अपने मस्तिष्क में उठ रहे विचार उसे बताने लगा। उसने कहा, "सब स्त्री-पुरुष, बाल-वृद्ध तो काम की खोज में गाँव से बाहर जा नहीं सकते। गाँव में तो फिर कुछ-न-कुछ कर लेते हैं, पर नगर में जाकर सबको प्रतिदिन कोई काम मिलता रहेगा, यह कहना कठिन है। इससे बहुत-से भूखे मर जावेंगे। यदि स्त्रियाँ नगर में मज़दूरी करने गईं तो चरित्रहीन लोगों के पंजे में फँस जावेंगी और इसका परिणाम लज्जाजनक होगा। कई तो कमा न सकने के कारण अथवा काम न मिलने के कारण भिक्षा माँगने लगेंगी और फिर जीवन-भर के लिए न अपने काम की रहेंगी और न समाज के काम की। भैया, गाँववालों का इस प्रकार नगर में जाकर काम ढूँढने और वहाँ के वातावरण में रहने से भारी अनर्थ हो जाएगा। मंगल भैया! मैंने इस विषय पर बहुत विचार किया है, और मैं इसमें उन लोगों का हित नहीं समझता।"

"पर इस समय काम तो नगरों में ही मिल सकता है।"

"सो तो ठीक है, पर कोई ऐसी बात होनी चाहिए जिससे कोई बेकार न रहे, कोई भूखा न रहे और किसी को रात के समय अपने परिवार से बाहर रहने की आवश्यकता न पड़े।"

मंगल हँस पड़ा। उसने कहा, "बस, इतनी-सी बात है? यह भैया, कोई कठिन नहीं। पर ये लोग यदि एकमत होकर किसी के पीछे चलें, तभी यह हो सकता है।"

"जब इनके घर में अन्न था, तब तो ये एक-दूसरे की सहायता करते थे। अब सबको अपने-अपने मटके खाली दिखाई देने लगे हैं तो कोई किसी की नहीं सुनता। सबको अपनी-अपनी पड़ी है। जिनके पास कुछ दिन का खाना है वे उसे छुपा रहे हैं, जिससे कोई कुछ माँग न बैठे।"

"पंडित भैया, मेरी मोटी बुद्धि में तो एक मार्ग सूझ रहा है। यदि सब मानें तो हो सकता है।"

"जुग-जुग जियो भैया मंगल! कोई तरकीब निकालो न! निमी कह रही थी कि मैं तो नगर में जाकर चाहे वेश्यावृत्ति कर लूँ, पर इस बेईमान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माधो के घर लौटकर नहीं आऊँगी। भैया, निमी को बचाना होगा, उसके चरित्रहीन हो जाने से गाँव-भर के मुख पर कालिख पुत जायगी।''

इस समय बातें करते-करते वे गरीबों की बस्ती में जा पहुँचे। चौधरी के मकान के बाहर जाकर पंडित ने आवाज़ दी, ''चन्नू चौधरी!''

एक बूढ़ा आदमी हाथ में हुक्का लिये धीरे-धीरे चलता हुआ घर से बाहर निकला। वह मंगल को देखकर प्रसन्न हो बोला, ''मंगल भैया! तुम आए हो!'' उसने लड़के को आवाज़ दी, ''अरे कन्हैया! यहाँ खाट डाल दो।''

उसका युवा लड़का, जिसके गाल भूख से पिचक गए थे, बाहर आया और मकान के दरवाज़े के साथ खड़ी हुई खाट को उठाकर उसने बिछा दिया।

पंडित और मंगल खाट पर बैठ गए। मंगल ने कहा, ''चौधरी, बैठो!''

चौधरी और उसका बेटा दोनों भूमि पर सामने बैठ गए। बात मंगल ने आरंभ की, ''चौधरी, बहुत कठिन समय आ गया है न?''

''हाँ भैया! भगवान का कोप प्रतीत होता है।''

''पर हम मनुष्य हैं, पशु नहीं। इससे मरते-जीते मनुष्य ही रहना चाहते हैं।''

''पर भैया, भूखा पेट वह सब काम करवाता है जो पशु भी नहीं करना चाहता। मैना को पंडित जी जानते हैं। कन्हैया की मौसी की लड़की है। भूख के मारे व्याकुल हो कल नगर में काम ढूँढने गई थी। उसे काम कहीं नहीं मिला, निराश होकर लौट आई है। पर भैया, क्या जवान बहू-बेटियों का नगर में जाना अच्छा होगा? वहाँ सब तरह के लोग होते हैं।''

मंगल को यह सुनकर बहुत दुःख हुआ। उसने कहा, ''चौधरी, एक समय तुम लोगों ने मेरी बहुत सहायता की थी। उसे मैं भूल नहीं सकता। मैं यदि कुबेर होता तो आप सबके घर धन-धान्य से भर देता। परंतु मैं एक हूँ और यहाँ ज़रूरतमंद अनेक हैं। फिर भी मैं जब तक जीवित हूँ और जब तक मेरे घर में एक दाना भी अन्न का, अथवा एक पैसा भी नकद है, आपका एक भी आदमी भूखा नहीं रहने दूँगा। यह अवस्था तो तुम्हें मुझे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहले ही बतानी चाहिए थी।''

''भैया, मैं जानता था कि तुम अपने खलिहान के दरवाज़े खोल दोगे। पर वहाँ कितना-कुछ है, मुझसे छुपा नहीं। वह एक सप्ताह भी नहीं चलेगा, और तुम भी हमारे साथ भूख मरने लगोगे।''

''पर चाचा! तुम्हें इस प्रकार भूख से घुल-घुलकर मरते तो देखा नहीं जाता। और जब तुम्हारी औरतें घर की मान-प्रतिष्ठा बेचने लगेंगी तो मैं तो गले में फाँसी डालकर लटक जाऊँगा। मुझसे यह देखा नहीं जाएगा।····देखो चाचा। आज अभी मेरे घर के बाहर पंचायत बुलाओ। मैं तुम सबको एक तरकीब बताऊँगा और आशा करता हूँ कि सबके खाने-पीने का प्रबंध हो जाएगा।''

४

''भाइयो! मेरी मोटी बुद्धि की बात सुनो!'' मंगल पंचायत में एकत्रित लोगों को अपनी बात समझा रहा था, ''एक परिवार में पाँच भाई थे। तीन मेहनत करते थे, एक घर में चौधरीपन करता था और एक बीमार हो गया। बाप भी कमाता था। मेहनत करनेवालों में से एक ने कहा कि मैं अपनी कमाई का भाग बीमार भाई को नहीं दूँगा। इस पर बाप को क्रोध चढ़ आया। उसने कहा, 'यह मेरे रहते नहीं हो सकेगा। सबकी कमाई यहाँ एकत्रित होगी और इस एक को भी खाना-पीना उसीसे मिलेगा। एक ही माँ की कोख से उत्पन्न होकर यह भेदभाव करना महापाप है।' जब तक बाप जीता रहा, काम करनेवाले काम करते रहे। घर का चौधरी अपनी बुद्धि से सबको सुमार्ग पर लगाए रहा, और उनकी हिम्मत से बीमार भाई भी अपनी बीमारी का समय काट गया। स्त्रियाँ मान-प्रतिष्ठा से घर में बैठी रहीं और बच्चों के लालन-पालन में लगी रहीं।····

''दुर्दिन आने पर पिता का देहांत हो गया। भाई पृथक्-पृथक् हो गए। पाँच घर और पाँच चूल्हे हो गए। सबसे पहले चौधरी का घर बिगड़ा। उसको एक साहूकार के पास नौकरी करनी पड़ी। बातें करने में चतुर होने के कारण वह अपना निर्वाह नौकरी से करने लगा। मेहनत करनेवाले भी पृथक्-पृथक् हो गए। जहाँ साँझी कमाई एक ही चूल्हे पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पकने के कारण सबको खिला-पिलाकर बच जाती थी, वहाँ एक-एक की कमाई पर पृथक्-पृथक् चूल्हे जलने से किसी का भी पेट नहीं भरता था। सब परिवार नष्ट हो गया। इसलिए मैं कहता हूँ, कि यह समय विपत्ति का है। सब मिलकर प्रयत्न करोगे तो सबको खाने को मिलता रहेगा।''

चौधरी ने कहा, ''हमें खाना-मात्र चाहिए। भैया जैसा भी हमें, तुम कहोगे, करेंगे।''

''जो मेरा कहा मानने को तैयार हैं, वे बैठे रहें। जो अपने मन की करने को हैं, वे चले जाएँ।''

वहाँ पर आए ही वे थे जो मंगल चौधरी पर विश्वास रखते थे। सब बैठे रहे। अब मंगल ने आगे कहा, ''जितने युवा पुरुष हैं, सब कल मेरे साथ नगर चलें। सूर्योदय से एक घंटा पूर्व यहाँ से चल पड़ेंगे और सूर्योदय पर नगर में मज़दूरों की मंडी में पहुँच जाएँगे। हम सभी जो भी काम मिलेगा, करेंगे और सायंकाल लौट आएँगे। जो जिसको मिलेगा उसे एक स्थान पर एकत्रित कर देंगे और सबका भोजन यहाँ हमारे घर बनेगा। जो लोग काम करेंगे अथवा जिनके घर की औरतें यहाँ आकर खाना बनाएँगी, वे और उन सबके बच्चे और परिवार के लोग यहीं खाएँगे। यदि कमाई खर्च से बच गई तो पीछे काम करनेवालों में बाँट दी जाएगी, यदि खर्च कमाई से अधिक रहा तो मैं उसको पूरा कर दूँगा।....अब मेरा कहना है कि आप लोग अभी से प्रातः-सायं मेरे यहाँ भोजन करें। प्रातः नगर में काम करनेवालों के लिए दोपहर का खाना यहाँ से तैयार करके भेज दिया जायगा।''

यह योजना सबकी समझ में नहीं आई। इस पर मंगल ने फिर कहा, ''देखो भाई! समझ में आवे या न आवे, मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि जब तक मेरे पास एक भी दाना अन्न का है, मैं आप में से एक को भी भूखा रहने नहीं दूँगा। परंतु यदि खाली बैठकर खाने लगोगे तो सभी कुछ एक मास में ही समाप्त हो जावेगा। कोई नहीं कह सकता कि यह अकाल कब तक चलेगा। इससे आप में जो लोग काम करने के योग्य हैं वे काम करें। एक बात मैं और कहता हूँ कि औरतों को नगर में काम करने के लिए भेजने की आवश्यकता नहीं। जब तक पुरुष काम कर सकते हैं, तब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक वे गाँव में बैठकर घर का कामकाज करेंगी।''

मंगल की बात सुन चन्नू चौधरी ने खड़े होकर कहा, ''भाइयो! मंगल भैया की बात बहुत बड़ी है। यह सच है कि एक बाप के पाँच बेटे इकट्ठे रह नहीं सके तो भिन्न-भिन्न माता-पिता की संतान कैसे एक होकर रह सकेंगे? पर यह कठिनाई का समय है। इस काल में जीवित रहने के लिए सब-कुछ किया जा सकता है। इसलिए मैं सबसे हाथ जोड़कर प्रार्थना करूँगा कि सब इकट्ठे हो जाओ और जैसे मंगल भैया कहें, वैसे करो।''

पंडित बृजलाल अपने काम में लगा हुआ था। उसने जब तक पंचायत हो रही थी, खलिहान से अन्न निकलवाया और दस चक्कियों पर उसे पिसवा डाला। पश्चात् एकदम कई चूल्हे जलवाकर रोटियाँ सिकवा दीं। उड़द की दाल और चार-चार रोटियाँ पंचायत में आए हुए लोगों के लिए तैयार थीं। पंडित ने उन सबके घरवालों को भी निमंत्रण भेज दिया था। लगभग अढ़ाई सौ प्राणियों का खाना बनते और खाते रात के दो बज गए। प्रातःकाल को काम करनेवालों के साथ ले-जाने के लिए भी खाना बाँधकर रख दिया गया।

प्रातःकाल पचास सबल लोग अपने-अपने खाने की पोटली लेकर मंगल के साथ मज़दूरों की मंडी में जा पहुँचे। बेकारी और अकाल के कारण मज़दूरों की संख्या पहले ही अधिक थी। इस पर जब ये पचास लोग मंडी में और गए तो मज़दूरों में खलबली मच गई, परंतु मंगल ने इस पर ध्यान न दिया। वहाँ माल ढोने का काम चल रहा था। उसने कुछ दुकानदारों से अनुनय-विनय कर प्रायः सब लोगों को काम पर लगवा दिया।

लगभग दस बजे तक पचास के पचास लोग काम कर रहे थे। इस समय मंगल नगर में काम ढूँढने के लिए चक्कर लगाने लगा। जहाँ मकान बन रहे थे, जहाँ खुदाई अथवा कुटाई-पिटाई हो रही थी और जहाँ भी और काम हो रहा था, वह सब स्थानों पर पहुँचा। पूछताछ करने पर अथवा मिन्नत-समाजत करने पर उसने भिन्न-भिन्न कामों में अपने आदमी लगावा दिए। इस प्रकार अगले दिन से पचास लोगों के लिए काम निश्चय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कर वह दोपहर का भोजन, जो अपने साथ लाया था, एक कुएँ की जगत पर बैठकर खाने लगा।

जब वह भोजन कर रहा था, तो सामने से सोहनी और उसकी माँ लाला नत्थूमल्ल की फिटन गाड़ी में बैठे हुए निकल गए। सोहनी ने भाई को बाज़ार के किनारे कुएँ की जगत पर बैठे रोटी खाते देख लिया था, परंतु केवल देखकर रह गई। सोहनी के मन में यही भाव उठ रहा था कि मंगल भी बुरे दिनों के चक्कर में आ गया है। उसने माँ को कहा भी, "मंगल भैया कुएँ की जगत पर बैठा रोटी खा रहा है।"

"मालूम होता है कि किसी मुसीबत में फँस गया है।"

"गाड़ी खड़ी कर पता करूँ?"

"छोड़ो! वह हमें कभी पूछने आता है क्या?"

"पर माँ! हमने उसको कभी अपनी बात की सूचना भी तो नहीं दी?"

माँ ने कुछ उत्तर नहीं दिया।

सोहनी चुप कर रही। उसके मन में भाई को मुसीबत में देखकर कुछ दया का भाव उपजा था, परंतु शीघ्र ही वह लुप्त हो गया।

उसी सायंकाल पचासों आदमी एक निश्चित स्थान पर एकत्रित हो गए और वहाँ से गाँव की ओर चल पड़े। वहाँ बृजलाल ने सबको कहा, "आप सबके लिए भोजन मंगल भैया के घर पर बना है। आपकी स्त्रियाँ बना रही हैं। बगिया के कुएँ पर स्नान करो और रात्रि का आहार करो।"

सबने पंडित बृजलाल के पास अपनी मज़दूरी की रकम जमा कर दी। कुल पैंसठ रुपए थे। सबको और उनके परिवारवालों को पेट-भर खाना मिला। लोग खा-पीकर अपने-अपने घर जाकर सो गए। उनकी स्त्रियाँ अगले दिन का भोजन बनाने लग गईं।

पंडित ने सबके गाय-बैलों के लिए भूसे-चारे का प्रबंध करना भी आरंभ कर दिया। सायंकाल के दूध की दही जमा दी जाती थी। उसे प्रातः बिलोकर उसकी लस्सी बना दी जाती और सबको वह पीने को दे दी जाती। दिन के समय का दूध बिलोकर मक्खन बना लिया जाता और मक्खन से घी बनाकर उसे अगले दिन बेचने के लिए नगर में भेज दिया जाता।
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम चलने लगा। इस आयोजन में सम्मिलित होनेवालों की संख्या भी बढ़ने लगी। आय बढ़ने लगी और खर्च भी प्रबंध के सुधरने से कम होने लगा। पशुओं की रक्षा से कुछ बैलगाड़ियाँ नगर में माल ढोने को जाने लगीं। दूध भी नगर में जाकर बिकने लगा।

मंगल के खलिहान में कुछ अधिक अन्न नहीं था। इससे बाज़ार से खरीदने की आवश्यकता पड़ गई। आवश्यकतानुसार मोटा अन्न खरीदकर लाया जाने लगा। मंगल की मोटी बुद्धि में आई बात पंडित बृजलाल के व्यवस्थित मन से मार्जित होकर एक योजना बन गई, और वह मंगल पर विश्वास रखनेवालों के पुरुषार्थ से सुख-सुविधा का साधन बन गई।

एक महीने के पश्चात् हिसाब देखा गया तो कुछ सौ रुपया बच गए थे। मंगल ने बाज़ार से कपड़ा खरीदकर औरतों के पहनने के लिए कुछ कपड़े बनवा उन्हें बँटवा दिया। बच्चों के लिए भी कुछ पढ़ने-लिखने का प्रबंध होने लगा।

मंगल चौधरी एक सौ से ऊपर लोगों के लिए नित्य अच्छे से अच्छा काम ढूँढने में लगा रहता था। पंडित बृजलाल सबके खाने-पहनने का काम करता था। मोहिनी सबके लिए भोजन बनवाने और सबको खिलाने का प्रबंध करने में लगी रहती थी।

५

कई मास तक यही क्रम चलता रहा। अब एक नवीन कठिनाई आ उपस्थित हुई। वर्षा अगले वर्ष भी नहीं हुई। कुओं में पानी और भी सूखने लगा। अन्य गाँवों के लोग भी नगर में मज़दूरी करने के लिए पहुँचने लगे। लोग सहस्रों की संख्या में मज़दूरों की मंडियों में नित्य जाते और आधे से अधिक बिना काम पाए लौट आते।

पहले तो मंगल की भाग-दौड़ के कारण उसके गाँव के सब आदमियों को कुछ-न-कुछ काम मिलता रहा, परंतु धीरे-धीरे मज़दूरी कम होने लगी, बेकारी बढ़ने लगी और अनाज, जो अब बाज़ार से खरीदना पड़ता था, महँगा होने लगा। भूसा न मिल सकने के कारण पशु भूखों मरने लगे। यह घोर समस्या गाँववालों के सम्मुख उपस्थित हो गई। परंतु मंगल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने अपने वचन का पालन किया। खर्च में जितनी कमी होती वह अपने पास से देता था। इधर सब्ज़ियों के खेतों की, पानी की कमी के कारण, पैदावार कम होने लगी और वर्षा न होने से वायु में शुष्कता बढ़ गई। परिणाम-स्वरूप सब्ज़ियों में रस कम होने लगा।

एक दिन जब लोग खा-पीकर अपने-अपने घर आराम करने चले गए, तो चौधरी चन्नू और पंडित बृजलाल मंगल से बातचीत करने लगे, "मंगल भैया!" बृजलाल ने कहा, "यह क्रम कब तक चल सकेगा?"

"पंडित जी, जब हमने यह आयोजन चलाया था, तो पहले कई मास तक आय अधिक रही और खर्च कम। परंतु जब दूसरे गाँववालों ने भी मज़दूरी करने के लिए नगर में आना आरंभ कर दिया तो हमारे लोगों में बेकारी बढ़ने लगी। इस कारण आय कम होने लगी और खर्च महँगाई के कारण बढ़ने लगा। अब नौ मास से ऐसा ही चल रहा है। लगभग डेढ़ सहस्र रुपया मासिक की हानि दे रहा हूँ। इस समय मेरी पूँजी पचीस हज़ार से घटकर दस हज़ार रह गई है। मेरा विचार है कि वह दिन अब समीप है जब मेरी सारी संपत्ति इस कार्य में समाप्त हो जायगी। उस परिस्थिति के उत्पन्न होने से पूर्व यदि भगवान की कृपा हुई और वर्षा हो गई तो मान-मर्यादा बच जायगी, अन्यथा सब डूबेंगे।"

"मेरा विचार है कि उस अवस्था के उत्पन्न होने से पहले ही कुछ लोगों को यहाँ से किसी अन्य बड़े नगर में न भेज दें?"

"परंतु जाएँगे तो वे, जो काम करने के योग्य हैं। कठिनाई तो स्त्रियों, बूढ़ों और बच्चों की है। वे यहाँ भूखों मरेंगे।"

चौधरी का कहना था, "मंगल, तुमने बहुत किया है। हम तुम्हारा दिया उतार नहीं सकते। परंतु अब तुमसे और सहायता लेना पाप होगा। मेरी सम्मति तो यह है कि तुम कल सबको यह कह दो कि तुमसे और अधिक नहीं हो सकता, अतः एक सप्ताह के भीतर सब अपना-अपना प्रबंध कर लें।"

मंगल चुप था। उसके मन में घोर संघर्ष चल रहा था। क्या सत्य ही उसने इन लोगों की सहायता का बदला चुका दिया है? एक दूसरा विचार भी उसके मन में उठ रहा था। वह सोच रहा था कि यदि सहायता बंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने से एक भी औरत को अपना सतीत्व बेचना पड़ा तो वह घोर पाप का भागी बन जाएगा। आखिर उसके पास जो कुछ भी है वह सब इनकी मेहनत से ही तो प्राप्त हुआ है! अब इस कठिन समय में यदि यह सभी-कुछ इनके ही प्रयोग में नहीं आता तो कृतघ्नता होगी। यदि उसके पास कुछ भी न रहा तो वह भी सबके बराबर हो जाएगा। इससे अधिक क्या होगा!

इस विचार के बाद उसके मन में मोहिनी और बच्चों के भीख माँगने का दृश्य भी सामने आने लगा। इस दृश्य का चिंतन कर वह काँप उठा। परंतु पुनः मन को दृढ़ कर वह यह सोचने लगा कि उसने कौन-सा बुरा काम किया है जिससे भगवान उसको इतना कठोर दंड देगा?

जब वह बहुत देर तक चुप बैठा रहा तो पंडित ने समझा कि मंगल के मन में चन्नू चौधरी की बात बैठ गई है। उसने कहा, "तो मंगल भैया, मैं कल सबको सचेत कर दूँगा। परंतु तुम्हें कुछ काल के लिए गाँव से टल जाना चाहिए। मोहिनी और बच्चों को लेकर यहाँ से चले जाना ही अच्छा रहेगा।"

"क्यों?"

"इसलिए कि जब लोग बेचारे भूखों मरेंगे तो इनकी मनोवृत्ति बिगड़ जाएगी। भूख से पीड़ित हो ये घोर पाप करेंगे। यह सब-कुछ तुमसे देखा नहीं जाएगा, और तुम्हें अति दुःख होगा।"

"देखिए, पंडित जी! मैं अभी कुछ निश्चय नहीं कर सका। अभी इन लोगों को कुछ कहना नहीं। मैं कल तक विचार कर अपना व्यवहार निश्चित करूँगा। इस पर भी इतना तो निश्चय ही समझ लो कि यदि मैं यहाँ से जाऊँगा भी तो अपना सभी कुछ इन लोगों को देकर जाऊँगा। केवल तन ढाँपने का कपड़ा और रेल का भाड़ा-भर लेकर यह गाँव छोड़ूँगा। इस गाँव की कमाई यहाँ के रहनेवालों की भलाई के लिए ही रहेगी।"

चौधरी ने मंगल को ऐसा करने से रोका, परंतु वह अपनी बात पर दृढ़ था। उसने उठते हुए कहा, "मुझे बहुत शोक है कि मैं इन लोगों की मुसीबत को और बाँट नहीं सकता, परंतु मैं यहाँ रहूँगा अथवा नहीं और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहाँ आऊँगा भी तो कब तक आऊँगा, यह कल तक बताऊँगा।"

रात को जब वह घर पहुँचा तो उसने वह बात मोहिनी से कही। वह पहले ही अपने पति चौधरी और पुजारी की सब बातें किवाड़ के पीछे खड़ी सुन चुकी थी। सोने से पूर्व उसने ही बात पूछ ली—"क्या करने जा रहे हैं आप?"

मंगल बोला, "मैं कुछ निश्चय नहीं कर पाया। मेरा अपना प्रश्न होता तो मैं गाँव छोड़कर किसी शहर में चला जाता, परंतु मोहिनी! तुम्हें और बच्चों को भिखारी बनाकर दर-दर भटकता फिरूँ, यह समझ में नहीं आ रहा।"

"एक बात कहूँ?"

मंगल उसके मुख पर प्रश्नभरी दृष्टि से देखता रहा। इस पर मोहिनी ने अपनी बात कही, "कहीं जाने की आवश्यकता नहीं। अभी छः मास और काम चलाने का रुपया तो हमारे पास है ही। तब तक तो क्रम चलने दीजिए। पीछे देखा जाएगा। इस भीर के समय इनको छोड़कर चले जाने से काम नहीं बनेगा। मैं तो भगवान पर पूर्ण भरोसा रखती हूँ। क्या वह सदैव रूठा ही रहेगा? देखिए, यह आषाढ़ चल रहा है। दस-बारह दिन में वर्षा होनी चाहिए। यदि एक बार वर्षा आरंभ हो गई तो फिर रुकेगी नहीं और पिछले वर्ष का संचित जल भी आएगा।"

"बहुत आशावादी हो, मोहिनी?"

"हाँ।"

"पर यह तो समझो कि यदि वर्षा आरंभ हो भी गई, तो भी खाने को एकदम नहीं मिल जाएगा। कई महीने लग जाएँगे अन्न को उपजाने में। तब तक कुछ तो खाने को मिलना चाहिए!"

"यह तो तुम सबके विचार और प्रबंध की बात है।"

"पर मोहिनी!" मंगल ने हँसी में कहा, "तुम्हारा मकान फिर रह गया। ईंटें बनी रह गई हैं।"

"भगवान को ही जब स्वीकार नहीं, तो क्या हो सकता है!"

"इन दिनों गाँव के लोगों के लिए काम ढूँढते समय मुझे कई बातों का अनुभव हुआ है। मैं समझता हूँ कि धन के लिए घर से निकलने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यकता है। जब चौधरी कह रहा था कि लोगों को अपने भाग्य पर छोड़ दूँ और पंडित कह रहा था कि मैं यहाँ से कहीं दूर चला जाऊँ तो मैं अपने मन में एक योजना बना रहा था।''

''क्या?''

''मुझे नगर के एक ठेकेदार ने यह मति दी थी कि अफ्रीका चला जाऊँ। उसका कहना था कि इतनी मेहनत जो यहाँ कर रहा हूँ, यदि वहाँ कर सकूँगा, तो पाँच वर्ष में ही मालामाल हो जाऊँगा।''

''तो मैं कहाँ रहूँगी?''

''तुम भी मेरे साथ चलोगी।''

''मुझे कोई आपत्ति नहीं। कितना खर्च बैठेगा वहाँ जाने का?''

''लगभग एक सौ रुपया वहाँ जाने को और एक सहस्र रुपया कामकाज शुरू करने के लिए।''

''बस?''

''हाँ! इतना ही।''

''तो ठीक है।''

''परंतु यह मैं तब ही कर सकता हूँ, जब शेष धन गाँववालों को दे दूँ।''

''मुझे धन-दौलत की लालसा नहीं। भगवान ने देना होगा तो फिर देगा। मैं तो यही चाहती हूँ कि सदा तुम्हारे अंग-संग रहूँ और अपना तन-मन तुम्हारी सेवा में अर्पण कर सकूँ।''

६

प्रातः चालीस के लगभग लोग नगर में मज़दूरी के लिए चले गए। इन लोगों की मज़दूरी पक्की थी। उन्हें एक रुपया प्रतिदिन प्रत्येक को मिलता था। इनके अतिरिक्त पचास से ऊपर लोग नित्य मंडी में जाते थे और जैसा भी काम मिलता था, करते थे। इनमें से कभी भी पंद्रह-बीस से अधिक को काम नहीं मिला था। ये लोग पंद्रह-सोलह रुपया नित्य पाते थे। कुछ लोग मंगल के सब्ज़ी के खेतों में काम करते थे। कुओं में पानी कम था और भूमि में तपिश अधिक। इस पर भी कुछ-न-कुछ पैदा होता ही रहता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक बात यहाँ विशेष हो रही थी। वह यह कि काम मिले न मिले, खाने को सबको मिल रहा था। बाल, वृद्ध और स्त्रियाँ मिलाकर खानेवाले प्राणी चार सौ के लगभग थे। उनके लिए अन्न-अनाज बाज़ार से लेना पड़ रहा था। बैलों को गाड़ियों में जोतकर नित्य नगर में भेज दिया जाता था। कुछ गाड़ीवानों को काम मिल जाता। जो कुछ भी वे कमाकर लाते थे, कठिनाई से बैलों के लिए भूसा और दाने के लिए पर्याप्त हो पाता। इस सब कमाई और खर्च का प्रबंध पंडित बृजलाल रख रहा था। इस प्रकार सब मिला-जुलाकर चालीस-पचास का नित्य घाटा हो रहा था।

आस-पास के दूसरे गाँवों में तो लोग भूखे मरने आरंभ हो गए थे। युवा स्त्रियाँ अपने घरवालों को छोड़ भाग रही थीं। कई माता-पिता बच्चों को लेकर नगर की सड़कों पर छोड़ आते थे। उनमें से कई तो यतीमख़ानों में पहुँच गए थे और कुछ को कोई और उठा ले गए थे।

दिन-प्रतिदिन मंगल का कोष खाली होता जा रहा था। अंत में एक दिन मंगल नगर से लौटा और पंडित को बुलाकर बोला, "पंडित जी! मेरे पास इस समय आठ हज़ार रुपया शेष रह गया है। एक हज़ार पाँच सौ रुपया लेकर मैं परदेश जा रहा हूँ। शेष रुपया मैं आप लोगों को सौंप जाऊँगा। इसको प्रयोग में लाइए। भगवान करे कि इसके समाप्त होने से पूर्व ही आप पर उसकी कृपा हो जाए और गाँव के लोग उन अनर्थों से बच जावें जिनके भागी अन्य गाँवों के लोग हो रहे हैं।"

"कहाँ जा रहे हो भैया?"

"नैरोबी····अफ्रीका में। नगर का एक ठेकेदार है। वह मुझे अपने साथ ले-जा रहा है।"

"चौधराइन यहाँ रहेंगी क्या?"

"नहीं। वह भी मेरे साथ ही जाएगी। बच्चों के परवाने भी बन चुके हैं।"

मंगल के इस निर्णय को सुन पंडित अवाक् रह गया। उसी रात जब सब लोग भोजन कर चुके तो चौधरी ने पंचायत बुलाई और सबके सामने मंगल ने आठ हज़ार रुपए नक़द पंडित जी के हाथ में देकर अपना निश्चय बता दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे लोग जो नगर में काम पर जाते थे, दूसरे गाँवों के लोगों की दुर्दशा को देख रहे थे। उनके मुकाबले में जब वे अपने गाँव की स्त्रियों और बच्चों को हृष्ट-पुष्ट और कुछ-न-कुछ काम करते देख रहे थे तो वे समझते थे कि यह सब-कुछ इस कारण से है कि वे सब मिलकर काम कर रहे हैं और मंगल ने अपना सब-कुछ उन पर न्योछावर कर दिया है। आज मंगल को अपनी संपत्ति की अंतिम आहुति देते देखकर सबके हृदय द्रवित हो उठे। सब जानते थे कि मंगल का उनमें से चला जाना उनके अत्यंत दुःख का कारण होगा। परंतु वे यह भी उचित नहीं समझते थे कि अपने स्वार्थ के लिए वे उसके मार्ग में कोई बाधा खड़ी करें।

बहुत लोगों की आँखों में से आँसू बहने लगे। परंतु वे मुख से कुछ कह नहीं सके। मंगल ने इसके साथ यह भी कह दिया, ''यदि भगवान का कोप मिट गया और वर्षा हो गई तो मेरी सब भूमि और मेरी सब्ज़ी-भाजियों के खेत पर पंडित बृजलाल जी का अधिकार होगा। वे इनको जैसे भी चाहें, प्रयोग में लावें।''

लोग इस उदारता को देख चकित रह गए। मन में यह चाहते हुए भी कि मंगल वहाँ से न जाए, वे उसको रोक नहीं सके।

जिस दिन मंगल अपनी बैलगाड़ी में, जिसे वह पंडित बृजलाल को दे चुका था, अपने परिवार को लाद नगर को चला, उस दिन गाँव के सब नर-नारी उसको विदा करने के लिए गाँव के बाहर तक आए। पंडित बृजलाल, चन्नू चौधरी और गाँव के कई अन्य लोग मंगल के साथ-साथ बैलगाड़ी के पीछे-पीछे नगर तक आए और उसको रेलगाड़ी में चढ़ाने स्टेशन तक पहुँचे।

वह ठेकेदार भी, जिसके साथ मंगल जा रहा था, उसके साथ उसी गाड़ी से जा रहा था। उसको भी उसके संबंधी और मित्र स्टेशन पर विदा करने को आए हुए थे। वे सब गाँव के लोगों को मंगल के विदा होने पर रोते देख चकित हो रहे थे। वे मन में सोचते थे कि क्या गुण है इस आदमी में कि लोग इस प्रकार इसके वियोग से विह्वल हो रो रहे हैं?

जब वे समझ नहीं सके तो उनमें से एक ने पंडित बृजलाल से पूछा, ''कौन है यह आदमी?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देवता है। भगवान का रूप है। दया का भंडार है। क्या बतावें साहब, हमारा तो सर्वस्व है।"

मंगल एक सार्वजनिक स्थान पर, सबके सामने, इस सहानुभूति के प्रदर्शन से बहुत ही सकुचा रहा था। उसने भगवान को धन्यवाद दिया, जब गाड़ी ने सीटी बजाई और मंगल ने खिड़की में खड़े हो हाथ जोड़ सबको कहा, "भैया, भूल-चूक क्षमा करना! जीवित रहा तो फिर आऊँगा और आप लोगों की सहानुभूति का प्रसाद लूँगा।"

७

मंगल के चले जाने पर गाँव के श्रमिकों में, जो सब मिलकर निर्वाह कर रहे थे, फूट पड़ने लगी। पंडित बृजलाल जब सायंकाल काम से लौटे हुए लोगों से मज़दूरी के रुपए माँगता तो लोग झूठ बोल देते, "पंडित, आज तो काम ढूँढते-ढूँढते पाँव के तलुवे घिस गए हैं।" परिणाम यह हुआ कि दो-चार दिन में ही आय सत्तर-अस्सी रुपए रोज़ाना से घटकर तीस-पैंतीस रह गई। पंडित और चौधरी लोगों को समझाने का यत्न करते कि इकट्ठे रहने में लाभ है, परंतु इस समझाने का परिणाम उल्टा ही होता जाता था। एक-दो को तो पंडित ने रँगे हाथों पकड़ा भी। उनकी जब तलाशी ली गई और उनकी अंटी से मज़दूरी के पैसे बँधे निकले तो वे अपने परिवार के लोगों को लेकर इस गोल से पृथक् हो गए। इस प्रकार अवस्था दिन-प्रतिदिन बिगड़ने लगी। अवस्था यहाँ तक पहुँच गई कि गोल की कुछ स्त्रियाँ नगर में जाकर काम करने पर विवश हो गईं। उन्हें नगर की हवा लगने लगी।

मंगल का रुपया समाप्त होने से पूर्व ही गोल टूटता प्रतीत होने लगा, परंतु परमात्मा को पंडित बृजलाल की लाज रखनी थी कि श्रावण की पहली को ही ऐसी वर्षा लगी कि सूखी भूमि का पेट भर गया। तीन दिन तक झड़ी लगी रही और चारों ओर जल-ही-जल हो गया।

पंडित बृजलाल ने चन्नू चौधरी को बुलाया और गोल में जो शेष आदमी बच गए थे उनको पाँच-पाँच रुपए देकर विदा किया और मंगल के खेतों में हल चलवा दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब्जी-भाजी की खेती जो जल के अभाव से सूखी हो रही थी, पुनः सजीव हो उठी और पंद्रह दिन के भीतर ही पालक और मेथी का साग बिकने के लिए नगर में जाने लगा। पुदीने के पौधों में भी पल्लव फूटने लगे और इसकी गड्डियाँ बाँध नगर में जाने लगीं।

नित्य कुछ-न-कुछ आय होने लगी और उससे मज़दूरों को मज़दूरी देकर खेतों में काम कराया जाने लगा।

जो लोग मंगल के गोल में अंत तक रहे उनको पंडित ने मंगल के खेतों में काम दे दिया और दूसरों को अन्य ज़मींदारों के पास काम के लिए जाना पड़ा।

पंडित बृजलाल अपनी स्त्री के साथ मंगल का प्रतिनिधि बन उसके घर में आकर रहने लगा। उसने मंगल के गाय-बैलों का पालन-पोषण भी आरंभ कर दिया। दूध, घी, मक्खन, लस्सी उसी प्रकार गाँव में बँटने लगी जैसे मंगल के काल में बँटती थी और कामगारों से उसी प्रकार का व्यवहार होने लगा जैसे मंगल किया करता था।

इस पर भी गाँव के लोग पंडित पर यह संदेह करते थे कि वह मंगल की संपत्ति हड़प किए जा रहा है। गाँव के दूसरे ज़मींदार, जो मंगल के रहते हुए उससे डरते थे, अब पंडित बृजलाल को प्रबंध करता देखकर उसकी भूमि और पानी पर अनुचित अधिकार जमाने लग गए थे। पंडित के कहने, समझाने और धमकी देने पर भी कोई प्रभाव नहीं हुआ। सब गाँव के लोगों में इतनी अव्यवस्था फैल गई थी कि कोई किसी से सहानुभूति नहीं रखता था।

जब फसल कटकर और झाड़-फटककर लाई गई तो मंगल के घर में डाका पड़ गया। पंडित और पंडिताइन के हाथ-पाँव बाँधकर उन्हें दरवाज़े के बाहर सर्दी में ठिठुरने छोड़ दिया गया और डाकू सब अन्न-अनाज उठाकर ले गए।

प्रातःकाल गाँववालों ने उनके बंधन खोले और गाँव-भर के लोग उनसे सहानुभूति प्रकट करने के लिए आकर उपस्थित हुए। पंडित बृजलाल से गाँव का मुखिया भी रात के डाके का समाचार पा संवेदना प्रकट करने चला आया। पंडित खाट पर बैठा गाँववालों की बातों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चुपचाप सुन रहा था। उसने अपने मुख से केवल इतना कहा था, "घर में जो कुछ था डाकू उठाकर ले गए हैं। यहाँ तक कि रोटी पकाने के बर्तन भी नहीं छोड़े।" जब मुखिया आया तो पंडित ने आशीर्वाद दिया। खाट पर बैठने को स्थान दिया। मुखिया ने बैठते हुए कहा, "पंडित बृजलाल! सुना है कि यहाँ डाका पड़ा है?"

"चौधरी! ठीक सुना है तुमने।"

"क्या-कुछ ले गए हैं यहाँ से?"

"जो कुछ यहाँ था।"

"तो पुलिस में रिपोर्ट लिखवाई है?"

"नहीं।"

"क्यों?"

"इसलिए कि रिपोर्ट में यह भी लिखवाना पड़ेगा कि मुझे संदेह किन पर है। संदेह की बात ही नहीं, मुझे तो विश्वास है कि किन्होंने यह कर्म किया है।"

"तो उनका नाम लिखा देते!"

"पर चौधरी, वे भी अपने ही तो हैं! ये सब-कुछ उनका अपना ही था। मैंने भी तो उन्हीं में यह बाँट देना था। न भूमि मेरी है, न बीज मेरा। मेहनत करनेवाले गाँव के लोग थे। मेरे तो कोई संतान भी नहीं, जिसके लिए मैं कुछ रखना चाहूँ। न भैया, मैं तो रिपोर्ट नहीं लिखाऊँगा।"

चौधरी भौंचक्का हो उसका मुख देखता रह गया।

पंडित ने कहा, "चौधरी, दूध पियोगे क्या?"

"नहीं। बहुत कृपा है तुम्हारी। पर पंडित, मैं एक बात कहने आया था। थाने में रिपोर्ट न लिखवाई तो अच्छा न होगा। पुलिस समझेगी कि तुम भी उनसे मिले हुए हो, और मंगल को धोखा देने के लिए रिपोर्ट नहीं लिखवाई।"

पंडित ने माथे पर त्योरी चढ़ाकर कहा, "जो मुझे यह कहेगा, मैं उसको यह कह दूँगा कि गाँव के एक प्रमुख व्यक्ति के पुत्र को बचाने के लिए मैं चुप हूँ। उस लड़के को चौधरी, तुम भी जानते हो और मैं भी जानता हूँ।"
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समीप खड़े लोग विस्मय से मुखिया का मुख देखने लगे। मुखिया ने कहा, "यह कह क्या रहे हो पंडित?"

"नाम सुनना चाहते हो, चौधरी? तो आओ घर के भीतर। मैं तुमको बता सकता हूँ!"

पंडित मुखिया को घर के भीतर ले गया और पंद्रह मिनट तक वे दोनों घर के भीतर रहे। अंत में दोनों बाहर निकले। मुखिया चुपचाप मुँह लटकाए अपने घर की ओर चला गया।

८

इस डाके का समाचार पुलिसवालों के पास पहुँचा और वे भी पंडित बृजलाल के पास आए। उनमें थानेदार स्वयं भी था। उसने तनिक डाँटकर कहा, "पंडित, यह क्या बात है कि तुमने अपने घर में डाका डाले जाने की सूचना थाने में नहीं दी?"

"जो बात घटी नहीं, उसकी थाने में सूचना क्या देता?"

"तो इस घर में डाका नहीं पड़ा?"

"नहीं जी!"

"लोग कहते हैं कि उन्होंने तुम्हारे और पंडिताइन के बँधे हुए हाथ-पाँव प्रातःकाल खोले थे?"

"यदि पुत्र ने क्रुद्ध होकर माता-पिता के हाथ-पाँव बाँध दिए तो क्या किया जा सकता है! मेरा उसके विरुद्ध कोई अभियोग नहीं।"

"पुत्र?....तुम्हारे पुत्र कब हुआ है?"

"ऐसा कहने में मैं आपको दोष नहीं दे सकता। आप हमारे मत को नहीं जानते। हमारे यहाँ ब्राह्मण को समाज का पिता माना जाता है। गाँव के लोग मेरी संतान हैं। वे भूल से समझते थे कि मैं उनका भाग उनको ठीक रूप में नहीं दे रहा। इससे अपना भाग उठाकर ले गए हैं।"

"तो तुमने खेत में काम करनेवालों को मज़दूरी नहीं दी थी क्या?"

"मंगल भैया के खेत में कोई भी मज़दूर नहीं है। सब पत्तीदार हैं। प्रत्येक का अपना-अपना भाग है। कुछ लोगों का कहना है कि मैंने उनका भाग बाँटने में भूल की थी। उस भूल को उन्होंने सुधारने का यत्न किया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इसका अर्थ यह निकला कि तुमने हिस्सा बाँटने में भूल की थी।"

"वे ऐसा ही समझते प्रतीत होते हैं। मैं उनको समझा रहा हूँ कि मैंने भूल नहीं की।"

"यदि वे न समझे तो?"

"तो मैं एक उदार पिता के नाते बालकों की भूल को क्षमा कर देना चाहता हूँ।"

"मालूम होता है कि तुम डाकुओं से मिले हुए हो।"

"अपने ही घर में डाका डालने के लिए? विचित्र बात है!"

"तुम रिपोर्ट क्यों नहीं लिखवाते?"

"मैं इसको डाका मानता ही नहीं। देखिए मीर साहब! ये खेत गाँव के हैं। इन पर मेहनत गाँववालों ने की है। इसकी उपज गाँववाले उठाकर ले गए हैं। मेरा इसमें न कुछ था, न कुछ गया है। मैं तो मंदिर के आश्रय पर जीवित रहता हूँ।"

थानेदार बहुत परेशान था कि किस प्रकार इस समस्या को सुलझाए? उसके मस्तिष्क में एक बात आई कि पंडित को थाने में बुलवाकर पिटवाया जाए तो बक जाएगा। इससे उसने कहा, "कुछ भी हो, अभी एक घंटे में थाने में हाज़िर होना!"

"बहुत अच्छा।"

थानेदार चला गया। सब लोग, जो पंडित जी से संवेदना प्रकट करने आए हुए थे, विस्मय में पंडित का मुख देखते रह गए। एक ने कह दिया, "पंडित जी, आपने रिपोर्ट लिखवा क्यों नहीं दी?"

"भैया! किसके विरुद्ध लिखवाऊँ? एक हाथ दूसरे की निंदा करे! मुख, नाक और कान कटवाने का यत्न करे! यह गाँव का समाज एक परिवार के समान है। इस समाज का पुरोहित मैं हूँ। मैं ही लोगों को कैद करवाना आरंभ कर दूँ? यह मुझसे नहीं हो सकता।"

"परंतु इससे तो अव्यवस्था हो जाएगी। अधिकारी और अनधिकारी में भेदभाव ही मिट जाएगा।"

"आदिकाल से मनुष्य ने दंडविधान बनाया है। क्या लोग इस दंडविधान से भयभीत होकर अपराध करना छोड़ देते हैं? मनुष्य ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपराध करना छोड़ा है तो इसलिए कि उसकी अंतरात्मा में भगवान का प्रकाश हो रहा है। प्रकाश दंडविधान से नहीं, प्रत्युत मन को सत्य और न्याय की प्रेरणा से होता है।''

गाँव में बहुत कम लोग थे जो पंडित बृजलाल की भावना को समझ सके। इन कम लोगों में प्राय: वे थे जिन्होंने डाका डाला था और पंडित से यह आशा कर रहे थे कि वह थाने में रिपोर्ट लिखवाएगा और वे रात को किसी अन्य स्थान पर होने की बात को सिद्ध कर छूट जाएँगे।

दोपहर को भोजन कर पंडित बृजलाल थाने जा पहुँचा। वहाँ पहुँचते ही थानेदार ने एक कांस्टेबल को आज्ञा दी कि पंडित को कुकड़ूँ बनाओ। बस, फिर क्या था! दो सिपाहियों ने पकड़ पंडित को टेढ़ा कर दिया। टाँगें चौड़ी कर और उसके हाथों को टाँगों में से निकालकर उसको कान पकड़ने पर विवश किया। जब पंडित इस प्रकार कुकड़ूँ बना हुआ था तो गाँव के लोगों को पता चल गया और दस मिनट में ही आधे से अधिक गाँव वहाँ आकर एकत्रित हो गया।

गाँव के मुखिया को पंडित को कष्ट दिए जाने की सूचना मिली। वह जैसा बैठा था वैसा ही चला गया। जब वह वहाँ पहुँचा तो कुकड़ूँ बने पंडित की पीठ पर एक सिपाही ईंट रख रहा था। पंडित की स्त्री पास खड़ी रोती हुई उसे यह न करने की प्रार्थना कर रही थी। गाँव के लोग क्रोध में उतावले हो परस्पर कानाफूसी कर रहे थे। मुखिया ने जब यह दृश्य देखा तो उसके रोंगटे खड़े हो गए। वह थानेदार के पास जाकर कहने लगा, ''मीर साहब! यह क्या कर रहे हैं आप?''

''इस बदमाश पंडित को सीधा कर रहा हूँ।''

''भूल कर रहे हो मीर साहब! वह बदमाश नहीं है। यह डाके में गए माल को वापस पाने का यत्न कर रहा है। उसे तुम्हारा डंडे का तरीका पसंद नहीं। उसकी फरियाद भगवान से तथा उसके द्वारा समाज की आत्मा से है।''

''मैं इन बातों को नहीं जानता। उसको रिपोर्ट लिखवानी ही होगी।''

मुखिया को क्रोध चढ़ आया, परंतु अपने रोष को भीतर-ही-भीतर पीकर बोला, ''कैसी रिपोर्ट लिखना चाहते हो?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"डाके की। और कैसी?"

"पर डाका तो पड़ा नहीं!"

"डाका नहीं पड़ा, कैसे कहते हो तुम?"

"कोई रिपोर्ट लिखवा गया है तुम्हारे पास कि डाका पड़ा है?"

"किसी मुखबिर ने बताया है।"

"उससे लिखवा लो, नहीं तो वह झूठ बोलता है।"

"उसके झूठ-सत्य का निर्णय ही तो कर रहा हूँ!"

"एक बेगुनाह को पीटकर?"

इसी समय बाहर बहुत शोर होने लगा। मुखिया थाने के भीतर एक कमरे में बातचीत कर रहा था। पंडित बृजलाल थाने के सेहन में कुकड़ूँ बना हुआ था। जब पंडित की पीठ पर दस मोटी-मोटी ईंटें रख दी गईं तो वह अपना संतुलन ठीक नहीं रह सका और मुख के बल गिर पड़ा। पंडिताइन, जो समीप खड़ी सिपाही से याचना कर रही थी, अपने पति को गिरता देख, भागकर उसके पास गई और ईंटों को उठाने लगी। सिपाही ने लाठी से पंडिताइन को धकेलने का यत्न किया। इस पर गाँव के लोगों को क्रोध चढ़ आया और वे पंडिताइन पर लाठी चलानेवाले पर पिल पड़े। सिपाही लाठी छोड़ भाग गया। वह जो पंडित की पीठ पर ईंटें रख रहा था घायल हो गया और गाँववालों से हाथ जोड़कर क्षमा माँगने लगा। इस समय थानेदार और मुखिया बाहर आ गए और घायल सिपाही को हाथ जोड़ याचना करते देखकर थानेदार आगबबूला हो गया। उसने तुरंत जेब से सीटी बजाने को निकाल ली। मुखिया ने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा, "क्यों मूर्खता कर रहे हो? ये लोग अपने गाँव के पुरोहित को इस प्रकार पिटता नहीं देखेंगे। दस-बीस आदमी यहाँ मर जाएँगे और कौन मरेगा, कोई नहीं कह सकता। मेरा कहा मानो, पंडित जी को जाने दो और अपनी तहकीकात ठीक ढंग से चलाओ। यह तरीक़ा सफल नहीं हो सकेगा।"

थानेदार परिस्थिति को समझने का यत्न करने लगा। गाँव के बदमाश तो उससे पहले ही रुष्ट थे। इस ब्राह्मण को अकारण पिटवाने से तो उसका अपना हृदय भी दहल गया था। उसने आज्ञा दी, "पंडित को छोड़ दो!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो मिनट में लोग पंडित बृजलाल को कंधों पर उठाकर उसके घर ले गए।

९

उसी रात पंडित के घर से जो कुछ चोरी हुआ था सब-का-सब उसके घर में वापस आ गया, और अपने-अपने स्थान पर रख दिया गया। कुछ सामान टूट गया था, वह टूटा हुआ ही वापस पहुँचा दिया गया। इसमें गाँव के मुखिया का हाथ था। उसका अपना लड़का इस डाके में सम्मिलित था और वही पंडित के व्यवहार से सबसे अधिक प्रभावित हुआ था।

नैरोबी से पंडित बृजलाल को पत्र आया। उसमें मंगल ने लिखा था, "मैं और मोहिनी बच्चों-सहित बड़े मज़े में हैं। यह ठीक है कि यहाँ के लोग रंग के बहुत काले और जंगली हैं, परंतु ये सरल, सीधे और सत्य स्वभाव के हैं। मैंने ठेकेदारी का काम आरंभ कर दिया है। एक बड़े ठेकेदार ने एक सौ मील लंबी सड़क बनाने का ठेका लिया है। उसमें से मुझे पहले एक मील की सड़क को तैयार करने का काम मिला था। वह मैंने एक मास में तैयार करवा दी। पश्चात् मुझे पाँच मील का एक और भाग मिला। वह भी समाप्त कर चुका हूँ। अब उस सड़क का अंतिम पाँच मील लंबा भाग मिला है। दो मास में वह भी समाप्त करवा दूँगा।....

"अभी तक मुझे छः हजार रुपए के लगभग लाभ हुआ है। यहाँ काम बहुत है। करनेवाले भी बहुत हैं। परंतु प्रबंधकर्ता कम हैं। हम हिंदुस्तानी यह काम कर रहे हैं। मेरा काम केवल मज़दूरों को काम पर लगाना और उनसे काम लेना है। यहाँ मज़दूरों को एक सप्ताह की मज़दूरी अग्रिम देनी पड़ती है, और उसे फिर थोड़ा-थोड़ा नित्य की उजरत में से काटना पड़ता है। इस प्रबंध से मुझे हज़ारों रुपयों का लाभ हो रहा है।....

"सड़क जंगल में से निकाली जा रही है, इस कारण जंगली जानवरों से बचने के लिए एक बहुत बढ़िया बंदूक मैंने ले रक्खी है। लाठी की भाँति उसे कंधे पर रख यहाँ घूमा करता हूँ।....

"दूध, दही, मक्खन यहाँ खूब मिलता है। फल और सब्ज़ियाँ भी यहाँ बहुत सस्ती हैं। आम तो बारह महीने मिलते हैं। यहाँ कठिनाई यह है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि हिंदुस्तानी बोलनेवाले हम पाँच-छः परिवार ही हैं। अन्य सब लोग भाँति-भाँति की बोलियाँ बोलते हैं।....

"मेरा विचार है कि पाँच-छः वर्ष में मैं एक-दो लाख कमाकर हिंदुस्तान लौट सकूँगा। यह पत्र मैं अपने मुंशी से लिखवा रहा हूँ, जिसको मैंने अपना हिसाब रखने के लिए नौकर रखा हुआ है।....

"पंडित जी, पंडिताइन को मेरी और मोहिनी की पायलागन कह देना। गाँव का हाल-चाल लिखना। वर्षा हुई है, या नहीं ? प्रजा सुखी है या नहीं ?"

इस पत्र से पंडित जी को अत्यंत प्रसन्नता हुई और वह पत्र को लेकर गाँव के एक-एक आदमी को सुनाता फिरा।

गाँव के लोगों का यह विचार था कि पंडित सारी-की-सारी फसल गाँव के कामगारों-मज़दूरों में ही बाँट देता है, परंतु वर्षा के पश्चात् जब एक वर्ष के हिसाब का ब्योरा किया गया तो मालूम हुआ कि सबसे अधिक आय उसको आलू की फसल से और हरी सब्ज़ियों के खेतों से हुई थी। उसने दो बीघा भूमि में तंबाकू भी लगवा दिया था। इस प्रकार आय बहुत हुई। उसने काम करनेवालों को जी भरकर मज़दूरी दी। खाद और लगान का सब खर्च देकर उसे दस हज़ार रुपए की बचत हुई।

इससे उसने मंदिर के साथ गाँव के लड़कों को पढ़वाने के लिए 'मंगल-पाठशाला' मंगल के नाम से खोल दी। उसके लिए एक छोटी-सी पक्की इमारत बनवा दी। मंगल ने जो ईंटें अपने मकान के लिए बनवाई थीं, वे पाठशाला के कमरों के बनने में काम आईं।

इस प्रकार पाँच वर्ष में पंडित बृजलाल ने गाँव में नगर की भाँति सुख-सुविधा लाने का पूरा यत्न किया। उसने गाँव में एक वैद्य को लाकर बिठा दिया जो लोगों की चिकित्सा करने लगा। इस वैद्य को बीस रुपया मासिक और रोटी-कपड़ा दिया और उसके रहने का प्रबंध भी कर दिया गया।

पंडित बृजलाल ने एक बात और की। गाँव में एक छोटा-सा बैंक खोल दिया, जिसमें उसने अपना रुपया जमा करा दिया। नगर के कुछ लोगों को भी इसमें सम्मिलित कर उसका प्रबंध उन्हीं के हाथ में दे दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह बैंक लोगों में रुपया बचाने की आदत डालने लगा। इस बैंक के द्वारा गाँव की उपज वहीं गाँव में खरीदकर वहाँ से नगर में ले-जाना और बेचना बैंक का कर्तव्य हो गया। लोगों को न तो फसल बेचने के लिए और न ही रुपया लेने के लिए नगर जाना पड़ता था। इससे उनका बहुत समय और मेहनत बचने लगी।

इन कामों से निबटकर वह अपनी वृत्ति ईश्वर-भक्ति में लगाए रहता। एक दिन वह मंदिर में बैठा हुआ शिव की वंदना कर रहा था—

नमामि देवं वरदं वरेण्यम्
नमामि देवं च सदा सनातनम्।
नमामि देवाधिपमीश्वरं हरं
नमामि शम्भुं जगदेकबंधुम्॥
नमामि विश्वेश्वरविश्वरूपं
सनातनं ब्रह्म निजात्मरूपम्।
नमामि सर्वं निज भाव-गम्यं
वरं वरेण्यं वरदं नतोस्मि॥

उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि उसे पूर्ण ब्रह्मज्ञान हो गया है। वह भान करने लगा कि पूर्ण जगत् उसका है और वह पूर्ण जगत् में व्याप्त हो रहा है। उसमें और गाँववालों में कुछ अंतर नहीं रहा। उनकी भलाई में ही वह अपनी भलाई मानता है। उसको पिछले पाँच वर्ष के जीवन में जो रस मिला था, उसको पान कर वह गद्गद हो उठा। उसका पूर्ण शरीर आनंद-विभोर हो गया। उसके मुख से अनायास ही निकल पड़ा, "हे भगवन्! कौन पूर्वजन्म के पुण्य-कर्म मैंने किए थे कि तुमने लोक-सेवा का यह अवसर मुझे दिया है? मैं तुम्हारा कृतज्ञ हूँ। जन्म-जन्म के लिए तुम्हारा दासानुदास हो गया हूँ!"

इतना कह उसने देवता को साष्टांग प्रणाम किया और पत्र-पुष्प चढ़ाकर जल चढ़ाया। पश्चात् अपने अन्य नित्य-कार्य के लिए मंदिर से बाहर निकल आया। उसने घूमकर देखा तो देखकर स्तब्ध रह गया। उसके पीछे मंगल पतलून-कोट पहने और हाथ में हैट लिये खड़ा था।

मंगल के हृष्ट-पुष्ट शरीर पर कोट-पतलून बहुत फब रही थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका मुख संतोष और प्रसन्नता से देदीप्यमान हो रहा था। वह मंद-मंद मुस्कराते हुए पंडित को देख रहा था। एकाएक पंडित ने पहचाना और लपककर उसको गले लगा लिया। पंडित के मुख से निकला, "मंगल भैया!"

मंगल गले मिलते हुए बोला, "पहचान गए पंडित जी! पंडिताइन ने तो पहचाना नहीं।"

पंडित उसके कोट-पतलून को देखकर पंडिताइन की बात समझ गया—"ठीक तो है भैया! तुम भी तो पूरे साहब बनकर आए हो। उसने घर से निकाल दिया है न तुम्हें ?"

मंगल हँस पड़ा। उसने बताया, "हम टाँगे में आए थे। मकान के सामने टाँगा खड़ा किया तो हमें देखकर पंडिताइन घर के भीतर भाग गई। मैं उसकी भूल को समझ गया। इस कारण मुख ज़रा टेढ़ा कर ड्योढ़ी में खड़े होकर आवाज़ दी,'बृजलाल है ?'

"वह बेचारी किवाड़ के पीछे छुपकर खड़ी-खड़ी बोली, 'मंदिर गए हैं। बाहर तख्तपोश पर बैठ जाइये। अभी आते होंगे।'

"इतने में मोहिनी और बच्चे जो सब अंग्रेजी ढंग की पोशाक पहने हुए हैं भीतर चले आए। मोहिनी भीतर जाने लगी तो पंडिताइन बोली, 'मेम साहब! बाहर ठहरिए, यह ब्राह्मण का घर है। भ्रष्ट हो जाएगा।'

मोहिनी पंडिताइन का भ्रम समझकर हँस पड़ी और बोली, 'काकी, पहचाना नहीं ?'

"उन्हें अब बातें करते और प्रेम के आँसू बहाते वहाँ छोड़ आया हूँ। मैंने विचार किया कि यहाँ तो मोहिनी ने जल्दी ही भेद खोल दिया है। अब पंडित जी को खूब खिझाऊँगा। यहाँ आया, तो तुम्हें साष्टांग प्रणाम करते देख जूता उतार तुम्हारे पीछे आ खड़ा हुआ। परंतु तुम तो देवता की वंदना में इतने लीन थे कि मेरी उपस्थिति को भी नहीं जाना और मंदिर से चल दिए। जूता पहनने में थोड़ी घिस-घिस हुई, अन्यथा तुम्हें पता ही न चलता। परंतु तुम्हारा मुझसे प्रेम इतना अधिक है कि इतनी जल्दी मुझे पहचान भी गए!"

"तुम्हें कैसे भूल सकता हूँ भैया! कभी नहीं। मैंने तुम्हें गोदी में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खिलाया है। मैं तुम्हारे अंग-अंग के स्पंदन को पहचानता हूँ। ये कोट-पतलून उसे छुपा नहीं सकते। अच्छा चलो, घर चलकर ज़रा पंडिताइन को डाँटूँ कि अपने बच्चों को भी भूल गई है क्या?''

१०

मंगल के आने का समाचार सारे गाँव में एकदम फैल गया और गाँव-का-गाँव उमड़ आया। उस कच्चे मकान के सामने, जिसमें अब पंडित बृजलाल रहता था, भारी भीड़ लग गई—''भैया मंगल! भैया मंगल!'' स्त्री-पुरुष सब उससे बातें करने को लालायित हो रहे थे। लोगों का प्रेम और स्नेह देखकर मोहिनी अपने मन में फूली नहीं समाती थी। उसके पति की इतनी मान-प्रतिष्ठा है, यह बात उसके मन को पुलकित करने में सबल थी। मंगल भी एक-एक का नाम ले-लेकर बातचीत कर रहा था। वह सबको बताना चाहता था कि किसी को भूला नहीं। किसी बाप की उँगली पकड़े कोई बच्चा होता, तो वह पूछ लेता, ''यह कौन है?''

''मेरा लड़का मंगत। उस समय गोदी में था।''

''ओह! भूल गया था। चाचा, पाँच वर्ष व्यतीत हो गए हैं न! मुझे तो सब-कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि मानो कल ही यहाँ से गया था।''

जब पहले दिन की आवभगत समाप्त हुई तो पंडित से ईर्ष्या करनेवाले मंगल के पास आने लगे। उनमें एक नेतराम जाति का जाट था। उसने कहा, ''मंगल भैया! पंडित जी से हिसाब का पूरा-पूरा ब्योरा लेना चाहिए।''

''ले लिया है भैया!''

''क्या लिया है? क्या मंदिर के पास बने स्कूल पर जो सहस्रों रुपए खर्च किए हैं, बताए हैं उसने?''

''हाँ।''

''तो सब तुम्हारी स्वीकृति से हुआ है क्या?''

''मैं स्वीकृति देनेवाला कौन हूँ? काका! यह सब पैदा किया है उसने। इसके व्यय करने का अधिकार भी तो उसी को था।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह भूमि जो तुम्हारी थी?"

"भूमि तो मनोहर चौधरी की है। उसको पट्टे की रकम मिल गई है।"

"पर पट्टा तो तुम्हारे नाम था?"

"पर मैंने तो उस पर मेहनत की नहीं। मेहनत करनेवाले थे कामें और पंडित था प्रबंध करनेवाला। बीज, खाद, सिंचाई और प्रत्येक कार्य का मूल्य देनेवाले थे पंडितजी। बताओ, मैंने क्या किया है? और मुझसे कोई क्यों पूछे?"

यद्यपि यह बात नेतराम को समझ नहीं आई, तो भी वह मंगल को उत्तर नहीं दे सका। इसी प्रकार अनेकानेक ईर्ष्यालु और चुगलख़ोर आए। एक बोले, "भैया, तुमने तो अकाल के दिनों में अपनी सारी संपत्ति, यहाँ तक कि अपनी स्त्री के भूषण तक भी, गरीब बेकारों के खिलाने-पिलाने में व्यय कर दिए थे। जब अच्छे दिन आए तो तुम्हारा धन तुम्हें मिलना चाहिए था। इस पंडित ने सब-का-सब व्यर्थ खो दिया है। देखो न, गाँव से पक्की सड़क आधे मील पर पड़ती थी। उसपर तीन हज़ार रुपए व्यय कर उसे पक्की कर दिया है। गाँव में एक फव्वारा लगवा दिया है। उसे चलाने और वहाँ पर बेल-बूटों की सिंचाई और निराई के लिए तीन रुपए रोज व्यय कर रहा है।"

मंगल हँस पड़ा। जब आक्षेप करनेवाले ने विस्मय में उसका मुख देखना आरंभ किया, तो मंगल ने हँसना बंद कर कहा, "इसमें आश्चर्य करने की कौन बात है भैया! पंडित ने कमाया है। वह अपनी इच्छा से व्यय करता है। मैं और तुम उसमें क्यों कुछ कहें? रही मेरी संपत्ति, तो भैया, वह भी जिनकी थी उन्हीं के काम में लगा दी गई थी। इसमें मेरा कुछ नहीं था।"

ईर्ष्यालु लोगों के विषैले कथन को सुनना तो सुगम है, परंतु उससे मस्तिष्क को बिगड़ने से रोकना कठिन। उनके प्रभाव से ही मन की महानता का परिचय मिलता है। मंगल इस परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ। उसने एक दिन पंडित जी को पास बैठाकर कहा, "पंडत जी, मनोहर चौधरी की सारी ज़मीन अब तुम ही जुताओ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"न भैया! तुम्हारी अनुपस्थिति में मैंने जैसा बन पड़ा, कर दिया। अब तुम आ गए हो। अब समेटो अपनी ढोल-डफरी। हम ब्राह्मणों से तो पूजा-पाठ करा लिया करो। कहीं रामायण की कथा कहो तो कर दूँगा। यह झंझट मुझसे नहीं होता।"

"पंडित," मंगल ने मुस्कराते हुए कहा, "यह पूजा किसलिए करते हो?"

"अपनी आत्मा की शुद्धि के लिए।"

"आत्मा की शुद्धि क्यों करते हो?"

"मोक्ष-प्राप्ति के लिए!"

"यह तो उद्देश्य है। पर मैं पूछता हूँ कि बिना कर्म किए क्या आत्मा की शुद्धि मोक्ष प्राप्त करा देगी?"

"अच्छे कर्म भी तो शुद्ध आत्मा से ही हो सकते हैं!"

"यही तो मैं कह रहा हूँ। भगवद्भजन करो प्रातः-सायं। उससे स्फूर्ति प्राप्त कर कर्म करो दिन-भर। क्या मैं ग़लत कह रहा हूँ पंडित?"

मंगल की युक्ति के सामने पंडित को नतमस्तक होना पड़ा। पंडित ने कर्तव्य मान मनोहर चौधरी के खेतों का प्रबंध अपने हाथ में लिया। इस पर भी निर्वाह के लिए आवश्यक धन-धान्य से अधिक उसने कुछ नहीं लिया।

अभी तक मंगल और पंडित एक ही घर में रहते थे। बृजलाल का अपना घर पिछले पाँच वर्ष से ध्यान न देने के कारण गिर चुका था। मोहिनी का कहना था कि उसके मन की एक सुंदर मकान बनाने की चिर-संचित अभिलाषा पूरी हो जाय तो अच्छा है। इसके लिए मंगल ने पुनः ईंटें पथवानी आरंभ कर दीं। नया मकान बनने तक के लिए वे वहीं पंडित बृजलाल के साथ कच्चे मकान में रह रहे थे।

नैरोबी से लौटने के तीसरे दिन ही, मंगल की इच्छा माँ से मिलने की हुई। वह प्रातःकाल उठा और लाठी ले नगर को चल पड़ा। अपनी माँ के मकान के घर के सामने पहुँचा तो मकान में किसी और को रहते देख वहाँ से घूमकर लाला नत्थूमल्ल के मकान के सामने जा पहुँचा। कुंडा खटखटाने पर एक बुढ़िया ने दरवाज़ा खोला। वह बुढ़िया मैले-कुचैले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कपड़े पहने थी। हाथों में राख और कालिख लगी थी। वह बुढ़िया बरतन मलती हुई आई प्रतीत होती थी। बुढ़िया ने मंगल को देखा और अवाक्-मुख खड़ी रह गई। मंगल को उसे पहचानने में कुछ समय लगा। यह उसकी माँ थी। उसकी रूपरेखा सर्वथा बिगड़ चुकी थी। बाल बिल्कुल श्वेत हो चुके थे। मुख पर झुर्रियाँ पड़ गई थीं और यूँ भी वह इतनी दुर्बल हो चुकी थी कि पहचानना कठिन था। जब मंगल ने पहचाना तो कहा, "माँ! क्या हुआ है तुमको?"

माँ वहाँ ड्योढ़ी में ही भूमि पर बैठ गई और अचेत हो गई। मंगल बहुत घबराया। वह माँ को कैसे होश में लाए, समझ नहीं सका। उसने पुनः कुंडा खटखटाया, पर कोई नहीं बोला। दुबारा खटखटाया। फिर भी कोई नहीं बोला। तीसरी बार जब खटखटाया तब लाला नत्थूमल्ल खिड़की में से झाँककर बोला, "क्या शोर मचाया है नीचे? ऊपर बहू बीमार है।" इतना कहते-कहते उसने मंगल को ड्योढ़ी में खड़े देख लिया। इससे वह चुप हो गया। पश्चात् कुछ विचार कर बोला, "क्या चाहते हो मंगल?"

"माँ अचेत हो गई है।"

"तो हम क्या करें? उठाकर ले जाओ! हम स्वयं मुसीबत में फँस रहे हैं।"

"बहुत अच्छी बात। ले जाता हूँ।" इतना कहकर उसने मकान के भीतर घुसकर पानी ढूँढने का यत्न किया। मकान में ड्योढ़ी लाँघकर एक चौड़ा-सा आँगन आता था। आँगन में पानी का नल लगा था। वहाँ से पानी लाकर उसने माँ के मुख पर पानी के छींटे मारने शुरू किए तो माँ को कुछ चेतनता आ गई। उसने माँ के हाथ धुलाए और उसको भूमि पर लिटाते हुए कहा, "माँ, मैं तुम्हारे ले-जाने के लिए टाँगा लाता हूँ। तुम यहाँ से हिलना नहीं।"

"बेटा····" इससे अधिक वह कुछ कह नहीं सकी। इसी समय सीढ़ियों से एक डॉक्टर और पीछे-पीछे नत्थूमल्ल उतरता दिखाई दिया। डॉक्टर के हाथ में स्टैथस्कोप पकड़े देखकर वह समझ गया कि घर में कोई बीमार है। अब मंगल को स्मरण आया कि लाला ने कहा था कि बहू बीमार है। उस[illegible] नहीं ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब डॉक्टर को विदा कर नत्थूमल्ल भीतर आया तो मंगल ने पूछा, "लाला जी, कौन बीमार है?"

"तुम्हारी बहन। अजब मुसीबत में फँस गए हैं। सहस्रों रुपए व्यय हो चुके हैं और अभी तक रोग का पता ही नहीं चला।"

मंगल को यह सुनकर दुःख हुआ। उसने पूछा, "क्या मैं बहिन को देख सकता हूँ?"

"पहले अपनी माँ को तो देखो! इसको ले जाओ यहाँ से! एक रोगी को देखें या दो को?"

"इसको तो ले ही जाऊँगा। यदि आप बुरा न मानें तो सोहनी को भी ज़रा देख लूँ।"

"देख लो, और मन करे तो उसको भी ले जाओ।"

मंगल इस बात से अवाक्-मुख हो लाला को देखता रह गया।

११

मंगल ने सोहनी को देखा। वह सूखकर काँटा हो चुकी थी। शंकर माथे पर त्योरी चढ़ाए उसके सामने कुर्सी पर बैठा था। मंगल को कमरे में आते देख वह उठकर बाहर चला गया। सोहनी बितर-बितर भाई का मुख देखती रह गई। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि भाई को क्या कहे! मंगल ने पूछा, "सोहनी, बहुत कष्ट है तुम्हें यहाँ?"

"देख ही रहे हो तुम। कुछ समझ में नहीं आता कि क्या हो गया है। दवाई पर दवाई पिलाई जा रही है, पर बनता कुछ नहीं। न ज्वर है, न खाँसी। केवल दिन-प्रतिदिन सूखती जा रही हूँ।"

"गाँव चलोगी सोहनी?"

"वहाँ क्या होगा?"

"राज़ी हो जाओगी।"

"यहाँ एक बात तो है। रुपया खर्च करने को है। वहाँ तुम यह कैसे कर सकोगे?"

"इसकी आवश्यकता नहीं पड़ेगी। मैं माँ को तो साथ ले-जा ही रहा हूँ, तुम भी चलो तो शायद ठीक हो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं तुम्हारे जीजा जी से पूछे बिना नहीं जा सकती।"

"तो पूछ लो। मैं टाँगा लेने जा रहा हूँ।"

सोहनी की इच्छा के विपरीत शंकर ने उसे जाने की तुरंत स्वीकृति दे दी। इससे उसे बहुत विस्मय हुआ। इस पर भी उसने कहा, "माँ के घर के सब भूषण दे दीजिए। वे तो शायद अब लौटकर नहीं आएँगी।"

"इतनी जल्दी तो नहीं हो सकता। लाला जी ने तिजोरी में रखे हैं। किसी समय आराम से निकाल देंगे।"

"निकालने में कौन देरी लगती है? जब तक भैया टाँगा लेकर आते हैं, निकलवा दीजिए।"

"नहीं, यह नहीं हो सकता।"

"तो मेरे कपड़े ही निकलवा दीजिए।"

"क्यों, क्या करोगी कपड़े? वहाँ देहात में तो साधारण पोशाक से ही काम चल जायगा।"

सोहनी मन मसोसकर चुप कर गई। शंकर ने उसके सब सूती कपड़े एक गठरी में बाँध दिए और उसे जाने के लिए तैयार कर दिया। सोहनी के मुख से 'जाने' का शब्द निकलते ही ससुरालवालों का मान जाना, उसको चकित और शंकित करने लगा। उसे कुछ ऐसा भास हुआ कि उसका पति उससे तंग बैठा है, और उसको घर से निकालकर सुख और संतोष अनुभव करेगा। इस विचार के आने पर उसने गाँव जाने का विचार त्याग दिया। उसने कहा "मैं सोचती हूँ कि गाँव में जाकर मुझे अधिक कष्ट होगा। मैं न जाऊँ तो ठीक रहेगा।"

शंकर यह सुनकर क्रोध से लाल-पीला होने लगा। उसने कहा, "नहीं जाना था तो मुझे उल्लू बनाकर इतनी भाग-दौड़ क्यों करवाई थी? अब चली चलो तो ठीक है।"

सोहनी समझ रही थी कि उसके जीने की अधिक आशा नहीं। इसी से उसका पति उसको भेज रहा है और भूषण और वस्त्र भी देना नहीं चाहता। इससे उसने फिर कहा, "मैं समझती हूँ कि न जाऊँ तो ठीक है।"

"क्यों? क्या है वहाँ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

"वहाँ मेरे मायके है। यहाँ ससुराल है। इस स्थान पर मरना अच्छा

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतीत होता है।''

''पर तुम मरोगी थोड़े ही। दो मास बाहर की खुली हवा में रहकर ठीक हो जाओगी। स्वस्थ होकर चली आना।''

''मुझे इसका विश्वास नहीं हो रहा। मैं अब बच नहीं सकूँगी। और इस जन्म में तो यहाँ नहीं आ सकूँगी।''

''सोहनी! ऐसा मत कहो। मैं कहता हूँ कि दो मास में भली-चंगी होकर लौट आवोगी।''

इस समय मंगल टाँगा लेकर आ गया। उसने माँ को उठाकर टाँगे में बैठा दिया और ऊपर सोहनी को लेने आया। उसको आया देखकर सोहनी ने एक बार पुन: याचना के भाव में अपने पति की ओर देखा। शंकर ने उसके कपड़ों की गठरी मंगल के हाथ में पकड़ाते हुए कहा, ''तुम्हारी बहिन भी कुछ दिन के लिए माँ के साथ गाँव जाना चाहती है।''

''चलो सोहनी!'' मंगल ने बहिन की ओर देखकर कहा।

''भैया! इसी तरह बिना कुछ भी लिये यहाँ से चल रही हूँ। चलूँ?''

''बहुत अच्छा कर रही हो बहिन! यहाँ से कुछ भी ले चलने की आवश्यकता नहीं है। वहाँ जैसे हम रहते हैं, वैसे ही तुम्हें शोभा देगा। इन चिथड़ों को भी ले चलने की क्या आवश्यकता है?'' इतना कह उसने वह गठरी भी कमरे के एक ओर फेंक दी। मंगल ने सोहनी को, जो बहुत दुर्बल हो चुकी थी, गोदी में उठा लिया और नीचे टाँगे में ले गया।

मंगल को माँ और बहिन को घर लाते देख सब गाँव के लोग चकित हो गए। जो व्यवहार उसके साथ माँ ने किया था, वह अभी भी लोगों को स्मरण था। उस दिन से मंगल ने माँ से, उस व्यवहार का कभी उल्लेख नहीं किया, जो उससे किया गया था।

गाँव में पुराना मकान खुलवाया गया। उसकी सफ़ाई करवाकर वहाँ मंगल की माँ और बहिन को ठहरा दिया गया। मंगल स्वयं उस कच्चे मकान में रहता था जिसमें पंडित बृजलाल भी रह रहा था।

गाँव में आए मंगल की माँ को कई दिन व्यतीत हो चुके थे। मंगल ने बहिन की सेवा-टहल के लिए गाँव की एक औरत को रख दिया था। वह स्वयं भी हर रोज़ दो-चार बार जाकर उसका समाचार पूछ आता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आज मंगल आया तो माँ ने पूछा, "मंगल! बच्चों को नहीं दिखाओगे क्या?"

"माँ! मैं सोच रहा था कि तुम स्वयं इच्छा प्रकट करो तो लाऊँ। मोहिनी की भी कई बार इच्छा हुई थी कि आकर तुम्हारे चरण-स्पर्श करे, परंतु डरती रही कि उसे देखकर तुम्हें दुःख न हो।"

"ठीक है बेटा! उसका डरना ठीक ही है। मैंने जो व्यवहार उससे किया था उसका ऐसा विचार होना स्वाभाविक है। ठीक है, पहले मुझे ही उससे मिलने को जाना चाहिए था।"

"यह बात नहीं माँ! तुम स्वीकृति दो तो वह आ जाय और दोनों की सेवा-सुश्रूषा करे।"

माँ चुप रही। बहिन की चिकित्सा जो ससुराल में हो रही थी, बंद कर दी गई। मंगल का विचार था कि जलवायु-परिवर्तन पर कुछ दिन औषध बंद कर चाहिए। आज उसने बहिन को कहा, "सोहनी, अब तुम्हारी चिकित्सा भी होनी चाहिए।"

"भैया, आवश्यकता नहीं पड़ेगी। मैं इन पाँच-छः दिनों में ही अपने में परिवर्तन देख रही हूँ। मुझे भूख लगने लगी है और खाया-पिया हज़म होने लगा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माया पर आधिपत्य

१

जगदीशचंद्र, हिप्नॉटिस्ट, बंबई से रुपया कमाकर रामू को साथ लिये हुए अपने गाँव में जा पहुँचा। वह काश्मीर राज्य के जम्मू-विभाग में ऊधमपुर का रहनेवाला था। रुपया तो उसके पास पर्याप्त था ही, वहाँ पहुँच एक नया मकान बनवाने का यत्न करने लगा। वहाँ उसका एक अपना मकान पहले भी था जिसमें उसके माता-पिता और बहन-भाई रहते थे। वे सब जगदीशचंद्र के आचार-व्यवहार से संतुष्ट नहीं थे। कोई कामकाज न करने से प्रायः उससे लड़ते-झगड़ते रहते थे। उनसे तंग आकर जगदीश ऊधमपुर से किश्तवार और वहाँ से भारत की सीमा लाँघकर तिब्बत में चला गया था। पंद्रह वर्ष तक बाहर रहकर जब वह घर लौटा तो उसके भाई-बंधुओं को और भी अधिक रोष हुआ, क्योंकि वे उसके पीछे भूमि पर अपना अधिकार मानने लगे थे। अब वे समझते थे कि उन्हें उसकी भूमि लौटानी पड़ेगी। जगदीश उन्हें कहता था कि उसे भूमि नहीं चाहिए, परंतु वे उस पर विश्वास ही नहीं करते थे। उनका विचार था कि जगदीश-सा आवारा लड़का पिता के देहांत के पश्चात् उन्हें कष्ट देगा।

उनके मन की भावना देखकर जगदीश रुपया कमाने को बंबई चला गया। वहाँ उसको रामू मिल गया। बंबई में डेढ़ लाख रुपया कमाकर जब वह घर लौटा तो उसके माता-पिता और भाई-बंधु और भी रुष्ट हुए, इसलिए कि निखट्टू के खिलाने-पिलाने का भार कैसे उठा सकेंगे। उसी दिन उसके पिता ने उसको एकांत में बुलाकर कहा, ''जगदीश, यह कौन है ? तुम दोनों के खर्च का बोझ हम कैसे उठा सकेंगे ?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पिता जी! यह अपना खर्च आप ही करेगा।"

"पर, यह आया किसलिए है?"

"मुझसे मेरी विद्या सीखने के लिए।"

पिता की हँसी निकल गई। उसने कहा, "कौन-सी विद्या आती है तुम्हें?"

"जो आती है आपके सामने आ जाएगी।"

"कुछ भी हो, इसे खाने-पीने को हम एक दाना भी नहीं देंगे।"

"जो कुछ यह लेगा या मैं लूँगा, उसका आपको मूल्य मिलेगा।"

गाँव से बाहर ढलवान पर एक चश्मे के समीप पाँच सौ रुपए से भूमि मोल लेकर मकान बनवाने का प्रबंध होने लगा। इस आयोजन को और उसके खाने-पीने के स्तर को देखकर उसके माता-पिता को कुछ ढाढस हुई। अब उनका यह विचार हो गया कि रामू किसी धनी का बेटा है और जगदीश ने उस पर फंदा डाल रखा है।

मकान तैयार करने में छः मास लग गए। जगदीशचंद्र ने इस अंतर में रामू को ध्यान एकाग्र करने का अभ्यास कराना आरंभ कर दिया। दोनों प्रातःकाल उठकर गाँव से दूर जंगल में चले जाते थे और अपनी इंद्रियों को वश में कर उनकी पूर्ण शक्ति को किसी एक वस्तु पर केंद्रित करने का यत्न करते थे।

रामू जैसे चंचल स्वभाव के लड़के के लिए यह एक कठिन बात थी। इस पर भी उसने उद्देश्य नहीं छोड़ा। अनेकानेक प्रकार के चित्र बनाकर पेड़ों से टाँगकर उनमें ध्यान लगाने का यत्न होता था। साथ ही जगदीशचंद्र ने उसको एक मंत्र जपने के लिए भी दिया।

जब तक मकान तैयार हुआ, तब तक रामू में एकाग्रचित्तता उत्पन्न होने लगी थी। इसका परिणाम यह हो रहा था कि उसकी स्मरण-शक्ति तीव्र से तीव्रतर हो रही थी। उसकी बुद्धि भी तीक्ष्ण हो रही थी। जगदीशचंद्र ने तिब्बत में रहते हुए संस्कृत पढ़ी थी। रामू भी उससे संस्कृत पढ़ रहा था। जगदीश ने तिब्बत से लौटकर चार वर्ष अंग्रेज़ी का अभ्यास किया था। रामू भी अंग्रेज़ी सीख रहा था। जगदीशचंद्र ने संगीत का अभ्यास किया था। रामू को भी इसमें रुचि होने लगी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामू की बुद्धि का विकास हो रहा था, ऐसा विकास जो आयु के कारण नहीं, प्रत्युत योग और साधना के कारण होता है। उससे बात करनेवाला अभी मुख से कुछ कहने भी न पाता था कि रामू उसकी बात को जान जाता था और उसका उत्तर मन में विचार लेता था।

जगदीशचंद्र ने उसे बताया कि संयम से शक्ति बढ़ती है। अंत में यह शक्ति इतनी बढ़ जाती है कि संसार में कोई भी व्यवित ऐसा नहीं रहता जो उस शक्ति के अधीन लाया न जा सके। जो कोई व्यक्ति उस शक्ति के प्रभाव में आ जाता है वह वैसा ही सोचने लगता है जैसा संयमी पुरुष सोचता है। उससे जो वह चाहे करवा सकता है, अथवा वैसा ही सोचने और समझने पर विवश किया जा सकता है।

रामू के पूछने पर जगदीश ने उसे संयम के अर्थ भी समझाए। उसने बताया, इंद्रियों पर अधिकार पा लेने को संयम कहते हैं। अधिकार का यह अर्थ नहीं कि उनका प्रयोग ही न किया जाय। अधिकार का अर्थ है उन्हें अपनी इच्छानुसार काम करने को विवश किया जाय।

रामू और जगदीश नए मकान में गए तो उन्हें मन के एकाग्र करने के लिए अधिक समय और सुविधा मिलने लगी। उसके भाई-बंधु समझते थे कि मकान रामू का है। इससे रामू का मान जगदीश से भी अधिक बढ़ने लगा। जगदीशचंद्र की मनोवृत्ति ऐसी बन गई थी कि वह इस प्रकार की बातों से ऊपर हो गया था।

समय व्यतीत होने लगा। रामू को योगाभ्यास में अधिक और अधिक प्रवेश प्राप्त होने लगा। जगदीशचंद्र को भी उसकी उन्नति से संतोष होने लगा। एक दिन रामू अपना अभ्यास करके हटा ही था कि जगदीशचंद्र ने उसको बुलाकर कहा, "रामू, कितनी आयु है तुम्हारी?"

"गुरुदेव! जहाँ तक मैं जानता हूँ, मैं बाईस वर्ष का हूँ।"

"मेरे पिता जी, कई दिनों से एक बात मुझसे कह रहे हैं। वह बात मैं तुमसे कहना नहीं चाहता था। मुझे भय था कि तुम उसे मेरा आदेश न मान लो। वे चाहते हैं कि मेरी सबसे छोटी बहिन मीना से तुम्हारा विवाह कर दिया जाय। मैं अभी तक इसे टालता आता था, परंतु आज उन्होंने मुझे यह कहने को विवश कर दिया है। इस कारण मैंने कहना ही उचित समझा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"गुरुदेव! मेरी साधना अभी पूरी नहीं हुई।"

"ठीक है। इस पर भी मैं तुम पर ज़ोर नहीं डालूँगा। यदि तुम चाहो तो एक-दो दिन में विवाह का प्रबंध हो सकता है।"

"यदि आज्ञा हो तो मैं अपनी साधना भी छोड़ सकता हूँ। वास्तव में यह आपकी ही देन है। यदि आप आदेश देंगे तो मैं उसे अस्वीकार नहीं करूँगा।"

"अपने मन की प्रेरणा का अनुसरण करो। जहाँ तक साधना का संबंध है वह तो ऐसे स्तर पर पहुँच गई है कि अब वह तुमसे छीनी नहीं जा सकती।"

"पर गुरुदेव! धृष्टता के लिए क्षमा चाहता हूँ। आपने अभी तक विवाह क्यों नहीं किया?"

जगदीशचंद्र मुस्कराकर रामू का मुख देखता रहा। रामू के पुनः आग्रह करने पर उसने बताया, "मुझे मेरी संगिनी अभी नहीं मिली।"

"आपसे किसी ने विवाह का आग्रह नहीं किया कभी?"

"यह बात नहीं! मैं अपनी योग-साधना से अपने पूर्व-जन्म की संगिनी को जान गया हूँ। वह अति सुंदर और मेरे हृदय की अधिनायिका है। वह इस समय इस संसार में है। परंतु अभी आयु में छोटी है। ज्यूँ ही वह विवाह योग्य होगी मैं उसका वरण करूँगा।"

"वह कहाँ है?"

२

"सियालकोट से दो मील के अंतर पर एक बड़ा गाँव है। वह इस समय वहाँ पल रही है।"

"बड़ा गाँव! वह तो मेरा जन्म-स्थान है। वह किसकी लड़की है?"

"इस जन्म से दो जन्म पूर्व, मैं नेपाल के एक गाँव में रहता था। मेरा उससे विवाह हुआ था। उसका नाम भामिनी था। हमारा परस्पर बहुत प्रेम था। जहाँ तक मैं जान सकता हूँ उससे पूर्व-जन्मों में भी मेरा उससे ही विवाह हुआ था।....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हमारे विवाह के पाँच मास पश्चात्, मुझे साँप ने काट खाया। मेरा देहांत हो गया। उस समय भामिनी के पेट में बच्चा था। उसने उसके पालन के लिए अपने को जीवित रखा। लड़का बीस वर्ष का हुआ और उसका विवाह हुआ, और भामिनी अपने पौत्र के दर्शन और फिर पालन के लिए जीती रही। वह पचपन वर्ष की होकर मरी। इस बीच, मेरा एक और जन्म हुआ। मेरा विवाह भी हुआ। परंतु इस पत्नी से प्रेम नहीं हो सका। हम आयु-भर लड़ते-झगड़ते ही रहे। पाँच वर्ष के कलह के पश्चात् मैंने आत्महत्या कर ली। गंगा जी में शरीर विसर्जन कर दिया। इसी अंतर में भामिनी का भी एक जन्म हुआ था, परंतु उसे पंद्रह वर्ष की आयु में ही ज्वर हो गया और उसका देहांत हो गया था। अब, एक मंगल चौधरी के घर उसका पुनः जन्म हुआ है। इस समय उसकी आयु नौ वर्ष की है। छः वर्ष और प्रतीक्षा कर मैं उसे बुला लूँगा।"

"मंगल चौधरी, बड़ा गाँव, सियालकोट से दो मील के अंतर पर···गुरुदेव! मंगल मेरा भाई है। यह लड़की मेरी भतीजी होगी। पर तब तक आप प्रतीक्षा करेंगे?"

"यद्यपि मेरी आयु तब तक सैंतालीस वर्ष की हो जाएगी, तो भी मैं अपनी सिद्धि से इस आयु के अंतर को मिटा सकता हूँ।···मैं कभी-कभी उसका चिंतन करता हूँ तो मुझे वही भामिनी, देहात में एक पक्के विशाल मकान में खेलती-कूदती, पढ़ती और घर का काम करती दिखाई देती है। एक सीमेंट का बना बड़ा विशाल मकान है। उस मकान के दक्षिण में एक आम की बगिया है। बगिया में एक कुआँ है। इस कुएँ में पंप लगा है। मकान में बिजली का प्रबंध है और प्रत्येक प्रकार की सुविधा है।"

"यह मंगल भैया का मकान है क्या?"

"हाँ! उसने विदेश जाकर बहुत धन-उपार्जन किया है और इस समय भी वह मेहनत और ईमानदारी से अपना जीवन निर्वाह कर रहा है।"

रामू को उस समय की बात याद आई जब उसने झूठ बोलकर माँ को उसके विरुद्ध किया था। आज के वार्तालाप से उसको अपनी माँ की याद आ गई और उसके मन में उससे मिलने की इच्छा बलवत हो गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने कहा, "गुरुदेव! मेरी इच्छा अपनी माँ से मिलने की है।"

"अभी तुम्हारी सिद्धि उस सीमा तक नहीं पहुँची कि तुम अपने मन पर काबू पा सको। यही कारण है कि तुम्हारा मन तुम्हें माँ से मिलने की प्रेरणा कर रहा है।"

"यह बात नहीं गुरुदेव! मैं वहाँ जाने की इच्छा को बदल सकता हूँ।"

जगदीशचंद्र ने मुस्कराकर कहा, "यह कोई लज्जा की बात नहीं। मुझे भी अभी पूर्णता प्राप्त नहीं हुई। मैं भी अभी उस पूर्ण परम-ब्रह्म परमात्मा में अपने अस्तित्व को खो देने में समर्थ नहीं हुआ। ऐसी सिद्धि प्राप्त करनेवाले को योगेश्वर कहते हैं। तब सब एकरस, एकरूप प्रतीत होने लगता है।"

"मेरी शिक्षा, अभ्यास और तपस्या के दस वर्ष व्यतीत होनेवाले हैं। इस काल में मैंने बहुत-कुछ पाया है। परंतु मैं उस अवस्था को प्राप्त नहीं हुआ, जिसे आप पा चुके हैं।"

"यह तो शायद कभी नहीं होगा क्योंकि मैं भी इससे आगे और आगे जाने का यत्न कर रहा हूँ। यदि मैं यत्नशील रहा तो मुझमें और तुम्हारे में अंतर रहेगा ही। इस पर भी तुममें वह शक्ति उत्पन्न हो गई है, जो मुझमें उस समय थी जब तुम मुझे मिले थे।"

"हाँ, परंतु वह तो अब मुझे बच्चों का खेल दिखाई देता है। वह करतब दिखाने की अब मेरी रुचि नहीं।"

"यही अवस्था मेरी थी। मुझे मेरे भाई-बहिनों ने विवश किया था कि मैं कुछ कमाकर लाऊँ। इस कारण जब मेरे पास बीस वर्ष तक की जीविका का धन जुट गया तो मैंने बंबई छोड़ दी थी। साध्य धन नहीं है, साध्य आत्मोन्नति है।"

"मैं आपके पीछे लगा था मदारी का तमाशा सीखने के लिए। वह तो अब नीरस और साधारण-सी बात प्रतीत होती है। मेरी इच्छा अब आकाश में चंद्र और सूर्यलोक में भ्रमण करने की होती है।"

"यह इच्छा स्वाभाविक ही है, परंतु यदि इसी मार्ग पर चलते गए तो यह भी एक दिन व्यर्थ का प्रयास प्रतीत होने लगेगा। मेरी सम्मति यह है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि तुम संसार में भ्रमण करो और अपने मन और इंद्रियों पर अधिकार रखते हुए ज्ञान-वृद्धि करो।''

''गुरुदेव, आप भी मेरे साथ चलें। सियालकोट चलकर बड़ा गाँव में ठहरेंगे। मेरी भैया से बनेगी या नहीं, कह नहीं सकता, तो भी हम वहाँ जा तो सकते हैं।''

''अभी नहीं। मैं चाहता हूँ कि भामिनी कुछ और बड़ी हो जाय तो ठीक रहेगा।''

''लौटते हुए आवेंगे तो पुनः वहाँ ठहरेंगे। तब आपका उससे विवाह हो सकेगा।''

''मीना के विवाह के विषय में क्या कहते हो?''

''अभी मेरी इच्छा नहीं है।''

जगदीशचंद्र हँस पड़ा।

३

मंगल चौधरी का कार्य वैसे ही चल रहा था। धन-धान्य से संपन्न होने पर भी वह अब भी हल जोतने, सिंचाई करने और खेत निराने को स्वयं जाता था। अभ्यास से वह जान गया था कि कौन मनुष्य किस काम के योग्य है और कितने काल में कौन काम समाप्त होगा।

ऋतुओं में अव्यवस्था होती रहती थी, परंतु मेहनत और शक्ति से काम एकसार चलता जाता था। प्रतिवर्ष फसल में लाभ होता था। मंगल ने अपने घर का प्रबंध ऐसा कर रखा था कि सब आवश्यकताएँ वहीं से पूर्ण हो जाती थीं, जिससे उनपर कुछ भी व्यय नहीं होता था। यदि कुछ व्यय हो रहा था तो बच्चों की शिक्षा पर।

मंगल के चार बच्चे थे। सबसे बड़े लड़के का नाम कुलदीप था। वह चौदह वर्ष का हो गया था। इस समय नगर में पढ़ने जाता था और दसवीं श्रेणी में पढ़ता था। उससे छोटा था कृष्णचंद्र। वह ग्यारह वर्ष का था। वह आठवीं श्रेणी में था। इससे छोटी लड़की थी मानिनी। आयु थी नौ वर्ष की। इसका जन्म नैरोबी में हुआ था। वह पढ़ने नहीं जाती थी। दीप से ही घर में कुछ पढ़ लेती थी। इस लड़की से छोटा एक और लड़का था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम था प्रेमचंद। उसकी आयु छः वर्ष की थी और वह दूसरी श्रेणी में पढ़ता था।

इन तीनों स्कूल जानेवाले बच्चों का खर्च बीस रुपया मासिक पड़ जाता था। इस खर्च के अतिरिक्त मंगल के घर की सब आवश्यकताएँ घर पर ही पूरी हो जाती थीं।

मकान में उसने बिजली लगवाई हुई थी। बिजली पैदा करने की मशीन, मिट्टी के तेलवाली, मकान के पिछवाड़े लगवाई गई थी। घर में नल लगा था, परंतु पानी पंप के द्वारा मकान की छत पर की टंकी में भर लिया जाता था। घर में सब सामान था। सफाई और सुरक्षा मोहिनी स्वयं करती थी, और गाँव की दो स्त्रियाँ उसकी सहायता करती थीं।

मंगल की माँ और बहिन दोनों गाँव में ही थीं। सोहनी के पति ने दूसरा विवाह कर लिया था। इनके जो आभूषण आदि नत्थूमल्ल के पास थे वे सब उसीके पास रहे। उनमें से एक भी वापस नहीं मिला। एक-दो बार मंगल माँ के साथ उससे रुपया लेने गया भी था, परंतु नत्थूमल्ल ने पाँव-तले घास नहीं जमने दी।

सोहनी और उसकी माँ अब अनुभव करती थीं कि किस प्रकार उनको धोखा देकर मूर्ख बनाया गया था। मंगल ने उन दोनों को बिना पिछली बात का संकेत भी किए अपने घर में स्थान दिया था और साथ ही खाने-पीने का प्रबंध भी कर दिया था। सोहनी शीघ्र ही स्वस्थ हो गई थी, और उसमें कुछ ताकत भी आ गई थी। उसने एक बार अपने पति को वहाँ बुलवाया था, परंतु वह नहीं आया। पीछे उसे पता चला कि उसने दूसरा विवाह कर लिया है।

इस प्रकार नत्थूमल्ल के परिवार से संबंध-विच्छेद हो गया। माँ ने अब लज्जित होकर मंगल को अपने बाप के खेतों को जोतने को कहा। इसका परिणाम यह हुआ कि जहाँ उसकी माँ और बहिन का जीवन सुख से कटने लगा वहाँ मंगल की खेती-बाड़ी का काम भी फलने-फूलने लगा।

सोहनी और उसकी माँ पुराने मकान में ही रहती थीं और मंगल अपने बच्चों के साथ नए मकान में। इस पर भी मोहिनी निरंतर सास के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पास आती-जाती रहती थी। कुछ काल तक उसकी सास और ननद उससे झेंपती रहीं, परंतु धीरे-धीरे मोहिनी के सौजन्य ने उनकी झेंप को मिटा दिया।

आज वह अपनी लड़की मानिनी को साथ ले वहाँ गई हुई थी। सोहनी ने पूछा, "भाभी! भोजन करके आई हो या नहीं?"

"नहीं, अभी इसके पिता जी नगर से लौटे नहीं। जब आएँगे तब खाऊँगी।"

"कब तक लौटेंगे भैया?"

"दोपहर के बाद ही लौटने की बात है।"

"तब तक भूखी ही रहोगी क्या?" सोहनी ने अचंभे में पूछा।

"नहीं, प्रातः कलेवा कर लिया था। आज कुछ देर हो गई तो इससे कुछ कष्ट थोड़े ही होगा!"

"अच्छा, थोड़ी लस्सी ही पी लो।" सोहिनी लस्सी का भरा हुआ गिलास और उस पर एक बड़ा-सा गुफ्फा मक्खन का रखकर ले आई।

मोहिनी ने उसे मानिनी को पीने को दे दिया। सोहनी और लेने गई ही थी कि बाहर से मंगल की आवाज़ आ गई, "माँ, देखो कौन आया है?"

मोहिनी ड्योढ़ी में गई और अपने पति के साथ एक बाईस-तेईस वर्ष के युवक को देख सकुचाकर पीछे हट गई। मंगल की हँसी निकल आई। मोहिनी इसका अर्थ समझ ही रही थी कि रामू ने झुककर चरण-स्पर्श कर कहा, "भाभी! पाँव लागूँ। मुझे पहचाना नहीं?"

मोहिनी पहचान गई। उसने कहा, "रामू भैया, आ गए क्या? इतने बड़े हो गए हो, इसलिए पहचाना नहीं। आओ, माँ तुम्हारी प्रतीक्षा करती-करती बूढ़ी हो गई है।"

रामू मोहिनी के साथ भीतर चला गया। मंगल के साथ एक और आदमी था, अच्छे गठे हुए शरीर, ओजस्वी मस्तक और सुन्दर आकृतिवाला। रामू जब भीतर चला गया तो मंगल ने कहा, "ये रामू के गुरु हैं। उसके साथ ही आए हैं। भीतर चलो!⋯ये दो-तीन दिन यहीं रहेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहिनी इस अति प्रभावशाली व्यक्ति को देख स्तब्ध हो गई थी, पर मंगल के कहने पर कि ये यहीं रहेंगे, सचेत हो भीतर चली गई। मंगल जगदीशचन्द्र को लेकर भीतर चला आया।

मंगल ने देखा कि रामू माँ के पाँव दबाकर क्षमा-याचना कर रहा है और माँ आँखों से आँसू बहा रही है। सोहनी हाथ में लस्सी का गिलास लिये खड़ी है। मानिनी धीरे-धीरे लस्सी में से मक्खन निकालकर खा रही है।

एक अपरिचित आदमी को मंगल के साथ मकान में आते देख माँ ने अपने आँसू पोंछते हुए कहा, "अब बस करो बेटा! बहुत अच्छा किया है कि आ गए हो।"

४

रामू और जगदीशचन्द्र उस कमरे में जिसमें कभी मंगल रहता था, ठहरा दिए गए। रामू ने माँ से कहा था कि वह गुरु जी के साथ कुछ काल के लिए भ्रमण को जा रहा है। माँ की इच्छा नहीं थी कि वह फिर उससे बिछुड़े, परन्तु जगदीश के प्रभाव में वह स्वयं भी अपने को विवश पाती थी।

आने के अगले दिन ही जगदीशचन्द्र ने कहा, "माँ जी, रामू को मेरे साथ जाना ही होगा।"

इस पर माँ चुप थी। बहिन ने इतना कहा, "गुरुदेव! माँ पुत्र को इस योग्य देखना चाहती है कि वह जीविकोपार्जन कर सके। अपने माता-पिता को सुखी रख सके और विवाह कर वंश-वृद्धि कर सके।"

"क्या मंगल यह सब-कुछ नहीं कर रहा?"

सोहनी इस प्रश्न से लज्जित हो चुप कर गई। उसको मंगल के विरुद्ध कहने को कुछ नहीं था। उसको चुप देखकर जगदीशचन्द्र ने कहा, "रामू जिस कार्य में लगा है, उससे उसका और परिवार का, दोनों का कल्याण सिद्ध होने को है।"

रामू को जब लाला नत्थूमल्ल की बेईमानी का ज्ञान हुआ तो उसकी इच्छा उससे माँ की सम्पत्ति लौटाने की हो गई। उसने अपना विचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जगदीशचन्द्र से भी कहा। जगदीशचन्द्र ने कहा, "ठीक है, उस आदमी को शिक्षा देनी ही चाहिए।"

रामू उसी दिन सायंकाल शंकर और लाला नत्थूमल्ल से मिलने गया। दुकान बन्द हो चुकी थी। बाप-बेटा दोनों घर पर ही थे। जब रामू ने मकान का दरवाजा खटखटाया तो खिड़की में से शंकर की माँ ने झाँककर देखा। वह रामू को पहचान नहीं सकी। इस कारण उसने पूछा, "क्या है?"

"शंकर भैया से मिलना है।"

"क्या नाम है तुम्हारा?"

"रामू।"

शंकर की माँ ने पहचान लिया और कहा, "यहाँ तुम्हारी बहिन नहीं है।"

"मुझे बहिन से नहीं, शंकर से मिलना ह।"

"वह तुमसे नहीं मिलना चाहता।"

"नीचे आकर दरवाजा खोल दो, नहीं तो ठीक नहीं होगा।"

"चले जाओ, नहीं तो पुलिस को बुलवाना पड़ेगा।"

"उसे तो मैं साथ ही लेकर आया हूँ। वह देखो!" रामू ने उँगली से गली के मोड़ की ओर संकेत किया। शंकर की माँ को ऐसा प्रतीत हुआ कि दस-बारह सिपाही पुलिस की वर्दी पहने वहाँ खड़े हैं। वह भयभीत हो पीछे हट गई। उसने शंकर को और उसके पिता को जब बताया तो शंकर काँपता हुआ मकान के नीचे आ गया और दरवाज़ा खोल पूछने लगा, "बताओ, क्या काम है?"

"तुमसे और तुम्हारे पिता जी से कुछ पूछने आया हूँ।"

"क्या?"

"यहीं गली में सुनोगे क्या? लोग एकत्रित हो रहे हैं, क्या उनके सामने ही सुना दूँ?"

शंकर ने पंजों के बल खड़े होकर गली के कोने की ओर देखा। वहाँ पुलिसवाले खड़े थे। इससे भयभीत हो उसने रामू को भीतर आने के लिए कहा। रामू भीतर जा पहुँचा। उसे बैठक में बिठाया गया। रामू ने
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कहा, "लाला जी को भी बुला लीजिए।"

शंकर ने रामू को वहीं छोड़कर पहले मकान का दरवाज़ा भीतर से बन्द कर लिया। उसको ताला लगाकर वह लाला जी के कमरे में गया। उसकी माँ ने रामू के आने की सूचना पहले ही दे दी थी, और लाला नत्थूमल्ल चिंता में शंकर के समाचार लाने की प्रतीक्षा कर रहा था।

शंकर ने पहुँचकर पूर्ण परिस्थिति का वर्णन कर दिया और यह कहा, "मैं ड्योढ़ी को ताला लगा आया हूँ, जिससे कोई भीतर न आ सके। अब आप निर्भय होकर उससे बातचीत कर लें। वे अभी गली के परले कोने पर हैं।"

"देखो! इससे पहले कि मैं रामू से बातचीत करूँ, तुम उनसे मिलकर पता करो कि वे क्यों आए हैं और क्या चाहते हैं?"

यह योजना शंकर को पसन्द आई। लाला नत्थूमल्ल रामू से बातचीत करने के लिए बैठक में आ गया और शंकर किवाड़ खोल पुलिसवालों से बातचीत करने घर से बाहर चला गया।

नत्थूमल्ल को आया देखकर रामू ने उठकर हाथ जोड़ प्रणाम किया और कहा, "लाला जी, आपका स्वास्थ्य कुछ ठीक प्रतीत नहीं होता।"

"तुम तो अच्छे-खासे युवक हो गए हो। सुनाओ, कहाँ रहे इतने दिन?"

"मैं काश्मीर चला गया था। वहाँ एक गुरु जी मिल गए थे। उनकी सेवा में दस वर्ष रहा हूँ। अब उन्होंने घर आने की आज्ञा दी है।"

"सुनाओ, तुम्हारा विवाह कब तक होगा?"

"अब आपके आश्रय में आया हूँ। आप कृपा करेंगे तो सब-कुछ हो जाएगा।"

"तुम हमारे लड़के के समान हो। यदि तुम अपनी भूमि की सुध लो तो मैं विवाह का प्रबन्ध तुरन्त करवा दूँगा।"

लाला नत्थूमल्ल व्यर्थ की बातों में लगा रामू को रोके रखना चाहता था। वह शंकर द्वारा पुलिसवालों से सूचना लाने की प्रतीक्षा कर रहा था। रामू ने भी लाला जी को अपना आने का प्रयोजन बताने से पूर्व ऐसा प्रकट किया कि मानो वह उनके प्रति न तो कोई सन्देह रखता है और न द्वेष।
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इससे उसने कहा, ''लाला जी! मेरे विवाह का प्रबन्ध हो गया है। आप जानते हैं कि जब नई वधू घर आएगी तो उसके लिए भूषण चाहिएँ। इसमें आपकी सहायता लेने आया हूँ।''

''हाँ! हाँ! मैं तुम लोगों की प्रत्येक प्रकार से सहायता करने के लिए तैयार हूँ। बताओ, क्या चाहते हो तुम?''

''माँ ने कुछ भूषण आपके पास रखे हुए हैं। उनमें से केवल पाँच भूषण हल्के-हल्के मुझे दे दीजिए।''

रामू की माँग सुनकर लाला नत्थूमल्ल की जान में जान आई। उसने समझा, यह तो कोई बड़ी माँग नहीं। यदि इतनी-सी बात से पुलिस टल सकती है तो वह टाल देगा। इस पर भी उसने रामू से कहा, ''तुम्हारी माँ ने अपने सब भूषण गिरवी रख छोड़े हैं। परन्तु तुम तो मेरे बेटे के समान हो। मैं इतना-कुछ तुम्हारे लिए हो कर सकता हूँ। इतनी आशा तुमसे अवश्य करता हूँ कि भूषण का मूल्य तुम अपनी सुविधा पर अदा कर देना। एक कागज़ पर यह सही कर देना और ले जाना।''

इसी समय शंकर प्रसन्नवदन बैठक में आ गया। उसने आते ही कहा, ''पिता जी, पुलिस वहाँ नहीं है। सब चुपचाप चले गए मालूम होते हैं।''

इस सूचना से लाला की आँखें बदल गईं। उसने संकेत से कहा, ''दरवाज़े पर ताला लगा दिया है न?''

''हाँ, पिता जी!''

''रामू भैया! तुम्हारी माँ ने दस सहस्त्र रुपया हमसे भूषणों के बदले उधार लिया है, उसका भी तो कुछ विचार करना है।''

''माँ ने कुछ लिखकर दिया है?''

''नहीं, समधिन से लिखा-पढ़ी करना अच्छा प्रतीत नहीं हुआ। परन्तु अब तुम आ गए हो तो तुम ही लिख दो न!''

रामू ने कहा, ''रुपया माँ ने लिया और हस्ताक्षर मैं क्यों करूँगा? मेरा तो इतना कहना है कि पाँच हल्के-हल्के भूषण मुझे चाहिएँ। यदि आप नहीं देंगे तो मुझको पुलिस बुलानी पड़ेगी।''

''जाओ, बुला लो!''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह देखो!" रामू ने दरवाजे की ओर संकेत किया। एक सार्जेन्ट और दो कान्स्टेबल हाथ में हथकड़ियाँ लिये हुए बैठक में प्रवेश करते दिखाई दिए। लाला जी का मस्तिष्क चक्कर खाने लगा।

"इनको तुमने क्यों बुलाया है?" लाला जी ने भयभीत होकर कहा।

"मुझे भूषण चाहिएँ, मेरी माँ के रखे भूषणों में से। लाला जी, शीघ्र कीजिए।"

शंकर भागा हुआ दरवाज़ा देखने गया। वहाँ जाकर उसने ताला लगा हुआ देखा तो वह अपने सिर को दोनों हाथों में पकड़ वहीं बैठ गया।

भीतर लाला नत्थूमल्ल ने रामू से कहा, "इनको लौटा दो तो मैं तुम्हें जो चाहो दूँगा।"

रामू ने मुस्कराकर कहा, "दारोगा साहब! आप ज़रा बाहर ठहरिए।"

सार्जेन्ट और कान्स्टेबल हथकड़ियाँ छनछनाते हुए बैठक से बाहर निकल गए। रामू ने फिर कहा, "लाला जी! मैं आपको पिता-तुल्य समझता हूँ। आप यह काम अब जल्दी कर दीजिए, मुझे शीघ्र ही गाँव जाना है।"

विवश लाला नत्थूमल्ल उठा और बैठक के बाहर चला गया। बाहर आ उसने देखा कि ड्योढ़ी के दरवाज़े को अभी भी ताला लगा हुआ है और उसके आश्रय पर शंकर अपने सिर को हाथों में पकड़े बैठा हुआ है। लाला जी ने देखा कि पुलिस आदि वहाँ कोई नहीं है। उसने ठोकर मारकर शंकर को सचेत किया और कहा, "यहाँ बैठे क्या कर रहे हो?"

"मैं सोच रहा था, पिता जी! कि वे किधर से आए हैं?"

"और अब किधर से गए हैं?"

"तो वे चले गए हैं?"

"हाँ, बैठक से बाहर चले आए थे।"

शंकर उठकर विस्मय में अपने पिता का मुख देखने लगा। लाला ने कहा, "तुम भीतर उसके पास चलकर बैठो, मैं आता हूँ।"

शंकर बैठक में चला गया और लाला नत्थूमल्ल तहखाने की ताली खोल नीचे उतर गया। शंकर ने बैठक में जाकर रामू से पूछा, "वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुलिसवाले चले गए भैया ?''

''नहीं तो! वह देखो!'' रामू ने संकेत कर बैठक के दरवाज़े की ओर दिखाया। शंकर ने सार्जेन्ट और कान्स्टेबल को देखा। वह उनको देखकर फिर आँखें मूँदकर बैठ गया। रामू ने उसके कन्धे पर हाथ रखकर कहा, ''भैया, अपनी नई बीवी को नहीं दिखाओगे ? मेरी तो वह बहिन ही लगती है।''

शंकर के मुख से आवाज़ नहीं निकल रही थी। रामू ने उसकी अवस्था की ओर ध्यान दिए बिना कहा, ''मैं बुलाऊँ उसको ? रामू उठकर सेहन में जाने लगा तो शंकर ने उसके हाथ को पकड़कर कहा, ''वह तुमसे मिलना नहीं चाहती।''

''कैसे कहते हो यह ? वह देखो! वह तो स्वयं मुझे देखने चली आई है।''

''शंकर ने घूरकर देखा तो कोई औरत बैठक के किवाड़ के पीछे छुपी खड़ी दिखाई दी। शंकर ने आवाज़ देकर कहा, ''यहाँ क्या कर रही हो ? भाग जाओ ऊपर!''

रामू हँस पड़ा। इस समय शंकर का पिता हाथ में एक संदूकची उठाए बैठक में आ गया। उसके मुख का रंग उड़ चुका था, और उसका पूर्ण शरीर काँप रहा था। माथे पर पसीने की बूँदें टपक रही थीं। रामू मुस्करा रहा था। शंकर उठकर दरवाज़े के बाहर अपनी स्त्री को डाँटने चला गया। नत्थूमल्ल ने संदूकची रामू के सामने रख दी और स्वयं दूर हटकर बैठ गया। अपने माथे पर से पसीना पोंछते हुए उसने कहा, ''यह संदूकची तुम्हारी माँ की है। इसमें सब भूषण रखे हैं। जितनों की आवश्यकता है इसमें से निकाल लो।''

रामू ने कहा, ''आप स्वयं ही निकाल दें। मुझको पाँच भूषण चाहिएँ। हाथों के कंगन, नाक की नथनी, गले की कंठी, सिर के फूल और चौक और कानों की बालियाँ।''

नत्थूमल्ल ने दूर बैठे-बैठे ही चाबी रामू के सामने फेंकते हुए कहा, ''यह लो! जो चाहिए निकाल लो।''

रामू ने चाबी से संदूकची खोली और [illegible] देखा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय शंकर यह देखकर कि उसकी स्त्री ऊपर चली गई है, बैठक में आकर रामू के पीछे खड़ा हो, रामू को भूषण निकालते देखने लगा। जब रामू ने संदूकची का ढकना उठाया तो शंकर चीख मारकर पीछे हट गया। नत्थूमल्ल भी उठकर भागने के लिए तैयार खड़ा हो गया। रामू ने तुरन्त ढकना बन्द कर दिया और संदूकची को ताला लगा दिया। इससे बाप-बेटे दोनों को सन्तोष हुआ। जब वे दोनों बैठ गए तो रामू ने कहा, "लाला जी! क्या यही कुछ है जो माँ ने आपके पास रखा था?"

"हाँ, यही कुछ है। तुम ले-जाना चाहते हो तो सब ले जाओ।"

"जब माँ ने संदूकची दी थी तो आपने भूषण काँटे में तोले थे न? अब उन्हें वैसे ही तोलकर मुझे दे दीजिए।"

"नहीं-नहीं! तुम ये सब-कुछ ले जाओ। हम इसमें से कुछ नहीं रखेंगे। रामू भैया! इस संदूकची को शीघ्र यहाँ से ले जाओ।"

रामू संदूकची को बगल में दबाए हुए उठ खड़ा हुआ। नत्थूमल्ल और शंकर दूर हटकर खड़े हो गए। जब रामू जाने लगा तो शंकर भागकर गया और ड्योढ़ी का दरवाजा खोल दिया। रामू बाहर निकला तो शंकर ने झाँककर देखा। दूर गली के कोने में पुलिसवाले खड़े दिखाई दिए।

५

रामू के चले जाने के पश्चात् शंकर भीतर आया। उसके पिता ने कहा, "गज़ब हो गया बेटा! देखा था न संदूकची में क्या था?"

"हाँ, पिता जी! फनदार साँप थे। उसने भी तो उन्हें देखा होगा! पर आश्चर्य यह है कि वह उनको लेकर चला गया है।"

"यह पुलिस की बात का अर्थ मेरी समझ में नहीं आया। पहले वे गली के कोने पर खड़े थे। परन्तु मैं जब वहाँ गया तो वे वहाँ नहीं थे। वहाँ से लौटकर आया तो मकान के भीतर खड़े थे। मकान को भीतर से ताला लगा था। पीछे वे यहाँ भी नहीं रहे और बिना ताला खुलवाए वे पुनः गली के कोने पर जाकर खड़े हो गए।...."

"उस संदूकची में पन्द्रह-बीस साँप थे, शायद अधिक ही होंगे। रामू ने भी उनको देखा होगा और इसी कारण उसने खोलते ही संदूकची को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन्द कर लिया था। जब उसने उसे खोला था तो मैं उसके पीछे ही खड़ा था। मैंने देखा था कि उसमें फनदार साँपों के गुच्छे-के-गुच्छे थे।''

''मुझे पूरा विश्वास है कि मैंने सोहनी की माँ के भूषण उसमें रखे थे। लोग कहते हैं कि धन की रक्षा के लिए साँप आ जाते हैं, परन्तु वे ताला-लगी संदूकची में कैसे जा पहुँचे?''

''पिता जी! यह सब-कुछ धोखा है।''

''पर मैं क्या अन्धा हो गया हूँ? तुम भी अन्धे हो क्या? जब तहखाने में जाकर मैंने सेफ खोला और उसमें से संदूकची को निकालकर लैम्प के प्रकाश में खोला और भूषण को पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया तो एक साँप फन खोलकर खड़ा हो गया और लगा फुँफकारने! मैंने हाथ एकदम पीछे खींच लिया।''

बेटा चुप कर रहा। परन्तु उसके मन में सन्देह बना ही रहा। उसके हृदय में अपनी पहली स्त्री सोहनी के लिए बहुत प्रेम था, परन्तु अपने पिता के उकसाने पर उसने उससे और उसकी माँ से बुरा व्यवहार करना आरम्भ कर दिया था। इस व्यवहार की सीमा यहाँ तक बढ़ गई थी कि सोहनी की माँ को उनके घर में नौकरानियों की भाँति काम करना पड़ा था। इससे सोहनी के मन पर बहुत गहरी चोट लगी और अपनी माता का अपमान उसके हृदय में ठंडे लोहे की भाँति घुस गया। इसी कारण वह बीमार रहने लगी।

आज इस सत्य का आभास शंकर को हुआ। स्वस्थ हो जाने पर जब वह घर लौटी तो उसे वहाँ अपनी नई सौतन से साक्षात् हुआ। इसके पिता ने उसे बीस हज़ार रुपए दहेज में दिया था। परन्तु वह अति कुरूप थी। इससे रह-रहकर उसे सोहनी की याद आती थी। आज इस साँप और पुलिस की घटना को देख उसे ऐसा प्रतीत होने लगा कि यह उनके बुरे कर्मों का फल है। इसी समय उसे उसके अपने और पिता जी के वे सब पापकर्म स्मरण आने लगे जो उन्होंने सोहनी और उसकी माँ के साथ किए थे।

उसने अपने पिता से कहा, ''पिता जी, यह क्या है? कहीं हमारे कर्मों का फल तो नहीं है?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हमने कोई बुरा कर्म तो किया नहीं। सोहनी की माँ को दस वर्ष तक जो खिलाया-पिलाया है उसका मूल्य ही तो माँग रहे हैं! आखिर, बही में जो कुछ लिखा है वह गलत सिद्ध नहीं हो सकता।"

"पर पिता जी, है तो वह गलत ही! दो पैसे की दही के चार पैसे लिखे जाते थे।"

"यह तो व्यापार की बात है। प्रत्येक व्यापार में हमारी आढ़त आवश्यक है।"

बाप की बात बेटे को जँची नहीं। इसके पश्चात् चिरकाल तक दोनों अपने-अपने मन में विचार करते रहे। आखिर शंकर उठा और मकान की छत पर गया और जाते ही उसने कमरे के बाहर से आवाज दी, "लक्ष्मी!" लक्ष्मी शंकर की दूसरी स्त्री का नाम था। शंकर का न तो सोहनी से कोई बच्चा था और न ही अभी तक लक्ष्मी से। कमरे के भीतर से लक्ष्मी ने उत्तर दिया, "बाहर ही खड़े होकर क्या हल्ला कर रहे हो? भीतर क्यों नहीं आते?"

नियमानुकूल लक्ष्मी पति की दूसरी स्त्री होने के कारण, शंकर को डाँटा करती थी। पर आज की डाँट उसे बहुत अखरी। वह एक धनी बाप की बेटी थी, अतः उसकी डाँटों को सहन करने का उसे अभ्यास हो गया था। वह भीगी बिल्ली की तरह जब कमरे में गया तो लक्ष्मी ने कहा, "क्या है?"

"तुम नीचे क्यों आई थी?"

"तुमने बुलाया जो था!"

"मैंने? नहीं तो! मैंने नहीं बुलाया था।"

"वाह! तुमने आवाज़ दी थी—'लक्ष्मी, नीचे आना, देखो तुम्हारा भाई आया है।'

"मैं गई, और वहाँ एक अपरिचित आदमी को बैठा देख चकित रह गई और पीछे लौट आई।"

"मैंने आवाज़ नहीं दी थी।"

"तो इस साधारण-सी बात पर झूठ बोलने लग गए हो? तुम्हारे साथ निर्वाह होगा कैसे? अभी तो विवाह को दो वर्ष ही व्यतीत हुए हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शंकर इस गोरखधंधे को समझने में अशक्त था। इस पर भी उसने सोहनी के साथ जो अनुचित व्यवहार किया था, उससे दु:खी हो रहा था। वह मन में सोहनी को लौटा लाने का उपाय सोचने लगा। पर लक्ष्मी इससे बहुत बिगड़ जाएगी और जीवन भार हो जाएगा, यह विचार कर वह उसके सामने बैठकर चुप हो गया।

उसे चुप बैठा देखकर लक्ष्मी ने पूछा, "वह था कौन?"

"श्रीमती जी!" शंकर ने चिढ़कर कहा, "मैंने तुम्हें आवाज नहीं दी थी। वह मेरी पहली बीवी का छोटा भाई रामू था। अपनी माँ के भूषण लेने आया था, सो ले गया है। बैठे-बैठे उसने कहा कि वह तुम्हारा भाई है और तुम्हें मिलना चाहता है। इस पर मैंने उसे कहा कि तुम उसे मिलना नहीं चाहती। परन्तु देखता क्या हूँ कि तुम किवाड़ के पीछे खड़ी हो। उसने हँसकर कहा, 'लो, वह तो स्वयं आ गई है।' इस पर मुझे बहुत लज्जा उठानी पड़ी।"

"अपनी माँ से पूछो। तुम्हारी आवाज उसने भी सुनी थी।"

इससे तो शंकर और भी परेशान हुआ। वह इस सब गोरखधंधे का अर्थ समझना चाहता था। वह अपने कमरे से बाहर निकल आया और माँ से जाकर पूछने लगा, "माँ, मैंने लक्ष्मी को नीचे बुलाया था क्या?"

"हाँ बेटा! तुम्हारी आवाज आई थी।"

माँ के इस कथन से वह अति लज्जित हुआ और घर से बाहर निकल गया। बाजार से भाड़े का टाँगा लेकर वह रामू के गाँव की ओर चल पड़ा। मार्ग में उसके मस्तिष्क में अनेकानेक विचार आ रहे थे, जिनसे उसका मस्तिष्क भन्ना रहा था। वह सोच रहा था कि संदूकची में जो साँप थे, उन्हें रामू ने भी देखा था। इस पर भी वह उसे बगल में दबाकर चला गया। पुलिस जो बाहर खड़ी थी, ताला लगा होने पर भी वहाँ कैसे आ सकी? अब इस घटना पर वह और भी विस्मित हो रहा था। मैंने आवाज़ नहीं दी थी, परन्तु माँ और लक्ष्मी दोनों कहती हैं कि उन्होंने आवाज सुनी थी। यह सब क्या है? मार्ग-भर यही कुछ सोच रहा था, परन्तु उसकी समझ में कुछ न आ रहा था। इसी उधेड़-बुन में पड़ा वह बड़ा गाँव में अपनी सास के मकान के दरवाजे पर जा पहुँचा। दरवाजे के बाहर से ही उसने आवाज दी, "रामू भैया!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामू भूषणों की संदूकची माँ के सामने रखकर दिखा रहा था। माँ कह रही थी, ''जहाँ तक मुझको स्मरण है, इसमें वे सब भूषण हैं, कोई भी कम नहीं है।''

सोहनी भी समीप बैठी भूषणों को देख रही थी। जगदीशचन्द्र ड्योढ़ी के समीप एक कमरे में बैठा हुआ किसी विषय पर चिन्तन कर रहा था। जब उसने बाहर किसी को रामू को बुलाते हुए सुना तो वह उठकर बाहर आया। शंकर को घबराया हुआ खड़ा देख वह सभी कुछ समझ गया। रामू ने आते ही उसे सारी बातों से, जो वहाँ हुई थीं, परिचित कर दिया था। जगदीशचन्द्र ने शंकर की ओर देखकर पूछा, ''आपका नाम शंकर तो नहीं ?''

एक अपरिचित आदमी को अपना नाम लेते सुनकर शंकर विस्मय से उसका मुख देखने लगा। जगदीशचन्द्र उसके मन के भावों को समझकर पूछने लगा, ''अपनी स्त्री सोहनी देवी से मिलने आए हो क्या ?''

शंकर इससे और भी चकराया। उसने घबराहट में पूछा, ''आप कौन हैं ? मैंने तो आपको पहले नहीं देखा ?''

''ठीक है, मैं पहली ही बार यहाँ आया हूँ। इस पर भी आपके विषय में कुछ जानता हूँ। बताइए, रामू को बुलाऊँ या सोहनी देवी को ?''

शंकर पर जगदीश के व्यक्तित्व का प्रभाव पड़ रहा था। वह यह स्मरण करने का यत्न कर रहा था कि उसे कहाँ देखा है। वह खड़ा-खड़ा ही अनुभव कर रहा था कि यह आदमी सर्वथा अपरिचित नहीं है। पहचानने में सफल न हो उसने फिर पूछा, ''आप यहाँ कब से हैं ?''

''दो दिन से।''

''आप कहाँ के रहनेवाले हैं ?''

''काश्मीर रियासत का।''

''मैंने आपको पहले कभी देखा है।''

''आप भूल कर रहे हैं। आपने मुझे पहले कभी नहीं देखा।''

''मैं रामू से मिलने आया हूँ।''

''तो आओ! इधर कमरे में आ जाओ।'' जगदीश उसको उस कमरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में ले गया, जहाँ वह ठहरा हुआ था। वहाँ ले-जाकर उसने उसको बिछी दरी और चाँदनी पर बैठाया। स्वयं भी उसके सामने बैठते हुए कहने लगा, "रामू अभी यहाँ आएगा। जो भूषण आपने लौटा दिए हैं वह अपनी माँ और बहिन को दिखा रहा है।"

"भूषण हमने लौटा दिए हैं ? कहाँ हैं वे ? मैं भी देखना चाहता हूँ।"

"आपको दिखाकर ही तो लाया है!"

"हमने तो कोई भूषण नहीं लौटाए।"

"तो तुम भी भीतर जाकर देख सकते हो। रामू कहता है कि तुम्हारे पिता जी ने कहा था, 'ले जाओ, सब ले जाओ'।"

शंकर भीतर चला गया। परन्तु दूसरे ही क्षण वह चीखें मारता हुआ भागता आया। जगदीश ने उसे थामकर पूछा, "कहाँ भागे जाते हो शंकर? क्या हो गया है ?"

शंकर भाग जाता यदि वह जगदीश के हाथों से छूट सकता। जगदीश के लोहे के पंजे में फँसा वह खड़ा हो गया, परन्तु द्वार की ओर अति भयभीत दृष्टि से देख रहा था। जगदीश उसे अपने कमरे में ले गया और फर्श पर बैठाकर पूछने लगा, "क्या हुआ है ? भूषण नहीं देखे तुमने ?"

"भूषण तो थे, परन्तु भूषणों के ढेर के चारों ओर तीन बड़े-बड़े फनियर साँप फन फैलाए झूम रहे थे। वहाँ और कोई न था। ऐसा प्रतीत होता है कि रामू और उसकी माँ और बहिन उन्हें देखकर कहीं भाग गई हैं। जो संदूकची हमने रामू को दी थी वह साँपों से भरी हुई थी। शायद नीचे भूषण थे और ऊपर साँप बैठे हुए थे।"

जगदीशचन्द्र कहकहा मारकर हँस पड़ा। उसने कहा, "आओ मेरे साथ। दिखाओ कहाँ है साँप ? मैं साँपों को वश में कर सकता हूँ।"

शंकर की इच्छा भीतर जाने की नहीं थी, परन्तु जब जगदीश ने कहा 'आओ' तो वह विवश हो गया और उठकर उसके साथ भीतर को चल पड़ा। उसका दिल धक्-धक् कर रहा था। जगदीश ने उसे बाँह से पकड़ा तो ऐसा प्रतीत हुआ कि वह नीम के पत्ते की भाँति काँप रहा था। भीतर जाकर शंकर ने देखा कि रामू और उसकी माँ और बहिन भूषणों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संदूकची में समेट रही है। जगदीश ने शंकर की ओर देखकर पूछा, "कहाँ हैं साँप? बताओ!"

शंकर आश्चर्य में खड़ा देखता रह गया। उसका मुख खुला था, पर वह बोल न सकता था। आँखें फाड़-फाड़कर वह भूषणों की ओर देख रहा था। जगदीश को आया देखकर तीनों खड़े हो गए। सोहनी ने सिर का कपड़ा कुछ नीचे कर लिया।

शंकर को ऐसा प्रतीत हुआ कि सोहनी बीमारी से उठने के पश्चात् तो पहले से भी अधिक सुन्दर दिखाई देने लगी है। जगदीश ने सबको बैठने को कहा। जब वे बैठ गए तो स्वयं भी शंकर को लेकर बैठ गया। शंकर अनुभव कर रहा था कि कुछ विशेष बात उसके मन में उठ रही है जिसका अर्थ समझने में वह अशक्त है। बात जगदीश ने आरम्भ की। उसने पूछा, "शंकरदास जी, यहाँ तो कोई साँप नहीं है?"

"पर मैंने देखे थे।"

"मैं बताता हूँ। आपके पाप ही आपके सम्मुख साँप बनकर आ रहे थे। न तो पहले संदूकची में साँप थे और न अब हैं।"

इस समय शंकर को अपने पिता की बात स्मरण हो आई। उसने दुहरा दी, "हमने कोई पाप नहीं किया। सब हिसाब हमारे पास लिखा हुआ है। पाई-पाई का हिसाब है। आप चलकर हमारी बही देख सकते हैं।"

"वह भी देख लेंगे। कहो तो कल देखने आवें? परन्तु मैं कहता हूँ कि आपको जो साँप दिखाई दिए हैं इससे यह बात सिद्ध होती है कि आपके मन में पाप है। तभी तुम्हारी अन्तरात्मा तुम्हें भयभीत कर चेतावनी दे रही है। तुमने घोर पाप किया मालूम होता है। उसका प्रायश्चित्त करो, नहीं तो निश्चय साँप की योनि में पड़ोगे।"

यह सुनकर शंकर के सारे शरीर में कँपकँपी हो उठी। उसने सुन रखा था कि साँप की आयु पाँच सौ वर्ष होती है। तो क्या वह पाँच सौ वर्ष तक बिलों में घुसता रहेगा? यह विचार ही उसको भयभीत करने के लिए पर्याप्त था।

उसके मन में बार-बार यह बात आ रही थी कि उन्होंने निस्सन्देह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धोखा दिया है। पिता जी ने उससे झूठी बही लिखवाई है। जो रुपया उसकी सास को दिया गया था, उस पर सूद-दर-सूद लगाकर एक पैसे का एक रुपया बनाया गया है। उसकी सास को उकसा-उकसाकर मंगल से झगड़ा करवाया गया है। आज वह सोच रहा था कि उसने ये सब पाप-कर्म क्यों किए? न उसके कोई लड़का है, न लड़की। यदि कोई सन्तान होती भी, तो वे पिता के पाप-कर्मों का फल क्यों भोगती? अपने कर्मों का फल तो उसे ही भोगना पड़ेगा!

इस प्रकार विचारते हुए उसके सिर में चक्कर आने लगे। वह एकाएक उठा और भागकर घर से बाहर निकल गया। बाहर एक टाँगा खड़ा था, उस पर सवार हो वह नगर को चला गया

७

जिस दिन जगदीश और रामू गाँव में आए थे, उस दिन मोहिनी अपनी लड़की मानिनी के साथ अपनी सास से मिलने को आई हुई थी। जब जगदीशचन्द्र रामू की माँ को प्रणाम करने भीतर गया, तब मानिनी लस्सी के कटोरे में तैर रहे मक्खन को खा रही थी। उसे देखकर जगदीश एक क्षण में समझ गया कि यही है भामिनी जिसकी खोज में वह दो जन्मों से भटक रहा है। लड़की का चित्र तो उसके मन में पहले ही चित्रित था। अब अपने मन की तस्वीर को सामने बैठा देख वह आश्चर्य में उसको देखता रह गया। मानिनी ने भी इस नए आनेवाले को देखा और लस्सी पीना भूल गई। रामू की माँ के कहने पर जगदीशचन्द्र पास की खाट पर बैठा तो मानिनी ने मक्खन खाकर लस्सी को वहीं रख दिया और अपनी चुनरी के आँचल से मुख पोंछकर उठ खड़ी हुई और बहुत ध्यान से जगदीशचन्द्र को देखने लगी।

जगदीश ने उसको अपनी ओर देखते हुए पाकर उँगली से संकेत कर समीप बुला लिया। मानिनी, जैसे लोहा चुम्बक की ओर खिंच जाता है, वैसे ही जगदीश के समीप आकर खड़ी हो गई।

"क्या नाम है तुम्हारा?" जगदीशचन्द्र ने उसका संकोच मिटाने के लिए पूछ लिया। मानिनी को लज्जा लग रही थी। वह पाँव के अँगूठे से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लकीरें खींचने लगी। जगदीश हँस पड़ा, उसने कहा, "देखो, मैं तुम्हारा नाम जानता हूँ। तुमको ये लोग मानिनी कहकर पुकारते हैं न?"

मंगल को आश्चर्य हुआ कि यह नाम इन्हें कैसे पता लग गया? मानिनी ने अपना नाम उन्हें लेते सुन, एक बार आँख उठा उनकी ओर देखा। उसकी लज्जा और संकोच को देखकर सब हँसने लगे। परन्तु मोहिनी सोच रही थी कि मानिनी के भाव में संकोच क्यों हो रहा है जबकि औरों के सामने तो वह घर-भर में ऊधम मचाती रहती है?

मानिनी वहाँ फर्श पर बैठ गई मानो उसकी टाँगों में शिथिलता आ गई हो। इस पर जगदीश ने कहा, "पर मैं तुम्हारा एक और नाम भी जानता हूँ। शायद तुमको भी याद होगा। तुम्हारा नाम भामिनी भी रहा है।"

मानिनी को ऐसा अनुभव हुआ कि उसको नींद आ रही है। जगदीशचन्द्र ने उसकी ओर से ध्यान हटाकर रामू की माँ से कहा, "माता जी! मैं और रामू दोनों देश-देशान्तर में भ्रमण करने जा रहे हैं। रामू की शिक्षा में यही एक कमी रह गई है।"

"अब फिर जा रहे हो?"

"हाँ, माँ!" रामू ने उत्तर दिया। उसने कहा, "हम जब इस नगर में से गुजर रहे थे तो मेरा मन तुम्हें मिलने को हो आया। मैंने गुरुदेव से बहुत आग्रह कर तीन दिन तक गाँव में ठहरने के लिए इन्हें मनाया है। तीन दिन के पीछे हम चले जावेंगे। उसके बाद तुम्हारे घर में एक उत्सव होगा।"

"क्या होगा? तुम बहू लाओगे क्या?"

"आशा तो करता हूँ।"

"पर क्या तब तक जीती रहूँगी मैं?"

"हाँ, माँ जी!" उत्तर जगदीशचन्द्र ने दिया, "आप परपौत्रों का मुख देखेंगी।"

"तुम्हारी बात भगवान सत्य करे!"

इस प्रकार रामू का जाना तय हो गया। अब जगदीश का ध्यान सोहनी की ओर गया। वह मलिनमुख बैठी अपने भविष्य के विषय में सोच रही थी। उसके मन में उठ रहे विचार का अनुमान लगाकर जगदीशचन्द्र ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कहा, "बहिन सोहनी का विवाह एक भूल थी। इसको अब शंकर के साथ नहीं जाना चाहिए।"

मंगल ने गम्भीर भाव में कहा, "गुरुदेव, कुत्ते की दुम किसी भी उपाय से सीधी नहीं हो सकती। यही बात इनके श्वसुर और पतिदेव की है। वे नितान्त स्वार्थी हैं।"

"मंगल भैया, जो मैं कहता हूँ उसे ठीक मानो। एक-दो वर्ष के भीतर ही बहिन अपने इस बंधन से सुलझेगी, परन्तु वह स्वयं दीर्घ जीवन व्यतीत करेगी।"

इस समय मानिनी ऊँघती-ऊँघती लेट गई और गहरी नींद में सो गई। मोहिनी नहीं चाहती थी कि वह दिन के समय सोए। इस कारण उसे उठाने का यत्न करने लगी। परन्तु जगदीश ने मना कर दिया, "मत उठाओ, वह बहुत लम्बे स्वप्न ले रही है। इसे स्वप्न लेने दो। वे उसके भविष्य जीवन से भारी सम्बन्ध रखते हैं।"

मोहिनी ठिठक गई। उसने देखा कि मानिनी का मुख खिल उठा है। उसके होठों में से मुस्कान निकल रही है और उसके मस्तिष्क में विशेष तेज समाता प्रतीत होता है।

मानिनी को मुस्कराते देख, सब चकित हो उसकी ओर देखने लगे। जगदीश ने कहा, "माता जी! यह अपने अतीत काल के स्वप्न देख रही है। अब यह नौ वर्ष की है। इस छोटे-से काल में भी इसने बहुत-कुछ देखा है। परन्तु स्वप्नों में कभी-कभी मनुष्य पूर्व-जन्मों की भी बातें देखने लगता है। यह शायद वही देख रही है।"

अब उसने मंगल को संकेत कर पूछा, "यह लड़की क्या पढ़ती है?"

"इसे मैं स्कूल नहीं भेजता। यह घर पर ही अपने भाई दीप से कुछ हिन्दी और अंग्रेजी पढ़ लेती है।"

"इसमें क्या रखा है? हिन्दी-साहित्य का अभी तो सृजन भी आरम्भ नहीं हुआ। अंग्रेजी-साहित्य दूषित और विकृत मनोवृत्ति का सूचक है। मेरी राय मानो तो इसको संस्कृत पढ़ाओ। इससे यह वास्तविक अर्थों में देवी बन जाएगी। वह अपने पति से पूज्य होगी और संसार इसकी चरणरज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाकर अपने को कृतार्थ मानेगा।"

"पर गुरुदेव! संस्कृत पढ़ानेवाला कहाँ से ढूँढूँ?"

"ढूँढने से मिल जाएगा। यदि तुम इसका प्रबन्ध न कर सके तो लौटकर यह प्रबन्ध मुझे करना पड़ेगा। तब इसे कुछ कठिनाई होगी, क्योंकि मुझे भी संस्कृत भाषा केवल अभ्यास से ही आई है। इस अभ्यास में वह छः वर्ष पीछे रह जाएगी।"

इस समय मानिनी खिलखिलाकर हँस पड़ी और उसकी नींद खुल गई। वह विस्मय में सबको अपनी ओर देखते हुए पाकर लज्जा अनुभव करने लगी और उठकर बैठ गई।

इस समय में रामू ने बाहर जाकर मंगल वाला कमरा साफ करवा दिया और अपने गुरु के वहाँ रहने का प्रबन्ध कर दिया।

जब मोहिनी मानिनी को साथ लेकर अपने घर की ओर चली तो मार्ग में लड़की ने पूछा, "माँ, यह कौन आदमी था?"

"एक तो तुम्हारा चाचा है। इसको घर से गए दस-ग्यारह वर्ष हो गए थे। आज लौटकर आया है। दूसरे तुम्हारे चाचा के गुरु हैं। दोनों फिर देशाटन को जा रहे हैं।"

"क्यों जा रहे हैं?"

"देशाटन से ज्ञानवृद्धि होती है। गुरुजी समझते हैं कि बिना देशाटन के रामू की शिक्षा पूर्ण नहीं होगी।"

"माँ! जब मैं सो गई थी तो यह विचित्र स्वप्न मैंने देखा कि ऊँचे-ऊँचे पहाड़ हैं और यही गुरु जी वहाँ पर हैं। मैं भी वहाँ हूँ। हम दोनों छोटे-छोटे हैं। एक नदी के किनारे खेल रहे हैं। इनका नाम नटेश्वर है, मेरा भामिनी। फिर मेरा इनसे विवाह हो रहा है। पर उस दिन गाँव में कामिनी का जैसा विवाह हुआ था वैसा नहीं। बहुत सुन्दर वेदी बनी है। बीच में हवन हो रहा है। हम उस अग्नि के चारों ओर चक्कर काट रहे हैं। एक विचित्र भाषा में औरतें गा रही हैं और सब लोग प्रसन्न प्रतीत होते हैं।"

"यह सब पागलपन है!" मोहिनी ने कहा, "वह तो तुम्हारे पिता से भी बड़े प्रतीत होते हैं? उनका तुमसे विवाह नहीं हो सकता।"

"पर माँ! मैं तो स्वप्न की बात कह रही हूँ। वे छोटे-से ही थे। हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों एक ही आयु के प्रतीत होते थे।"

"अच्छा, छोड़ो इस बात को।"

८

शंकर गाँव पहुँचा तो उसने देखा कि उसका पिता भय के मारे बीमार हो गया है। उसके हृदय में धड़कन उत्पन्न हो गई है। वह अपने कमरे में लेटा हुआ था और डॉक्टर आया हुआ था। उसने एक स्लीपिंग डोज़ देकर कहा, "जितना ये आराम करेंगे उतना ही ठीक होगा।"

जब डॉक्टर फीस लेकर चला गया तो शंकर ने पूछा, "पिता जी, क्या बात है?"

"मेरी आँखों के सामने साँप-ही-साँप घूमने लगे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि वे सब मुझे काटने के लिए दौड़े आ रहे हैं।"

"मेरा मन तो कहता है कि यह सब हमारे पापकर्मों का फल है। हमारे पापकर्म ही हमारे सामने साँपों का रूप धारण कर रहे हैं। मैं सोहनी की माँ के घर गया था। जब मैं भीतर गया तो मुझे ऐसा दिखाई दिया कि भूषण रखे हैं और उनको तीन बड़े-बड़े साँप देख रहे हैं। मैं चीखें मारता हुआ भाग खड़ा हुआ। वहाँ रामू के गुरु ठहरे हुए हैं। उन्होंने मुझे ढाढस बँधाया और मुझे अपने साथ भीतर ले गए। तब वहाँ साँप नहीं थे। रामू, उसकी माँ और मोहिनी भूषणों को देख रही थीं। रामू का गुरु भी कहता था कि हमारे पापकर्म ही हमारे सामने भयंकर रूप धारण किए आ रहे हैं। हमें प्रायश्चित्त करना चाहिए।"

"कैसे प्रायश्चित्त करना चाहिए?"

"मोहिनी की माँ को जो कुछ भी उसका है, वापस कर देना चाहिए।" यह बात शंकर ने अपने मन से कही थी। यह तो उसे पता ही था कि उसकी सास से अनुचित ढंग से धन लिया गया है, अतः वह इसे वापस दिलाना चाहता था। यह बात अपनी ओर से नहीं कहना चाहता था। इस कारण उसने रामू के गुरु का नाम लिया था।

शंकर के पिता ने कहा, "पर बेटा, हमारी बही तो बड़ी-से-बड़ी अदालत अर्थात् हाईकोर्ट में भी मान्य होती है। फिर वह गलत कैसे हुई?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके अनुसार जो कुछ निकलता है वह हम दे देंगे।"

"उसके अनुसार क्या निकलता है? यह भूषण भी उनके थे अथवा नहीं?"

"मुझको इतना-कुछ स्मरण नहीं। पर हाँ, कुछ तो उनके बच गए थे। इसी कारण जो पाँच भूषण वह माँगने आया था, मैं उन्हें देने के लिए तैयार था, परन्तु जब संदूकची ही साँपों से भरपूर देखी, तो मैंने उसके सामने रख दी। अब तुम कहते हो कि उसमें भूषण थे।"

"हाँ पिता जी! यह पक्की बात है।"

इस समय लाला नत्थूमल्ल को धड़कन का फिर एक आक्रमण हुआ और वह हृदय पर हाथ रखकर चुप कर गया।

नत्थूमल्ल को ठीक होने में कई दिन लग गए। इस समय शंकर भी अपने पिता की सेवा-शुश्रूषा के लिए घर में ही रहा। डॉक्टरों के आने-जाने की भरमार लगी रही और इस भरमार के कारण दुकान का काम-धंधा बंद रहा।

रात को जब शंकर अपने कमरे में सोया होता तो पिता जी के 'हाय-हाय' का शब्द सुनता रहता। पहले तो वह यह आवाज़ सुनकर डर जाया करता और भागकर पिता के पास पहुँच जाता, परन्तु धीरे-धीरे उसको पिता जी की 'हाय- हाय' सुनने का अभ्यास हो गया और वह चुपचाप सोया रहता।

समय व्यतीत होने पर नत्थूमल्ल के मन में समाया हुआ भय कम होता गया और पुन: नि:शंक हो दुकान पर जाने लगा। पिता के दुकान पर जा सकने के कुछ दिन पहले ही शंकर दुकान का काम देखने लगा था। उसने एक दिन बही खोलकर रामू का खाता निकाला तो उसे देख चकित हो गया। उस पर वे तो सब रकमें लिखी थीं जो रामू की माँ से प्राप्त हुई थीं, परन्तु खर्च के खाने में कुछ नहीं था। शंकर पन्नों को देखता रहा और इधर-से-उधर उथल-पुथलकर बही के पन्ने उलटता रहा। पर वह कुछ समझ नहीं सका।

इस सूचना को वह पिता जी को देने से डरता था। उसे भय था कि कहीं फिर उनके हृदय पर आघात न पहुँचे। परन्तु बात बहुत देर तक छुपी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं रह सकी। लाला नत्थूमल्ल दुकान पर आया और शंकर के बहुत छुपाने पर भी रामू का हिसाब उसकी दृष्टि में आ गया। उसने जब हिसाब का पन्ना साफ देखा तो देखते ही रह गया। बैठते दिल के साथ अपने लड़के से पूछने लगा, "रामू के हिसाब का यह क्या हुआ है?"

"पिता जी! यह हमारे कर्म लिखे हैं। भगवान जाने, क्या हो गया है?"

"कुछ भी हो! भूषण तो गए, पर हिसाब की यह बात उनको न बताना।"

"मैं एक बात करना चाहता हूँ, जिससे मैं समझता हूँ कि यह रुपयों का झगड़ा उठ ही नहीं सकेगा।"

"क्या?"

"मैं सोहनी को पुनः अपने घर ले आता हूँ। जब वह मेरे पास रहने लगेगी तो उसकी माँ या भाई कभी झगड़ा नहीं करेंगे।"

"पर लक्ष्मी का क्या होगा? उसके माता-पिता भी तो झगड़ा कर सकते हैं!"

"उनके हम किसी बात के ऋणी थोड़े ही हैं! लड़की को चाहें तो ले जाएँ। कौन मेनका है कि उसके बिना जीवन दूभर हो जाएगा?"

"पर उसका पिता बहुत धनी आदमी है। हमें व्यापार में हानि पहुँचा सकता है।"

"हम किसी का दिया नहीं खाते। अपनी मेहनत का खाते हैं। फिर लक्ष्मी में और गुण भी क्या है? उसकी और सोहनी की क्या तुलना!"

"तो यह बात है! ऐसा प्रतीत होता है कि तुमने ही बही के पन्ने बदल दिए हैं। मेरे साथ यह कृतघ्नता! अपने पिता के साथ?"

"पिता जी, यह बात नहीं है। मैंने पन्ने-वन्ने बिल्कुल नहीं बदले।"

इस पर लाला नत्थूमल्ल चुप हो गया। उसने मन में यह निश्चय कर लिया कि आगे को लड़के से सतर्क रहेगा।

पिता के उस पर सन्देह करने से शंकर को बहुत ही शोक हुआ। वह झगड़ा अधिक बढ़ाना नहीं चाहता था। उसको अपने पिता के स्वास्थ्य का बहुत ध्यान था। शंकर के पिता को भी लड़के की मनोवृत्ति पर बहुत खेद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हुआ और उस दिन से उसने लड़के पर विश्वास और भरोसा करना छोड़ दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि शंकर का दुकान पर बैठना धीरे-धीरे छूटने लगा। नकदी को नत्थूमल्ल अपने अधिकार में रखने लगा।

पहले शंकर जैसी आवश्यकता होती उसके अनुसार, रुपए तिजोरी से निकालकर काम में ले आता था, परन्तु अब तिजोरी की चाबी लाला नत्थूमल्ल ने अपने अधीन कर ली थी। इससे पैसे-पैसे के लिए शंकर को पिता का मुँह ताकना पड़ता था।

इससे एक परिवर्तन यह होने लगा कि शंकर की पत्नी लक्ष्मी के भी उसके प्रति आदर के भाव कम होने लगे। पहले ही वह लाला नत्थूमल्ल के पास अपने पिता से धन-सम्पत्ति बहुत कम समझती थी और अब वह शंकर और उसके पिता, दोनों को महामूर्ख समझने लगी। जब उसने देखा कि उसका पति अपने पिता का पैसे-पैसे के लिए मोहताज हो गया है, तो वह उसे और भी अधिक मूर्ख मानने लगी।

एक रात की बात है। लक्ष्मी ने शंकर से कहा, "मैं बाजार से कुछ कपड़ा खरीद लाई हूँ। वह दुकानदार आपको और मेरे पिता जी को जानता है। इस कारण उससे उधार पर लाई हूँ। कल उसे रुपया दे आइएगा।"

"कितने रुपए का माल लाई हो?"

"अभी तो केवल अढ़ाई सौ रुपए का ही माल लाई हूँ। चाहिए तो और भी था, परन्तु उस दुकान पर वह था नहीं। और सामने का दुकानदार मुझे पहचानता नहीं था। उसे रुपया नकद देकर ले आऊँगी।"

"पर इतना एकदम लेकर क्या करोगी?"

"भैया का विवाह है। मुझे नए कपड़े बनवाने हैं।"

"यह तो जानता हूँ, परन्तु एक पोशाक काफी नहीं है क्या?"

"वाह! विवाह का काम तो तीन दिन चलता रहेगा। तो क्या एक ही पोशाक नित्य पहनती रहूँगी? विवाह के तीनों दिन एक ही पोशाक पहनते रहने से नाक न कट जाएगी आप सबकी?"

शंकर जानता था कि लक्ष्मी से बातचीत करने का कोई लाभ नहीं। साथ ही वह यह भी जानता था कि पिता से रुपया माँगने में अपमान होता है। इस पर भी कोई चारा न देखकर अगले दिन पिता जी से बोला, "पिता
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जी! पाँच सौ रुपया चाहिए।"

"क्या करना है इतना रुपया लेकर?"

"लक्ष्मी के भाई का विवाह है। कुछ कपड़े बनवाने हैं।"

"तो पाँच सौ से क्या करोगे? एक सौ रुपया ही काफी है।"

"वह पाँच सौ से कम पर राज़ी नहीं होती।"

"तो उसको कह दो कि मैं एक सौ से अधिक नहीं देता।"

शंकर चुप कर गया। दोपहर के समय लाला नत्थूमल्ल आराम कर रहे थे तो शंकर ने चाबी तकिए के नीचे से निकालकर तिजोरी खोली। जब उसमें से पाँच सौ रुपए निकाल चुका तो उसे विचार हुआ कि नित्य माँगने की खचखच से बचने के लिए कुछ और भी निकाल लूँ। उसने दस-दस के नोटों के एक हजार के बंडल को लेने की ठानी। इतने में उसके पिता की नींद खुल गई और वह तकिए के नीचे चाबी को न पा, भागकर कोठरी में आया। वहाँ देखा कि तिजोरी खुली थी और शंकर एक हज़ार का बंडल निकालकर अपने कुर्ते की जेब में रख रहा था। पिता ने देखते ही उसे डाँटा, "यह क्या कर रहे हो?"

शंकर का हाथ काँप गया। नोटों का बंडल उसके हाथ से नीचे गिर गया। पिता ने कहा, "यह चोरी करना किसने सिखाया है तुम्हें?"

"पिता जी, जरूरत थी।" काँपती आवाज़ में शंकर ने कहा।

"अबे, औरत के गुलाम! घर तबाह करने के लिए कमर कस ली है क्या? दिखाओ, कितना निकाला है?"

हज़ार रुपए का बंडल तो गिर ही पड़ा था। नत्थूमल्ल ने वह तो उठा लिया और पूछा "और भी लिया है क्या?"

शंकर चुप रहा। नत्थूमल्ल ने उसे चुप देखकर कहा, "निकल जाओ! एक सौ रुपया मिलेगा, अधिक नहीं। चले जाओ!"

शंकर कमरे से बाहर चला आया। जो पाँच सौ रुपए उसने लक्ष्मी को देने के लिए निकाले थे उसकी जेब में ही थे। उसके चले जाने के पश्चात् नत्थूमल्ल ने सब रुपया गिन डाला। तिजोरी में ही एक छोटी-सी बही रखी थी जिसमें कुल रखे रुपयों का ब्योरा था। लाला ने रुपयों को गिनकर उनका बही से मिलान किया तो पता लगा कि पाँच सौ रुपए की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कमी थी। इससे नत्थूमल्ल को आग लग गई। उसने तिजोरी बन्द कर बाहर आ शंकर को आवाज़ दी, "ओ चोर के बच्चे शंकर! इधर आओ, कहाँ हो?"

शंकर लक्ष्मी को पाँच सौ रुपए देकर घर से चला गया था। लाला नत्थूमल्ल शंकर के कमरे के बाहर खड़े होकर उसे आवाज़ देने लगा।

लक्ष्मी ने किवाड़ के पीछे खड़े होकर पूछा, "क्या है लाला जी? वे घर पर नहीं हैं।"

"बदमाश का बच्चा! पाँच सौ रुपया चुरा लाया है तिजोरी में से।"

लक्ष्मी को क्रोध चढ़ आया। उसने कहा, "चुरा कहाँ से लाया है? अपने थे, जरूरत पड़ी तो ले आया है।"

"अपने थे! जब तक मैं जीता हूँ, उसका कुछ अपना नहीं है। यह चोरी है! मैंने उसे मना कर दिया था, उस पर भी वह क्यों ले आया है?"

"तो वे क्या यहाँ मालिक नहीं, नौकर हैं?"

"कुछ भी हो। मेरी स्वीकृति के बिना वह रुपया तिजोरी से नहीं ले सकता।"

"तो यह लो, रखो इसे अपने पास।" यह कहकर लक्ष्मी ने पाँच सौ रुपयों का बंडल किवाड़ के पीछे से लाला जी के मुख पर दे मारा।

लाला जी इस बात पर लैक्चर कर ही रहे थे कि लक्ष्मी ने खट से कमरे का दरवाजा बन्द कर लिया।

९

जगदीश और रामू गाँव से विदा होने के पूर्व मंगल को मिलने गए। ये ड्योढ़ी में पहुँचे ही थे कि मानिनी घर के सामने बगिया से फूल तोड़ रही थी। जगदीश उसको देखकर खड़ा हो गया। रामू भी वहाँ खड़ा हो गया और गुरुदेव के मन के भावों का अनुमान लगाने लगा। मानिनी ने उन दोनों को अपनी ओर निहारते देखकर लज्जा अनुभव की। उसने फूल तोड़ने छोड़ दिए और जितने तोड़े थे उतने ही लेकर घर के पिछवाड़े की ओर चल दी। इस पर जगदीश ने आवाज़ दी, "मानिनी, दिखाओ इधर! यह क्या लिये जा रही हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इच्छा न रहते हुए भी मानिनी के कदम रुक गए और उनकी ओर घूम गए। बाँस की डलिया में फूल थे। उसने डलिया को दिखाकर कहा, "फूल लिये जा रही हूँ।"

"क्या करोगी इन्हें ?"

"माँ पूजा करने जा रही हैं। देवता पर चढ़ाएँगी।"

"कहाँ जाती हैं पूजा करने वे ?"

"घर में ही ठाकुर जी रखे हैं।"

"तुम भी पूजा करती हो क्या ?"

"हाँ।"

"क्या माँगती हो उनसे ?"

"पूजा माँगने के लिए थोड़े ही की जाती है! पूजा तो भगवान को प्रसन्न करने के लिए है।"

"प्रसन्न होकर भगवान क्या करते हैं ?"

"जो उनका मन करता है।"

"तो फिर प्रसन्न करने से लाभ ही क्या हुआ ?"

"लाभ तो अपने-आप होता है। हमने प्रसन्न कर दिया उनको। हमारा काम समाप्त हुआ। पश्चात् यह उनका कर्तव्य हो जाता है कि उसका जो चाहें फल दें।"

"बहुत सुन्दर! बहुत सुन्दर! मानिनी, यह तुम्हें किसने बताया है ?"

इस प्रकार बातें करते-करते वे सब घर के भीतर चले गए। मानिनी उनके साथ-साथ चलती हुई कह रही थी, "यह बात भी भला सिखाने की है क्या ? भगवान तो सबके पिता हैं! उनको सबकी चिन्ता रहती है।"

जब वे मकान के बैठकखाने में पहुँचे तो मानिनी घर के भीतर चली गई। भीतर जाकर उसने उनके आने की सूचना माँ को दी। माँ ने दीप को उनके स्वागत के लिए भेज दिया।

दीप ने अपने चाचा और उनके गुरु जी को बैठाया और उनके लिए जलपान का प्रबन्ध कर दिया। जलपान करते हुए जगदीश ने दीप से बातचीत आरम्भ की, "किस श्रेणी में पढ़ते हो ?"

"मैट्रिक की परीक्षा इस वर्ष दे रहा हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"फिर क्या करोगे?"

"मैं इंटरमीडिएट साइंस पढ़ने लाहौर जाऊँगा।"

"इससे क्या होगा?"

"संसार का ज्ञान होगा। मैं इंजीनियर बनने का विचार रखता हूँ।"

"तो तुम भी मनुष्य की आत्मा के बन्धन निर्माण करने जा रहे हो?"

दीप इसका अभिप्राय नहीं समझा। इस कारण जगदीश ने सामने टँगे पिंजरे में तोते की ओर उँगली कर पूछा, "वह क्या है?"

"पिंजरे में तोता है।"

"यहाँ पर पिंजरा दिखाने के लिए तोता बंद किया है अथवा तोता दिखाने के लिए पिंजरा टँगा है। इन दोनों में मुख्य कौन है?"

"तोता! पिता जी कई तोते अफ्रीका से लाए थे। उनमें से दो ही शेष रह गए हैं।"

"यदि तुम्हारे पिता जी एक साधारण मरियल-से तोते को सोने के पिंजरे में डाल देते तो तुम इसे क्या समझते?"

"मैं इसे व्यर्थ मानता।"

"मेरा अभिप्राय यह है कि मनुष्य की आत्मा की चिन्ता न कर केवल शरीर की चिंता करनेवाले पिंजरे को तो सजाते हैं, परन्तु उसमें उपस्थित तोते की परवाह नहीं कर रहे हैं। या यूँ कहो कि इंजीनियर संसार को तो सुन्दर बनाने में लगे हैं, परन्तु उसमें उपस्थित मानव की ओर ध्यान नहीं दे रहे।"

दीप इस उदाहरण को समझ गया, परन्तु इसको सुनकर जो उद्गार उसके मन में उत्पन्न हुए उनको वह प्रकट करने की शक्ति नहीं रखता था। इस कारण अब भी वह उनका मुख ही देखता रह गया।

जगदीश ने अपने कथन को जारी रखा। उसने कहा, "दीप भैया! पिंजरे को सुदृढ़ और सुन्दर बनाना और सजावट में टाँगना कोई बुरी बात नहीं है। परन्तु यदि उस पिंजरे में तोता ही अधमुआ हो तो कितना भद्दा प्रतीत होगा? संसार को सुन्दर बनाना हो तो बनाओ, पर मानवता को न खोकर। शरीर को सुख देना हो तो दो, परन्तु आत्मा का हनन न करते
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हुए।''

अभी जलपान समाप्त नहीं हुआ था कि मंगल उनके आने का समाचार पा कुएँ पर से घर आ गया। उसने हाथ जोड़कर उनका सत्कार किया और उनके सामने बैठ गया। जगदीश अब भी उन विचारों को जो उसने दीप के सामने रखे थे, स्पष्ट करने का विचार कर रहा था। उसने कहा, ''चौधरी साहब! मैं दीप को कह रहा था कि जैसे पिंजरा बिना तोते के व्यर्थ है, इसी प्रकार यह शरीर सुन्दर होता हुआ भी व्यर्थ है जब तक उसमें आत्मा सजीव नहीं होती। इस कारण इस सुन्दर कलेवर में आत्मा को सजीव रखने का उपाय भी तो करना चाहिए!''

''तो क्या आत्मा सजीव नहीं है? क्या इसे सजीव करने के लिए प्रयत्न करना पड़ता है?''

''आत्मा तो सजीव है, और चेतन है, परन्तु कई ऐसे विचार हैं जो इसे या तो मूर्छित किए रहते हैं या इसकी हत्या ही कर देते हैं। भारत एक महान् देश है। इसकी संस्कृति यहाँ रहनेवालों की बपौती है। इस संस्कृति को जीवित रखना पिंजरे में तोते को जीवित रखने के समान है।''

''पर गुरुदेव! यह संस्कृति क्या वस्तु है?''

''यह शरीर में आत्मा है। जैसे शरीर का संचालन आत्मा के लिए होता है वैसे ही जातीय कर्म जातीय संस्कृति के लिए होते हैं। जाति के लोगों को भोजन, वस्त्र और अन्य सुख-सुविधाएँ इस कारण मिलती रहनी चाहिएँ कि उनको जीवित रखने से जाति की आत्मा अर्थात् संस्कृति की रक्षा होती है। संस्कृति जातीय आचार-व्यवहार को और साथ ही इस व्यवहार के पीछे प्रेरणा करनेवाली विचारधारा को कहते हैं।...

''देखिए, दीप की माँ पूजा को गई हैं। मानिनी उनके लिए फूल तोड़कर ले गई है। यह सब क्यों है? मैंने मानिनी से पूछा कि भगवान से क्या माँगोगी? उसने कहा कि 'माँगने के लिए पूजा नहीं की जाती।' अर्थात् वह कामनारहित पूजा करनी चाहती है। यह विचार और इस विचार को प्रेरणा देनेवाली भावना हमारी भारतीयता की जान है। भगवद्गीता में इसे निष्काम भावना से कर्म करने की भावना कहा है। यह भारतीय संस्कृति है। इसके बिना बाह्य संसार का निर्माण तो तोते की परवाह न कर
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल पिंजड़ा निर्माण करना ही कहा जा सकता है। यह मानव को बंधनों में जकड़ने के अतिरिक्त और कुछ नहीं।''

मंगल इस विवेचना को सुनकर इसे समझने का प्रयत्न कर रहा था। दीप गंभीर विचार में पड़ा हुआ अपने स्वप्नलोक में विचरने लगा था। वह समझ रहा था कि वह इंजीनियर बनकर धर्म को नहीं छोड़ेगा। यह नहीं होगा कि वह आत्मा को भूलकर केवल शरीर के पोषण में लग जाएगा।

जगदीश और रामू जलपान कर चुके थे। रामू ने बात आरम्भ की, ''दादा, मैं गुरुदेव के साथ भ्रमणार्थ जा रहा हूँ। इस कारण तुमसे आशीर्वाद लेने आया हूँ।''

''पर इस सबका खर्च कैसे चलता है? तुम्हारे पास कोई सोने की खान तो है नहीं?''

''यह सब माया है, मंगल भैया! जो कुछ तुम देखते हो, इसमें धन भी सम्मिलित है, सब माया है, अर्थात् कुछ भी नहीं, केवल भ्रम है। इसी प्रकार हम 'नहीं' में से सब-कुछ उत्पन्न कर सकते हैं।'' जगदीश ने कहा।

''मैं समझा नहीं महाराज! एक अनपढ़, मोटी बुद्धि का आदमी हूँ। आप कैसे शून्य से सब-कुछ कर सकते हैं?''

''देखो, मैं बताता हूँ! यहाँ से हम लाहौर जाना चाहते हैं। हम दोनों को वहाँ जाने और वहाँ एक मास तक रहने के लिए एक सहस्र रुपए के लगभग चाहिएँ। धन तो माया अर्थात् कल्पना का रूप है। इस कारण जो दूसरों की कल्पना को प्रोत्साहन दे सकता है वह धन भी पा सकता है। यह शक्ति एक सीमा तक मैंने और मुझसे कुछ कम सीमा तक रामू ने प्राप्त कर ली है। इस कारण हमें रुपए का अभाव कष्ट नहीं देता।''

मंगल अभी भी समझ नहीं सका था कि कैसे शून्य से सब-कुछ हो सकता है। इस कारण वह जगदीशचन्द्र का मुख देखता रहा। रामू ने अपने भाई के बितर-बितर देखने पर कहा, ''भैया! देखो, मैं समझाता हूँ। यह देखो, क्या है?''

''दीप की पैंसिल है।'' मंगल ने कहा।

''इसकी ओर देखते रहो।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतना कहकर रामू ने पैंसिल का एक सिरा भूमि पर लगा दिया। पश्चात् उसको ऊपर उठाया। ज्यूँ-ज्यूँ पैंसिल ऊपर उठती गई, खन-खन करते हुए रुपए भूमि पर गिरते गए। एक मिनट में ही रुपयों का ढेर लग गया।

मंगल आँखें फाड़-फाड़कर रुपयों को देखता रह गया। रामू ने कहा, "भैया, इनको गिन डालो!"

मंगल ने रुपयों को गिन डाला। एक सहस्र से कुछ ऊपर थे। उसने गुरुदेव से पूछा, "तो क्या ये रुपए शून्य से बन गए, गुरुदेव?"

"नहीं! बना कुछ नहीं। इसके तत्त्व सब पहले ही उपस्थित थे। हमने योगबल से वे एकत्रित कर दिए हैं। परन्तु मैं तो इतना कष्ट नहीं करूँगा। मेरा उपाय दूसरा है। मैं तो कहता हूँ कि मैं रुपया जिससे माँगूँगा वह दे देगा। मान लो, मैं आपसे कहता हूँ कि मंगल भैया, पचास रुपए दे दो, तो तुम स्वयं दे दोगे। यह भी योगबल का परिणाम है कि जिससे जो कुछ चाहूँ मैं करवा सकता हूँ।"

"यह तो बहुत मज़ेदार बात हुई!"

"हाँ, परन्तु इस शक्ति को प्राप्त करने के लिए भारी तपस्या की आवश्यकता है; और साथ ही इस शक्ति का ज्यों-ज्यों दुरुपयोग किया जाता है, धीरे-धीरे क्षीण होती जाती है।"

"परन्तु जिस काम को एक मनुष्य उपयोगी समझेगा उसको दूसरा दुरुपयोगी मान सकता है। फिर वह क्षीण कब और कैसे होगी?"

"किसी कार्य के अच्छे और बुरे होने में अपनी अन्तरात्मा की भावना निर्णय करती है। एक योगी की बुद्धि विकसित हो जाती है और उसकी अन्तरात्मा के निर्णय प्रायः ठीक होते हैं। योगेश्वर कृष्ण ने अनेकों कार्य अपनी आत्मा की प्रेरणा पर ऐसे किए थे जो दूसरों को भले प्रतीत नहीं हुए। परन्तु परिणाम निकलने पर सबने उन्हें ठीक माना है। एक योगी की आत्मा ही इस बात का निर्णय करती है। इस पर भी योगी की आत्मा के पतन होने की सम्भावना रहती है। शक्तिशाली आसन के ग्रहण करने से, अहंकार और मोह बुद्धि पर आच्छादित हो जाते हैं। यह अवस्था रावण की हुई थी।"

जाने का समय होने पर जगदीशचन्द्र ने मंगल से कहा, "मेरा आशय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह है कि मानिनी को संस्कृत पढ़ाने का यत्न किया जाय और मेरे लौटने से पूर्व उसके विवाह का निर्णय न किया जाय।"

"क्यों?"

"इसमें एक रहस्य है। यह रहस्य मानिनी स्वयं एक दिन बताएगी। जब तक उसमें इस रहस्य को प्रकट करने की शक्ति नहीं आ जाती, तब तक प्रतीक्षा करनी चाहिए और विवाह स्थगित रखना चाहिए।"

मंगल इस रहस्यमय कथन का अर्थ नहीं समझ सका। उसके विस्मय की ओर ध्यान न देते हुए जगदीश और रामू उठ खड़े हुए। रामू ने जाने से पूर्व कहा, "भैया, यह रुपया जो अभी बना है किसी धर्म-कार्य में लगा देना। इसमें से एक पैसा भी अपने काम में मत लाना!"

१०

शंकर पर से उसके पिता का विश्वास उठ जाने पर वह कभी-कभी सोहनी से मिलने आने लगा। पहली बार वह तब आया था जब उसके पास से तिजोरी की चाबी ले ली गई थी। वह आया और उसके आने की सूचना जब सोहनी को दी गई तो वह माथे पर त्योरी चढ़ाकर घर के आँगन में खाट डाल उस पर आ बैठी। शंकर के बैठने के लिए सामने कुर्सी रखवा दी।

उसने शंकर का उठकर सत्कार नहीं किया। केवल यह कहा, "बैठिए!"

जब वह बैठ गया तो उसने पूछा, "कैसे आना हुआ है?"

"सोहनी! मुझे अपने किए पर लज्जा आ रही है।"

"अच्छी बात है। आप पुनः ऐसा न करिएगा।"

"तो तुम उस घर चलोगी क्या?"

"नहीं! मेरा-आपका सम्बन्ध भूल थी। वह भूल समाप्त हुई है और उसको फिर दुहराने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती।"

"तो तुमने मुझे त्याग दिया है क्या?"

"मैं इसके अर्थ नहीं समझती। परित्याग की आवश्यकता हम हिन्दू औरतों को नहीं होती। किसी कंगले को, जिसके पास नए वस्त्र खरीदने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए पैसा नहीं होता, पुराने कपड़े मुरम्मत करवाकर ही गुज़र करना पड़ता है। हम जब समझते हैं कि कपड़ा गन्दा हो गया है तो फेंककर नया पहन लेते हैं।"

"तो तुमने मुझे गन्दा कपड़ा समझ फेंक दिया है और अब नए कपड़े की खोज में हो?"

"तुम मेरी बात समझने की शक्ति नहीं रखते। मैं नए पति की खोज में नहीं हूँ। मैं तो यह कह रही थी कि आपके सम्पर्क में आने से मेरा शरीर दूषित हो गया था, इसे फेंक देना चाहिए। और मैं ऐसा कभी का कर देती, परन्तु रामू के गुरु जी ने एक मन्त्र दिया है और उसका जप करने से उनका कहना है कि आगामी शरीर अच्छा मिलेगा।"

"आगामी शरीर तो भगवान जाने कैसा मिलेगा। यह शरीर तो पहले से भी अधिक सुन्दर हो गया है।"

"यह तो देख रही हूँ, अन्यथा आप यहाँ क्यों आते? आपका सम्बन्ध मेरे शरीर से ही था। वह शरीर के बनने-बिगड़ने से ही बनता-बिगड़ता है। मैं इस सम्बन्ध को अपना अपमान समझती हूँ।"

विवश शंकर बिना प्रयोजन-सिद्धि के लौट आया। दुकान में पिता की दूषित मनोवृत्ति से और घर पर लक्ष्मी के तिरस्कार से पीड़ित वह पुनः एक दिन गाँव में सोहनी से मिलने गया। यह उस दिन था जब उसने रुपया तिजोरी से निकाला था। वह पाँच सौ रुपया जो अपनी जेब में छुपाकर ले आया था, लक्ष्मी को दे गाँव में जा पहुँचा। मार्ग में वह यही विचार करता जा रहा था कि पाँच सौ रुपए का पता तो चल ही जाएगा। वे झगड़ा करेंगे और लक्ष्मी इस झगड़े से और भी नाराज होगी। दोनों ओर से उसी पर मुसीबत आएगी। इस दुहरी मार से बचने के लिए वह गाँव में पहुँच गया।

सोहनी उसके मुख का रंग उड़ा हुआ देखकर मुस्कराते हुए पूछने लगी, "क्या हुआ है? आज पिता जी से झगड़ा हो गया है?"

"हाँ।"

"क्यों?"

"पिता जी को संदेह है कि मैंने ही षड्यन्त्र कर तुम्हारी माता जी के भूषण दिलवाए हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो आपने नहीं दिलवाए?"

"मैं तो उस दिन की बात को समझ ही नहीं सका। भूषणों का साँप दिखाई देने लगना, फिर पुलिस का आना-जाना सिनेमा के पर्दे पर बनते-बिगड़ते चित्रों के समान विस्मयकर था।"

"गुरु जी ने जो बताया था क्या वह बात भी समझ में नहीं आई?"

"उसके अतिरिक्त तो और कोई कारण प्रतीत ही नहीं होता। मैं अपने कर्मों का प्रायश्चित्त करने के लिए ही तो बार-बार तुम्हारे पास आता हूँ।"

"यह विचित्र प्रायश्चित्त है कि एक कुरूप पत्नी के स्थान सुन्दर पत्नी पाने की लालसा करते हो! प्रायश्चित्त में तो त्याग, तपस्या, तितिक्षा करनी चाहिए, न कि आनन्द और भोग-विलास।"

"तो क्या करूँ?"

"मैं क्या बता सकती हूँ! आप और आपके पिता ही तो बतानेवाले थे! जिस मार्ग पर आपने हमें चलाया, हम उस पर चले और परिणाम यह हुआ कि मेरी माँ, जो अपने घर में राज्य करती थी, दस वर्ष में ही समधियों के घर बर्तन मलने लगी।"

"यदि तुम मेरे पास चलकर रहना स्वीकार करो, तो मैं अपने पिता से लड़-झगड़कर अपना कारोबार पृथक् कर लूँगा और फिर हम सुख से रहने लगेंगे।"

"मेरा आपके घर जाने और आपका पिता जी से लड़ने में क्या सम्बन्ध है? मैं जाऊँगी तो अपने और आपके विषय में भला-बुरा विचार कर। आप अपने पिता जी से लड़ेंगे तो अपने और पिता जी के व्यवहार को विचार कर। मुझे इन दोनों बातों में कोई संबंध प्रतीत नहीं होता।"

"तो अपना और मेरा ही भला-बुरा विचार कर मेरे साथ चली चलो।"

"आपके घर पर चलकर रहने में मेरा भला नहीं है।"

"तुम मेरी स्त्री हो। तुम्हारा मेरे साथ रहना ही शोभा देता है।"

"ठीक है। जब आपने दूसरा विवाह कर लिया है तो यह निर्णय हो गया है कि आपको अपनी पहली पत्नी की आवश्यकता नहीं रही। आपकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओर से विवाह-बंधन तोड़ डाला गया है। अब क्या अपनी दूसरी पत्नी से भी विवाह-बन्धन तोड़ना चाहते हैं?"

"शायद वह तोड़ना चाहती है।"

"तो वह टूट लेने दीजिए। पीछे मैं अपने विषय में विचार कर लूँगी।"

इस उत्तर में आशा की झलक पा शंकर नगर को लौट गया। घर पर पहुँचकर उसको पता लगा कि लक्ष्मी ने पाँच सौ रुपए लालाजी मुख पर दे मारे हैं। पिता जी रुपया तिजोरी में रखने गए तो वह कपड़े पहन मायके चली गई है और पिता जी दुकान पर चले गए हैं। शंकर दुकान पर गया तो लाला नत्थूमल्ल ने पूछा, "कहाँ गए थे तुम?"

"गाँव गया था...सोहनी से मिलने के लिए।"

"दोनों से सम्बन्ध बनाए रखते हो? एक को रुपया देते हो, दूसरी से प्रेम करते हो?"

"आपने अपनी सम्मोहिनी शक्ति से मुझे मूर्ख बना रखा था। आपके कहने पर मैंने सोहनी की माँ को मंगल के विरुद्ध भड़काया और उसका सत्यानाश करने का यत्न किया। आपने ही मुझे एक सुन्दर पत्नी को छोड़ एक कुरूपा से विवाह करने पर विवश किया। आपका यह प्रभाव एक सीमा से अधिक नहीं चल सका। मुझे अपनी भूल का पता चल गया है। मैं यह चाहता हूँ कि मुझे आप पृथक् कर दें।"

"तो किसने रोका है तुमको? जाओ न, पृथक् दुकान कर लो।"

"मुझे मेरा भाग दे दीजिए।"

"मैं और तुम पत्तीदार हैं क्या? मैंने यह धन-दौलत अपनी मेहनत से पैदा की है। मैं इसका मालिक हूँ। मैं तुम्हें कुछ नहीं दूँगा। निकल जाओ दुकान से बाहर!"

इस पर भी शंकर अपने स्थान से हिला तक नहीं। बैठा-बैठा अपने पिता का मुख देखता रहा। उसको अनिश्चितमन देख लाला नत्थूमल्ल फिर बोला, "जब से तुम दुकान पर काम करने लगे हो, मैं तुम्हें खाने-पहनने को देता रहा हूँ। तुमने मेरी चोरी करनी आरम्भ की है। मैं तुमको घर से और दुकान से निकालता हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शंकर अभी भी विस्मय में अपने पिता की बात को समझने का यत्न करता रहा। पिता ने आगे कहा, "अब जाओ, चले जाओ यहाँ से!"

विवश शंकर उठा। जूता पहन दुकान से निकल गया। वह दुकान से सीधा घर गया। वहाँ अपने कमरे में जाकर लेट रहा। लेटा-लेटा अपने भावी जीवन को चलाने के उपाय सोचने लगा। उसके पास स्त्री के पहनने के भूषण थे। उसके मन में विचार आया कि उनको बेचकर किसी दूसरे नगर में जाकर नौकरी कर ले। वह दुकान पर केवल मुनीमी कर सकता था और एक मुनीम का वेतन चालीस रुपया मात्र मासिक था। इतने में उसका गुज़ार कैसे होगा? चालीस रुपए तो लक्ष्मी के साबुन-तेल का खर्च था। वह भूषण बेचकर कोई छोटी-मोटी दुकान करने की योजना करने लगा। परन्तु भूषण कितने हैं और उनका मिलेगा क्या? यह विचार कर वह काँप उठा। भूषण लगभग बीस तोले सोने के थे। उनका दाम छः सौ रुपए से कम ही होता। इस पर भी उसने विचार किया कि पहले देखे तो सही कि है क्या?

इतना विचार कर वह पलँग से उठा और उसने स्त्री के संदूक को खोलने के लिए चाबी ढूँढने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई। चाबी सन्दूक के साथ ही लगी थी। उसने संदूक खोला तो उसको खाली पाया। एक भी भूषण अथवा कीमती कपड़ा वहाँ नहीं था। लक्ष्मी सब निकालकर ले गई थी। जितने संदूक वहाँ रखे थे, सबकी तलाशी उसने लेनी आरम्भ कर दी। एक भी पैसा नकद नहीं मिला। जो कपड़े लक्ष्मी खरीदकर लाई थी और जिनका दाम चुकाने के लिए उसने पाँच सौ रुपया माँगा था, वे भी लक्ष्मी अपने साथ ले गई थी।

इससे शंकर को भारी निराशा हुई। उसके सब हवाई किले रेत की दीवार के समान गिर गए। वह हतोत्साह होकर पुनः पलँग पर गिर गया।

दिन व्यतीत हो रात हो गई। भोजन का समय हुआ। माँ ने शंकर को रोटी खाने के लिए बुलाया। उसको भूख लग रही थी। वह उठा और चौके में भोजन करने बैठ गया। भोजन करते हुए उसने माँ से पूछा, "माँ, पिता जी खा चुके हैं?"

"हाँ। वे सोने चले गए हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"लक्ष्मी तुम्हें कुछ कहकर गई है, माँ?"

"हाँ। वह यह कह गई है कि इस घर में फिर नहीं आवेगी।"

"क्यों?"

"कहती थी कि हम कमीने हैं।"

इस कहने से शंकर को क्रोध तो बहुत आया, परन्तु भीतर-ही-भीतर पी गया। भोजन कर जब उठने लगा तो माँ ने पूछा, "यह सब झगड़ा किस बात का है बेटा?"

"माँ! हमने बहुत पापकर्म किए हैं। ये सब उसी का परिणाम है। पिता जी ने मुझे दुकान से निकाल दिया है। मेरे पास एक पैसा भी नहीं जो अपना कारोबार चला सकूँ। इधर लक्ष्मी सब भूषण-वस्त्र लेकर चली गई है।"

"मेरा कहा मानो बेटा! कुछ दिन के लिए कहीं टल जाओ। पीछे जब तुम्हारे पिता में तुम्हारा मोह बल पकड़ेगा तो तुम्हें बुला लूँगी।"

"कहाँ जाऊँ? जेब में तो एक पैसा भी नहीं।"

"मैं तुम्हें कल प्रातःकाल पचास रुपया दूँगी। कुछ दिन के लिए हरिद्वार चले जाओ। किसी को बताना नहीं! जब उनका क्रोध शान्त होगा तो फिर तुम्हें बुला भेजूँगी।"

शंकर चुप रहा। उसको यह योजना पसन्द तो आई, परन्तु इसके सफल होने में कितना काल लगेगा, वह यह अनुमान नहीं लगा सका। हाथ धो कुल्ला कर अपने कमरे में जाकर सो रहा।

प्रातःकाल माँ आई और पचास रुपए का नोट उसको पकड़ाकर बोली, "यदि उनका क्रोध उतरने में देरी लगी तो प्रतिमास इतने रुपए तुम्हें भेज दिया करूँगी। परन्तु मैं आशा करती हूँ कि इतनी देर नहीं लगेगी।"

११

शंकर तब तक अपने कमरे में छुपा रहा जब तक उसका पिता प्रातःकाल का भोजन कर दुकान पर नहीं चला गया। पश्चात् उसने अपना बिस्तरा और ट्रंक ठीक किया और भाड़े का टाँगा लेकर रेल के स्टेशन को चल पड़ा।

वह घर से अभी कुछ ही दूर गया था कि उसके टाँगे को हाथ से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संकेत कर उसके साले मनसाराम ने रोक लिया। टाँगा रुकने पर उसने शंकर से पूछा, "भैया, कहाँ जा रहे हो?"

"नरक-धाम को।"

"मैं तुमको लेने आया हूँ।"

"कहाँ के लिए?"

"स्वर्गधाम के लिए। चलो भैया! लक्ष्मी ने बुला भेजा है। उसका कहना है कि आपके लिए दुकान का प्रबन्ध कर दिया गया है।"

इस समाचार से शंकर उसका मुख देखता रह गया। जिस बात के लिए यह लालायित था, वह लक्ष्मी से सम्पन्न होगी, यह जानकर उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। भाग्य की गति विचित्र है! उसने मनसाराम को टाँगे में बैठा लिया और टाँगे को ससुराल की ओर घुमा दिया।

लक्ष्मी अपनी माँ के घर में अपने पिता लाला चूहड़मल के सामने बैठी थी। शंकर वहाँ पहुँचा। उसने टाँगा अभी छोड़ा नहीं था, अपना बिस्तरा और ट्रंक उसमें ही रहने दिया था, और स्वयं पूरी बात जानने के लिए भीतर चला आया। उसको देखकर उसके ससुर ने कहा, "आओ बेटा! इधर आओ। मैंने सब बात लक्ष्मी से सुन ली है और समझ ली है। दामाद क्या और बेटा क्या! मैंने तुम्हारे कामकाज का प्रबन्ध कर दिया है। मनसाराम के साथ तुम्हारी आठ-आठ आने की साझेदारी रही। अब नई मंडी में तुम दोनों काम करो। रुपया जितना भी चाहिए, मिल जाएगा।"

"नई मंडी में तो पिता जी की दुकान है न?"

"तो क्या हुआ! तुमने उनसे झगड़ा तो करना नहीं। ना ही उनसे रुपया लेना है।"

"पर उनसे प्रतिस्पर्धा तो चल पड़ेगी।"

"तुम नहीं करना। वे करेंगे तो स्वयं फल पावेंगे।"

यद्यपि शंकर को बात पसंद नहीं आई, परन्तु अपने ससुर की सहानुभूति की तुलना पिता की क्रूरता से कर वह विवश हो गया और उसने अपनी नौका की पतवार अपने ससुर के हाथ में दे दी।

उसी दिन से वह घर-जमाई बन गया।

लाला चूहड़मल का मकान बहुत बड़ा था। उसका परिवार भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लम्बा-चौड़ा था। मकान के एक बाजू में दो कमरे शंकर और लक्ष्मी के लिए खाली कर दिए गए।

अगले दिन मनसाराम और शंकरदास के नाम से एक आढ़त की दुकान नई मंडी में लाला नत्थूमल्ल की बग़ल में खुल गई। जब शंकर वहाँ जाकर बैठा तो उसका पिता विस्मय में उसका मुख देखता रह गया। अपनी दुकान से अवकाश पा नत्थूमल्ल अपने लड़के से आकर पूछने लगा, "क्यों जी, तुम तो हरिद्वार गए थे?"

"तो आपको मालूम है? शायद आपके कहने पर ही माँ ने पचास रुपए देने की कृपा की थी। अच्छा हुआ नहीं गया।"

"पर अब तुम मेरे से मुकाबिला करोगे?"

"अभी तो आज दुकान का मुहूर्त्त किया है। देखें कैसे पटती है। आपको और अधिक पैदा करने की कुछ आवश्यकता भी तो नहीं! आपका कौन लड़का-बाला है, जिसके लिए कुछ कमाने की आवश्यकता हो सकती है?"

लाला चूहड़मल की नीति न तो शंकर की समझ में आई और न ही नत्थूमल्ल की। दुकानों का मुकाबिला होना ही था। साथ ही लाला चूहड़मल्ल ने बाज़ार में नत्थूमल्ल के विरुद्ध ऐसा वातावरण बनाया कि उसका लेन-देन ही बन्द हो गया। जहाँ नत्थूमल्ल की लाखों की हुंडी चलती थी, वहाँ उसकी दस रुपए की भी साख नहीं रही।

जिन लोगों के पास नत्थूमल्ल के नाम की हुंडियाँ थीं, वे चिन्तित प्रतीत होने लगे और चूहड़मल उन हुंडियों को पच्चीस प्रतिशत कम पर ख़रीदने लगा। जब दो लाख की हुंडियाँ खरीदी जा चुकीं, तो चूहड़मल ने दाम और कम कर दिया। सौ के पचास रुपए हो गए। नत्थूमल्ल सबका एकदम भुगतान कर नहीं सकता था। कारण यह कि जहाँ उसका रुपया लगा था, वह एकदम वसूल नहीं हो रहा था।

मनसाराम-शंकरदास की दुकान खुलने के तीन महीने के भीतर नत्थूमल्ल की दस लाख की हुंडियाँ चूहड़मल ने खरीद ली थीं। उनमें से कई पुग चुकी थीं और शेष एक-दो महीने के भीतर पुग रही थीं।

इस समय लाला नत्थूमल्ल रुपया इकट्ठा कर रहा था। जिनकी ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका रुपया लगता था, जिन पर उसने कभी एहसान किया था, उनसे और बैंकों से वह रुपया जमा करने लगा, परन्तु दस लाख का प्रबन्ध बहुत कठिन था। परिणाम यह हुआ कि नत्थूमल्ल को अपनी हुंडियों का रुपया देने में असमर्थता प्रकट करनी पड़ी और उसकी दुकान और माल के गोदामों पर ताला लग गया। नत्थूमल्ल को दिवाले के लिए प्रार्थना करनी पड़ी।

मकान और पूर्ण जायदाद की कुर्की हो नीलाम हो गई, और सारी सम्पत्ति चूहड़मल ने खरीद ली। इस सब झगड़े में दो वर्ष लग गए। इस समय चूहड़मल का अन्तिम प्रहार हुआ। मकान की, जिसमें नत्थूमल्ल रहता था, बेदखली की आज्ञा लेकर शंकर को भेज दिया।

जब शंकर मकान पर अधिकार जमाने के लिए गया तो नत्थूमल्ल ने नम्रता से अपने पुत्र को कहा, "शंकर, मकान के नीचे एक कमरा मेरे रहने के लिए मेरे पास रहने दो। किराया दे दिया करूँगा।"

शंकर ने उत्तर दिया, "पिता जी, यह मकान मैंने नहीं खरीदा। मैं तो खरीदनेवाले का गुमाश्ता हूँ। यदि आप कहें तो आपकी प्रार्थना लाला जी तक पहुँचा देता हूँ।"

"तो आज बेदखली नहीं करवाओगे?"

"एक दिन रुक सकता हूँ।"

घर जाकर शंकर ने जब यह प्रस्ताव लाला चूहड़मल के सामने रखा, तो वह हँस दिया। उसने कहा, "देखो शंकर! नत्थूमल्ल मेरा सम्बन्धी है। परन्तु उसने मेरे दामाद को पचास रुपए देकर घर से निकाल दिया था। उसने मेरी लड़की को पाँच सौ रुपया कपड़ा खरीदने के लिए देने से इन्कार कर दिया था। अब भगवान ने उल्टी गंगा बहा दी है। मैं इसमें क्या कर सकता हूँ? मैंने सारा का सारा मकान एक आदमी के पास किराए पर उठा दिया है। इस कारण उसका कोई भाग यदि उसने किराए पर लेना है तो उससे जाकर ले सकता है। मैं आपत्ति नहीं करूँगा।"

"वह कौन है?"

"मेरी लड़की लक्ष्मी।"

"कितना किराया उससे तय हुआ है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पचास रुपया मासिक।"

"बहुत अच्छी बात। किराएदार से सीधी बात कर लेंगे।"

रात को बात लक्ष्मी से कर दी गई। उसने यह कहा, "पिता जी ने यह मकान मुझे किराए पर दिया है। मैं स्वयं वहाँ पर जाकर रहूँगी। मैं वह मकान किसी को भाड़े पर नहीं दूँगी। उस मकान को किराए पर लेने का एक यह भी प्रयोजन है कि आपके पिताजी को घर से निकलवाया जाए।"

"तो बेदखली लेकर कल मैं नहीं जाऊँगा।"

"आपकी इच्छा। मैं स्वयं जाऊँगी।"

"तुम जा सकती हो।" शंकर ने क्रोध में बेदखली के कागजात उसके सामने फेंकते हुए कहा।

लक्ष्मी ने कागजात उठाते हुए कहा, "आप एक निर्लज्ज बाप के बेटे हैं, इस कारण आपको अपना अपमान कराकर लज्जा नहीं आई। परन्तु मैं तो उस दिन को भूल नहीं सकती जब मेरा ससुर मेरे पति को चोर कह रहा था।"

१२

मंगल का कार्य सरलता से चल रहा था। मानिनी शरीर और बुद्धि, दोनों में द्रुतगति से उन्नति कर रही थी। पंडित बृजलाल की सहायता से मानिनी की शिक्षा का प्रबन्ध कर दिया गया था। हिन्दी और संस्कृत भाषाओं के पढ़ाने का प्रबन्ध एक पंडित द्वारा हो गया था। अंग्रेजी और गणित वह घर पर अपने भाई दीप से पढ़ लेती थी। परन्तु बुद्धि का विकास केवल शिक्षा की धुरी पर नहीं चलता। शिक्षा के साथ-साथ घर का वातावरण और पूर्व-जन्म के संस्कार भी कार्य करते प्रतीत होते हैं। मानिनी अनेकानेक संस्कारों के परिणामस्वरूप पनप रही थी।

मंगल को यह बात आश्चर्यजनक प्रतीत हुई कि मानिनी रामू चाचा के गुरुदेव की चर्चा प्राय: करती रहती है। एक दिन सब बैठे हुए थे। मंगल की माँ, बहिन, स्त्री और बच्चे थे। मंगल रामू के एक सहस्त्र रुपए बना देने की बात कर रहा था। मंगल ने कहा था, नगर में गौरी शंकर का मन्दिर बन रहा है। मैं वहीं एक सहस्त्र रुपए चन्दा देना लिखवा आया हूँ। नाम रामू का लिखवा दिया है। मंगल की माँ ने कहा, "कैसी विचित्र बात है! समझ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं आती।''

उत्तर मानिनी ने दिया, ''कल रात को मैं लैम्प जलाकर पेड़ के नीचे बैठी पढ़ रही थी। दूर से किसी के आने का शब्द हुआ। मैंने जब देखा तो कुछ भी दिखाई नहीं दिया। शब्द हो रहा था पर कुछ दिखाई नहीं देता था। धीरे-धीरे कोई श्वेत वस्तु आती दिखाई पड़ी। कुछ ठहरने पर कोई व्यक्ति श्वेत धोती-कुर्ता पहने आता दिखाई दिया। फिर कुछ समय पश्चात् समीप आने पर पता चला कि पुजारी ताऊ जी चले आ रहे हैं। जब वे बिल्कुल समीप आ गए तो देखा कि वे मुस्करा रहे हैं।....

''मैंने उनसे कहा, 'कैसी विचित्र बात है कि आप भी थे, मेरी आँखें भी थीं और प्रकाश भी था, परन्तु आप दिखाई नहीं दिए।'

''मेरे इस कथन को सुनकर वे कुर्सी पर बैठकर कहने लगे, 'बेटी मानिनी! मनुष्य की शक्ति सीमित है, बुद्धि सीमित है और इन्द्रियों की अनुभूति भी सीमित है। इस कारण जो कुछ उनकी सीमा के भीतर हो, वही प्रतीत होता है। पहले मैं तुम्हारी आँखों की अनुभव-शक्ति की सीमा के बाहर था। धीरे-धीरे मैं उस सीमा में आ गया और धीरे-धीरे मेरी प्रतीति तुमको हुई।'

''उनका कहना था, 'जितना-जितना मनुष्य शक्ति-सम्पन्न होता जाता है उतना-उतना वह अपने भूत और भविष्य की अधिक-अधिक अनुभूति करने में सफल होता जाता है।....

''फिर उन्होंने कहा कि योगाभ्यास से ज्ञानचक्षु इतने तीव्र हो जाते हैं कि मनुष्य अपने पूर्व-जन्मों के कर्मों को भी देखने लगता है। मैं समझती हूँ कि मुझे भी अपने पूर्व-जन्म का कुछ धुँधला-सा ज्ञान हो रहा है।''

इस पर सब हँस पड़े। यह पहली बार नहीं थी जब मानिनी ने ऐसा कहा था। आज उसने अन्धकारमय खुले मैदान में दीपक से प्रकाश के क्षेत्र की सीमा का उदाहरण देकर अपना आशय समझाने का यत्न किया था। मंगल उसकी ऐसी बातों से विस्मय में डूब जाया करता था। मोहिनी उसकी बातें सुनकर गम्भीर और चिन्ता में पड़ जाया करती थी।

दीप ने मानिनी की हँसी उड़ाने के लिए कह दिया, ''तो तुम भी योगाभ्यास करने लगी हो?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ! मैंने रामू चाचा से पूछा था। उसने मुझे एक बात बताई है। उससे मुझको ऐसा प्रतीत होता है कि मैं यहाँ से बहुत दूर पहाड़ी के ऊपर नदी के किनारे बसे एक गाँव में रहती थी। रामू के गुरुदेव मेरे साथ खेला करते थे।....

"पश्चात् हमारा विवाह हो गया। परन्तु फिर क्या हुआ, समझ में नहीं आता। जैसे दीपक के प्रकाश से कोई रात के अन्धकार में विलीन हो जाता है, वैसे ही नटेश्वर कहाँ गए, पता नहीं चला। मैं अब देखती हूँ कि जैसे पुरोहित जी रात को अन्धकार से प्रकाश में आ गए थे, वैसे ही वे पुनः प्रकाश में आ गए हैं।"

"पगली कहीं की!" मंगल की माँ ने कहा, "वे तो तुम्हारे पिता से भी बड़ी आयु के हैं।"

"पर यह मैं नित्य स्वप्नों में और कभी-कभी जब एकान्त में बैठी विचार करती हूँ तो देखा करती हूँ।"

"तुम्हारा तो मस्तिष्क बिगड़ रहा प्रतीत होता है।" मोहिनी ने कहा।

"माँ जी! यह बात नहीं। योगेश्वर कृष्ण भगवान ने भी तो गीता में कहा है—'मेरे अनेक जन्म हुए हैं। हे अर्जुन! तुम्हारे भी कई जन्म हो चुके हैं। तुम नहीं जानते, पर मैं जानता हूँ।' "

अब फिर दीप ने पूछा, "भला बताओ तो योगाभ्यास कैसे करती हो?"

सब हँसने लगे। परन्तु मानिनी ने फिर कहा, "पुजारी ताऊ जी जानते हैं। मैं एक दिन पूजा कर रही थी कि ताऊ जी ने देख लिया था और उन्होंने मुझे मेरी भूल सुझाई थी।"

मंगल को ऐसा प्रतीत हो रहा था कि इस लड़की का विवाह जगदीशचन्द्र से हुए बिना नहीं रहेगा। उसकी चिन्ता का कारण यह था कि जगदीशचन्द्र सैंतालीस-अड़तालीस वर्ष की आयु का हो रहा था। वह विचार करता रहता था कि यह विवाह सफल और सुखकारक होगा क्या?

ऐसी चिन्ता और विचार होने पर भी मानिनी की उन्नति और विकास दिन दुगुना और रात चौगुना हो रहा था।

मंगल सप्ताह में एक-दो बार काम से नगर जाया करता था। जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाता तो नगर के समाचार, जैसे वह सुन पाता था, लाकर गाँव में सुनाया करता था। एक दिन वह समाचार लाया कि शंकर ने पिता से लड़कर पृथक् दुकान खोल ली है। एक और दिन वह समाचार लाया कि लाला नत्थूमल्ल का दिवाला निकल गया है। पश्चात् समाचार मिला कि नत्थूमल्ल भिखमंगा हो गया है, उसकी पूर्ण सम्पत्ति कुड़क हो गई है। एक और दिन यह समाचार आया कि लाला नत्थूमल्ल को घर से बेदखल कर दिया गया है।

एक दिन मंगल नई मंडी में अपना माल तुलवा रहा था। सारी मंडी में नत्थूमल्ल के अपनी स्त्री-सहित एक डोरी-लोटा लेकर घर से निकल जाने की चर्चा हो रही थी। कोई कहता था कि लाला जी ने पैदल ही हरिद्वार जाने का विचार किया है। कोई यह भी कहता था कि उसके पास काफी धन है और यह निर्धनता केवलमात्र ढोंग है।

मंगल की इच्छा हुई कि लाला जी से मिलकर उनके मन की अवस्था को जाने। इससे उसने बातें करनेवाले से पूछा, "लाला नत्थूमल्ल की बात कर रहे हो?"

"हाँ!"

"वे घर से निकल गए हैं क्या?"

"हाँ! अभी-अभी समाचार मिला है कि लाला चूहड़मल की लड़की स्वयं बेदखली का परवाना लेकर गई थी। उसको देखकर लाला नत्थूमल्ल और उनकी स्त्री केवल एक लोटा-डोरी लेकर घर से निकल गए हैं।"

"वे किधर गए हैं?"

"यहाँ से नहर के किनारे-किनारे गुजराँवाला जाएँगे। वहाँ से लाहौर और फिर हरिद्वार जाने की बात मशहूर हो रही है।"

मंगल ने एक क्षण विचार किया और पश्चात् तुरन्त माल को दुकानदार को तोलने के लिए सौंप, स्वयं लाला नत्थूमल्ल को ढूँढने चल पड़ा। उसका विचार था कि नत्थूमल्ल अवश्य पैदल ही नहर की ओर चल पड़ा होगा। इससे उसने टाँगा किया और गुजराँवाला की सड़क पर नहर की ओर कुछ दूर तक ढूँढने के विचार से चल पड़ा।

नगर से तीन मील की दूरी पर सड़क के किनारे एक कुएँ की जगत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर लाला जी और उसकी स्त्री बैठे सुस्ता रहे थे। मंगल ने उनको देखा, पहचाना और टाँगा खड़ा कर उनके समीप जा पहुँचा। नत्थूमल्ल ने उसको देखा और विस्मय से पूछा, "कहाँ जा रहे हो मंगल?"

"आपको ढूँढने निकला था। आप जल्दी ही मिल गए सो अच्छा हुआ।"

"तो क्या तुम्हें भी हमसे कुछ लेना है? इस समय तो हमारे पास कुछ नहीं है।"

"मैं कुछ लेने नहीं आया। एक विचार आपके सामने रखने आया हूँ। कहें तो निवेदन करूँ?"

"हाँ भैया! तुम भी कह लो।"

"मेरा विचार है कि आप हमारे गाँव में चलकर रहें। वहाँ आपकी वृद्धावस्था सुगमता से कट जायगी।"

"हमारे पास खाने-पीने के लिए एक कौड़ी भी नहीं।"

"लाला जी, कौड़ियाँ अथवा रुपए खाए-पिए नहीं जाते। अन्न और वस्त्र गाँव में बनते हैं, सो आपको मिल जावेंगे।"

"तुम क्यों दोगे मुझे, जबकि अपने लड़के ने ही मुझसे मुख मोड़ लिया है?"

"वहाँ आपकी पुत्रवधू रहती है। वह आपको देगी।"

"वह क्यों देगी? मैंने उसके साथ कुछ अच्छा व्यवहार तो किया नहीं!"

"देखिए लाला जी! अच्छे-बुरे का निर्णय और उसका फल देनेवाले हम प्राणी नहीं हैं। इस बात का निर्णय और फल तो भगवान के हाथ है। हमने तो अपना कर्तव्य पालन करना है। सोहनी को आपके प्रति कोई द्वेष नहीं है। वह आपके जीवन की अंतिम घड़ियों को सुखमय बनाने का यत्न करेगी।"

"तुमने उससे पूछा है, मंगल?"

"अभी तो पूछकर नहीं आया, परन्तु आपके विषय में चर्चा तो दो वर्ष से चल रही है। मुझे विश्वास है कि वह ऐसा ही समझती है जैसा मैं कह रहा हूँ।"

"क्यों शंकर की माँ! क्या कहती हो तुम?" लाला नत्थूमल्ल ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी पत्नी को सम्बोधन कर पूछा।

"मैं तो गंगा के किनारे जाकर मरना चाहती हूँ।"

"माँ जी, यह सौभाग्य तो पूर्व-जन्म के कर्मों से ही प्राप्त होता है। यदि आपने गंगाजी के तट पर मरना होगा तो हमारे गाँव में रहते हुए भी आप वहाँ जा सकेंगी। यदि नहीं तो वहाँ रहती हुई भी मरने के समय कहीं अन्यत्र टल जाएँगी।"

"इस पर भी यत्न तो करना ही चाहिए!"

"इस पर भी मैं तो यही कहता हूँ कि इस प्रकार पैदल जाने से भारी कष्ट होगा। मेरे पास इस समय कुछ रुपए हैं। उन्हें ले लीजिए और रेल द्वारा वहाँ चले जाइए।"

इतना कह मंगल ने अपनी जेब से पच्चीस रुपए निकालकर उनके सामने रख दिए। लाला नत्थूमल्ल ने रुपए देख सिर हिला दिया और कहा, "नहीं भैया! यदि मरना है तो दूसरे से दान लेकर नहीं मरेंगे।"

"तो इसका अर्थ यह हुआ कि आपके पास कुछ पैसा है?"

"हाँ! तुम्हें झूठ कहने की आवश्यकता नहीं। परन्तु इतना कम है कि उसमें से पाई-पाई की रक्षा की आवश्यकता है।"

मंगल ने रुपए उठाकर अपनी जेब में रख लिये और कहा, "अच्छी बात है। देखिए, गाँव में आपकी पुत्रवधू रहती है। आवश्यकता पड़ने पर उसका घर आपके लिए खुला है।"

इतना कहकर मंगल टाँगे में सवार हो नगर को वापस लौट गया। जब वह दृष्टि से ओझल हो गया तो शंकर की माँ ने कहा, "आपने यह क्यों बताया कि हमारे पास कुछ पैसा है?"

"मंगल के सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार से मैं उससे कोई बात छुपा नहीं सका।"

"तुम वास्तव में सठिया गए हो। वह अब नगर में जाकर प्रकट कर देगा कि हमारे पास कुछ छुपा धन है, जो हमने रिसीवर को नहीं बताया।"

"जब तक यह बात फैलेगी और हमारे पकड़ने का यत्न होगा, तब तक हम कहीं-के-कहीं पहुँच जावेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत

१

"जब तुम अपने जन्मदाता माता-पिता के साथ उचित व्यवहार नहीं रख सके तो तुम मेरे साथ क्या करोगे?"

सोहनी सामने बैठे शंकर को कह रही थी। शंकर उसे यह कहने आया था कि मेरा अपनी दूसरी पत्नी लक्ष्मी से प्रेम नहीं रहा, और यदि तुम मेरे साथ पुनः चलकर रहोगी, तो तुम्हारे साथ मेरा अब पहले-जैसा व्यवहार न होगा।

शंकर सोहनी का आरोप सुन हताश नहीं हुआ। उसने कहा, "माता-पिता ही तो सब झगड़े की जड़ थे! उन्होंने ही मुझे तुम्हारे भाई मंगल के विरुद्ध कार्य करने के लिए भड़काया था। उनकी ही प्रेरणा से मैंने तुम्हारी माता को तुम्हारे भाई और भाभी के विरुद्ध कान भरे थे। उन्होंने ही मुझे लक्ष्मी को तंग करने के लिए रुपया देना बंद कर दिया था। मेरी श्रद्धा उनके लिए नहीं रही थी। यही कारण है कि उन पर जब विपत्ति आई तो उनके अपनी ही कर्मों का भोग जानकर मैंने उनकी कोई सहायता नहीं की।"

"माता-पिता से प्रेम रुपए-पैसे के बदले थोड़े ही किया जाता है! यह सम्बन्ध प्रकृति के सम्बन्ध से बना हुआ है। उस सम्बन्ध के नाते ही माता-पिता का आदर और उनकी सेवा की जाती है। जब वे केवल एक लोटा और डोरी ही लेकर घर से निकले थे तो यह तुम्हारा कर्तव्य था कि उनको कहीं अन्यत्र रखकर उनकी सेवा और सहायता करते।"

"ठीक है। यह बात तुम्हारे विचार के अनुकूल है, परन्तु मेरे विचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में तो उन्होंने मेरे साथ दुर्व्यवहार कर अपना सारा अधिकार खो दिया था।"

"अब आप जा सकते हैं। मुझे माँ के लिए दूध तैयार करना है।" सोहनी ने उठकर शंकर को विदा होने का संकेत कर कहा।

शंकर गाँव से लौटकर आया तो मंगल अभी भी मंडी में माल तुलवाकर उसका हिसाब-किताब करवा रहा था। उसको देरी इस कारण हो गई थी कि वह लाला नत्थूमल्ल को पैदल ही हरिद्वार जाने से रोकने के लिए गया था। जब वे नहीं माने तो वापस आकर अपने काम में लग गया था। शंकर जब दुकान पर आया तो मंगल को अपने आढ़ती की दुकान पर बैठे देखकर उसके पास गया और कहने लगा, "मंगल भैया, देखा है न क्या हो गया है?"

"देखा है।"

"मैं इस विषय में आपसे कुछ बात करना चाहता हूँ।"

"करो।"

"यहाँ से छुट्टी पाकर हमारी दुकान पर आ जाएँ तो अच्छा हो।"

"मैंने गाँव जाना है और अँधेरा हो रहा है।"

"मैं तुम्हारे साथ-साथ गाँव तक ही चलूँगा।"

"अच्छी बात है।"

मार्ग में चलते हुए शंकर ने उसे अपने पिता से लड़ाई-झगड़े का सारा इतिहास बतलाया। इसमें उसने यह भी बताया कि लक्ष्मी से उसका विवाह पिता जी के षड्यन्त्र का परिणाम था। वह आरम्भ से ही सोहनी से प्रेम करता है और यह प्रेम ही उसके और पिता जी के झगड़े का कारण हुआ है। अंत में शंकर ने मंगल को उसका सोहनी से पुनः सम्बन्ध स्थापित करवा देने की प्रार्थना की। उसने कहा, "मैं लक्ष्मी को छोड़ने को तैयार हूँ। यदि सोहनी लौट आवे तो मैं उसके साथ एक पृथक् मकान में रहने को तैयार हूँ।"

मंगल ने बार-बार समझाया, "शंकर भैया, सोहनी के इस मामले में मैं हस्तक्षेप नहीं कर सकता। वह चाहे तो तुम्हारे घर जा सकती है, वह चाहे तो यहीं रह सकती है। इन दोनों दशाओं में मैं उसको कोई सम्मति नहीं दूँगा। वह स्वतन्त्र है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सो तो है ही। फिर भी तुम बड़े हो, अपनी राय तो दे सकते हो! औरत को अपने पति के घर पर ही रहना चाहिए।"

"शंकर! मैं उसे कुछ नहीं कहूँगा। तुम स्वयं क्यों नहीं कहते? तुम्हारा मार्ग किसी ने रोका नहीं। साथ ही एक बात और बता देना चाहता हूँ। वह है त्याग की भावना। मैंने जीवन-भर कोई सौदा नहीं किया। सदा यही विचार करता रहा हूँ कि दूसरे के हित में मैं क्या कर सकता हूँ। सोहनी यदि तुम्हारे साथ जाना चाहेगी तो मैं उसको रोकूँगा नहीं। यदि वह नहीं जाना चाहेगी तो उसको सुखी रखने का पूर्ण यत्न करूँगा। यह कदापि नहीं हो सकेगा कि मैं उसे अपने मन की रुचि के विरुद्ध कुछ भी कहूँ।"

उस रात शंकर घर पहुँचा तो लक्ष्मी ने प्रसन्नता से फूलते हुए कहा, "मैंने बूढ़े और बुढ़िया को घर से निकाल दिया है।"

शंकर बितर-बितर उसका मुख देखता रहा। लक्ष्मी ने कहना जारी रखा, "वे इस आशा में आए थे कि आप वहाँ होंगे, परन्तु मुझे देख भौंचक्के-से हो गए। जब मैंने उनको बेदखली का नोटिस दिखाया तो उन्होंने नीचे का कमरा किराए पर माँगा। मैंने वह भी नहीं माना और स्पष्ट रूप में उन्हें कह दिया कि वे यहाँ नहीं रह सकते।"

शंकर ने अब भी कुछ नहीं कहा। लक्ष्मी ने फिर कहा, "मैं समझती हूँ कि कल से हम उस मकान में चलकर रहेंगे। यहाँ एक ही कमरे में रहते-रहते मेरा दम घुट रहा है।"

अब भी शंकर ने कुछ उत्तर नहीं दिया। इस पर लक्ष्मी ने विस्मय प्रकट करते हुए पूछा, "आप कुछ कह नहीं रहे?"

"मेरे कहने को कुछ है भी नहीं। अब तो तुम्हारे ही आदेश चलते हैं।"

"ठीक है, पर हैं ये आपके लाभ के ही।"

"होंगे!"

"तो आपको सन्देह है इसमें क्या?"

"मुझे तो इसमें सर्वनाश का आरम्भ दिखाई देता है।"

"कैसे?"

"अभी एक से मिलकर आया हूँ। वह कह रहा था कि पिता-पुत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का सम्बन्ध प्राकृतिक है, यह हानि-लाभ पर आश्रित नहीं है। मैंने माता-पिता को घर से निकालकर उस प्राकृतिक सम्बन्ध की अवहेलना की है। इससे प्रकृति बदला लिये बिना नहीं रहेगी। वह बदला क्या होगा, कहना कठिन है।...

"मेरे पिता जी ने एक माँ और एक पुत्र के प्राकृतिक संबंध में बाधा खड़ी की थी, और उसका ही फल हुआ है कि उनका अपने पुत्र से ही सम्बन्ध-विच्छेद हो गया है। मैं यह अनुभव कर रहा हूँ कि यदि मैं भी अपने माता-पिता से प्राकृतिक सम्बन्ध में किसी अन्य विचार को बाधक बनने देता हूँ तो मुझे भी उसका फल भोगना पड़ेगा।"

"यह कायरों का विचार है। आप मेरा हाथ बँटाते रहें, तब मैं देखूँगी कि प्रकृति को हम जीत सकते हैं या नहीं। प्रकृति बनाई जाती है। प्रकृति हमको बनानेवाली नहीं है।"

शंकर की हँसी निकल गई। लक्ष्मी ने प्रश्नभरी दृष्टि से उसकी ओर देखा तो शंकर ने कहा, "मैं भी यह कहा करता था, परन्तु प्रकृति ने मुझे परास्त कर दिया है।"

"वह इसलिए कि आपके पिता अयुक्ति-संगत व्यवहार कर रहे थे।"

"प्रकृति का विरोध भी तो अयुक्ति-संगत है।"

लक्ष्मी को समझ नहीं आया। अगले दिन नौकर की सहायता से उसने अपना सामान बँधवा लिया और अपने ससुर के मकान में जाने के लिए तैयार हो गई।

शंकर दुकान पर जाने लगा तो उसने कहा, "आप दोपहर का भोजन उस मकान में आकर करिएगा।"

"किस मकान में?"

"जो अपना है, जिसमें से आपके पिता ने हमें निकाल दिया था, और जिस पर मैंने अपने पिता जी की सहायता से पुनः अधिकार पा लिया है।"

शंकर ने एक लम्बी साँस ली और कहा, "मैं वहाँ नहीं जाऊँगा।"

"तो यहाँ ससुर के घर की रोटियाँ तोड़ने में मज़ा आता है क्या?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं तो यहाँ भी नहीं रहूँगा।"

"तो कहाँ जाइएगा?"

"अभी निश्चय नहीं कर सका।"

"तो मैं उस मकान में न जाऊँ?"

"मैं तुम्हें आदेश नहीं दे सकता।"

"यदि किसी और मकान में चलूँगी तो आप वहाँ रह सकेंगे क्या?"

"कौन मकान है, यह जानकर ही बताऊँगा।"

शंकर ने अपने व्यवहार में इतनी दृढ़ता पहले कभी प्रकट नहीं की थी। आज भी लक्ष्मी को उस पर विश्वास नहीं आया। वह अपना सब सामान ले अपने ससुराल के मकान में चली गई।

दोपहर के समय शंकर वहाँ नहीं आया। उसने नौकर भेजकर पता कर लिया था कि लक्ष्मी उस मकान में चली गई है। शंकर बाज़ार में गया और ढाबे से भोजन कर दुकान पर लौट आया। सायंकाल तक कार्य में व्यस्त रहा। इस कारण उसको आगे के विषय में विचार करने का अवसर ही नहीं मिला।

जब दुकान का कार्य समाप्त हुआ, तो उसके सामने वह समस्या उत्पन्न हुई कि अब कहाँ जाए? ससुरालवाले घर में जाने का कोई प्रयोजन नहीं था। उसकी स्त्री वहाँ नहीं थी। अपने पुराने घर में वह जाना नहीं चाहता था। माता-पिता को घर से निकालकर वह वहाँ जाकर रहने में आत्मग्लानि अनुभव कर रहा था। इससे वह मकान की तलाश में घूमने लगा। रात पड़ गई थी, मकान मिलना सहज नहीं था। इससे उसने एक ढाबे पर भोजन किया और रेल के स्टेशन के समीप एक धर्मशाला में जाकर ठहर गया।

धर्मशाला का अध्यक्ष उसको जानता था। इससे उसने उसके धर्मशाला में ठहरने पर विस्मय प्रकट किया। परन्तु शंकर के समझाने पर वह चुप हो गया।

२

शंकर की रात-भर प्रतीक्षा करने पर लक्ष्मी क्रोध से लाल-पीली हो रही थी। वह प्रातः ही अपनी माँ के घर में जा पहुँची। पिता शौचादि से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निवृत्त हो पूजा के लिए जा रहा था कि लक्ष्मी ने पूछ लिया, "वे रात यहाँ रहे हैं ?"

"कौन, शंकर ? वह घर पर नहीं गया क्या ?"

"रात-भर प्रतीक्षा करती रही हूँ। वे नहीं आए।"

लाला चूहड़मल इससे चिन्तित तो हुआ, पर पूजा करने चला गया। लक्ष्मी की माँ भी बहुत बुरे विचार मन में करने लगी। उसने कहा, "अब कहाँ पता करें उसका ?"

लक्ष्मी ने यह नहीं बताया कि वह अपने पुराने मकान में जाने से इन्कार कर चुका था। इस कारण घर-भर में हल्ला मच गया। आठ बजे दुकान खुली और नित्यप्रति की भाँति शंकर समय पर दुकान पर आ गया। लक्ष्मी का भाई कुछ देरी से आया था। जब मनसाराम आया तो साथ उसका पिता लाला चूहड़मल भी उसके साथ था। आते ही लाला जी ने ज़रा डाँटकर पूछा, "कहाँ रहे हो रात-भर शंकर ?"

"धर्मशाला में, लाला जी !"

"क्यों, घर में क्या था ?"

"वहाँ जाने को चित्त नहीं किया।"

"क्यों ?"

"पिता जी ने उस मकान में एक कमरा किराए पर माँगा था और हम दे नहीं सके। मुझे उस मकान में रहते लज्जा लगती है।"

"और बीवी को उस मकान में अकेले छोड़ने में लज्जा नहीं लगती क्या ?"

"मैंने उसको कह दिया था कि मैं वहाँ नहीं जाऊँगा। इस पर भी वह वहाँ चली गई, तो मैं क्या करूँ ?"

"करना क्या था ! उसको जाकर समझाते। तुम बाप-बेटों की बात मेरी समझ में नहीं आई। दोनों अड़ियल टट्टुओं की तरह चलते हो।"

अपने पिता पर व्यंग उसको पसन्द नहीं आया। उसने होंठ दाँतों-तले दबाकर क्रोध भीतर ही पी लिया। वह बही में हिसाब लिखने लगा। इस प्रकार बिना उत्तर दिए अपना काम करता रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

इस अवहेलना को देखकर लाला चूहड़मल शंकर के सामने बैठते

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए बोला, "अब घर जाओगे या नहीं ?"

"मेरा उस घर में जाने का विचार नहीं।"

"लक्ष्मी हमारे यहाँ आई हुई है। जाओ, उससे बातचीत कर सब तय कर लो।"

शंकर यह समाचार पाकर उठ खड़ा हुआ और घर पर जा पहुँचा। लक्ष्मी उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। उसको पता चल गया कि उसका पति दुकान पर बैठा काम कर रहा है। जब वह आया तो उसको एक पृथक् कमरे में ले-जाकर पूछने लगी, "रात कहाँ रहे हैं ?"

"धर्मशाला में।"

"वहाँ कब तक रहिएगा ?"

"जब तक रहने योग्य मकान नहीं मिल जाता।"

"तो क्या वह मकान रहने योग्य ही नहीं है ?"

"मेरे रहने योग्य नहीं है।"

"बहुत बड़े नवाब के लड़के हैं न! वह मकान रहने योग्य ही नहीं, जहाँ जन्म हुआ, पले, बड़े हुए, अब वही स्थान पसन्द नहीं!"

"लक्ष्मी!" शंकर ने बात समेटकर कहा, "यह अपनी-अपनी पसन्द है। पसन्द आयु, समय और परिस्थिति से बदलती रहती है। अब मैं वहाँ नहीं रहूँगा।"

"अच्छी बात है। जब तक मकान का प्रबन्ध नहीं हो जाता तब तक तो वहाँ चलकर रहिए।"

"नहीं। अब मैं वहाँ नहीं रहूँगा।"

"मैंने और पिता जी ने जो कुछ आपके लिए किया है, आप इतने कृतघ्न हैं कि उस सब किए पर पानी फेर रहे हैं!"

"मैं उनका विरोध नहीं कर रहा। उन्होंने चतुराई से पिता जी का दिवाला निकलवा दिया। ठीक था या ग़लत, मैंने उन्हें नहीं रोका। मकान हमें मिला था। हम उसमें से एक कमरा उन्हें किराए पर दे सकते थे। हमने नहीं दिया। यह बात मुझे पसन्द नहीं।"

"उन्होंने मेरा और आपका अपमान जो किया था ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

"कुछ भी हो, वे मेरे पिता हैं।"

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरे वे कुछ नहीं थे?"

"अभिप्राय यह है कि मैं तुम्हारा कुछ नहीं हूँ। मेरे होने से ही तो वे कुछ थे।"

"जो थे, जिस योग्य थे, उसी स्थान पर भेज दिए गए हैं।"

शंकर इस प्रकार की बातें सुन-सुन ऊब गया था। इससे वह उठ खड़ा हुआ। कहने लगा, "अच्छी बात है, मैं अभी निश्चय नहीं कर सका कि क्या करूँ। अब से पहले तो मैं यह सोच रहा था कि कोई नया मकान लेकर रहूँगा। परन्तु आज की बात से तो मैं यह भी विचार करने पर विवश हो गया हूँ कि उस नए मकान में भी किसके साथ रहूँ? तुम्हारे अथवा किसी और के?"

लक्ष्मी ऐसे उठ खड़ी हुई जैसे डंक खा गई हो। उठते हुए उसने पूछा, "क्या कहा?"

"जो तुमने सुना है, वही।"

वह दुकान को लौट आया। परन्तु उसके साथ घर का नौकर भी आया और मनसाराम के कान में कुछ संदेश देकर चला गया। शंकर ने दोपहर तक काम किया। दोपहर के भोजन के लिए जाने लगा तो लाला चूहड़मल अपनी दुकान से वहाँ आ गए। शंकर जूता पहनकर जाने लगा तो लाला जी ने पूछा, "कहाँ जा रहे हो?"

"भोजन करने।"

"कहाँ?"

"किसी ढाबे पर।"

"घर क्यों नहीं?"

"घर जाने की रुचि नहीं।"

"देखो, मैं तुमसे यह कहता हूँ कि यदि तुम घर अपनी बीवी के पास नहीं जा सकते तो तुम्हें यहाँ दुकान पर भी आने की आवश्यकता नहीं है।"

"तो यह दुकान भी मुझे लक्ष्मी की कृपा से मिली थी?"

"कुछ भी समझो! यदि तुम अपनी बीवी से सम्बन्ध नहीं रख सकते तो हमारा-तुम्हारा सम्बन्ध भी नहीं रहेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''तो मेरा हिसाब कर दीजिए। मेरे भाग का जो कुछ बनता है मुझको दे दीजिए।''

''हिसाब हो गया और तुम्हारा जो कुछ था तुम्हें मिल गया। अब यहाँ मत आना!''

''मैं समझता हूँ कि कम-से-कम दस हज़ार रुपया मेरे भाग का दुकान में मेरे नाम है।''

''मैं कहता हूँ, तुम्हारा यहाँ कुछ भी नहीं था। यदि मेरी बात स्वीकार नहीं तो जाओ, कचहरी में नालिश कर दो।''

शंकर उसका मुख देखता रह गया। इस समय उसकी जेब में दो रुपए कुछ आने थे। उसके माता-पिता ने तो घर से निकलते समय उसको पचास रुपए दिए थे। पर अब ससुराल वालों ने एक पैसा भी देने से इन्कार कर दिया।

शंकर वहाँ से चला आया। बाज़ार में ढाबे पर रोटी खाई और धर्मशाला में पहुँच परिस्थिति पर विचार करने लगा। उसको कोई मार्ग नहीं सूझ पड़ता था। कचहरी में जाना सुगम नहीं था। वहाँ बिना पैसे के तो जूँ भी नहीं रेंगती। उसके लिए समस्या यह नहीं थी कि नालिश कैसे करे। विचारणीय बात यह थी कि अपना निर्वाह कैसे करे? बहुत विचारोपरान्त वह धर्मशाला से निकला और आढ़त की अन्य दुकानों पर मुनीम की नौकरी के लिए बातचीत करने लगा।

जिस दुकान पर मंगल का हिसाब था, वहाँ उसे नौकरी मिल गई। अगले दिन पच्चीस रुपए मासिक पर वह काम में लग गया।

बात यहीं तक ही नहीं रही। लक्ष्मी ने गुज़ारे के लिए दावा कर दिया। उसका कहना था कि शंकर से उसका विवाह हुआ है। अब वह घर छोड़कर चला गया है। अतः गुज़ारे के लिए मुझे कुछ मिलना चाहिए।

जब शंकर को अदालत की ओर से सम्मन मिले कि वह आकर बताए कि क्यों न उसकी तनख्वाह कुर्क कर ली जाए, तो यह पढ़कर उसकी हँसी निकल गई। उसके मालिक ने उसको पागलों की तरह हँसते हुए विस्मय करते हुए पूछा, ''शंकर, क्या बात है?''

''मेरी बीवी ने दावा किया है कि मेरे वेतन का एक भाग उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुज़ारे के लिए कुर्क कर लिया जाय।"

शंकर का मालिक जानता था कि लक्ष्मी के पास इतनी जायदाद है कि वह शंकर के वेतन-बराबर दस मुनीम नौकर रख सकती है।

लाला बंसीधर, यह शंकर के मालिक का नाम था, शंकर से पूछने लगा, "अब क्या करोगे?"

"कुछ नहीं। मैं यह लिखकर दे आऊँगा कि मेरा वेतन पच्चीस रुपए महीना है, और उसमें से अदालत जितना उचित समझे, कुर्क कर ले।"

"मानो कि आधा वेतन कुर्क हो जाता है तो फिर साढ़े बारह में गुज़र कर सकोगे?"

"यत्न करूँगा।"

"पर तुम झगड़ा क्यों नहीं करते? चाहो तो हम तुम्हारी सहायता करेंगे। उस दिन मंगल आया था और कहता था कि यदि कुछ आवश्यकता हो तो वह सहायता कर सकता है।"

"मैं मुकद्दमा नहीं करूँगा। मुझे यह बात विदित है कि इस सब दुर्भाग्य में मैं दोषी हूँ।"

शंकर ने वही किया जो उसने विचार किया था। मुकद्दमे के दिन वह कचहरी में गया और एक प्रार्थना-पत्र दे आया। उसमें उसने लिखकर दे दिया कि वह पच्चीस रुपए महीना वेतन पाता है। अदालत समझे तो उसके वेतन का उचित भाग कुर्क कर लिया जाय।

अदालत में पुनः शंकर नहीं गया। और एक दिन यह निर्णय उसको मिला कि सात रुपया मासिक उसके वेतन में से लक्ष्मी को मिलेंगे।

३

शंकर का निर्वाह पच्चीस रुपए में ही बहुत कठिनाई से होता था, अब सात और कटने लगे। अठारह रुपए महीने में एक मकान में एक कोठरी के तीन रुपए मासिक किराया देता था। शेष पन्द्रह में रोटी और कपड़ा तथा अन्य आवश्यकताएँ पूरी नहीं हो सकती थीं। उसने सूखी रोटी खानी आरम्भ कर दी। एक दाल और दो रोटी प्रातः और दो रोटी सायंकाल। दूध-घी इत्यादि खाना बन्द कर दिया। उसको भाजी-तरकारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाए महीनों व्यतीत होने लगे। कपड़े बहुत मैले हो जाते, तो उन्हें धोने के लिए दे सकता था; फट जाते तो थिगलियाँ लगाकर गुज़ारा करता था। उसके पास नया कपड़ा ख़रीदने को दाम नहीं थे।

परिणाम यह हुआ कि वह बीमार रहने लगा। पहले उसके बदन में खारिश शुरू हुई। इसकी चिकित्सा कराने को पैसा नहीं था, इस कारण सरकारी हस्पताल से दवाई लाने लगा। दवाई खाने से खाँसी होने लगी। खाँसी से ज्वर हो गया और हस्पताल वालों ने तपेदिक होने की सम्भावना बता दी।

इस पर भी शंकर दुकान पर बैठकर ज्वर से पीड़ित, समय-समय पर खाँसता हुआ काम करता रहता था। ढाबे पर खाना खाता और रात को आधा पेट खा सोया रहता। इससे वह बहुत ही दुर्बल हो गया था।

प्रातः उठ, स्नान कर वह अस्पताल जा पहुँचता। वहाँ से बोतल में कोई रंगदार दवाई और पानी भरकर ले आता, और दुकान पर बैठा-बैठा पिया करता। एक दिन वह वहाँ बैठा खाँस रहा था कि मंगल बैल-गाड़ियों में गेहूँ लदवाए हुए वहाँ आ पहुँचा। इस बार वह कई मास के पश्चात् नगर में आया था। जब्र दुकान पर गाड़ियाँ खड़ी हुईं और मंगल दुकान पर चढ़कर लाला जी को 'जैराम जी' की करने बैठा तो उसकी दृष्टि शंकर पर जा पड़ी। वह इतना दुर्बल हो चुका था कि कठिनाई से पहचाना जा सकता था। उसे पहचान कर देर तक मंगल उसकी ओर देखता रहा। शंकर आँखें नीची किए हिसाब बही पर लिखता रहा।

मंगल से नहीं रहा गया। उसने पूछ ही लिया, "शंकर भैया, क्या बात है, बहुत ढल गए हो?"

शंकर कुछ कहना चाहता था, परन्तु उसको खाँसी छिड़ गई। उसने जेब से एक मैला रुमाल निकाला और उसे मुख के आगे रखकर खाँसने लगा। इससे तो मंगल और भी चिन्तित भाव से उसकी ओर देखने लगा। खँखार निकला और शंकर लड़खड़ाते कदमों से उठ दुकान के बाहर थूकने गया। थूकने पर थोड़ा खँखार उसकी गाल पर लगा रह गया और शंकर ने उसको रुमाल से पोंछ डाला। पोंछते समय मंगल ने देख लिया कि उसमें रक्त मिला हुआ था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंगल ने देखा तो उठकर शंकर के पास आ पूछने लगा, "कब से बीमार हो भैया?"

"नहीं, बीमार नहीं हूँ।" इतना कह शंकर पुनः अपने स्थान की ओर जाने लगा, परन्तु अब उसको चक्कर आ गया। वह गिरने लगा तो मंगल ने पकड़कर सँभाल लिया। शंकर सँभल गया, परन्तु मंगल को उसके ज्वर से जलते हुए शरीर का ज्ञान हो गया।

मंगल ने बहुत जल्दी-जल्दी माल तुलवाया और हिसाब लिखवाकर जब घर जाने लगा तो लाला बनारसी दास से बोला, "लाला जी, शंकर भैया बीमार हैं। मैं इनको कुछ दिनों के लिए गाँव ले-जा रहा हूँ। आप इनको दो सप्ताह की छुट्टी दे दें।"

"मैं तो इसको कई बार कह चुका हूँ कि कुछ दिन आराम कर ले, परन्तु यह कहता है कि मैं बीमार नहीं हूँ। मंगल, इसको देहात में ले जाओ। जब ठीक हो जाएगा तो फिर नौकरी कर लेगा।"

शंकर ने कहा, "मंगल भैया! मैं बीमार नहीं हूँ। दो-तीन महीनों से यह खाँसी आ रही है, और दवाई की गर्मी की खुश्की से गले से खून आने लगा है। मुझे साथ ले-जाकर क्या करोगे?"

"नहीं शंकर भैया, मैं टाँगा लेकर आता हूँ। तुम्हें मेरे साथ चलना ही होगा।"

इतना कह मंगल बाज़ार से टाँगा ले आया और शंकर को विवश कर अपने साथ गाँव ले गया।

मंगल उसको माँ के घर ले गया। सोहनी ने उसको देखा तो अवाक्-मुख खड़ी रह गई। आश्रय देकर शंकर को टाँगे से उतारा गया और मकान के भीतर ले-जाया गया। सोहनी ने देखा, समझा और भागकर भीतर गई। एक कमरे में उसके लिए बिस्तर लगा दिया गया और उसकी सेवा-सुश्रूषा होने लगी।

पहले कई दिन तो औषध बन्द कर दी गई। उसका परिणाम यह हुआ कि ज्वर तो कम हो गया परन्तु खाँसी बढ़ती गई। श्लेष्मा के साथ रक्त का आना भी जारी रहा। इस पर नगर से एक वैद्य को बुलाकर दिखाया गया। उसने रोग असाध्य बताया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इस पर भी प्रयत्न जारी रहा। शंकर देख रहा था कि सोहनी, जिसके साथ उसने और उसके पिता ने लक्ष्मी से कहीं अधिक बुरा व्यवहार किया था, उसकी सेवा में जी-जान से लगी थी। शंकर की दुर्बलता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जाती थी। इस पर भी उसकी मानसिक शक्तियाँ सर्वथा निर्मल और उग्र थीं। वह अपने पापों को जानता था।

एक दिन उसको दस्त लग गए। उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा जब उसने सोहनी को उसका मल-मूत्र उठाते तथा साफ करते देखा, मानो वह कोई दूध-पीता बच्चा है। शंकर ने उसकी सेवा और उससे अपने पुराने व्यवहार की तुलना कर कहा, "सोहनी! यह सब तुम क्यों करती हो?"

"मैं नहीं करूँगी तो और कौन करेगा?"

"तुम मुझे मरने दो। मेरी सेवा-टहल का क्या लाभ? मैं दो-तीन दिन में समाप्त हो जाऊँगा।"

"हम स्त्रियाँ ऐसा नहीं कर सकतीं। सेवा करना हमारे स्वभाव में है। हमारी आँखों के सामने कोई बीमार पड़ा हो, और हम उसकी देखभाल न करें, यह अस्वाभाविक है।"

"पर लक्ष्मी भी स्त्री ही थी। जब तक मैं नौकर रहा, मेरे वेतन में से वह सात रुपए मासिक वसूल करती रही। अब नौकरी छूट जाने पर उसने फिर गुज़ारे के लिए दावा कर दिया है।"

"मैं समझती हूँ कि उसका कलेवर तो स्त्री का है, पर हृदय पत्थर का है। उसका मन पशु का है, और आत्मा तो उसमें है ही नहीं।"

"यह तो माना, परन्तु तुम्हारा भाई मंगल मेरे लिए इतना धन क्यों व्यय कर रहा है?"

"धन किसी की बपौती नहीं। एक समय देश में अकाल पड़ गया था। मंगल तब तक सबको खिलाता-पिलाता रहा, जब तक उसके पास कुछ भी धन-धान्य था। अंत में जब उसके पास कुछ न रहा तो अफ्रीका चला गया था। वह समझता था कि जब किसी के पास अपनी आवश्यकता से अधिक कुछ एकत्रित हो जाय तो वह वास्तव में दूसरों का भाग होता है। उसे आवश्यकता के अनुसार दूसरों में बाँट देना चाहिए।"

"यह मनुष्य-स्वभाव के विपरीत नहीं है क्या?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"दीप को आप जानते हैं न! मंगल भैया का लड़का है।" सोहनी ने मुस्कराते हुए कहा, "वह आजकल कॉलेज में पढ़ता है। उसका कहना है कि एक विद्वान् ने यह सिद्ध किया है कि आदमी पशुओं की सन्तान है और उसके स्वभाव में पशुओं के लक्षण दिखाई देते हैं। इससे मेरा विचार है कि मनुष्य को पशुपन जन्म से पैतृक सम्पत्ति में मिलता है, और उसमें मनुष्यपन शिक्षा, संस्कार और अनुभव से उत्पन्न होता है। धन का निष्प्रयोजन लोभ तो पशुपन का चिह्न है, परन्तु इस धन का दूसरों के लिए प्रयोग मनुष्यपन के लक्षण हैं।"

शंकर मन में सोच रहा था कि उसके पिता और इन लोगों के दृष्टिकोण में कितना अंतर है! वह धन संचय करता था धन संचय करने के लिए, और मंगल धन संचय करता है व्यय करने के लिए, दूसरों की सहायता करने के लिए। इस प्रकार दृष्टि में एकमात्र अंतर से व्यवहार में आकाश-पाताल का अंतर आ गया। और इसका परिणाम भी देख रहा था कि वह खाट पर लेटा हुआ जीवन की घड़ियाँ गिन रहा है और मंगल और उसके लड़के खेलते-कूदते और आनन्द मनाते दिखाई देते हैं।

वह बहुत चाहता था कि एक बार वह स्वस्थ हो जाय तो सोहनी के साथ शेष जीवन सुख और शान्ति से व्यतीत कर सके, परन्तु यह इच्छा पूर्ण होती दिखाई नहीं देती थी। वह जानता था कि उसको तपेदिक हो गया है। इस सबके परिणाम को भी वह जानता था। जब सोहनी को अपनी सेवा करते देखता था तो अपने पूर्ण जीवन के व्यवहार पर उसको पश्चात्ताप होने लगता था। रह-रहकर उसके मुख से यह निकल जाया करता था--'अब पछताए क्या बने, जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत।'

४

मानिनी की अवस्था दिन-प्रतिदिन विलक्षण होती जाती थी। घर में एक कमरा पूजा के लिए बना था। वहाँ ठाकुर की मूर्ति स्थापित थी। उसके माता-पिता वहाँ पूजा करते थे और उनकी पूजा समाप्त हो जाने पर मानिनी की पूजा का समय आता था। वह घंटों वहाँ बैठी रामू से बताए मंत्र का जप करती रहती थी। पहले तो इस बात को उसके माता-पिता हँसो-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मज़ाक में उड़ा देते थे, परन्तु जब यह बात सीमा से बढ़ने लगी तो उनको चिन्ता होने लगी।

मानिनी के व्यवहार को यदि कोई पसन्द कर रहा था तो वह पुजारी बृजलाल था। इस घर में वह पुजारी 'ताऊ' के नाम से विख्यात था। बच्चे बचपन से ही उसके साथ खेला करते थे। इससे वे सब उसको अपने अंतरंग विचारों के बताने में विश्वासपात्र मानते थे। वह भी उनकी बातों को सुन सदा उनके हित की बात सोचा करता था।

मानिनी अनेकों बार अपने मन में उठ रही तरंगों का दर्शन उसको कराया करती थी, और साधारण शिक्षा से युक्त, पुजारी बृजलाल, कभी इन बातों को सुन उनका उत्तर देने में असमर्थ हो जाया करता था। इस समय मानिनी चौदह वर्ष में पर्दापण कर चुकी थी और यौवनारम्भ-काल के कारण अनेकानेक ऐसी बातें उसके मन को आन्दोलित करती रहती थीं जिनका अर्थ वह पा नहीं सकती थी। कभी बृजलाल से पूछ लेती तो वह बेचारा असमंजस में पड़ जाता, और उससे उत्तर नहीं बन पड़ता था।

मानिनी एक दिन पूजा से उठी तो खोई हुई-सी अनुभव करने लगी। बृजलाल ने उसको मन्दिर से निकलते देखा तो ऐसा अनुभव किया कि उसकी आँखों में अकथनीय मस्ती और ज्योति विराजमान थी। वह अपनी माँ के कमरे में जाने लगी तो पंडित उसका मुख देखता रह गया। मानिनी आँगन पार कर माँ के कमरे में प्रवेश करने लगी थी कि उसके मन में कुछ आया और रुक गई। उसने आवाज़ दी, "ताऊ जी!"

पण्डित तो पहले ही उसकी ओर देख रहा था। उसका विचार था कि आज फिर वह किसी उलझन में पड़ी हुई है। इससे वह इस प्रकार बुलाए जाने की आशा कर रहा था। उसने कहा, "हाँ बेटी!"

"आज मैंने एक विचित्र घटना देखी है।" मानिनी ने समीप आकर कहा।

"क्या?"

"आप भीतर आइए तो बताऊँगी।" उसने मुस्कराते हुए कहा, "आज मुझे एक रहस्य का ज्ञान हुआ है।"

पंडित बृजलाल इस रहस्य को जानने के लिए उत्सुक हो उठा। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पर भी वह एकान्त में मानिनी से बातचीत करने में संकोच करता था। उसको भय बना रहता था कि कहीं वह कोई ऐसी बात न पूछ ले, जिसका उत्तर देना उचित न हो। इस कारण उसने पूछा, "तुम्हारी माता जी नहीं हैं?"

"हैं! पिता जी भी हैं। मैं उन्हीं के पास जा रही थी।"

"अपना रहस्य बताने के लिए ही?"

मानिनी गम्भीर विचार में खो गई। उसने कुछ विचार कर कहा, "उनसे ऐसी बात करने का कोई लाभ नहीं होता। आपसे कहती हूँ, क्योंकि आप बात को समझने का यत्न करते हैं। जब समझ जाते हैं तो फिर समस्या को सुलझाने का यत्न भी करते हैं।"

जब मानिनी घर के भीतर गई तो उसकी माँ और पिता प्रातः का अल्पाहार कर रहे थे। मानिनी के पीछे-पीछे पं० बृजलाल को देखकर मंगल ने कहा, "आइए पंडित जी! क्या फिर यह आपसे बहस करनेवाली है?"

बृजलाल हँस पड़ा। उसने मंगल के बताए आसन पर बैठते हुए कहा, "मंगल भैया! यह झगड़ा नहीं करती। परन्तु कभी-कभी ऐसी-ऐसी बातें बताती है जो बड़े-बड़े शास्त्रवेत्ता विद्वानों के भी मस्तिष्क में नहीं आतीं। उस दिन इसने बताया था कि प्राणी में तीन वस्तुएँ हैं—आत्मा, शरीर और मन। यह बात सर्वथा सत्य है। आज यह एक और बात लेकर आई है।"

"ये बातें कौन सिखाता है इसे?" मोहिनी ने पूछा।

उत्तर मानिनी ने दिया, "रामू चाचा मुझे एक मन्त्र बता गए हैं। मैं उसका जाप करती हूँ। इससे मेरी कुण्डलिनी खुल गई है। परिणाम यह हुआ है कि जब मैं ध्यानावस्थित होती हूँ तो मुझे सृष्टि के परमाणु पृथक्-पृथक् नाचते दिखाई देने लगते हैं। मैं उनको देखती हूँ और उनसे अपना अनुमान लगाती हूँ। मेरी आयु अभी कम है। मैंने संसार की बहुत कम बातें देखी हैं। इससे अनेकानेक वस्तुओं का अर्थ, जो मैं इस प्रकार देखती हूँ, जान नहीं सकती। इस गाँव में केवल ताऊ जी हैं, जो कभी मेरे मन के संशयों का निवारण करते हैं। इस कारण इनसे पूछती रहती हूँ।...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आज मैंने एक अति विचित्र दृश्य देखा है। काल साक्षात् मेरे सामने चलता हुआ दिखाई दिया है। यह एक अति वेगवती नदी के रूप में था। मैं और सब प्राणी उसमें ऐसे बहते जा रहे हैं जैसे नदी में कभी-कभी लकड़ियाँ बहती दिखाई देती हैं। मैं उस कालरूपी नदी में बहती हुई अनुभव कर रही हूँ कि नदी के तट पर अति सुन्दर मनमोहक और सुखदायक विश्राम-स्थान है। वहाँ जाने की इच्छा सब लोगों को होती है, मेरी भी हुई, परन्तु काल के बहाव के वेग से बाहर निकलना कठिन है। नटेश्वर किनारे पर हाथ बढ़ाकर मुझे बाहर निकालने का यत्न कर रहे हैं। वे कहते हैं कि योग-सिद्धि से काल की गति का विरोध किया जा सकता है। जो ऐसा कर पाता है वह अजर-अमर हो जाता है। काल की गति उस पर प्रभाव नहीं डाल सकती।....

"मैंने नटेश्वर जी से पूछा कि क्या वे काल के विकराल गाल से बच गए हैं? उन्होंने बताया कि बहुत सीमा तक, हाँ। फिर यह भी कहा कि यदि उनका हाथ पकड़ लूँगी तो वे मुझे भी इससे बाहर निकाल लेंगे। तब सहस्रों वर्ष तक मैं इसी प्रकार बाल्यावस्था में ही जीवित रह सकूँगी।....

"मैं ताऊ जी से पूछना चाहती थी कि क्या यह ठीक है?"

पं० बृजलाल ने गंभीर भाव धारण कर कहा, "बात तो तुम्हारी ठीक है। काल एक द्रव्य है। इसकी लम्बाई, चौड़ाई और गहराई भी है। इसकी गति की लपेट में आया मनुष्य जन्म-मरण के बन्धन में तथा बाल्य, यौवन और वृद्धावस्था के भोग में फँसा रहता है। रहा इससे बाहर निकलने का उपाय। उसे तो मेरे शास्त्र नहीं बताते, या यूँ कहो कि मुझमें उनके समझने की शक्ति नहीं। नटेश्वर में वह है अथवा नहीं, यह मैं नहीं जानता।"

"मैंने अपना हाथ बढ़ाकर नटेश्वर जी के हाथ में देने का यत्न किया। परन्तु कालरूपी नदी के वेग से मेरा हाथ वे पकड़ नहीं सके। इस पर भी मुझे निकालने के यत्न में वे किनारे-किनारे चलते आ रहे हैं।"

"कहाँ हैं वे?" पुजारी ने पूछा?

"आप उनको नहीं देख रहे। परन्तु मैं आँखें बन्द करती हूँ तो हाथ बढ़ाए हुए मुझे बाहर करने का यत्न करते हुए दिखाई देते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मानिनी," मोहिनी ने डाँटकर कहा, "तुम स्वप्न की बात कर रही हो क्या? भला स्वप्नों की बातों की कौन चिंता करता है?"

"स्वप्न नहीं है यह माँ! मैं बैठी जप कर रही थी और जप करते-करते यह दृश्य मेरे सामने आ गया। मैं एक बात और बताना चाहती हूँ। वह यह है कि मेरे में और उनमें इतना अन्तर रह गया है, जितना कि एक-डेढ़ वर्ष काल का होना चाहिए।"

"वे तुमसे एक-डेढ़ वर्ष पीछे हैं या आगे?"

"वे उस ओर हैं जिस ओर मैं बहती जा रही हूँ। एक विशेष बात और है। वे नदी के आर-पार जा रहे हैं। नदी का बहाव उनको बहाकर नहीं ले-जा सकता। कभी तो ऐसा प्रतीत होता है कि वे तट पर खड़े हैं। कभी ऐसा प्रतीत होता है कि नदी पार कर रहे हैं। इस पर भी वे नदी के साथ नहीं बह रहे। उन्होंने अपना हाथ बढ़ाकर बीच के अन्तर को मिटा देना चाहा, परन्तु वह मिट नहीं सका।"

मंगल जो अभी तक ये सब बातें सुनता हुआ अल्पाहार कर रहा था, बोल उठा, "मानिनी, ऐसी बातें सोचती रही तो पागल हो जाओगी। फिर तुम्हें पागलखाने भेजना पड़ेगा। बताओ, मास्टर साहब पढ़ाने आया करते हैं या नहीं?"

"आया करते हैं पिता जी! परन्तु वही तो उस दिन कहते थे कि काल और दिशा भी द्रव्य हैं। काल की गहराई में जानेवाला मनुष्य सृष्टि के उन रहस्यों को जान सकता है जिनको साधारण मनुष्य जान नहीं सकता। काल की चौड़ाई में जा सकनेवाला मनुष्य काल की गति के विनाशकारी प्रभाव से बच सकता है।....

"मैं जब जप करती हूँ तो मास्टर जी का कहना है कि मेरी कुंडलिनी खुल जाती है और मैं काल की गहराई में जानने की शक्ति प्राप्त कर लेती हूँ। मुझमें अभी काल की चौड़ाई में जाने की शक्ति नहीं आई। मास्टर जी का कहना है कि यह शक्ति योगाभ्यास से आ जाएगी और तब मैं इसी आयु की बनी रहूँगी।"

"हाँ!" बृजलाल ने कहा, "तब यह चौदह वर्ष की कुमारी ही बनी रहेगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंगल और मोहिनी हँस पड़े। मानिनी समझती थी कि इसमें हँसने की कोई बात नहीं, इससे उसका मुख लज्जा से लाल हो उठा था। पं० बृजलाल उसके मन की बात को समझकर कहने लगा, "मंगल भैया! इसमें हँसने की कोई बात नहीं। अचम्भा करने की बात अवश्य है। इतनी छोटी आयु में इसकी बुद्धि के बंधन कट गए हैं और शास्त्र के गूढ़ रहस्यों को यह समझने लगी है। हम लोग, जो शास्त्र पढ़ते-पढ़ते बूढ़े हो गए हैं इस बात को नहीं समझ सकते।"

"कौन जप करती हो मानिनी ?" उसकी माँ ने पूछा।

"मंत्र तो सरल है, परन्तु उसकी विधि विशेष होने से उसका जप कठिन है। रामू चाचा का कहना था कि जप करते समय ध्यान ब्रह्म-रंध्र में ले-जाना चाहिए।"

मंगल ने कहा, "मैं अब समझा हूँ, क्यों जगदीशचन्द्र ने तुम्हें अपनी ही भाँति पागल बनाने के लिए संस्कृत पढ़ने को कहा था। जिस प्रकार रामू बावरों की भाँति उसके पीछे घूमता-घूमता निकम्मा हो गया है, उसी तरह तेरी भी दशा होगी। मैं चाहता हूँ तुम्हारा संस्कृत पढ़ना बंद कर दूँ, पर जब तुम्हारी आँखों में आँसू देखता हूँ तो मन मसोसकर रह जाता हूँ।"

इस समय यथार्थ में ही मानिनी की आँखें तरल हो उठी थीं। पं० बृजलाल सदा की भाँति मानिनी की सहायता के लिए बोल उठा, "मंगल भैया! अपनी अज्ञानता के कारण ज्ञान की निंदा मत करो। यह बहुत बड़ा पाप है। तुम्हारा लड़की से मोह स्वार्थमय हो गया है। यही कारण है कि वह मोह इसकी उन्नति में सहायक न हो, बाधक बन रहा है।"

मोहिनी समझ नहीं सकी कि मानिनी की बातों की निंदा करे अथवा प्रशंसा। वह इस निर्णय में अपने को योग्य नहीं समझती थी। उसको चिन्ता यह थी कि कहीं मानिनी जगदीश से विवाह करने के लिए हठ न करे। यह विवाह कैसे हो सकता है ? दोनों की आयु में बहुत अन्तर है।

मानिनी को अपने विचारों से दूर रखने के लिए मोहिनी ने उसे वहाँ से बाहर भेज दिया। कहा, "जाओ मानिनी! अल्पाहार कर लो। फिर मास्टर जी से पढ़ने का समय हो जाएगा।"

मानिनी गई तो मोहिनी ने अपने पति की ओर देखकर कहा, "मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझती हूँ कि मानिनी के विवाह का प्रबन्ध कर देना चाहिए। देरी करने से काम बिगड़ जाएगा।''

बृजलाल ने पूछा, ''क्या बिगाड़ होने की संभावना है?''

''इसकी रुचि जगदीश की ओर अधिक हो रही है। जब लगाव बहुत हो गया तो फिर दुःख और क्लेश के अतिरिक्त और कुछ नहीं होगा।''

मंगल मन–ही–मन समझता था कि पं० बृजलाल जगदीश का पक्ष लेगा। इस कारण उसे ही मोहिनी को उत्तर देने का अवसर देने के लिए वह चुप हो रहा। बृजलाल ने कहा, ''भाभी! जीवन का उद्देश्य विवाह करना है अथवा जीवन में सुख और शान्ति की प्राप्ति? विवाह साधन है सुख और शान्ति का। इस कारण मैं तो यह कहता हूँ कि विवाह के लिए शीघ्रता करने की आवश्यकता नहीं। मानिनी के विचार परिपक्व होने दो। यदि उसका मन जगदीश से ही विवाह के लिए हो जाता है तो तुम लोगों को क्यों आपत्ति है? आयु का अंतर मैं भी देखता हूँ, परन्तु मेरा विश्वास है कि मुझसे और आपसे भी अधिक युवावस्था इस अंतर को देखेगी। उसमें देखने की योग्यता पैदा होने दो। घबराहट में कोई भी बात करने से हानि होगी।''

मंगल ने कहा, ''पर मैं तो यह कहता हूँ कि यह पढ़ाई और मंत्र का जप उसको पागल बना देगा। एक बार मस्तिष्क बिगड़ा कि जीवन–भर का झमेला सिर आ पड़ा।''

''इस बिगाड़ को तुम बन्दी नहीं कर सकते, मंगल! मैं भी वह मन्त्र जानता हूँ। मैं भी उसका जप करता हूँ। मैं भी अपना ध्यान ब्रह्म–रंध्र में स्थापित करने का यत्न करता हूँ, परन्तु मेरी कुंडलिनी तो खुली नहीं। इससे कहता हूँ कि यह उसके पूर्व–जन्मों के प्रयत्नों का फल इस जन्म में प्रकट हो रहा है। इसको आप रोक नहीं सकते। फिर यह हम लोगों को भले ही पागलपन प्रतीत हो, परन्तु वास्तव में यह है क्या, कहना कठिन है। मैं इसको पागलपन इस कारण नहीं कहता कि उसकी स्मरणशक्ति, उसकी युक्ति करने की शक्ति और उसकी भला और बुरा विचार करने की शक्ति सर्वथा सजग है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"एक बात है। मैं समझती हूँ कि उसकी बातें साधारण आदमियों से भिन्न हैं। इससे उन्हें साधारण लोग पसन्द नहीं करेंगे।"

बृजलाल ने मुस्कराते हुए कहा, "भाभी का कहना विचित्र है। लोगों के समझने अथवा न समझने से अपने बच्चों का जीवन कटु करना, कैसे युक्ति-संगत है?"

"तो फिर क्या चाहते हैं आप पंडित जी?" मंगल ने बात को समाप्त करने के लिए कहा।

"मैं तो कहता हूँ कि आपकी लड़की विशेष प्रतिभा और अतिपुण्य कर्म की भागिनी है। उसका जीवन अपनी घबराहट से खराब न करो। उसके मन को अभी और विकसित होने दो और फिर देखेंगे कि क्या उचित है और क्या अनुचित।"

बात यहीं समाप्त हो गई।

५

भारतवर्ष में जगदीश और रामू का भ्रमण निर्विघ्न और घटनारहित रहा। बम्बई में जब वे लोग गए तो उनके दस-ग्यारह वर्ष पूर्व के परिचित कुछ लोग उनको मिल गए। उनकी सहायता से अनायास ही उनको पर्याप्त धन मिल गया और वे यूरोप और अमेरिका इत्यादि देशों को भ्रमणार्थ चल पड़े। परवाना राहदारी मिलने में कुछ कठिनाई हुई, परन्तु जब बैंक-बैलेंस दिखाया गया तो उसकी स्वीकृति भी मिल गई।

जब तक इनकी जेब में रुपया रहा, तब तक वे केवल भ्रमण करते रहे। इटली, स्विट्ज़रलैंड, आस्ट्रिया, रूस, स्वीडन, नार्वे, इंग्लैंड इत्यादि देशों में उन्होंने अपना परिचय केवल सैर करनेवाले दिया, परन्तु कठिनाई जर्मनी में आई। वहाँ देश का राजदूत बहुत ही साधारण बुद्धि का व्यक्ति था। वे जब नियमानुसार बर्लिन पहुँचे तो अंग्रेज़ी-राजदूत से मिलने गए। अपना पासपोर्ट दूतावास में दिखाकर जब राजदूत, ड्रेक किपनिस से मिलने की याचना की तो पूछा गया, "आप किसके पुत्र हैं?"

"एक बहुत ही साधारण माता-पिता के, जिन्हें अपने देश में शायद कोई नहीं जानता।" जगदीश ने उत्तर दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आप क्या काम करते हैं ? अपने देश में रईस हैं, ज़मींदार हैं, राजा हैं, व्यापारी हैं, अथवा क्या हैं ?"

"हम वैज्ञानिक हैं। मानव-विज्ञान के विद्यार्थी हैं।"

"यह भ्रमण के लिए धन कहाँ से मिला है आपको ?"

"हमने अपनी विद्या से पैदा किया है।"

प्रश्न पूछनेवाले ने सिर हिलाते हुए कहा, "मुझे आशा नहीं कि आपको भेंट करने का अवसर मिलेगा।"

"मुझे विश्वास है कि वे मुझसे मिलना चाहेंगे।"

"अच्छी बात। आप जा सकते हैं।"

"यह मेरे निवास-स्थान का पता है।" इतना कहकर जगदीश ने अपना कार्ड उस कर्मचारी के सामने रख दिया और दूतावास से बाहर को घूम पड़ा। फिर कुछ सोचकर और लौटकर उस कर्मचारी से पूछने लगा, "क्षमा कीजिए, क्या मैं आपका नाम जान सकता हूँ ?"

"कुछ जरूरत नहीं।" उसका उत्तर था।

जगदीश मुस्कराया और दूतावास से बाहर निकल आया। बाहर आकर रामू ने कहा, "गुरुदेव! यह आदमी बहुत ही मूर्ख और उजड्ड प्रतीत होता है।"

"हमें इससे क्या! हम अपना कार्य कर रहे हैं। जब तक उसमें कोई बाधा न पड़े, हमें दूसरों की ओर ध्यान करने की आवश्यकता नहीं।"

"नहीं गुरुदेव, कुछ तो करना चाहिए। असभ्य लोगों को कभी-कभी सभ्यता का पाठ पढ़ाना ही चाहिए।"

"प्रकृति स्वयं इन्हें सुमार्ग दिखा देगी।"

"गुरुदेव, कुछ तो करना ही चाहिए। जब से हमने यूरोप में पैर रखा है, तब से हम केवल खाते-पीते और घूमते ही रहे हैं। कुछ ऐसा कार्य करना अवश्य चाहिए जिससे यहाँ के भूले मस्तिष्कों को कुछ ठेस पहुँचे।"

"अच्छा रामू! यह विज्ञान-प्रधान देश है। यहाँ के लोगों को यह बताने का यत्न करेंगे कि विज्ञान के विषय में उनका ज्ञान अधूरा है।"

बात समाप्त हो गई। इस पर भी दू[illegible] में हुआ गुरु का व्यवहार रामू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के मन में अखर रहा था। होटल-बर्लिन में, जहाँ वे ठहरे थे, वे पहुँचे और लिफ़्ट में बैठकर पाँचवीं मंज़िल पर, जहाँ उनका कमरा था, जाने ही वाले थे कि एक 'वेटरैस', एक चाँदी के प्लेट में रखी एक चिट्ठी उनके लिए लाई। जगदीश ने पत्र उठाकर पढ़ा और फिर रामू के हाथ में दे दिया, वेटरैस का धन्यवाद किया और लिफ़्टवाले को लिफ़्ट चलाने के लिए कहा।

रामू ने पढ़ा। लिखा था, "हिज़ ऐक्सलैंसी ड्रेक किपनिस, अंग्रेज़ी राजदूत, मिस्टर जगदीशचन्द्र और मिस्टर रामचन्द्र से सायं चार बजे चाय पीकर बहुत प्रसन्न होंगे। संदेश टेलीफोन द्वारा।"

अपने कमरे में पहुँचकर रामू मुस्करा उठा। जगदीशचन्द्र ने कहा, "यूरोप में मैं अज्ञात ही भ्रमण करना चाहता था, परन्तु अब बात छुपी नहीं रह सकती।"

"यह कैसे हुआ गुरुदेव?"

"सायं जब हम पहुँचेंगे तो वह स्वयं बताएगा।" उस समय तीन बज रहे थे। इस कारण दोनों ने उचित वस्त्र पहने और अंग्रेज़ी दूतावास को चल पड़े।

दूतावास के फाटक पर वही आदमी, जिसने उनसे प्रश्नोत्तर किया था, खड़ा उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। जब वे दोनों टैक्सी से उतरे तो वह आगे बढ़कर बहुत विनय से उनसे हाथ मिलाकर बोला, "हिज़ ऐक्सलैंसी आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। आइए!"

"हम समझते हैं कि हम ठीक समय पर आए हैं।"

"इस पर भी वे और हर ऐक्सीलैंसी चाय पर बैठे हैं।"

अविलम्ब उनको भीतर पहुँचाया गया। वहाँ साँड-से मोटे-ताजे आदमी ने उठकर इनसे हाथ मिलाते हुए कहा, "मिस्टर जगदीश, दि हिप्नॉटिस्ट, मुझे आपसे मिलकर बहुत प्रसन्नता हुई।"

जब ये बैठ गए तो एक दुबली-पतली स्त्री से, जो उनके साथ की कुर्सी पर बैठी थी, उनका परिचय कराया गया, "ये मेरी स्त्री, मिसेज़ किपनिस हैं।" जगदीश ने कुछ झुककर उससे हाथ मिलाया, पश्चात् रामू का परिचय हुआ। मिस्टर ड्रेक ने कहना आरम्भ किया, "मैं आपके विषय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में आज से दस-ग्यारह वर्ष पूर्व एक नोट पढ़ चुका हूँ। आपके कुछ करतब मैंने पढ़े थे। तब से मैं बम्बई-स्थित अपने एक मित्र को कई बार आपके विषय में लिख चुका हूँ। वहाँ से यही सूचना मिलती रही थी कि आप कहीं गायब हो गए हैं। फिर एकाएक दो मास हुए कि उसी मित्र ने लिखा कि आप बम्बई गए थे और अपनी मानसिक शक्ति के चमत्कार दिखाकर लोगों को चकाचौंध कर रहे हैं। उन्होंने यह भी लिखा है कि आप यूरोप-भ्रमण के लिए आ रहे हैं। तब से मैं यूरोप के भिन्न-भिन्न स्थानों से आपके विषय में कोई समाचार जानने का यत्न करता रहा हूँ। मैं आपके विषय में कोई समाचार न पा निराश हो रहा था कि आज आपका कार्ड पा आपसे मिलने के लिए व्याकुल हो उठा, और आपके होटल में टेलीफोन द्वारा संदेश भेज दिया।''

इस पर श्रीमती किपनिस ने कहा, ''हमारे मित्र ने बम्बई से जो कुछ आपके विषय में लिखा है, वह सत्य ही अविश्वसनीय है। हम जिन्हें इसके विषय में कुछ कहते थे, वे संदेह में सिर हिला देते थे।''

''मेरी इच्छा नहीं थी कि अपनी इस विद्या और ज्ञान का प्रदर्शन लोगों के सम्मुख करूँ, परन्तु केवल आपके बम्बई वाले मित्र की बात को सत्य सिद्ध करने के लिए तथा श्रीमती जी के संशयात्मक मित्रों के भ्रम-निवारणार्थ मैं कुछ दिखाने को बाधित हो गया हूँ। यदि आप आज्ञा दें तो एक दिन आप अपने मित्रों को बुला लीजिए, मैं आपकी सेवा करने आऊँगा।''

''धन्यवाद!'' श्रीमती किपनिस ने मुख गोल कर कृतज्ञता के भाव से कहा।

इस समय चाय परस दी गई थी। वह आदमी, जिसने शुष्कता का व्यवहार किया था, उनके लिए चाय बनाने लगा था। रामू और जगदीश चाय पीते हुए इधर-उधर की बातें करने लगे। मिस्टर किपनिस तो जगदीशचन्द्र से बातें कर रहा था। श्रीमती किपनिस रामू से बातें कर रही थी। उसने पूछा, ''आप भी कुछ कर सकते हैं क्या?''

''यदि आप आज्ञा दें तो मैं आपको कुछ तो अभी दिखा सकता हूँ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

“हाँ-हाँ! जरूर दिखाइए। इससे मुझे प्रसन्नता होगी।”

इस पर रामू ने अपनी जेब से एक रुमाल निकाला और कहा, “क्या आप बता सकती हैं कि इसमें से कैसी सुगंधि आती है?”

श्रीमती किपनिस ने रुमाल को सूँघकर कहा, “वाह! इसमें तो मेरा प्रिय इत्र लगा है। यहाँ इसे पैरिस ब्यूटी कहते हैं। इसकी एक औंस की शीशी पाँच पौंड में आती है।”

“आप कहीं गलती तो नहीं कर रहीं?”

श्रीमती किपनिस ने पुनः सूँघा और कहा, “मुझे विश्वास है कि यह वही इत्र है।”

“मेरी सम्मति है कि हिज़ ऐक्सलैंसी की भी राय ले ली जाए तो ठीक होगा।”

श्रीमती ने अपने पति का ध्यान आकर्षित करते हुए कहा, “ज़रा देखिए, इसमें कैसी सुगंधि लगी है?”

मिस्टर किपनिस ने रुमाल सूँघकर कहा, “इसमें तो कोई सुगंधि नहीं है। यह तो लाँड्री की गंध है।”

श्रीमती ने विस्मय में रुमाल वापस लेकर पुनः सूँघा और अपने पति को कहा, “आप इतनी तेज गंध को भी नहीं सूँघ सकते? यह तो मेरी प्रिय सुगंधि 'पैरिस ब्यूटी' है।”

इस पर मिस्टर किपनिस ने पुनः सूँघा और कोई गंध न पा अपने पीछे खड़े उसी आदमी को कहा, “मिस्टर जॉन, तनिक देखो! इसमें से कैसी गंध आती है?”

उसने नाक से रुमाल को लगाया और तुरन्त ही नाक चढ़ाकर रुमाल को वापस हिज़ ऐक्सलैंसी के हाथ में देकर कहा, “श्रीमान् जी! इसमें से तो बदबू आती है।”

इस पर जगदीश हँसने लगा। उसने कहा, “श्रीमान् जी, गंध की पहचान गँवार लोग नहीं कर सकते।”

श्रीमती किपनिस ने कई बार सूँघा और उसकी सुगंधि से प्रसन्न हो रामू से पूछा, “यह क्या बात है?”

“यही भ्रम है। संसार में सब कुछ, जो हम देखते हैं, सुनते हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चखते, सूँघते अथवा स्पर्श करते हैं, वह सब भ्रम है। इस कारण यह रुमाल को सूँघना भी भ्रम है। अपने-अपने मन की अवस्था के अनुसार ही इन्द्रियाँ काम करती हैं। आपके मन पर हम सम्मोहिनी का प्रभाव जमा सकते हैं। जिससे जो हम चाहते हैं वही आप देखने, सुनने अथवा सूँघने लगते हैं।''

''यही तो जानने की बात है कि आप कैसे हमारे मन को अपने सम्मोहन के प्रभाव में ले आते हैं।''

''वैसे तो प्रत्येक मनुष्य में न्यूनाधिक यह सम्मोहिनी शक्ति विद्यमान होती है। वक्ता, नेता, ऑफिसर, व्यापारी, इंश्योरेंस एजेन्ट इत्यादि सब लोग, जो दूसरों से सम्पर्क रखते हैं, अपने में कुछ अंशों में यह शक्ति रखते हैं। उनका जितना अधिक प्रभाव दूसरों के मन पर पड़ता है, उतने ही वक्ता, नेता इत्यादि के प्रभाव में आ जाते हैं।''

''इस शक्ति का अधिकाधिक विकास किया जा सकता है, और वह यहाँ तक बढ़ सकता है कि दूसरों को चमत्कारिक प्रतीत होने लगता है। नैपोलियन, सिकन्दर, सीज़र, इत्यादि सिपाही और बुद्ध, ईसा तथा मुहम्मद इत्यादि धर्मगुरु, इसी प्रभाव के बल पर सहस्रों लोगों को हिंसा-अहिंसा पर उद्यत करते रहे हैं। मैं भी उसी शक्ति को उन्नत कर यह दिखा रहा हूँ।''

''बहुत सुन्दर! बहुत सुन्दर!'' मिस्टर किपनिस ने कहा, ''आई फॉलो यू पर्फैक्टली ?''

सामने मिठाई की प्लेट रखी थी। जब वह खाली हो गई तो जगदीशचन्द्र ने कहा, ''युअर ऐक्सलैंसी। देखिए, यह प्लेट है।''

''हाँ।'' किपनिस ने कहा।

''यह देखिए।'' जगदीश ने अपनी छुरी प्लेट पर रखते हुए कहा।

मिस्टर किपनिस, मिसेज़ किपनिस, मिस्टर जॉन, बैरे तथा अन्य सब भी देखने लगे। जगदीश ने अपनी छुरी उठाई। एक छः इंच धुएँ का स्तम्भ खड़ा हो गया। जगदीश ने अपनी छुरी को प्लेट पर घुमाया, तो धुएँ का स्तम्भ घूमने लगा। देखते-देखते उस धुएँ के स्तम्भ का रूप एक सुन्दर नाचने[illegible] आँखें [illegible] इंच ऊँची

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
स्त्री की ओर देखने लगे। जगदीश ने कहा, "युअर ऐक्सलैंसी, यह बम्बई की प्रसिद्ध नाचनेवाली अमीर बाई हैं। ये आपको अपना नाच दिखावेंगी।" तुरन्त ही अदृश्य से आवाज़ आई, 'धिक् धिक् धा, तिट् तिट् तिरकिट ता।' वह ठुमका देने लगी और फिर 'छन छन छननन, छन छन' नाच आरम्भ हो गया।

कभी-कभी वह खड़ी हो जाती और बहुत मधुर और छोटी आवाज़ से जो उसके शरीर के छोटेपन के अनुसार ही थी, गाने लगती। इस समय कहीं अदृश्य से सारंगी और तबले की संगत होने लगी।

चाय समाप्त होने तक इस प्रकार का मनोरंजन-कार्य होता रहा। जब सब चाय से उठ खड़े हुए तो श्रीमती किपनिस ने रामू को पृथक् ले-जाकर पूछा, "आप कितने काल तक अपने गुरु से यह विद्या सीखते रहे हैं?"

"मुझे गुरु जी के साथ रहते और इस विद्या का अभ्यास करते चौदह वर्ष हो गए हैं।"

"दूसरे के मन पर जो प्रभाव आप उत्पन्न करते हैं, वह कितने काल तक स्थिर रहता है?"

"वर्षों तक, और कई अवस्थाओं में जीवन-पर्यन्त भी यह प्रभाव रखा जा सकता है।"

"क्या आप किसी एक को दूसरे से प्रेम करने पर विवश कर सकते हैं?"

"यह तो एक साधारण-सी बात है।"

इस कथन को सुनकर श्रीमती किपनिस गंभीर विचार में पड़ गई। कितने ही समय तक वह रामू के मुख की ओर देखती रही। पश्चात् सचेत हो कहने लगी, "मैं आपसे किसी समय मिलूँगी। आप कब तक बर्लिन में रहेंगे?"

"हमारा विचार यहाँ एक मास तक रहने का है।"

इसी समय मिस्टर किपनिस जगदीशचन्द्र से पूछ रहे थे, "कब आप अपनी विद्या का चमत्कार मेरे मित्रों को दिखाएँगे?"

"जब आप कहें। मुझे इतना-कुछ करने के लिए कुछ विशेष प्रयत्न करने की आवश्यकता नहीं पड़ती।"
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६

अंग्रेज़ी राजदूत द्वारा आयोजित जगदीशचन्द्र की विद्या और शक्ति का प्रदर्शन दूतावास के एक हॉल में हुआ। बर्लिन के एक सौ के लगभग विख्यात और प्रमुख व्यक्ति वहाँ उपस्थित थे। इनमें फॉन हिन्डनबर्ग—जर्मन फौजों के सबसे बड़े कमाण्डर, लूई कोहन—जर्मनी के सबसे बड़े वैज्ञानिक, कमान्डर क्रिप्टन बिस्मार्क, विलहैलम कैसर का प्राइवेट सैक्रेटरी और अन्य व्यापारी और कारख़ानों के मालिक उपस्थित थे।

सबसे पूर्व श्रीमान ड्रेक किपनिस ने जगदीशचन्द्र का संक्षिप्त परिचय दिया और पश्चात् जगदीशचन्द्र ने अपने विषय पर प्रकाश डाला। उसने कहा, "हिप्नॉटिज़म का कार्य दर्शक के मन में भ्रान्ति उत्पन्न करना है। परन्तु योगाभ्यास का क्षेत्र इससे बहुत ही विस्तृत है। योगी न केवल दूसरे के मन को मोह सकता है अथवा उसमें भ्रान्ति उत्पन्न कर सकता है, प्रत्युत सृष्टि के गूढ़तम रहस्यों को जान, संसार का निर्माण भी कर सकता है। मैं दोनों अंशों का प्रदर्शन करूँगा।"

अब उसने अनेकानेक भ्रान्तियों का प्रदर्शन किया। उसने गीत सुनवाए, नाच दिखाए, अनेकानेक सुगन्धियों को सुँघाया और बिना खाए अनेकानेक स्वादिष्ट पदार्थों के रस का आस्वादन कराया।

अपने दूसरे प्रोग्राम के अन्तर्गत उसने कहा, "अब कोई ऐसी बात बताएँ जो आपका विज्ञान अभी न कर सका हो। मैं बताऊँगा कि मैं उसे कर सकता हूँ या नहीं। मैं बिना वायु के जी सकता हूँ, हृदय की गति को रोककर भाग सकता हूँ, मैं जलती आग में घंटा-भर खड़ा रह सकता हूँ। परन्तु यह कुछ नहीं। इससे भी अधिक मैं निर्माण-कार्य कर सकता हूँ। बताइए, आप क्या चाहते हैं?"

कैसर विलहैलम के प्राइवेट सैक्रेटरी मिस्टर क्रिप्टन ने कहा, "मिस्टर मैजीशियन! माननीय कैसर के लिए भारतवर्ष के सबसे बढ़िया आम बना सकते हैं क्या?"

"हाँ।"

"वे खाने के कार्य में आएँगे क्या?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ।"

"तो एक टोकरा उनके लिए भेंट के रूप में बनाइए।"

"वह आपकी मोटर में सामान रखने के स्थान पर रखा है। आप मँगवाकर सब दर्शकों को दिखा सकते हैं।"

मिस्टर क्रिप्टन अवाक्मुख खड़ा रह गया। उसने अपने अतिथेय से कहा, "कृपया नौकर को भेजकर यहाँ मँगवाइए।"

मिस्टर किपनिस ने दो चपरासी भेजे और दो--तीन मिनट में वे एक आमों का टोकरा, जिसमें से आमों की सुगन्धि आ रही थी, लाकर दर्शकों के बीच में रख दिया। जगदीशचन्द्र ने टोकरा खोल दिया और उसमें से आम निकालकर एक-एक सब दर्शकों में बाँट दिए। टोकरा खाली हो गया। जब उसमें कुछ नहीं रहा तो उसने मिस्टर क्रिप्टन की ओर देखकर कहा, "आपके मालिक के लिए एक दूसरा टोकरा मोटर में रखवा दिया है।"

सब चकित हो उसको देखने लगे। मिस्टर क्रिप्टन को सन्देह हो गया कि शायद मिस्टर किपनिस इस जादूगर से मिलकर धोखा न दे रहा हो। इस कारण उसने अन्य दर्शकों को कहा, "मैं स्वयं जाकर देखना चाहता हूँ। मैं अभी आकर आपको पूरी बात बताता हूँ।"

वह स्वयं गया और वहाँ एक और टोकरा आमों का पड़ा देखकर लौट आया! आकर उसने बताया, "मैंने मोटर के शोफर से पूछा है। उसने बताया कि जब मिस्टर किपनिस के नौकर आए और आमों का टोकरा माँगने लगे तो वह हँस पड़ा था, और मोटर का सामान रखने का स्थान खोलकर दिखाने लगा। परन्तु फिर उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा, जब उसने एक टोकरा वहाँ पड़ा देखा। अब तो वह आश्चर्य से पागल हो गया है। वह कहता है कि पहला टोकरा निकालते समय उसने देखा था कि उस स्थान पर और कुछ नहीं था। सब समय वह मोटर के पास खड़ा रहा है और वह कसम खाकर कहता है कि वहाँ मोटर के समीप कोई आदमी नहीं आया।"

इस समय मिस्टर लूई कोहन पूछने लगे, "हम जर्मन के वैज्ञानिक सीसे से सोना बनाने का यत्न कर रहे हैं। अभी तक सफलता नहीं मिली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
क्या आप यह भी कर सकते हैं ?''

''हाँ, मुझे कोई सीसे की वस्तु दीजिए।'' लूई कोहन ने अपनी जेब में से एक लैड-पैंसिल दी। एक लकड़ी की डंडी के आगे सीसे की एक टोपी बनी थी, जो जोर से काग़ज़ पर घिसने से लिखती थी। जगदीशचन्द्र ने वह पैंसिल देखकर कहा, ''प्रोफ़ेसर साहब, यह तो कुछ भी नहीं। इसे आप ले लीजिए। मैं आपको इससे भी अधिक चमत्कारपूर्ण काम दिखाऊँगा। भारी से हल्की वस्तु बनाना सुगम है। यह लो सोना हो गया है।'' इतना कहकर उसने यह पैंसिल वापस कर दी। उसकी सीसे की टोपी सोने की हो गई थी। जगदीश पुनः कहने लगा, ''परन्तु मैं तो कहता हूँ कि किसी के पास लोहे का कोई बड़ा टुकड़ा हो तो मैं सारे टुकड़े को ही स्वर्ण का बना दूँगा। लोहा सोने से हल्का होता है। वह सोना बनते समय सुकड़ जाएगा।''

लूई कोहन ने अपनी लोहे की छड़ी आगे कर दी और कहा, ''ठीक है, यह लीजिए।''

जगदीश ने छड़ी पकड़कर सामने मेज़ पर रख दी। ऊपर कपड़ा डाल दिया और कहा, ''सोना लोहे से लगभग एक-तिहाई भारी होता है। अतएव लोहा सोना बनते समय इसी अनुपात में सिकुड़ जाएगा। इस कारण सोना तो असली बनेगा, तोल में लगभग उतना ही होगा जितनी यह छड़ी है, परन्तु उसका आयतन इससे एक-तिहाई कम हो जाएगा।''

इतना कहकर उसने कपड़ा उठाया। छड़ी लम्बाई-चौड़ाई में छोटी हो गई थी, परन्तु लोहे के स्थान उज्ज्वल सोने के रंग की हो गई थी। छड़ी डॉक्टर कोहनी को देते हुए जगदीश ने कहा, ''मैं डॉक्टर साहब से यह निवेदन करता हूँ कि वे इस धन को किसी सार्वजनिक कार्य में व्यय करें, अपने निजी प्रयोग में न लावें।''

वह छड़ी सब दर्शकों ने देखी और हाथ पर उसका भार जाँचकर उसके सोना होने का अनुमान लगाया। पश्चात् डॉक्टर कोहनी ने कहा, ''मैं इसकी कैमिकल और फ़िज़िकल परीक्षा करवाऊँगा। पश्चात् आपसे मिलूँगा।''

इसी प्रकार अनेकानेक परीक्षणों के पश्चात् प्रदर्शन समाप्त हुआ।
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्राय: सब दर्शक आँखें मलते रहे। जब सब लोग चले गए तो जगदीशचन्द्र ने कहा, "मुझे डर है कि यूरोप के लोभी समाज में मैं एक विस्मय और लूट-खसूट का केन्द्र बन जाऊँगा। इस कारण मैं अपना स्थान बदलकर किसी अपरिचित स्थान पर चला जाना चाहता हूँ।"

"आप दोनों दूतावास में आकर ठहर सकते हैं।"

"इससे लाभ कुछ नहीं होगा। मैं यहाँ क़ैदी-सा हो जाऊँगा। मैं शान्ति से निर्बाध देश-देशान्तर-भ्रमण के लिए आया हूँ, और उसमें सफलता चाहता हूँ।"

"अभी तो आपकी भेंट जर्मन शहंशाह के साथ होगी। वे आपको धन्यवाद भेजेंगे।"

"वह तो इस दूतावास के पते पर भी हो सकती है, परन्तु मैं सर्वसाधारण से पीछा किया जाना पसन्द नहीं करता।"

"तो आप क्या चाहते हैं?"

"मैं आपसे संरक्षण चाहता हूँ।"

"मेरा विचार है कि आप अभी तो यहाँ दूतावास में आ जाएँ। फिर आपको गुप्त रूप से जर्मनी से निकाल दिया जाएगा।"

जगदीशचन्द्र और रामू वहाँ दूतावास में ठहर गए। होटल से उनका सामान मँगवा लिया गया। परन्तु यहाँ एक और समस्या उत्पन्न हो गई।

श्रीमती किपनिस दूतावास के एक फ़ौजी अफ़सर से प्रेम करती थी, परन्तु वह श्रीमती किपनिस के प्रस्ताव को अस्वीकार कर चुका था। श्रीमती किपनिस इस विषय में रामू से सहायता माँग रही थी। रामू ने उसे बहुत समझाया कि यह उचित कृत्य नहीं है। परन्तु उसने उससे इतना अनुरोध किया कि रामू को विवश हो यह बात गुरुदेव को बतानी पड़ी।

जगदीशचन्द्र ने कहा, "तुम उसे कहो कि यह काम तुरन्त नहीं हो सकता, इसमें कुछ समय लगेगा। तब तक मैं यत्न करूँगा कि वह उस अफ़सर का विचार ही छोड़ दे।"

दूसरी ओर एक रात को मिस्टर किपनिस के कहने पर जगदीशचन्द्र को कैसर के महल में पहुँचा दिया गया। वहाँ उसे कैसर के सामने उपस्थित किया गया। कैसर ने शुद्ध अंग्रेज़ी भाषा में बातचीत की और
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कहा, "डॉक्टर कोहन ने मुझे आपके विषय में जो लिखा है उससे मेरा मन बहुत प्रसन्न हुआ है। मैं चाहता हूँ कि आप जर्मनी में रहकर अपने ज्ञान से संसार को लाभ पहुँचाने का यत्न करें। यहाँ पर सबसे बड़ा संस्कृत-पुस्तकालय है। यहाँ की सरकार विज्ञान की उन्नति के लिए अतुल धन व्यय कर रही है और कर सकती है। संसार में कोई ऐसा देश आपको नहीं मिलेगा जहाँ विज्ञान को इतनी ऊँची पदवी प्राप्त हो, जितनी जर्मनी में है। इस कारण यहाँ रहने से जहाँ आप अपने-आपको अनुकूल वातावरण में पाएँगे वहाँ आपको सुख और आराम भी मिलेगा। आप चाहें तो आपको एकान्त में एक बहुत ही आराम देनेवाला मकान दिया जाय और उसमें आपके खाने-पीने और आराम का प्रबन्ध कर दिया जाय।"

जगदीश इस प्रस्ताव से चकित रह गया। परन्तु वह जानता था कि इसका उत्तर कैसे दिया जा सकता है। उसने कहा, "श्रीमान जी की मुझपर इतनी कृपा है, यह जानकर मैं बहुत ही अनुगृहीत अनुभव करता हूँ। आप जो सुविधाएँ मुझको देना चाहते हैं उनसे मेरा मन अति प्रसन्न हुआ है। अभी तो दुनिया में भ्रमण कर मैं अपनी ज्ञान-वृद्धि कर रहा हूँ। इसके पश्चात् मेरा विवाह होगा और फिर मैं अपना शेष जीवन लोक-सेवा में व्यतीत करना चाहता हूँ। उस समय श्रीमान जी के प्रस्ताव से लाभ उठाकर अपने को कृतकृत्य करूँगा।"

"तो यह वचन है?"

"इतना ही पक्का जितना कोई मनुष्य दे सकता है।"

"पर आप तो मनुष्य से कुछ ऊपर 'सुपर ह्यूमन' हैं।"

"मैं अपने वचन-पालन का पूरा प्रयत्न करूँगा।"

"कब तक आप भ्रमण से अवकाश प्राप्त कर सकेंगे?"

"अभी एक वर्ष और लगेगा।"

"धन्यवाद! जर्मन कौम आपके इस देश को अपना निवास-स्थान बनाकर शोभा प्रदान करने के लिए आपकी कृतज्ञ रहेगी।"

जब जगदीशचन्द्र उठकर विदा होने लगा तो उसने एक निवेदन किया, "मैं चाहता हूँ कि श्रीमान जी को अपनी स्मृतिस्वरूप एक भेंट दूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैसर उत्सुकता से उसको देखता रहा कि वह आगे क्या कहता है। जगदीशचन्द्र ने अपना दाहिना हाथ, जो खुला था, उसकी मुट्ठी कर ली और जब एक क्षण बाद खोली तो उसमें से एक बहुत सुन्दर बड़े-से हीरे की अँगूठी निकल आई। यह अँगूठी कैसर की उँगली पर पूरी आ गई। अँगूठी उँगली में डालकर कैसर ने प्रसन्नता अनुभव की। तब जगदीशचन्द्र ने झुककर उसे प्रणाम किया और जाने को आज्ञा माँगी।

७

डॉक्टर कोहन का वक्तव्य जब समाचार-पत्र में निकला तो भारत के योगाभ्यासियों के दर्शन के लिए अंग्रेज़ी दूतावास के सम्मुख दर्शकों का ताँता लगना आरम्भ हो गया। प्रतिदिन इतनी भीड़ बढ़ने लगी कि दूतावास के बाहर मार्ग को यातायात खुला रखने के लिए पहले पुलिस और फिर फौज बुलानी पड़ी।

जब स्थिति यह हो गई तो एकैडमी ऑफ़ साइंसिज़ की ओर से जगदीशचन्द्र का अभिनन्दन करने के लिए आयोजन होने लगा, तब जगदीशचन्द्र ने समझा कि वहाँ रहने से वह और भी उलझन में फँस जावेगा। उसने यह वचन देकर कि वह वियाना से लौटते समय उनका अभिनन्दन स्वीकार कर सकेगा, उस समय वह स्वीकार न किया। इस पर बर्लिन के समाचार-पत्रों में यह छप गया कि वह वियाना जा रहा है।

जगदीश और रामू अंग्रेज़ी राजदूत से विदा हो भाग जाना चाहते थे। मिस्टर किपनिस तो उन्हें जाने की स्वीकृति देना चाहता था, परन्तु श्रीमती किपनिस उनके वहाँ पर रहने पर आग्रह कर रही थी। यह एक कारण था कि मिस्टर किपनिस दिखावे के लिए उन्हें कुछ दिन और ठहरने के लिए कह रहा था। इस परिस्थिति में एक दिन सायंकाल जगदीशचन्द्र रामू को साथ ले गुप्त मार्ग से दूतावास से निकल गया। वे दोनों अदृश्य हो वहाँ से चले गए।

लोगों का विचार था कि वे वियाना चले गए थे। वास्तव में वे पेरिस जा पहुँचे। उसके पश्चात् उन्होंने पुनः लोगों को ऐसा प्रदर्शन देना स्वीकार नहीं किया, जैसा बर्लिन में दिया था। पेरिस में उनकी कुछ पूछ-गीछ रही, परन्तु उसके पश्चात् वे समाचार-पत्रों की दृष्टि से ओझल हो गए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यूरोप से अमेरिका और वहाँ से आस्ट्रेलिया, फिलिपाइन्स, जावा, सुमात्रा और वहाँ से जापान, चीन, तिब्बत और काश्मीर होते हुए वे अपने घर ऊधमपुर पहुँच गए।

घर से निकले इनको छः वर्ष के लगभग हो गए थे। उनके वहाँ पहुँचने से न तो घरवालों को प्रसन्नता हुई और न ही दुःख। ठकुर-सुहाती करने सब बन्धु आए और लौट गए।

रामू के चेहरे का ओज पहले से और भी बढ़ गया था। जगदीश के घरवालों का विचार था कि रामू किसी बहुत ही धनी बाप का बेटा है और जगदीश जैसे निकम्मे का इतने वर्षों से खाने-पहरने और भ्रमण करने का साधन बना हुआ है। इस विचारानुसार मीना के विवाह का विचार पुनः उपस्थित हुआ। पर रामू तैयार नहीं हुआ। इससे जगदीश के सम्बन्धी उससे और भी रुष्ट हो गए।

परिणाम यह हुआ कि जगदीश पुनः घर से जाने को तैयार हो गया। रामू ने एक दिन उनसे कहा कि यदि आप आदेश देते हैं तो मैं विवाह कर लेता हूँ।

जगदीश का कहना था, ''तुम वही करो जो तुम्हारा मन करने को कहता है।''

इस प्रकार बात रह गई। इस बार रामू ने जगदीश की अनुमति से मीना के विवाह के लिए पाँच हज़ार रुपयों का प्रबन्ध कर दिया।

इससे मीना के पिता को तो सन्तोष हुआ, परन्तु जगदीश के भाइयों की ईर्ष्या और भी बढ़ गई। नित्य ही झगड़ा होने लगा।

एक दिन जगदीश के बड़े भाई महेश ने उनके पास आकर कहा, ''जगदीश, अब तुम्हारी आयु पैंतालीस के लगभग हो गई है। तुम अपना विवाह क्यों नहीं करते? इससे रामू को भी अविवाहित रहना पड़ा है।''

''मैं अपना विवाह तो कर रहा हूँ। आगामी मास में विवाह के लिए जाऊँगा। रही रामू की बात। यह उसकी अपनी इच्छा पर निर्भर है। मीना से वह विवाह करना नहीं चाहता। इस कारण मैं उसपर दबाव नहीं डाल सकता।''

''यह मकान किसका है—तुम्हारा या रामू का?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भैया! तुम किसका समझते हो?"

"सब लोग रामू का समझते हैं।"

"तो उसी का समझ लो।"

"तो विवाह के बाद कहाँ रहोगे?"

"जहाँ रहूँगा, देख लेना। रामू शायद यह मकान मुझे ही दे दे।"

"क्यों?"

"यह तुम उसीसे पूछ लो न! क्या सब-कुछ मुझसे ही पूछना है?"

"मैं इस कारण पूछ रहा हूँ कि कल तहसीलदार आया था और रामू की आय का स्रोत पूछ रहा था। वह कहता था तुम लोग चोरी कर रुपया लाते हो और उससे अपना राजाओं के से ठाट-बाट से निर्वाह करते हो।"

जगदीश ने बात साधारण समझी थी, परन्तु बात अधिक विकट ही थी। वास्तव में महेश ही तो जगदीश और रामू को तंग करने के लिए तहसीलदार को भड़का रहा था। इस कारण अगले दिन तहसीलदार स्वयं रामू को मिलने आ गया। रामू उसको देखकर विस्मय से पूछने लगा, "क्या आज्ञा है, जो आपने कष्ट किया है?"

"बात यह है कि यहाँ मुझे मजिस्ट्रेट के अधिकार मिले हुए हैं। इस कारण इस इलाके में शान्ति रखने का उत्तरदायित्व मुझपर है। मैं देख रहा हूँ कि आप लोग इतने ठाट-बाट से रहते हैं, परन्तु आपकी आय का कोई स्रोत नहीं दीखता। वह क्या है?"

"मेरी विद्या।"

"विद्या क्या रुपयों के अंडे देती है? विद्या से कुछ किया जाता है तो रुपए मिलते हैं।"

"हमारी विद्या सीधे ही धन-संपत्ति देती है।"

"तब तो यह अनोखी विद्या है, जो अनायास धन बरसाती रहती है!"

"जी हाँ, ऐसा ही है।"

"ऐसी विद्या तो चोरों और डाकुओं के पास होती है।"

"कुछ भी समझ लो। यदि चोरी-डाका हमने डाला है तो हमें पकड़ लो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यही तो करने आया हूँ।" इतना कह तहसीलदार ने बाहर खड़े पुलिसवालों को भीतर बुलाकर रामू को हथकड़ी लगवा दी। इस समय जगदीश भी बाहर आ गया। उसने बहुत कहा कि रामू की गिरफ्तारी के वारंट दिखाए जाएँ, परन्तु रियासती बात थी, जहाँ कायदे-कानून नहीं चलते। तहसीलदार ने कहा, "बहुत बोलने की आवश्यकता नहीं, कहीं तुम भी न पकड़ लिए जाओ।"

जगदीश मुस्कराता हुआ खड़ा रहा। रामू को हथकड़ी डाले हुए वे तहसील की हवालात में ले गए, और वहाँ तीन दिन तक रखकर उसे जम्मू भेज दिया गया।

जगदीशचन्द्र पहले ही वहाँ पहुँच चुका था। वहाँ उसने रामू के विरुद्ध आरोप बताए जाने की माँग की। इस पर भी पाँच दिन के उपरान्त रामू को जम्मू की अदालत में उपस्थित किया गया। उसपर यह आरोप लगाया गया था कि उसके निर्वाह का कोई साधन नहीं है। इससे आवारा घोषित कर रियासत से निकाल दिया जाए।

अदालत ने रामू से पूछा, "क्या नाम है तुम्हारा?"

रामू चुप रहा।

"कहाँ के रहनेवाले हो?"

इसका उत्तर भी रामू ने नहीं दिया।

"तुम्हारे बाप का क्या नाम है?"

इस पर रामू ने कहा, "मैं किसी बात का उत्तर नहीं देना चाहता। मैं समझता हूँ कि मुझे पकड़ना अन्याय है। मेरे विरुद्ध कोई आरोप नहीं।"

"यह तो देखा जाएगा। पहले नाम-पता तो लिखवाओ।"

"जब मेरा पकड़ा जाना ही अकारण है तो फिर उसके सम्बन्ध में जो भी कार्यवाही आप करेंगे वह भी अन्याय-संगत होगी। मैं इस अन्यायपूर्ण कार्यवाही में भाग लेना नहीं चाहता।"

"और कोई अपराध हो या न हो, पर इस अदालत के प्रश्नों का उत्तर न देना ही एक भारी अपराध है, अदालत का अपमान है। इस कारण मैं अब भी पूछता हूँ कि बताओ तुम्हारा क्या नाम है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अदालत का अपमान करने की मेरी कोई इच्छा नहीं। पर मैं पूछता हूँ कि जब ऊधमपुर में कोई चोरी, डाका अथवा इसी प्रकार की घटना नहीं हुई, तो फिर यह कैसे अनुमान लगा लिया गया कि मैं चोरी-डाके से अपना पेट भरता हूँ? मुझे अकारण पकड़ना, मेरा अपमान करना है! मुझे तुरन्त छोड़ देना चाहिए। मुझे मुक्त करने के पश्चात् मेरे विषय में जो कुछ भी पूछिएगा उसका उत्तर दूँगा, परन्तु जब तक मैं इन हथकड़ियों और बेड़ियों से अकारण अपमानित किया जा रहा हूँ, तब तक मैं अपने विषय में कुछ भी उत्तर देने को तैयार नहीं।"

"देखो मिस्टर रामू! तुम्हारा यौवन और स्वास्थ्य देखकर हर्ष होता है और मन तुम्हारे साथ अच्छा सलूक करने को करता है। परन्तु तुम कानून को नहीं जानते। इस कारण कहता हूँ कि तुम अपना नाम और पता लिखा दो, तो मैं तुमको छोड़ दूँगा। पर बिना नाम और पता लिखे मैं फैसला नहीं लिख सकता।"

रामू ने मुस्कराकर कहा, "यह तो घोड़े के आगे गाड़ी जोतने की बात हो जाएगी। देखिए साहब! मैं केवल यह बताने के लिए यहाँ खड़ा हूँ कि तहसीलदार ने एक निरपराध आदमी को पकड़कर घोर अन्याय किया है। यदि आपका कानून भी इसकी स्वीकृति देता है तो यह और भी अधिक अन्याय है। ऐसे कानून को मानना मानवता से पतन है। रहा आपका मुझे दण्ड देना, सो आपमें शक्ति ही नहीं कि मुझे पकड़कर यहाँ कैद रख सकें! मैं जाता हूँ।"

"क्या?" मैजिस्ट्रेट ने घूरकर देखते हुए पूछा। परन्तु वह आँखें फाड़कर देखता रह गया। उसके मुख से 'क्या' के अतिरिक्त और कुछ नहीं निकला। रामू ऐसे हो गया जैसे धुएँ का बादल और फिर वह भी नहीं रहा। हथकड़ियाँ और बेड़ियाँ खट से भूमि पर गिर पड़ीं। अदालत में खड़े सब लोग आश्चर्य में देखते रह गए। मैजिस्ट्रेट के शरीर पर रोएँ खड़े हो गए और वह कुर्सी से उठ खड़ा हो गया। वह कुछ कहना चाहता था, परन्तु उसके मुख से आवाज़ नहीं निकली।

जगदीश ने झुककर अदालत को सलाम किया और बिना कुछ कहे अदालत से निकल गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८

जगदीश अदालत से निकल रेल के स्टेशन की ओर चल पड़ा। कुछ दूर जाने पर रामू उसके साथ हो लिया और चलता हुआ कहने लगा, "गुरुदेव! अब तो बड़ा गाँव को चलना चाहिए। ऊधमपुर वापस जाने से व्यर्थ में भारी हल्ला होगा। सरकार फिर पकड़ना चाहेगी। उधर इस घटना का समाचार फैल जाने से हमारे दर्शकों का ताँता लग जाएगा!"

जगदीश ने हँसते हुए कहा, "मूर्ख अदालत को कई दिन का सिर-दर्द दे आए हो। न जाने इस विषय में समाचार-पत्रों में कैसी-कैसी बातें प्रकाशित होंगी।"

"सिर पटकने दो इन मूर्खों को। आज ही चल दें बड़े गाँव को।"

"मैं जानता हूँ कि मेरे वहाँ जाने से फिर झगड़ा खड़ा हो जाएगा। इस पर भी मानिनी की उत्पीड़ित आत्मा को भी मुक्त करना है। इसलिए चलेंगे।"

अगले दिन रामू और जगदीश बड़ा गाँव जा पहुँचे। जिस दिन वे वहाँ पहुँचे, शंकर का देहान्त हो चुका था। उसका अंत्येष्टि संस्कार कर लोग लौट आए थे।

इन्हें आया देखकर मंगल ने आगे बढ़कर उस दुर्घटना का परिचय दिया। इससे दोनों को बहुत शोक हुआ। रामू भीतर गया तो सोहनी को सांत्वना देने के लिए कहने लगा, "बहिन, धैर्य धरो। बहुत दुःखी न हो?"

"रामू! मुझे इसमें सुख अथवा दुःख किसी का भी अनुभव नहीं हो रहा। एक बोझा-सा प्रतीत होता था कि मैं उन्हें छोड़कर ससुराल से चली आई थी। परन्तु अपने अन्तिम दिनों में उन्होंने मुझे अपनी सेवा का अवसर देकर मेरा बोझा हल्का कर दिया है। भगवान जो करता है वह भलाई के लिए ही करता है।"

"बहिन, मुझे सन्तोष है कि तुम अपने मन को वश में रख सकी हो। मैं अब अनुभव करता हूँ कि तुम्हारा विवाह-सम्बन्ध ठीक नहीं हुआ था। इसका परिणाम यह होना ही था। खैर छोड़ो इस बात को, तुम्हारी सास और ससुर कहाँ हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उनका कुछ पता नहीं। दिवाली निकल जाने पर वे हरिद्वार चले गए थे। वहाँ से कभी सूचना नहीं आई कि वे कहाँ रहते हैं।"

रामू घर से बाहर आ रहा था कि बाहर रोने-पीटने का शब्द सुनाई दिया। रामू भागा हुआ आया तो उसने देखा कि एक घोड़ा-गाड़ी में से दो औरतें रोती हुई उतरीं और घर के भीतर जाने लगीं। रामू को सन्देह हुआ कि ये सोहनी की सौतन और उसकी माँ है। इससे वह दरवाज़े पर खड़ा हो गया। इतने में मंगल भी समीप आ गया और रामू से उनका परिचय देकर बोला, "इन्हें भीतर जाने दो।"

"पहले माँ से पूछ आऊँ।"

माँ ने जब सुना कि लक्ष्मी और उसकी सास आई हैं तो उसने रामू का समर्थन किया। वह स्वयं बाहर चली आई और उनसे बोली, "आप यहाँ रोएँ-पीटें नहीं। रोना-धोना है तो श्मशान-भूमि पर जाकर रोएँ।"

विवश हो वे पुनः अपनी घोड़ा-गाड़ी में सवार हो नगर को लौट गईं।

जगदीश रामू की माँ के घर में ठहर गया। तेरह दिन तक शंकर की मृत्यु का शोक रहा और इन दिनों जगदीश और रामू मंगल के घर में जाते रहे और वहाँ मोहिनी से और मानिनी से मिलते रहे।

इन दिनों मानिनी के मन की अवस्था विचित्र थी। उसके मन में अकथनीय चंचलता और अधीरता बनी रहती थी। वह अब घर से बाहर बहुत कम निकलती थी। इस कारण जब जगदीश घर के भीतर आता, तब ही मानिनी उसको देख सकती थी। वह ऐसे अवसरों के लिए व्याकुल रहती थी। इधर जगदीश की इच्छा भी मानिनी से मिलने की रहती। परन्तु मिलने का अवसर ही न मिलता था।

फिर भी किसी-न-किसी बहाने से उसे कोई-न-कोई अवसर मिल जाता था। उस समय मानिनी भी सब काम छोड़कर वहाँ आ पहुँचती थी। मानिनी संस्कृत की बाल्मीकि रामायण का पाठ करती थी। जगदीश उससे भाँति-भाँति के प्रश्न पूछा करता था जिससे वह उसके मानसिक विकास का अनुमान लगा सके।

इस प्रकार आँख-मिचौनी अधिक काल तक नहीं चल सकी। शंकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
का तेरहवाँ हो जाने पर मानिनी का प्रश्न उपस्थित हुआ। मंगल और मोहिनी ने रामू तथा पंडित बृजलाल को पृथक् बैठाकर अपने मन की बात उपस्थित की। मंगल ने कहा, "रामू, तुम्हारे गुरु जी का मानिनी के विषय में क्या विचार है? वे उससे बार-बार मिलने का आग्रह क्यों करते हैं?"

रामू ने अपने मन की बात कहने का यह उपयुक्त अवसर समझा। उसने कहा, "भैया! गुरुदेव और मानिनी का विवाह विधि ने लिखा है। मेरी और गुरुदेव की विद्या यह बताती है कि दोनों का जन्म-जन्मान्तर का सम्बन्ध है। किसी कारण से गुरुदेव और मानिनी में इस जन्म में आयु का अन्तर हो गया है। परन्तु योगियों की आयु में बीस-तीस वर्ष कोई बड़ा अन्तर नहीं माना जाता।"

"रामू! लोग क्या कहेंगे? सब निन्दा करेंगे कि पन्द्रह-सोलह वर्ष की लड़की को किसी लोभ में पड़कर पचास वर्ष के बूढ़े के गले में बाँध दिया है।"

"ठीक है भैया! परन्तु साधारण लोग इस बात को नहीं जानते, और न ही इस गूढ़ रहस्य को समझने की शक्ति रखते हैं। इससे उनके कहने से दो जन्म-जन्मान्तर के साथियों के मिलन में बाधा खड़ी करना क्या उचित है?"

"पर यही तो जानने की बात है कि कैसे यह पता लगा है कि ये जन्म-जन्मान्तर के साथी हैं?"

"इसका प्रमाण तो मानिनी स्वयं दे सकती है। आप उससे पूछ सकते हैं।"

"वह तो कहती है कि तुमने एक मंत्र जपने के लिए उसको दिया था। उससे उसके मन में अनेकानेक विचार ऐसे उठते रहते हैं जो साधारण लोगों में पागलों के लक्षण कहे जा सकते हैं।"

"मंत्र तो बुद्धि के विकास के लिए दिया था। ऐसा प्रतीत होता है कि उसने जप इतनी अच्छी तरह से किया है कि उसमें दूर-दृष्टि उत्पन्न हो गई है। भूत को तो जान गई है, साथ ही भविष्य के विषय में भी जानने का यत्न कर रही प्रतीत होती है। जो लोग इस प्रकार की शक्ति को नहीं समझते, वे ही इसको पागलपन कहेंगे। परन्तु भैया, उससे भी पूछकर तो
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखो, वह क्या चाहती है?''

इस पर मोहिनी ने कहा, ''वह अभी बालिका है। वह क्या समझेगी कि विवाहित जीवन क्या होता है? किसी कारण से तुम्हारे गुरु ने उस पर जादू कर रखा है। इससे वह पागल हो रही है।''

''देखो भाभी! सारे संसार में यही सम्मोहिनी मंत्र चल रहा है। एक का दूसरे पर न्यूनाधिक प्रभाव रहता है। इसीसे एक व्यक्ति दूसरे का कार्य करता है। गुरुदेव ने यह प्रभावशक्ति दूसरों से अधिक प्राप्त कर ली है। यदि यह प्रभाव जीवन-भर रह सके तो बताओ इसमें क्या हानि है?''

''पर एक का जीवन तो दूसरे के जीवन से बहुत पहले ही समाप्त हो जाएगा। पीछे दूसरे को अपना जीवन काटना दूभर हो जाएगा। न वह सम्मोहिनी प्रभाव रहेगा और न ही प्रभाव का उद्देश्य।''

''भाभी! बात जैसी तुम समझती हो, उससे उल्टा होनेवाली है। जिसका जीवन तुम पहले समाप्त हो जाने की सम्भावना समझती हो, शायद वही पीछे रह जाए। यत्न तो यह करने की आवश्यकता है कि दूसरा भी योगसिद्धि के द्वारा अपने साथी के साथ दीर्घ जीवन व्यतीत कर सके।''

''मुझे तो ये बातें समझ में नहीं आतीं। मैं समझती हूँ कि यदि तुम्हारे गुरु यहाँ से चले ही जाएँ तो मानिनी किसी अन्य से विवाह के लिए तैयार हो जाएगी। नगर के एक बड़े रईस के लड़के से रिश्ते की बातचीत हो रही है। वह लखपति है।''

इसे सुनते ही रामू हँस पड़ा। जब सब उसकी ओर प्रश्नभरी दृष्टि से देखने लगे, तो उसने कहा, ''भाभी! सोहनी बहिन के लिए भी लखपति देखा था पिता जी ने। शंकर के पिता ने शंकर के दूसरे विवाह के लिए एक और लखपति देखा था। अब तुम भी नगर के एक और लखपति को देख रही हो। भगवान तुम लोगों को सुबुद्धि दे! रही गुरुदेव के चले जाने की बात। वे छः वर्ष इसी कारण तो दूर रहे थे। इस अन्तर में मानिनी उनसे दूर हुई है अथवा उनके समीप आई है?''

युक्ति से मंगल और सोहनी निरुत्तर हो गए थे। इस पर भी उनका मन नहीं मानता था। अब पं० बृजलाल बोले, ''मंगल भैया, मानिनी बालिका अवश्य है, इस पर भी उससे पूछ लेना आवश्यक है। यदि वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई ऐसी बात कहे जो तुम्हारी बुद्धि में न आवे तो उसको समझाने का यत्न करो। यह तो मानना ही पड़ेगा कि वह तुम दोनों से अधिक विद्या और बुद्धि रखती है। मेरी सम्मति यह है कि उसको यह बताया जाए कि उसके विवाह के लिए दो प्रस्ताव हैं। दोनों का उसे पूरा विवरण दे दिया जाय। और यदि वह आपको निर्णय करने को कहे तो तुम अपनी बुद्धि से निर्णय कर देना, और यदि वह स्वयं निर्णय करना चाहे तो उसको विचार करने के लिए समय देकर अपना मत प्रकट करने को कहा जाय। क्यों रामू, तुम क्या समझते हो?"

"मैं पंडित जी से सोलह आने सहमत हूँ। केवल इतना कह देना चाहता हूँ कि गुरु जी को निर्धन मत कहना। जितना रुपया चाहो आपके पास जमानत के रूप में जमा करा सकते हैं। सारे संसार की सम्पत्ति जिसकी उँगलियों पर खेलती हो, उसको निर्धन नहीं कहना चाहिए।"

मोहिनी को रामू का एक सहस्र रुपया देखते-देखते बना देना याद हो आया। उसने कहा, "कितना रुपया जमानत दे सकते हो?"

"कहो तो तुम्हारे घर की उस कोठरी को सोने, हीरे, जवाहरात से भर दें। तुम बताओ, कितना चाहती हो?"

मंगल को भी हज़ार रुपए की बात स्मरण हो आई। उसने कहा, "मोहिनी, छोड़ो धन-दौलत की बात। नगर के धनियों पर मुझको किंचित् भी विश्वास नहीं रहा। उनकी भलमनसाहत उनके धन के उलटे अनुपात से बढ़ती और घटती है। तुम मानिनी को बुलाओ!"

"जाओ रामू, बुला लाओ। रसोईघर में होगी।"

रामू भीतर गया। मोहिनी लस्सी बिलो रही थी। उसकी पीठ दरवाज़े की ओर थी और वह बिलोती हुई गा रही थी—

"आवत मोरी गलियन में गिरधारी।
मैं तो छुप गई लाज की मारी।"

"मानिनी!" रामू ने हँसते हुए आवाज़ दी, "चलो, हाज़िर हो जाओ।"

मानिनी ने कहा, "लाती हूँ चाचा, अभी थोड़ी कसर है।"

"अरी क्या लाती हो? आज तुम्हारी लस्सी कोई नहीं पियेगा। चलो,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारी पेशी है।"

"चाचा! क्या है?" उसने मथनी छोड़, उठकर चिन्तित भाव में उसकी ओर देखते हुए पूछा।

"माँ बुला रही हैं।"

"क्या है चाचा?"

"मैं क्या जानूँ!"

मानिनी ने रामू की ओर देखा। वह जानती थी कि वही उसके मन के भावों को समझता है। इस पर भी बिना कुछ और कहे व पूछे, बाहर बैठक में जा पहुँची। वहाँ माता, पिता और पं० बृजलाल को गंभीर भाव धारण किए बैठे देखकर दरवाज़े के समीप खड़ी हो गई। उसके पीछे-पीछे रामू आ रहा था। उसने कहा, "चलो न भीतर। डरो नहीं!"

"आओ बेटी!" पं० बृजलाल ने उसको बुलाते हुए कहा।

मानिनी भीतर गई तो माँ के समीप बैठ गई। रामू पंडित जी के पास बैठ गया। बात पं० बृजलाल ने आरम्भ कर दी, "देखो मानिनी बेटा, आज तुम्हारे माता-पिता तुम्हारे विवाह के विषय में बात कर रहे हैं। दो-तीन स्थानों से तुम्हारे विवाह की बात हो रही है। तुम्हारे माता-पिता यह निश्चय करना चाहते हैं कि कहाँ तुम्हारा सम्बन्ध करें। रामू भैया ने कहा है कि तुमसे भी राय ली जाय। इस कारण तुमको बुला भेजा है।"

मानिनी चुपचाप बैठी हुई भूमि की ओर देखती रही। उसने इसमें अभी कुछ कहना उचित नहीं समझा। उसे चुप देखकर रामू ने कहा, "बताओ मानिनी, क्या कहती हो तुम?"

"कहने को है क्या?" उसने माथे पर त्योरी चढ़ाकर कहा।

"तुम्हारा विवाह हो रहा है।"

"मेरा विवाह हो चुका है।"

"कब? किससे? किसने किया है?" मंगल ने पूछा।

"पूर्व-जन्म में नटेश्वर जी से। तब भी झगड़ा खड़ा हुआ था। परन्तु मेरे एक मामा थे, वे मेरे पक्षपाती थे। उनकी सहायता से विवाह हो गया था। वही मेरे मामा आज मेरे चाचा हैं।"

"यह क्या पागलपन की बात करती हो मानिनी?" उसकी माँ ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा, "कौन नटेश्वर था, कौन तुम्हारा मामा था, तुम कौन हो, यह तो भगवान ही जानता है। जो कुछ तुम कहती हो यह भ्रममात्र है। इसमें कोई प्रमाण नहीं।"

"तो जैसा आपके मन में आए, करिए। मैं आप-जैसी बुद्धि नहीं रखती। आप मेरे पूज्य हैं, मैं आपकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करूँगी।"

इतना कह वह एक क्षण तक चुप रही, पश्चात् फिर कहने लगी, "मैं अब जाऊँ?" वह अब भी भूमि की ओर देख रही थी।

"नहीं, ठहरो!" मंगल ने कहा, "यह नटेश्वर कौन है? कैसे पता चले कि यह वही है जिनको तुम नटेश्वर कहती हो? रामू तुम्हारे मामा थे, यह भी किस प्रकार समझ में आवे?"

"मेरा मन ऐसा कहता है। इस पर भी मैं प्रमाण नहीं दे सकती। इसी कारण कहती हूँ कि जैसा आप कहेंगे वैसी ही रहने का यत्न करूँगी।"

इतना कहते-कहते वह उठ खड़ी हुई। उसे अब किसी ने रोका नहीं। वह बैठक से निकलकर पुनः रसोईघर में जा पहुँची और दही बिलोने लगी। घर्र घूँ....घर्र घूँ....मथनी का चाटी में चलने का शब्द होने लगा।

९

रामू, मोहिनी, मंगल और पं० बृजलाल मानिनी के चले जाने से एक-दूसरे का मुख देखते रह गए। कितनी ही देर तक सब अपने मन में विचार करते रहे। रामू ने सबको स्वप्न-लोक से निकालने के लिए कहा, "भैया! गुरुदेव चाहते तो आप पर अपना सम्मोहिनी मंत्र चलाकर विवाह कर यहाँ से चले जाते। परन्तु उनकी ऐसी इच्छा नहीं है। आप विचार कर बता दीजिए कि आप यह विवाह स्वीकार करते हैं या नहीं। मेरी प्रार्थना है कि आप उनसे भी इस विषय में बात कर लें। जब मानिनी से पूछा है तो उनसे पूछने में क्या हानि है?"

पं० बृजलाल को मार्ग सूझ आया। वह मंगल के मुख की ओर देखने लगा। मोहिनी ने कह दिया, "ठीक है। उनको बुला लो और आज निर्णय कर दो। यदि विवाह होना है तो हो जाए, नहीं तो मैं उनके पाँव पड़कर कह देना चाहती हूँ कि वे यहाँ से चले जाएँ और लड़की के मन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की शान्ति को भंग न करें।''

नौकर को भेजकर जगदीशचन्द्र को बुला लिया गया। वह आया तो फिर बातचीत आरम्भ हो गई। मंगल ने कहा, ''गुरुदेव! मानिनी के विवाह की बातचीत हो रही है। आपसे परामर्श करने के लिए बुलाया है।''

जगदीशचन्द्र ने मुस्कराते हुए कहा, ''मुझसे परामर्श के कुछ अर्थ नहीं हैं। मेरा इसमें स्वार्थ है और मेरा परामर्श भी स्वार्थरत होगा।''

''आप बहुत धर्मात्मा आदमी हैं। आपसे हम आशा करते हैं कि निःस्वार्थ-भाव से हमारी लड़की के हित की बात कहेंगे। बताइए, नगर के चौधरी सागरचन्द के लड़के का सम्बन्ध आया हुआ है। लड़का एम० ए० पास है। इस समय सरकार में एक बहुत ऊँचे पद पर नियुक्त है। एक हज़ार के लगभग वेतन पाता है। देखने में भी स्वस्थ, सुन्दर और सुशील प्रतीत होता है।''

''ठीक है।'' जगदीशचन्द्र ने कहा।

''तो आपकी राय इस सम्बन्ध के अनुकूल है?''

''इससे बढ़िया रिश्ता और नहीं मिल रहा क्या?''

''अभी तो नहीं।''

''एक घटिया रिश्ते का पता मुझे भी है।'' जगदीश ने कुछ विचार कर कहा, ''आज से सौ वर्ष पूर्व नेपाल की राजधानी खटमंडू से उत्तर में बीस मील के अन्तर पर टोची गाँव में भामिनी एक ब्राह्मण की लड़की थी। राजपरिवार का एक युवक नटेश्वर नाम का, भ्रमण करता हुआ उस गाँव में पहुँचा तो उसपर मोहित हो वहीं रहने लगा। विवाह में बाधा थी। भामिनी ब्राह्मण की लड़की थी और नटेश्वर क्षत्रिय-वंश का लड़का था। इसपर भी नटेश्वर ने यत्न किया और विवाह करने में सफल हो गया। एक सुन्दर मकान में नटेश्वर और भामिनी रहने लगे। दुर्भाग्य से नटेश्वर को साँप ने काट खाया, उसकी मृत्यु हुई। भामिनी अपनी संतान के पालन-पोषण के लिए जीवित रही। नटेश्वर का एक और जन्म हुआ। वह अवध के ज़िला मिर्ज़ापुर में एक ज़मींदार के घर था। विन्ध्याचल के एक जागीरदार की लड़की से उसका विवाह हो गया। परन्तु उनकी बनी नहीं और कुछ वर्ष के असफल विवाहित जीवन के पश्चात् नटेश्वर ने अपने-आपको गंगा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विर्सजन कर दिया। पश्चात् उसका जन्म जम्मू के समीप ऊधमपुर में एक साधारण ज़मींदार के घर हुआ। दस वर्ष की आयु में वह अपने घर को छोड़ लद्दाख के मार्ग से तिब्बत चला गया। वहाँ एक बौद्ध भिक्षुक ने उसको पन्द्रह वर्ष तक योगाभ्यास की शिक्षा दी। वहाँ से जब नटेश्वर लौटकर आया तो उसके भाई-बन्धुओं ने उसे धन कमाने पर विवश कर दिया। नटेश्वर ने अपनी सिद्धि और योग के आश्रय से एक-डेढ़ मास में ही डेढ़ लाख रुपया पैदा किया और अपने गाँव लौटकर एक पक्का मकान बनवा उस मकान में रहने लगा। दस वर्ष उस मकान में रहकर और अभ्यास करने पर उसको बहुत दूर तक भूत और भविष्य का ज्ञान हो गया। इस समय उसको पता चला कि सियालकोट के समीप बड़ा गाँव में एक परिवार में भामिनी का जन्म हुआ है। वह उससे विवाह की इच्छा करने लगा। उस समय वह अभी नौ वर्ष की थी। इससे प्रतीक्षा के छः वर्ष इधर-उधर में भ्रमण कर अब पुनः यहाँ उससे विवाह की याचना के लिए आया है। भगवान ने आपको उसका संरक्षक बनाया है।''

''यदि हम आपकी इस कथा पर विश्वास न करें तो आप क्या करेंगे? मानिनी के विषय में आप क्या समझेंगे?''

''मैं मानिनी को अपनी पत्नी मानता हूँ। फिर भी मैं यह समझता हूँ कि पति-पत्नी का सम्बन्ध मालिक और सेवक का नहीं। पत्नी कोई गाय-बकरी नहीं जिसे गले में रस्सी बाँधकर ले-जाया जा सकता है। वह मेरे साथ चलने वा न चलने में स्वतन्त्र है। उसको आपकी तथा अपनी इच्छाओं के आदर का पूर्ण अधिकार है। मैं शक्ति रखता हुआ भी उसपर बल का प्रयोग नहीं करूँगा।''

''जगदीशचन्द्र जी!'' पं० बृजलाल ने कहा, ''आपकी कथा अद्भुत है। यह इतनी आश्चर्यजनक है कि हम-जैसे अल्पज्ञ प्राणी इसपर विश्वास नहीं रख सकते। इस कारण यदि इस लड़की के माता-पिता इसका विवाह आपसे न करना चाहें तो क्या आप इस लड़की की आत्मा की शान्ति के लिए यहाँ से चले जाएँगे?''

''निस्सन्देह। इसपर भी इतना कह देना चाहता हूँ कि यदि आपने मानिनी को बलपूर्वक किसी अन्य की संगिनी बनाना चाहा तो अच्छा न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगा। मैं कृष्ण की भाँति रुक्मिणी का हरण करने नहीं आऊँगा, परन्तु रुक्मिणी भी शिशुपाल की पत्नी नहीं बनेगी, ऐसा मुझे विश्वास है।…

"मैं अब जाना चाहता हूँ। अभी दो-तीन दिन इस गाँव में और रहूँगा। तब तक आप भली-भाँति इस पर विचार कर लें और अपने निर्णय से मुझको सूचित कर दें।"

इतना कह जगदीशचन्द्र उठ खड़ा हुआ और सबको प्रणाम कर बाहर निकल गया। इस समय रामू चुपचाप सब बातचीत सुन रहा था। जगदीशचन्द्र के जाने पर उसने अपना मुख खोला, "भाभी! मेरा कहा मानो। यह विवाह हो जाने दो, अन्यथा भारी अनिष्ट हो जाने की संभावना है।"

"यह तो तुम्हारे गुरु भी कह गए हैं। मुझे विश्वास है कि उसका जीवन सागरचन्द्र के सुपुत्र नागरचन्द के साथ आनन्द में व्यतीत होगा। अब तुम बताओ तुम्हारे गुरु की क्या सम्पत्ति है? क्या शिक्षा है? क्या कारोबार है? और फिर पचास वर्ष के बूढ़े से सोलह वर्ष की कन्या का विवाह कैसे हो सकता है?"

"भाभी, जब सती का विवाह शंकर महादेव से होने जा रहा था, तब यही युक्तियाँ दक्ष के सलाहकार देते थे। परिणाम क्या हुआ? क्या तुम वही परिणाम यहाँ पर चाहती हो?"

"तो तुम अपने गुरु महाराज को शंकर का अवतार समझते हो?"

रामू का मुख निराशा से और भावी आशंका से पीला पड़ गया था। इसपर भी उसने एक अन्तिम प्रयत्न किया, "भाभी, तुम धन-संपद का लोभ करती हो न?"

"नहीं! मैं समान अवस्थाओं का आदर करती हूँ।"

रामू और अधिक कुछ नहीं कह सका। वह वहाँ से उठ अपनी माँ के घर जहाँ जगदीश ठहरा हुआ था, चला गया।

१०

मोहिनी और मंगल में दो दिन और रात-भर विचार-विमर्श होता रहा। मंगल पं० बृजलाल से परामर्श करता था और फिर उसे अपनी पत्नी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से बताता था, परन्तु उधर तिरिया-हठ था। परिणाम यह हुआ कि जगदीशचन्द्र बड़ा गाँव छोड़कर संसार-सागर में विलीन हो गया। एक दिन रामू उठा तो उसने देखा कि गुरुदेव का पलँग सूना पड़ा है। वे गाँव छोड़ चले गए हैं। रामू ने उनकी खोज करने की अपेक्षा घर में मानिनी की सहायता के लिए ठहरना अधिक उचित समझा। इस कारण वह गुरु जी के पीछे नहीं गया।

एक दिन चौधरी सागरचन्द के घर की स्त्रियाँ आईं और मानिनी को मेंहदी लगा गईं। इसके अगले दिन मानिनी उठी और मन्दिर में देवता के सम्मुख आसन जमाकर बैठी तो बैठी ही रह गई। उसे पूजा में गए कई घंटे व्यतीत हो गए। इससे जब मोहिनी उसका पता लगाने आई तो उसको मस्तक भूमि पर नवाकर देवता को प्रणाम करने की स्थिति में देखकर बाहर ठहर गई। परन्तु जब कई मिनट तक प्रतीक्षा करने पर भी वह नहीं हिली तो भीतर जाकर बहुत धीरे से बोली, ''मानिनी....मानिनी....''

इसपर भी उसे वैसे ही भूमि पर मस्तक रखे देख जब उसने हिलाया, तो मानिनी लुढ़ककर भूमि पर लेट गई। उसने उसके शरीर का जब स्पर्श कर देखा तो उसका शरीर ठंडा हो गया पाया। उसने आँखों की पलकें उठाकर देखीं, आँखें पथरा चुकी थीं।

वह हताश हो उसके समीप ही बैठ गई। उसका गला रुँध गया और आँखों से अश्रुधारा बहने लगी।

मंगल आया तो वह भी इस घटना को देखता ही रह गया। रामू को बुलाया गया। उसने भी अपनी शक्ति के अनुसार मानिनी को जिलाने का यत्न किया, परन्तु कुछ लाभ नहीं हुआ।

□□□

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यकार गुरुदत्त
१८९४-१९८९

शिक्षा : एम.एस-सी.।
गवर्नमैंट कॉलेज लाहौर में डिमांस्ट्रेटर (राजनैतिक विचारों के कारण नौकरी छोड़नी पड़ी)—नेशनल स्कूल में हैड मास्टर के पद पर (स्कूल राजनैतिक कारणों से बंद हो गया)। उ.प्र. अमेठी ताल्लुकेदारी के कुंवर रणंजय सिंह एम.एल.ए. के निजी सचिव रहे। (राजनैतिक कारणों से ताल्लुकेदारी कोर्ट ऑफ वाईस में चली गई)। वहाँ से लखनऊ आकर चिकित्सा कार्य शुरू किया। लखनऊ से अपने जन्म-स्थान लाहौर आए और फिर १९३७ में नई दिल्ली चले आए।

चिकित्सा कार्य में स्थिर होने के पश्चात् लेखन-कार्य की ओर ध्यान लगाया और सन् १९४२ में पहला उपन्यास 'स्वाधीनता के पथ पर' प्रकाशित हुआ। उपन्यास में राजनीति तथा सामाजिकता का अद्‌भुत सम्मिश्रण था। हिन्दी जगत् में इस उपन्यास ने धूम मचा दी और फिर उत्साहित हो 'पथिक', 'स्वराज्यदान' की रचना की। सफलता की सीढ़ियों पर जो चढ़े तो फिर मुड़कर नहीं देखा।

विज्ञान की पृष्ठभूमि पर अपनी विश्लेषणात्मक बुद्धि से वेदादि शास्त्रों का अध्ययन किया तो उन्हें ज्ञान का भण्डार देख उनमें रम गए। परिणामस्वरूप वेद तथा अन्य शास्त्रीय ग्रन्थों पर उन्होंने, शास्त्रों का युक्तियुक्त विश्लेषण करते हुए अत्यंत सरल सुबोध एवं बोधगम्य भाषा में कई ग्रन्थों की रचना की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर श्री गुरुदत्त की कई रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं। यह कहना गलत नहीं होगा कि उनकी सभी रचनाओं का आधार शुद्ध भारतीय संस्कृति रहा है।

प्रस्तुत रचना 'हमारी सांस्कृतिक धरोहर' में उनकी प्रकाशित तथा अप्रकाशित रचनाओं का सार एक ही पुस्तकाकार में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। श्री गुरुदत्त की रचनाएँ ज्ञान का अथाह भण्डार हैं और उस ज्ञान का सार इस पुस्तक में प्रस्तुत है।

पुस्तक में वर्णित विषयों की सूची इस प्रकार है—

- ★ वेद
- ★ दर्शन शास्त्र
- ★ श्रीमद्भगवद्गीता
- ★ पुराण
- ★ धर्म
- ★ समाज
- ★ वेद मन्त्रों के देवता
- ★ वैदिक काल
- ★ इतिहास
- ★ मनुष्य
- ★ धर्म-व्यवस्था

इन विषयों के अतिरिक्त इतिहास में से कुछ उदाहरण देकर दर्शाया गया है कि किस प्रकार पाश्चात्य इतिहासकारों तथा उनका अनुकरण करनेवाले भारतीय इतिहासकरों ने हमारे इतिहास को भ्रष्ट करने का प्रयास किया है।

इस विषय पर यद्यपि बहुत-सी रचनाएँ हैं परन्तु जिस दृष्टि से तथा जिस विश्लेषणात्मक एवं सरल तथा बोधगम्य ढंग से यह रचना प्रस्तुत की गई है, अनुपम है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

श्री गुरुदत्त की एक अनुपम रचना

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमद्भगवद्गीता : एक अध्ययन

गीता उद्देश्य विशेष से किया गया श्री कृष्ण का प्रवचन है। उस उद्देश्य को छोड़कर जो लोग गीता को समझने-समझाने का प्रयास करते हैं, वे स्वयं भी भ्रमित होते हैं तथा दूसरों को भी भ्रमित करते हैं।

अर्जुन को युद्ध (कर्म) की प्रेरणा देने के लिए गीता का प्रवचन किया गया था। यही कारण है कि यह प्रवचन पग-पग पर देशभक्तों को बलिदान की प्रेरणा देता आया है और भविष्य में भी देता रहेगा।

प्रस्तुत रचना 'श्रीमद्भगवद्गीता : एक अध्ययन' गीता का विषयानुसार विवेचनात्मक विश्लेषण है और अत्यन्त ही सरल भाषा में गीता को समझने-समझाने का प्रयास है। पुस्तक में निम्न विषय लिये गए हैं—

१. गीता प्रवचन की विशेषता।
२. श्रीमद्भगवद्गीता के सिद्धान्त, इतिहास, मान्यताएँ।
३. मृत्यु एवं हत्या की विवेचना, कुलक्षय और कुल-धर्म।
४. कर्म योग, स्थितप्रज्ञ, स्थितप्रज्ञ की परिभाषा, कर्म, कर्मों का विभाजन, कर्मों का स्रोत, कर्म और गुण, कर्म बंधन।
५. कर्म बंधन से मुक्ति, योग।
६. ज्ञान-विज्ञान, क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ व्यवस्था, परमात्मा और आत्मा में भेद, परमात्मा और उसकी माया।
७. भक्ति योग, भक्ति का ढंग, भक्ति का फल, मोक्ष की अवधि।
८. परमात्मा का स्वरूप, मूर्ति पूजा
९. ज्ञान और कर्म, संन्यास, कर्म और ज्ञान।
१०. स्वभाव, गुण तथा कर्म, गुण बुद्धि और स्वभाव, वर्ण धर्म।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्य इतिहास की खोज में संलग्न

श्री पुरुषोत्तम नागेश ओक

की खोजपूर्ण रचनाएँ

हास्यास्पद अंगरेजी भाषा
क्रिश्चियनिटी कृष्णनीति है
वैदिक विश्वराष्ट्र का इतिहास-१
वैदिक विश्वराष्ट्र का इतिहास-२
वैदिक विश्वराष्ट्र का इतिहास-३
वैदिक विश्वराष्ट्र का इतिहास-४
भारत में मुस्लिम सुल्तान-१
भारत में मुस्लिम सुल्तान-२
कौन कहता है अकबर महान् था?

दिल्ली का लालकिला लालकोट है
आगरा का लालकिला हिन्दू भवन है
फतेहपुर सीकरी हिन्दू नगर है
लखनऊ के इमामबाड़े हिन्दू भवन है
ताजमहल मन्दिर भवन है
भारतीय इतिहास की भयंकर भूलें
विश्व इतिहास के विलुप्त अध्याय
ताजमहल तेजोमहालय शिव मन्दिर है
फल ज्योतिष

Central Library
167964
Gurukula Kangri Vishwavidyalaya University Haridwar

प्राप्ति स्थान :

हिन्दी साहित्य सदन

३०-पी, कनॉट सरकस, नई दिल्ली-१

081
167964
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पुस्तकालय
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
वर्ग संख्या R 089.9143 GUR-M आगत संख्या 167964

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY		
	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A.R.		
Recomm. by.		
Data Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त

(1894 & 1989)

शिक्षा : एम. एस–सी.

प्रथम उपन्यास "स्वाधीनता के पथ पर" से ही ख्याति की सीढ़ियों पर जो चढ़ने लगे कि फिर रुके नहीं।
विज्ञान की पृष्ठभूमि पर वेद, उपनिषद् दर्शन इत्यादि शास्त्रों का अध्ययन आरम्भ किया तो उनको ज्ञान का अथाह सागर देख उसी में रम गये।

वेद, उपनिषद् तथा दर्शन शास्त्रों की विवेचना एवं अध्ययन अत्यन्त सरल भाषा में प्रस्तुत करना गुरुदत्त की ही विशेषता है।

उपन्यासों में भी शास्त्रों का निचोड़ तो मिलता ही है, रोचकता के विषय में इतना कहना ही पर्याप्त है कि उनका कोई भी उपन्यास पढ़ना आरम्भ करने पर समाप्त किये बिना छोड़ा नहीं जा सकता।

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली - 110 001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar